

# शांकर्यी

एक अतृप्त धारा

@EBOOKSIND

संजय त्रिपाठी



श्रीहिन्द पब्लिकेशन्स



COLLECTION OF VARIOUS  
-> HINDUISM SCRIPTURES  
-> HINDU COMICS  
-> AYURVEDA  
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

!creator of  
hinduism  
server!



KAPWING



**श्रीहिन्द पब्लिकेशन्स**

*कॉरपोरेट एवं सम्पादकीय कार्यालय*

6, देसाई नगर, विक्रम मार्ग उज्जैन (म.प्र.) - 456010

website : [www.shrihindpublications.com](http://www.shrihindpublications.com)

*वितरण केंद्र*

अहमदाबाद, हैदराबाद, बेंगलूरु, पुणे, जबलपुर, वरोदरा, भोपाल,  
इंदौर, चेन्नई, कोलकता नईदिल्ली, मुंबई

कॉपीराइट © 2020 संजय त्रिपाठी

सर्वाधिकार सुरक्षित

यह संस्करण 2020 में पहली बार प्रकाशित

द्वितीय संस्करण (संशोधित) 2021

ISBN 978-81-947925-2-9

संजय त्रिपाठी इस पुस्तक की नैतिक जिम्मेदारी वहन करते हैं

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित  
पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुनः प्रकाशित  
किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप  
में इसका व्यवसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा  
करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

भगवान शिव और उनकी पुत्री नर्मदा को नमन

*संसार के समस्त 'बाप बेटी' को समर्पित*

@EBOOKSIND

@EBOOKSIND

## आमुख

नदियों का इतिहास मानव सभ्यता के इतिहास से भी पुराना है या ये कहें की नदियाँ न होतीं तो मनुष्य खानाबदोश ही रहता, गुटों में और कबीलों में रहना कभी न सीखता। जितनी भी सभ्यताओं ने जन्म लिया वे सब की सब किसी न किसी नदी के किनारे ही पनपीं, चाहे दजला फरात के किनारे बसीं मेसोपोटेमिया और पर्सिया की सभ्यताएं हों, नील के किनारे का मिश्र हो, पीली नदी का चीन हो, सिंधु किनारे के द्रविड़ हों या गंगा घाट के आर्य। अकेले भटकते आदमी ने पहले गुट बनाये फिर जहाँ बहती नदी मिली वहाँ बस गये।

नदियों ने भी आदमी की खूब देखभाल की उन्हें पानी दिया, अन्न दिया, पशु दिए, पर्यटन दिया। इतना ही नहीं पर्यावरण को सुधारा और साल दर साल गंदगी को बहा धरती को साफ भी किया। ये नदियों की ही दयानत दारी थी की आदमी उनका दोहन करता गया और वे फिर भी प्यार लुटाती रहीं।

नदियों के आदमी पर प्यार लुटाने का कारण यह भी रहा की भले ही आदमी ने उनका शोषण किया पर उन्हें पूजा भी। नदियों का महत्व मनुष्य के लिए सिर्फ पानी देने वाली कोई प्राकृतिक रचना तक ही नहीं था, ये उसकी आस्था का विषय भी था। नदियों में स्नान, पितरों की आत्मा शांति के लिए उनका तर्पण, विवाह, मुंडन और न जाने कितनी परम्पराएँ रहीं जिनका निर्वहन नदियों से उनके किनारे होता आ रहा है।

गंगा को सब नदियों में सबसे पवित्र माना जाता है। हिमालय की उन्नत चोटियों से निकल श्वेतधवल जल जब मैदानों में बहता है तो मन को मोह लेता है। गंगा की शुद्धता और खुद ही खुद को स्वच्छ कर लेने की अद्वितीयता के कारण गंगा पवित्रों में पवित्र मानी जाती है।

ये सच है कि गंगा पवित्र नदी है, पर नर्मदा की बात ही निराली है। गंगा की आधी लम्बाई और गंगा की पुत्री का मान रखने वाली नर्मदा यूँ तो गंगा से भी पुरानी है। ऐसी कौन बेटी होगी जो माँ से भी बड़ी है पर नर्मदा ने हर काम उल्टा ही किया है और यही कारण है कि देवी की तरह पूजी जाने वाली, अपनी मन मर्जी करने वाली, उल्टी चलने वाली शंकर की बेटी अभी भी एक अतृप्त धारा है।

अतृप्त इसलिए है कि प्यार में धोखा खाया। जिसे दिलोजान से चाहा उसी ने छल किया तो दिल टूट गया और सब कुछ छोड़ जहाँ कोई नहीं जाता वहाँ चल दी, जैसे कोई नहीं चलता, वैसे चल दी। प्यार में दिल अतृप्त रहा तो धरती को तृप्त करने निकल पड़ी। जो भूखे थे उनकी भूख मिटाने, जो प्यासे थे उनकी प्यास बुझाने। जिसका सब कुछ लुट गया हो वह दूसरों को लुटाने दौड़ पड़ी। जिसे प्यार नहीं मिला उसने जहाँ को प्यार से भर दिया। हजारों सालों से लोगों के लिए जी रही नर्मदा का आज भी जी नहीं भरा। लोगों को तृप्त करती रही पर खुद आज अभी अतृप्त रही। अभी भी जनकल्याण की हूक है कि मिटती नहीं। अभी भी लोगों के आँसू हैं जो बह रहे हैं और जब तक वे बहेंगे तब तक नर्मदा बहेगी। जब तक धरती तृप्त नहीं होगी नर्मदा अतृप्त ही रहेगी।

सतपुड़ा और विंध्याचल के बीच बहने वाली नर्मदा ने प्रसिद्धि के लिए कभी काम नहीं किया और यही कारण रहा की जब सब तरफ बसाहटें बस रहीं थी नर्मदा तब शांत बह रही थीं घने जंगलों और पहाड़ों के बीच। शोर शराबे से दूर रहने वाले ऋषियों को नर्मदा तट खूब भाया और उन्होंने इसे तपस्थली में बदल दिया। सालों साल के जप तप ने नर्मदा के पानी में और उसके किनारों पर गोंड पार्टिकल्स बढ़ा दिए और इससे पहले की नर्मदा किनारे लोगों की आवाजाही शुरू होती, उनकी बस्तियां बसतीं, नर्मदा में दैवीय गुण भर चुके थे।

नर्मदा में दैवीय गुण हैं, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। समय के साथ ये बढ़ रहे हैं इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता। कोई ऐसा धर्म नहीं जिसके संत, फकीर, पैगम्बर और मसीहों ने नर्मदा के किनारे साधना न की। और यही कारण है की नर्मदा में साक्षात् परमेश्वर दिखते हैं। परमेश्वर यानि परम तत्व और किसी एक धर्म का नहीं अपितु हर धर्म का व्यक्ति अपने परमेश्वर को वहाँ नर्मदा में देख सकता है। किसी भी धर्म से

मतलब किसी भी धर्म, चाहे हिंदुस्तान का हो या विदेश का। जो भी नर्मदा किनारे आएगा वो यहीं अपने इष्ट को पायेगा। ये उनसे पूछा जा सकता जिन्होंने नर्मदा की परिक्रमा की है, बरसों से नर्मदा के किनारे अपनी मुरादों को पूरी होते देखा है।

एक बार चल दीजिये नर्मदा किनारे। चाहे शरीर से, चाहे मन से। ये आपको बदल के न रख दे तो कहना। तो चलिए हम अपनी यात्रा शुरू करते हैं। वही कहते हुए, जिसे सब कहते हैं...

...नर्मदे हर

@EBOOKSIND



@EBOOKSIND

## मेरा अनुभव

“वो नदी नहीं है साब, माई है” बड़े बाबू ने कहा तो मैं चौंक गया। बात उन दिनों की है जब मेरी बदली छिंदवाड़ा से होशंगाबाद हुई थी। छिंदवाड़ा के एक वर्ष के कार्यकाल में अनेक बार सड़क मार्ग से भोपाल जाना हुआ। होशंगाबाद बीच में पड़ता था और उस यात्रा में होशंगाबाद शहर निकलते ही नर्मदा पड़ती थी। सड़क और रेल पुल अगल बगल में ही थे। नदी को पार करते हुए जब बगल के पुल से धड़धड़ाती हुई ट्रेन निकलती तो रोमांच पैदा होता था। नदी की सुन्दरता, स्वच्छ पानी, दूर दिखते विन्ध्य पर्वत बरबस ही मन मोह लेते। पर इससे अधिक नर्मदा का कोई विशेष महत्व मेरे लिए नहीं था, जैसी सब नदियाँ वैसी नर्मदा। धरती का एक प्राकृतिक ड्रेनेज सिस्टम।

होशंगाबाद में मेरी पूर्ववत अधिकारी जो अक्सर बैठकों में मिल जाती थीं, नर्मदा की बड़ाई करते हुए कहती कि वे नियमित नर्मदा दर्शन को जाती हैं और जब भी कहीं बाहर जाएँ तो कितनी भी रात हो यदि ट्रेन नर्मदा के पुल से गुजरती है तो स्वतः ही उनकी नींद खुल जाती है और वे हाथ जोड़ कर उठ बैठती है।

“क्या अंध श्रद्धा है” मैं सोचता था।

आज होशंगाबाद पदस्थापना के पहले ही दिन अपना कार्यभार ग्रहण करने के बाद सायं को विश्राम हेतु होटल आ गया। शिष्टाचार वश कार्यालय के बड़े बाबू होटल तक छोड़ने आये तो कमरे में आते ही मैंने प्रश्न किया।

“यहाँ से नर्मदा नदी कितनी दूर है?”

और उन्होंने जो उत्तर दिया कि वो नदी नहीं माई है, से मैं चौंक गया। उनकी आस्था को ठेस पहुँचाने का मेरा कोई मकसद नहीं था सो मैं तुरंत संभल कर बोला।

“हाँ, हाँ वही, कितनी दूर है??”

“ज्यादा नहीं साब, पर आप सेठानी घाट जाइये सुबह। यही कोई दो कि.मी. है। मोर्निंग वाक् भी हो जाएगी और स्नान भी हो जायेंगे।” बड़े बाबू ने सुझाव दिया तो अनिच्छा से मैंने सिर हिला दिया।

संयोग से रात्रि में बैतुल के मेरे अधिकारी मित्र भी आ गये जो भोपाल से लौट रहे थे, रात्रि अधिक होने और मेरे होशंगाबाद में आ जाने के कारण वे मेरे पास ही आकर रुक गये। बैतुल से पहले वे होशंगाबाद में कई वर्ष रह चुके थे इसलिए यहाँ से उनका लगाव स्वाभाविक ही थी। यहाँ के लोगों, यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता, पहाड़, नदियों के बारे में बड़ चढ़ कर बता रहे थे। बातों बातों में मैंने उन्हें बताया कि कैसे बड़े बाबू ने मुझे नर्मदा स्नान का ज्ञान दिया था।

“आइडिया बुरा नहीं है यार। जब रुके ही हैं और मौका है तो क्यों न स्नान किये जायें” उत्साहित होकर वे बोले।

“ठीक है...” अनमने मन से कहा मैंने। “एक और नर्मदा भक्त?” मन ही मन सोच कर चुप रह गया।



तडके ही हम दोनों धूमते-धूमते सेठानी घाट की ओर चल दिए। शहर सोया था इसलिए सड़कों पर हलचल नहीं थी। वैसे भी होशंगाबाद कोई बड़ा शहर नहीं था। सेठानी घाट के निकट पहुँचते ही मुझे इसकी एक विशेषता दिखी कि जैसे धार्मिक तीर्थ स्थान होते हैं कुछ इसी तरह का फ्लेवर यहाँ इस शहर में दिख रहा था। स्नान को आते जाते लोग, फूल मालाएं पूजन सामग्री के जगह जगह लगे रेड़े, नर्मदे हर, जय नर्मदा माई के स्वर।

सेठानी घाट पर पहुँचे तो तबियत प्रसन्न हो गयी। सुंदर बना था घाट। लम्बा प्लेटफार्म और बड़े भाग में फैली सीढ़ियाँ, नीचे बहती निर्मल नर्मदा, नदी का चौड़ा पाट और दूसरे किनारे पर दिखते पर्वत श्रृंखला।

“अद्भुत” अनायास मेरे मुंह से निकला।

“पूरा शहर नर्मदा जी के किनारे बसा है। कहीं से भी देखो अच्छा लगता है” प्रणाम की मुद्रा में हाथ जोड़ते हुए वे बोले।

उन्हें नर्मदा के साथ जी लगाते और हाथ जोड़ते देख मुझे बड़ा अजीब लगा।

“क्या पढ़े लिखे लोग भी अंध भक्त होते हैं? नदी को नदी न मान कर बरबस ही देवी बनाये दे रहे हैं?” मैं सोचने लगा।

बहरहाल हम दोनों ने स्नान किया। निर्मल ठंडे जल में डुबकी लगाना बहुत भाया। दोनों ही तैरना नहीं जानते थे इसलिए घाट पर लगी लौह जंजीर को पकड़ कर ही नहा रहे थे। दस मिनट तक नाहते रहे। बाहर निकले, मैं कपड़े बदलने लगा था, देखा मेरे मित्र इस बार तो दोनों हाथ जोड़े, आँखे बंद किये नदी के सामने खड़े थे।

बहुत देर तक उन्हें ध्यान मग्न हो स्तुति करते देख मैंने भी हाथ जोड़ दिए नर्मदा के।

@EBOOKSIND

लगभग चार माह मैं किराये के मकान में रहा। बिटिया के स्कूल के पास ही था मकान। मकान मालिक दुबे जी भले आदमी थे। उनकी पत्नी नित्य नर्मदा, जो यहाँ से चार कि.मी. से कम नहीं थी, जाती थीं। मैंने देखा यहाँ कॉलोनी के लोग भी आपस में नर्मदा माई की जय कहने के साथ ही वार्तालाप प्रारंभ करते थे। अब बातों बातों में सबके देखा देखी मैं भी नर्मदा जी कहने लगा था।

चार माह बाद मैं अपने शासकीय आवास में आ गया। पचमढ़ी रोड पर बनी कमिश्नर कॉलोनी एक खूबसूरत कॉलोनी थी। सभी आवासों में खूब खूब पेड़ लगे थे जो पूरे परिसर को हरा भरा बनाये थे।

मेरे सामने ही चतुर्वेदी जी रहते थे। रिटायरमेंट के करीब पहुँच चुके चतुर्वेदी जी हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति थे। जल्दी ही मेरी उनसे अच्छी छनने लगी थी। वे अकेले रहते थे, उनका परिवार भोपाल में था। परिवार में एक बेटा और एक बेटी थी। बेटा विदेश में था और बेटी ने तकनीकी पढाई

पूरी की थी। एक दिन सायं को मेरे आवास में बाहर हम दोनों ही चाय पी रहे थे कि मैं पृष्ठ बैठा “रिटायर होने के बाद आप तो भोपाल ही बसेंगे कि बेटे के पास ऑस्ट्रेलिया जायेंगे।”

“अभी तो बेटा की शादी करनी है उसके बाद सोचेंगे।”

“कब कर रहे हैं शादी?”

“अब से चार माह बाद, रिटायरमेंट के दो माह पूर्व।”

“चलो अच्छा है, नौकरी में रहते ही आप अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जायेंगे।”

“हाँ माई ने बड़ी कृपा की।”

“मतलब??”

“सब नर्मदा माई का चमत्कार है। मैं बहुत परेशान था। बिटिया के लिए कोई घर ही नहीं मिल रहा था। मेरे ड्राईवर ने एक दिन मुझसे कहा कि सच्चे मन से जाकर नर्मदा माई से प्रार्थना करो मनोरथ पूरा होगा। मैं एक सुबह ही जाकर खड़ा होगया नर्मदा किनारे और हाथ जोड़ विनती की कि माँ मेरी सुनले, बिटिया का विवाह मेरे रिटायरमेंट से पहले करा दे माँ। मन में कहते कहते मेरी आँखों में आँसू आ गये।”

“और माँ ने सुन ली। क्या आप भी” मैं हंसने लगा।

“साब हँसो मत, नर्मदा माई के चमत्कार आपने देखे नहीं हैं।” बाउंड्री की बागड़ के बाहर अपनी जीप के पास खड़े चतुर्वेदी जी के ड्राईवर ने कहा तो मैं झेंप गया।

“भरोसी सही कह रहा है। ये तो इतना भक्त है जब जब मुझे कोई मुसीबत आयी है, इसने नर्मदा की परिक्रमा की और मुसीबत टल गयी” चतुर्वेदी जी भावुक हो गये।

“क्या परिक्रमा भी की जाती है नर्मदा की” मैं पूछने लगा तब तक भरोसी भी गेट खोल कर हमारे पास आ गया था।

“हाँ साब, दुनिया की इकलौती नदी है नर्मदा जिसकी परकम्मा की जाती है। मैंने तो न जाने कितनी बार की है, और जो माँगा वो मिला। ज़रूरी नहीं की इच्छा पूर्ति के लिए परकम्मा की जाय। सच्ची श्रद्धा से सामने खड़े होकर कह भर दो। जो कहीं न सधे उसे आप माँ से कह कर देखना”

भरोसी कहे जा रहा था और मैं मन्त्र मुग्ध हो सुन रहा था।



दूसरे दिन जब मैं मोर्निंग वाक् पर निकला तो अनायास ही उस रोड की ओर मुड़ गया जहाँ नर्मदा का विवेकानन्द घाट पड़ता था। घाट के सामने से निकला तो बरबस ही प्रणाम की मुद्रा में हाथ उठ गये। मैंने देखा अनेक लोग जो सुबह घूमने आते हैं, नर्मदा को प्रणाम करते हैं।

उस दिन से मेरा नित्य का नियम बन गया। घूमते हुए घाट के सामने से निकलना, कुछ घड़ी रुक कर नर्मदा 'माई' को प्रणाम करना फिर आगे बढ़ना।

मेरा कार्यालय भी नर्मदा के किनारे पर ही था। जिस में कुछ प्रयास करने से, अर्थात् पंजों पर खड़े होने से वर्ष के आधे महीनों में खिड़की से वे स्पष्ट दिख जाती थीं। कार्यालय में कार्य करते करते जब भी मन बैचेन होता तो माई को देख कर अथवा उनकी दिशा में खड़े हो हाथ जोड़ लेता।

जब भी अमावस्या या पूर्णिमा आती तो चरन भृत्य नर्मदा स्नान के लिए ज़रूर पूछता। कुछ दिनों बाद लगा कि जब रह ही रहे हैं तो कभी कभी स्नान करना भी बुरा नहीं। और इस तरह यदा-कदा स्नान की रस्म भी पूरी होने लगी।



दीपावली का त्यौहार आ रहा था। होशंगाबाद में हम तीन ही प्राणी परिवार में थे। पति पत्नी और बिटिया शालू। सोचा नई जगह त्यौहार मनाना क्या अच्छा लगेगा, खास कर बेटी को। ग्वालियर घर चला जाय या पापा को बुला लें।

“क्यों न हम इस बार वैष्णो देवी चलें दिवाली पर, त्यौहार का त्यौहार मन जायेगा और माता ने जो मुराद पूरी की है, उसकी कृतज्ञता भी हो जाएगी” एक दिन सायं को कार्यालय से आते ही पत्नी बोलीं, जैसे मेरे घर आने का इंतज़ार ही कर रही थीं।

“हाँ बात तो ठीक है। बेटू को भी अच्छा लगेगा। पर छुट्टी और रिजर्वेशन का क्या होगा क्योंकि समय भी कम बचा है” मैंने उत्साह के साथ चिंता भी दिखाई।

“अरे माँ जब बुलाती है तो सब करा देती है” पत्नी के मुख से सहज ही निकला।

“अच्छा, चलो देखते हैं। पहले रिजर्वेशन का देखें, छुट्टी का उसके अनुसार देखेंगे” मैंने कहा और तत्काल लैपटॉप लेकर बैठ गया। दिवाली के आस-पास रेलों में रिजर्वेशन की मारा मारी से कौन परिचित नहीं है। किन्तु थोड़ा ही सर्च करना पड़ा और आने, जाने का कन्फर्म टिकिट बुक हो चुका था। अब समस्या थी छुट्टी की, जो मिलेगी कि नहीं, मैं सारी रात यही सोचता रहा।

“सर, मुझे पांच दिन की छुट्टी चाहिए, परिवार के साथ दिवाली पर वैष्णो देवी जाना है” दूसरे दिन ऑफिस खुलते ही मैं सबसे पहले अवकाश की नोटशीट ले कलेक्टर महोदय के सामने खड़ा था।

“अरे वाह, ये तो बहुत अच्छा है, मेरा भी प्रसाद चढ़ा देना” कहते हुए उन्होंने नोटशीट पर स्वीकृति और प्रसाद के पैसे दिए।

मैं भौचक था। सोच रहा था कि श्रीमतीजी ठीक ही कह रही थीं कि जब माँ बुलाती है तो वो सब कर देती है।

ठीक दिवाली के दिन हम वैष्णो देवी में थे। इससे पहले एक बार यहाँ आना हुआ था। जब बेटी नहीं थी तब हम पति पत्नी दोनों ही सन्तान की मनौती मांग गये थे। बेटी के जन्म के कई वर्षों तक मौका ही नहीं मिला और अब जब बिटिया नौ वीं में पढ़ रही थी हम माँ के सामने कृतज्ञता जाहिर कर रहे थे।

माँ के दर्शन के बाद भैरो बाबा गये, वहाँ मन्त का धागा बंधा था जिसे परम्परा अनुसार खोलना था। बिटिया से ही धागा खुलवाया।

जब सामने उदार मना कोई देने वाला हो तो इन्सान की मांगने की फितरत कहाँ छूटती है। उन दिनों विभाग में पदोन्नति का मुद्दा जोरशोर से चल रहा था। मैं अपने बैच में आखिरी से दूसरे नंबर पर था। माँ के सम्मुख जब खड़े हुए तो पुरानी मन्त पूरी होने का धन्यवाद तो दे ही रहा था, साथ ही माँ से पूरे बैच के साथ ही खुद की पदोन्नति भी मांग रहा था। चूँकि विभाग में पद उतने नहीं निकल पा रहे थे कि हम नीचे वालों का भी नंबर लग जाय।

शासकीय विभागों में पदोन्नति के लिए पद बहुत सीमित होते हैं, इसीलिए पूरे के पूरे बैच एक साथ उपर के पदों पर नहीं पहुँच पाते। एक

असम्भव सी मांग थी किन्तु सोचा जब देने वाली माँ है तो सोचना भी उसी को है। हम क्यों सोचें?

भैरों बाबा के मन्दिर पर एक धागा खोला तो दो नये बांधे एक मैंने और दूसरा बेटी ने। मेरा तो मुझे पता था किन्तु बिटिया ने क्या माँगा ये न उसने बताया, न हमने पूछा।

उसी वर्ष पदोन्नति हुई। लग रहा था कि कुछ नये पद मिल जायेंगे और पूरा बैच निकल जाएगा। दम साथे इंतज़ार कर रहे थे कि एक दिन सायं खबर आयी कि डीपीसी हो गयी। नीचे के तीन को छोड़कर सब पदोन्नत हो गये। दिल धक् कर रह गया। पता लगा कि हम नीचे वाले तीनों वेटिंग में हैं। अब वेटिंग का मतलब लटकना, कब तक लटके रहें, कन्फर्म हो भी या नहीं भी, कौन जाने।

मैं वैष्णो माँ को सुमिरता कि मैंने तो बैच के साथ ही अपनी पदोन्नति चाही थी, ये देते समय तुमने कंजूसी क्यों की माँ? जिन के हो गये थे वे आपस में एक दूसरे को बधाई दे रहे थे। एक दो मित्रों को छोड़ कर हम तीन को कोई नहीं पूछ रहा था। और जो पूछ भी रहे थे वे भी सांत्वना दे रहे थे कि आने वाले कुछ माहों में वेटिंग क्लियर हो जाएगी। झूठी तसल्ली, आशा की कोई किरण नहीं थी उसमें।

“हम प्रयास कर रहे हैं, कुछ रास्ता निकल सकता है” तीन दिन की घोर निराशा के बाद मित्र हरीश का फोन आया।

“कैसा रास्ता, क्या सबके साथ हमारा भी हो सकता है” मैंने अनमने भाव से पूछा “हाँ ... पूरा बैच एक साथ” उसका उत्तर था और मेरी उम्मीद फिर से माँ वैष्णो की ओर देखने लगी।

“माँ, सुन रही हो, पूरा बैच एक साथ” जैसे मैं माँ को रिमाइंड करा रहा था।

आगे के तीन दिन इसी उहापोह में निकल गये कि होगा कि नहीं होगा। अपुष्ट जानकारी मिलती कि यदि डेपुटेशन के लोगों को न गिना जाय तो नीचे वालों की सम्भावना बनती है। अर्थात् जो अन्य विभागों में कार्य कर रहे हैं और जिनकी पदोन्नति तो होगी किन्तु गिनती में नहीं लिए जायेंगे, यदि शासन चाहे तो। डरते डरते पता लगाया कि ऐसे कितने हैं, पता लगा ‘तीन’।



कभी बात बनती दिखती, कभी बिगडती। आदेश किसी के नहीं हुए थे। काम में भी मन नहीं लग रहा था। तभी एक दिन छोटा भाई पूना से आ गया। उसका कोई काम भोपाल में था। तय हुआ कि अगले दिन भोपाल चलेंगे।

“विपिन आये हैं, नर्मदा जी स्नान तो करा दो” सुबह उठते ही पत्नी बोली।

“सुझाव अच्छा है। भोपाल चलने से पहले चलो नर्मदा जी के स्नान कर आते हैं। क्यों विपिन ?? मैंने भाई से पूछा।

“हाँ भाईसाब चलो” विपिन ने कहा तो हम लोग नर्मदा नहाने चले गये।

लौट कर आये और दोनों भाई भोपाल को निकल लिए। भोपाल में विपिन के काम में मैं अपनी उदासी भूल गया और बिना आशा, निराशा के भाई के काम में लगा रहा।

सायं के पांच बजे विपिन का काम निपटा तो हम होशंगाबाद के लिए रवाना हुए। भोपाल ताल के किनारे व्ही आई पी रोड पर पहुँचे ही थे कि बैच मेट और मित्र सौरभ का फोन आया।

“अरे सुना है आदेश हो गया। पता लगा जरा।”

“किस किस का हुआ है?” मैंने डरते डरते पूछा।

“ये पता नहीं, तुम पता लगाओ” उसने कहा और फोन काट दिया।

मैंने डरते डरते ओ एस डी निगम साहब को फोन लगाया, जो मुझे बहुत मानते थे। “बधाई हो” फोन उठाते ही उन्होंने कहा।

“जी सर!”

“अरे भाई प्रमोशन की बधाई” उनका उत्तर था

“क्या सच में सर, मेरा भी नाम है?”

“हाँ हाँ, आदेश बताओ कहाँ फेक्स करा दूँ।”

“सर मैं तो भोपाल में ही हूँ। अभी आ जाता हूँ” मैंने कहा और वैष्णो देवी को मन ही मन धन्यवाद दिया।

“अरे ये तो अच्छा संयोग है। आ जाओ मिठाई लेकर” वे बोले और मेरा ध्यान संयोगों की ओर चला गया। मेरा भोपाल में आज होना एक संयोग

था, इतनी बड़ी खुशी के समय भाई का साथ होना संयोग था, निगम साहब के कार्यालय के पास ही हम थे उस समय, यह भी एक संयोग था।

और अनायास एक और संयोग पर मेरा ध्यान गया। भोपाल आने से पहले आज नर्मदा जी में स्नान किया था। मेरी आंखें झल झला आयीं।



चार वर्ष मैं होशंगाबाद में रहा। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर सुंदर जिला। खूब दौरे किये और भ्रमण के समय कार्य के साथ कहीं सुंदर घाटियाँ, कहीं घने वन और कहीं गांवों में बने नर्मदा घाट भी देखने को मिलते तो मन प्रसन्न हो जाता। सड़कों पर चलते अनेक वाहनों पर ‘नमामि देवी नर्मदे’ लिखा देखता तो कुछ वर्ष पूर्व उत्तराखंड की यात्रा याद आ जाती जहाँ बट्टीनाथ के रास्ते पर निकलने वाले सभी वाहनों पर ‘जय बट्टी विशाल’ लिखा रहता था।

सफल कार्यकाल के बाद भोपाल स्थानांतरण हो गया। लगा अच्छे कार्य का प्रतिफल है बड़ी जगह में पदस्थापना। सभी बताते थे कि राजधानी के कारण यहाँ काम अधिक है किन्तु होशंगाबाद में इतना काम किया था कि कुछ भी ज्यादा नहीं लगा। कलेक्टर साहब पूर्व परिचित थे, जिनके साथ होशंगाबाद में काम कर चुका था और जो काम को लेकर मुझसे बड़े प्रसन्न रहते थे। सो भोपाल में भी पूरे जोश खरोश से काम शुरू किया और देखते देखते मजा आने लगा वहाँ काम में।

अभी डेढ़ वर्ष ही हुआ था कि मित्र आरसी त्रिपाठी का फोन आया।

“क्या दुबारा होशंगाबाद जा रहे हो?”

“नहीं तो।”

“प्रस्ताव शासन को गया है। यही चर्चा है कि तुम स्वेच्छा से जा रहे हो।”

“मैं क्यों जाऊँगा? और जाता तो क्या आपको नहीं बताता।”

“इसका मतलब जो भोपाल आना चाह रहा है उसने ग़लत ख़य़ूमर उड़ाई है, अपना काम बनाने।”

“पर मैं बिलकुल नहीं जाना चाह रहा।”

“बात करो जाकर” उन्होंने कहा और फोन काट दिया।

मैं तो सुन कर दंग रह गया था। शासकीय विभागों में इस तरह की बातें होती रहती हैं, विशेषकर समान पद धारी एक दूसरे की उठापटक करते रहते थे पर मुझसे तो किसी को कोई आपत्ति नहीं थी। सब कहते थे कि मेरा काम अच्छा था, फिर बिना बताये ऐसा क्यों हुआ। मैं तुरंत प्रमुख सचिव महोदय से मिलने उनके कार्यालय पहुंचा।

“पर तुम तो स्वयं ही जाना चाह रहे हो” वे छूटते ही बोले।

“सर मैं क्यों वापस होशंगाबाद जाना चाहूँगा जहाँ चार साल से अधिक रहा हूँ। यहाँ तो मुझे डेढ़ साल ही हुआ है। इतनी जल्दी ट्रांसफर।”

“हाँ मुझे भी आश्चर्य हुआ, किन्तु यही बताया गया था कि तुम जाने के इच्छुक हो।”

“सर अगर मैं जाना चाहता तो आपसे आकर निवेदन करता। और यदि जाना ही चाहता तो और किसी जगह की कहता, होशंगाबाद क्यों जाना चाहूँगा। जहाँ एक बार रह लो वहाँ दुबारा नहीं जाना चाहिए।” मैंने प्रतिकार किया और सदैव से सुनी वही बात दुहरा दी की जहाँ एक बार रह लो वहाँ दुबारा नहीं जाना चाहिए। हालाँकि क्यों नहीं जाना चाहिए, कारण मुझे आज तक समझ नहीं आया।

“किन्तु अब तो प्रस्ताव फाइनल हो चुका है।”

“सर यदि ज़रूरी ही हो तो मुझे मंदसौर, नीमच तरफ भेज दो। बेटी जयपुर पढ़ती है, मुझे जाना आना पास पड़ेगा।”

“ठीक है देखते हैं, क्या कर सकते हैं।” उनका उत्तर था।



मेरा कोई प्रयास काम नहीं आया और दो माह बाद होशंगाबाद दुबारा स्थानांतरण हो गया। अनिच्छा से कार्य सँभालने आया। पुराना स्टाफ देख कर खुश हो गया पर मुझे यही लग रहा था कि ये क्या सोच रहे होंगे।

“लौट के बुद्ध वापस आये।” मैं मन ही मन सोच रहा था कि लोग क्या प्रतिक्रिया दे रहे थे।

सब कुछ जमा जमाया था। स्टाफ और समुदाय के लोगों ने हाथों हाथ लिया। माँ नर्मदा का नाम ले पुनः कार्य शुरू किया।

वही क्वाटर, वही कॉलोनी, कुछ ही दिनों में जिन्दगी फिर व्यवस्थित हो गयी। सुबह का घूमना फिर से शुरू।

“माँ मेरा तो बिलकुल मन नहीं था आने का, अब तुमने बुलाया है तो तुम्हीं संभालना” नित्य घूमते हुए जब भी नर्मदा माई के सामने पहुंचता तो मन ही मन यही प्रार्थना करता।

होशंगाबाद में पहले रहते हुए जिले के अनेक प्रबुद्धजनों को जोड़ कर पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मोड में कुपोषण पर बहुत कार्य किया था। मेरे जाने के बाद वह संगठन छिन्न भिन्न हो गया था। जब दुबारा आया तो उन सबको बड़ी प्रसन्नता हुई मानो उन्हीं की आरजू पर वापस आया था। कलेक्टर महोदय ने भी मेरे उस कार्य के बारे में सुन रखा था, उन्होंने भी लोगो को फिर से जोड़ने की इच्छा जताई। सब मिले, मिलकर फिर से काम शुरू किया, पुराने संगठन को निर्जीवता से सजीवता में लाया गया।

धीरे धीरे दिन, दिन से महीने बीतते गये। काम में मन लगने लगा था पर रह रह कर यही ख्याल आता कि कहाँ भोपाल जैसी बड़ी जगह और कहाँ होशंगाबाद। जब यहाँ से गया था तो सभी ने यही कहा था कि अच्छा काम था इसलिए बड़ी जगह भेजा गया है। एक बार बड़ी जगह सफलता पूर्वक कार्य करने पर फिर कभी छोटी जगह आना नहीं होगा।

“अच्छा काम करने का क्या यही फल मिलता है” सोच सोच कर मन में खिन्नता आ जाती थी। बहुत प्रयास करता भूलने का किन्तु यदा-कदा मन में पीड़ा उठ ही जाती थी।

एक दिन भ्रमण पर जा रहा था कि भोपाल से वरिष्ठ अधिकारी का फोन आया कि भोपाल में कुछ चोर और अपराधी किस्म के कर्मचारियों ने शासकीय धन की बड़ी हेराफेरी कर दी है। यद्यपि मेरे समय में भी यह मुद्दा उठा था किन्तु वित्त विभाग की जाँच में झूठा पाया गया तो मैं निश्चिंत हो गया था। किन्तु मालूम हुआ कि बेईमान और निकृष्ट कर्मियों ने अपराधिक रूप से बड़ा घोटाला किया था जो बमुश्किल पकड़ में आया। सारे कार्यालयों में गड़बड़ हुई थी और मेरे समय में मेरे कार्यालय में भी उन पापियों ने चोरी की थी।

मैं सुन कर बेचैन हो गया। रह रह कर उन घृणित कर्मचारियों का चेहरा सामने आता। मुझे दैवीय संकेत तो हुए थे किन्तु मैं समझ ही नहीं

सका की शासकीय नौकरी करने वाले पढ़े लिखे लोग भी इतना नीचे गिर सकते हैं कि जिस संगठन ने उन्हें नौकरी दी उसे ही चूना लगाने लगे, खोखला करने लगे। मैं सोच ही नहीं पाया कि संसार में अभी भी इतने नीचे, पापी हैं जिन्हें इन्सान कहना इन्सान को गाली देना है। उन्हें चोर भी नहीं कह सकते क्योंकि चोर तो अपनी रिस्क एंड कास्ट पर काम करता है, पकड़ा जाने पर खुद ही सजा काटता है किन्तु ये नीचे तो न जाने कितने निर्दोषों को फंसा कर लूट मचाये थे, अक्षम्य और जघन्य अपराधी थे वे।

मैं उस दिन रात की ट्रेन से दिल्ली बिटिया के पास जा रहा था। नर्मदा ब्रिज से ट्रेन गुजरी तो मैं उठ बैठा। हाथ जोड़ माँ से गिला शिकवा करने लगा।

“माँ, मुझे क्यों भेजा था वहां भोपाल, जब वो इतनी खराब जगह थी” कहते कहते। मेरी आंखें भर आयीं।

“मुझे जब यहीं आना था तो मैं नहीं ही जाता। तुमने रोका क्यों नहीं” भरी आँखों से मन ही मन कह रहा था। पुल पर गाड़ी बढ़ रही थी और मैं अवसाद के क्षण में बैठा था। राम चरित मानस का एक दोहा स्मरण हो आया।

“तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ।  
आपुनु आवइ ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जाइ।”

भोपाल की उस धोखाधड़ी ने मुझे अंदर तक तोड़ कर रख दिया था। मैं नित्य घूमने जाता तो नर्मदा माँ के सामने यही कहता कि माँ मैं क्यों गया वहां, तुमने क्यों भेजा वहां। एक दिन जब मैं यही शिकायत दुहरा रहा था तो जैसे अंतर्मन से आवाज आयी, जैसे माँ नर्मदा कह रही थी।

“मैं ने कहाँ भेजा था। तुम खुद गये थे। होशंगाबाद में तुम्हें बहुत समय हो गया था। विभाग के अच्छे अधिकारी थे तो बड़ी जगह डिजर्व करते थे। यही सोच कर गए थे ना। कभी मुझसे आकर कहा भी था, पूछा भी था कि मैं चला जाऊँ। मैंने तुम्हें नहीं भेजा था। हाँ जब तुम उस षड्यंत्रकारी जगह में फंस गये थे तो मैंने ही तुम्हें वहां से निकाला, अपने पास बुलाया है।” मुझे लगा माँ सत्य ही तो कह रही है, मैं निरुत्तर हो गया।

“ठीक है माँ, अब तू ही संभाल, मुझ पर कोई कलंक न लगने पाए माँ।” मैं हाथ जोड़ धीरे धीरे बुदबुदाया।

अब नित्य की प्रार्थना में शिकायत के स्थान पर आभार का भाव रहने लगा और यही विनती कि माँ कोई कलंक न लगने पाए।

चिंताओं के इसी उधेड़बुन में दिन निकलने लगे। धीरे-धीरे काम में मन लगाया। कुपोषण के साथ ही बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी विभाग की नई योजनाओं पर जोरशोर से काम शुरू किया। सामुदायिक सहभागिता में दिल्ली में एक पुरस्कार भी मिला। जिले में सहयोगी लोगों की सूची बढ़ती ही जा रही थी।

भोपाल के पीड़ादायक एपिसोड से मन हटा कर खुद को काम में डुबो लिया था। सब कुछ ठीक चल रहा था। विभाग जिले के अच्छा प्रदर्शन करने वाले विभागों में था। कुछ महिने फिर से गुजरे कि अचानक एक दिन खबर आयी कि भोपाल प्रकरण में किसी जाँच में मुझे भी दोषी मान लिया गया है और बिना मेरा पक्ष सुने मेरे विरुद्ध कार्यवाही हेतु शासन को प्रस्ताव चला गया है। वह मेरे जीवन का सबसे बुरा दिन था। कहाँ सदैव अच्छे कार्य से सराहना लेने वाला जिसने कभी ऐसी स्थिति की कल्पना भी नहीं की थी, सबसे खराब अधिकारी के रूप में एक दिन में ही नाम बिगाड़ दिया।

मैं आर्त स्वर में ईश्वर की शरण में था। पत्नी ने सच्चे मित्र की तरह ढाढस बंधाया। “मुझे अपने भगवान पर पूरा भरोसा है। जब तुमने कुछ किया ही नहीं, तो तुम्हें कुछ नहीं होगा।”

उसने कहा तो मुझे घोर निराशा के उन क्षण में भी कुछ सांत्वना मिली। मैंने देखी थी उसकी पूजा। एक वर्ष से अधिक समय से तो वह निरंतर नित्य सुंदरकांड का पाठ करती थी।

“तुम जाम सांवली हो आओ” उसने कहा। जाम सांवली छिंदवाड़ा में हनुमान जी का सिद्ध स्थान है। छिंदवाड़ा अपनी पदस्थापना के समय में नियमित अकेला या सपरिवार वहां जाता था। होशंगाबाद आने के बाद भी कभी-कभी हम लोग उस चमत्कारिक मन्दिर के दर्शन करने जाते थे जिसमें लेटे हुए हनुमान की भव्य व विशाल मूर्ति स्थापित है।

मैंने दूसरे दिन ही जाम सांवली जाने का निश्चय किया। यद्यपि उस दिन तो नहीं मैं वहां बाद में जा सका। इसी बीच बुरहानपुर के प्रसिद्ध

रोकडिया हनुमान को मेरे संकट टालने की मन्नत सौरभ द्वारा करायी गयी। संकट मोचन से बढ़कर कौन संकट काट सकता था।

ईश्वर है या नहीं इस पर वही बहस कर सकते हैं जिन्हें अपने ज्ञानी होने का भान होता है। मोटिवेटर संदीप महेश्वरी के एक विडियो अनुसार जिसने उस परमसत्ता की शक्ति का अनुभव कर लिया वो तो दम ठोंक कर कहेगा कि हाँ मैंने उसे देखा है वरना अधिकांश लोगों का उत्तर तो यही होगा कि पता नहीं। मैं प्रथम वर्ग में आता हूँ जिनका उत्तर हाँ में होता है।

संकट का वह समय धीरे-धीरे आगे बढ़ा। कहाँ यह लग रहा था कि बुरे से बुरा कुछ भी हो सकता है और कहाँ सामने दिखते दुर्भाग्य की घड़ियाँ खिसकने लगीं। असम्भव सा दिख रहा यह सब जिसे मैं ईश्वर का चमत्कार ही कह सकता था।

“पूर्णिमा आ रही है। नर्मदा स्नान करने चलेंगे” एक दिन मंजुल, मेरी पत्नी बोली। मैं यदा-कदा पर्व के दिनों स्नान करने चला जाता था और यह क्रम पदस्थापना के पहले कार्यकाल से ही चला आ रहा था। किन्तु पत्नी के साथ एक दो मौकों पर ही जाना हुआ था। तड़के ही पूर्णिमा के दिन इस बार दोनों साथ गये।

माँ नर्मदा के स्नान कर मैं भोपाल चला गया। मित्र आर सी के साथ शासन को देने अपना अभ्यावेदन बनाया और किसी क्षीण आशा के साथ प्रस्तुत कर दिया। किसी भी दिन कुछ भी हो सकता था वाली स्थिति उस अभ्यावेदन से रुकी। नर्मदा जो कभी रुकना नहीं जानती, ने कार्यवाही रोक दी थी।

रात्रि में नीद खुल जाती थी तो यही सोचता था कि पापियों के कारण सीधा साधा जीवन जीने वाला मैं कितना तनाव झेल रहा था। होशंगाबाद में मेरे कुछ शुभ चिंतकों को इस स्थिति के बारे में पता लग गया था। एक सुबह तनाव में मोर्निंग वाक कर रहा था कि एक पत्रकार मित्र मिल गये थे।

“मुझे पता है आपके बारे में, पर चिंता नहीं करना माई सब ठीक करेगी” उनकी सांत्वना थी।

“चिंता की तो बात है पर ये अच्छा है कि तुम इस समय माई के पास हो, वो सब सही करेगी” एक मित्र ब्रजेश, जो कभी यहाँ रह गये थे, ने फोन पर कहा तो लगा कि जो माँ के आंचल में रह जाता है उसे कितना भरोसा हो जाता है उस पर।

मेरी दो किताबें “मेरा राम मेरा देश” और “मथुरा ईश” उस समय तक प्रकाशित हो चुकी थीं। एक दिन मेरे एक और पत्रकार मित्र मेरे साथ थे। बातों-बातों में उन्होंने सलाह दी कि मैं नर्मदा जी पर किताब लिखूं। मैं नर्मदा जी को बहुत मानने लगा था किन्तु उन पर किताब? मैंने उनसे तो कुछ नहीं कहा पर लगा कि नर्मदा पर क्या किताब लिखी जाय, वह तो नीरस विषय होगा।

“आपने उत्तर नहीं दिया” मेरी कोई प्रतिक्रिया न देख कर वे बोले।

“मैं सोचूंगा” बात को टालने के उद्देश्य से मैं बोला।

उन दिनों मैं तक्षक पर लिख रहा था। शिव के उपर लिखी मेरी किताब प्रेस में थी। नर्मदा विषय पर किताबें लिखने के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था और आज भी जब मुझे यह परामर्श दिया गया तो कतई मन को प्रोत्साहित करने वाला नहीं लगा।

बात आयी गयी हो गयी। तनाव में रहने के कारण इस समय लिखना, पढ़ना सब बंद था। एक दिन नेट पर कुछ देख रहा था कि अचानक नर्मदा के बारे में विकिपिडिया पर देखने लगा। पढ़ा तो अच्छा लगा। नर्मदा पर पुस्तकें एकत्र करने का विचार उसी दिन पनपा।

निरंतर चल रहे तनाव के कारण मन स्थिति ठीक नहीं थी जो लिखने का उत्साह जगता। फिर भी मित्रों और परिचितों से नर्मदा की किताबें लेना शुरू की। उन्हीं दिनों अमृत दर्शन ने नर्मदा पुराण प्रकाशित किया जिसे मेरे एक मित्र दे गये थे। बेगड़ जी का यात्रा वृत्तांत और ज्ञान प्रकाशन का नर्मदा साहित्य लिया।

धीरे धीरे विचार बनने लगा कि विषय रोचक हो सकता है। उन बातों को उठाया जा सकता है जो अब तक अनछुई थीं। जैसे नर्मदा किनारे के लोगों में प्रचलित नर्मदा माई के साक्षात् चमत्कार, नर्मदा के तीर्थ, रमणीक नर्मदा और नर्मदा घाटी, नर्मदा पर्यटन और पर्यावरण, नर्मदा के सन्यासी, नर्मदा की जड़ीबूटी, नर्मदा का पौराणिक महत्व। इन सब विषयों पर रोचक किताब लिखी जा सकती थी।

हालात जस के तस थे। कार्यवाही रुकी थी पर बुरा वक्त अभी भी टला नहीं था और प्रतिक्रिया कुछ भी होने का अंदेशा बना रहता था। हालाँकि ईश्वर पर भरोसा, पिपरिया वाले पंडित जी द्वारा की गयी भविष्यवाणी, कि



कुछ बुरा होने का योग ही नहीं है, समय है निकल जायेगा और पत्नी का उसकी भक्ति में विश्वास के सहारे ही दिन कट रहे थे।

love your work, but do not love your organization, because you may not know when your organization stops loving you...

डॉ. अब्दुल कलाम का लिखा ये कोटेशन रह रह कर याद आता था। जिस विभाग में टूट कर कार्य किया और सदैव इस मुगालते में रहा कि अच्छा काम करने के कारण विभागीय वरिष्ठ अधिकारियों का चहेता था। मुगालता अब टूट गया था पर यदा-कदा यह ज़रूर सुनने को मिलता कि अच्छी इमेज के कारण कोई भी दोषी नहीं मान रहा था, हाँ लापरवाही हो सकती थी किन्तु घृणित कृत्य में लिप्तता नहीं थी, यह सभी मान रहे थे किन्तु खुल कर नहीं कह रहे थे।

एक दिन मित्र अखिलेश का फोन आया की शाम को भोपाल आ जाओ। उच्च स्तर पर अनुकूलता बनाने मुझे अपना पक्ष रखने का अवसर मिला है, जो अच्छा संकेत है। मैं शाम को भोपाल के लिए निकला। अभी बीच रास्ते ही पहुँचा था की अखिलेश का फिर फोन आया।

“हाँ अब्दुल्लागंज से आगे निकल गया हूँ। एक घंटे में पहुँच जाऊँगा” फोन उठाते ही मैंने कहा।

“नहीं, आज नहीं आना है। फिर कभी भी सम्भावना बनेगी तो कॉल करूँगा।”

“फिर??”

“लौट जाओ वापस।”

“कब आऊँ??”

“जैसे ही स्थिति बनेगी, बताऊँगा।”

उम्मीदों पर घड़ों पानी पड़ गया। मैं निराश हो लौट आया।

निराशाजनक माहौल में लिखने पढ़ने में मन नहीं लगता था सो तक्षक पर कार्य बंद हो चुका था। कभी-कभी नर्मदा परिक्रमा पथ, बीच में पड़ने वाले स्थानों की जानकारी लेने का क्रम जारी तो था, पर घिसट-घिसट कर।

धीरे-धीरे तक्षक को रोक कर माँ नर्मदा पर लिखने की इच्छा शक्ति दृढ़ होती जा रही थी। ठीक ही था पिता शिव के बाद पुत्री नर्मदा। तीन किताबें,

नर्मदा पुराण, इंटरनेट पर नर्मदा के बारे में जानकारी, गूगल मैप्स से नक्शे अर्थात जितनी सामग्री हो सकती थी एकत्र कर ली।

लोगों के परिक्रमा विवरण पढ़ पढ़कर यह भी इच्छा होने लगी की परिक्रमा की जाय और यदि अभी पैदल संभव नहीं तो मुख्य स्थानों को देखा जाय। यूँ तो अमरकंटक एक बार जा चुका था परिवार सहित और 1300 कि.मी. लम्बाई की नर्मदा नदी होशंगाबाद जिले में 240 कि.मी. की यात्रा करती थी जो मेरे लिए संतोषजनक बात थी। ओमकारेश्वर और महेश्वर भी अनेक बार जा चुके थे फिर भी अनदेखे घाट देखने की इच्छा थी।

“भृगुकच्छ अथवा भरूच से शुरू किया जा सकता है किन्तु पहले लिखना शुरू करें” एक दिन मन में विचार आया, फिर ख्याल आया कि किसी दिन स्नान का पर्व देख कर नर्मदा जी में नहा कर शुरुआत की जाय। जल्द ही मार्ग शीर्ष अमावस्या आयी। सुबह स्नान किया और माँ की कृपा मांग शुरुआत की।

“माँ तू तो हजारों वर्षों से बह रही है। मुझसे न जाने कितने आये और चले गये। तेरी महिमा का बखान करने से तुझ पर कोई असर नहीं पड़ेगा किन्तु मैं धन्य हो जाऊँगा। सो कृपा करना माँ।”

भोजन अवकाश में ‘मेरा अनुभव’ से शुरुआत की। एक पेज ही लिख पाया था कि अखिलेश का फोन आया।

“आज शाम को आ जाओ। तुम्हारे पक्ष में सम्भावना आज फिर बन गयी है।” उधर से आवाज आयी और मेरी तो बोलती ही बंद हो गयी। माँ नर्मदा के प्रभाव को सुमिर रहा था। आज भी स्नान, आज भी कृपा...

“क्या हुआ? चुप क्यों हो? आ रहे हो न?”

“हाँ हाँ, मैं आठ बजे तक आ जाऊँगा” मैंने कहा और डबडबाई आँखों से माई को धन्यवाद दिया।



## जब जब जो जो होना है, तब तब सो सो होता है

**17** Dec. 18 का दिन। आज एक ऐसे स्थान पर जाने का मन हुआ जो नर्मदा माँ के एक लाडले सपूत से जुड़ा था। गौरी शंकर महाराज की समाधि होशंगाबाद जिले के खोखसर ग्राम में है। नगर से मात्र 17 कि.मी. दूर इतना महत्वपूर्ण और इतना रमणीक स्थान अब तक मुझसे कैसे छूटा रहा। पहले कार्यकाल के चार वर्ष और दूसरे के दो पूरे होने को थे किन्तु कैसा भी संयोग नहीं बना यहाँ आने का जबकि पूरा जिला ही कार्य क्षेत्र था। सच ही कहा है जब जब जो जो होना है, तब तब सो सो होता है।

गौरी शंकर महाराज के बारे में तब से पढ़ रहा था जब से नर्मदा के बारे में पढ़ना शुरू किया। और इन दो माह की अवधि में कई किताबों में जैसा पढ़ा उसके अनुसार एक संत हुए कमल भारती जी जिन्होंने विस्तृत नर्मदा यात्रा प्रारंभ की थी। उन्होंने बाकायदा जमात स्थापित की थी जिसमें अनेक सन्यासी, हाथी, घोड़े थे और वह पूरा लाव लश्कर साल भर नर्मदा की परिक्रमा करता था। गौरीशंकर महाराज इसी जमात के सदस्य और भंडार अधिकारी थे। मन वचन और कर्म से पूरे वैरागी गौरीशंकर महाराज गुरु कमल भारती महाराज को जंच गये और उन्होंने पूरी जमात गौरीशंकर महाराज को सौंप कर ओमकारेश्वर में अपना स्थायी निवास बना लिया।

गौरीशंकर महाराज ने जमात के कार्य को आगे बढ़ाया और सैकड़ों की संख्या में संत, हाथी, घोड़े उनके कारवां में थे और था एक विधिवत ध्वज जिसे निशान कहा जाता था। जन्म भर नर्मदा की परिक्रमा करने वाले

संत गौरीशंकर महाराज के अनेक शिष्य हुए जिनमें संसार प्रसिद्ध दादा धूनी वाले भी थे।

दादा धूनी वाले की समाधि खंडवा में है और एक बार मैं परिवार सहित वहां जा चुका हूँ। दादा धूनी वाले का बड़ा नाम है और गुरु पूर्णिमा के दिन लाखों की संख्या में उनके शिष्य खंडवा पहुँचकर अपने गुरु को आदरांजली देते हैं। जब यह जाना की ऐसे महान संत के गुरु की समाधि होशंगाबाद में है तो जाने की इच्छा हुई।

माँ नर्मदा की कहानी प्रारंभ से प्रारंभ करना चाहता था और इसके लिए आवश्यक था की अमरकंटक से शुरू किया जाय किन्तु फिर मन में आया कि परिक्रमा का तो अर्थ ही है पूरा चक्कर लगाना तो कहीं से भी शुरू करें क्या फर्क पड़ता है। और जब कहीं से भी शुरू कर सकते हैं तो गौरीशंकर महाराज की समाधि से ही क्यों न की जाय।

यही सोचकर आज मन बना ही लिया कि चलना है। शासकीय कार्य भी हो जाय और मन का काम भी, सो लाखे वाहन चालक को बुलाया और पहुँच गया खोखसर। शासकीय काम निपटाया, ग्रामीणों से पूछा कि -

“यहाँ गौरीशंकर महाराज की समाधि है??”

“हाँ है न साब, घाट पर है” एक ग्रामीण बोला।

“सुना है उनकी बड़ी मान्यता थी।”

“सिद्ध महात्मा थे, गुरु पूर्णिमा पर मेला भरता है, निशान चढ़ाने दूर दूर से लोग आते हैं” आंगनवाडी कार्यकर्ता ने बताया।

“कहाँ से जायेंगे?”

“मैंने देखा है साब, चलो ले चलता हूँ” लाखे बोल पड़ा।

पूरा गाँव ही नर्मदा के किनारे बसा था। समाधि स्थल तक सड़क गयी थी। पहुँचे, गाड़ी से उतरते ही पाया की भव्य था समाधि स्थल। इस छोटे से गाँव में इतना सुंदर स्मारक होगा, कल्पना भी नहीं की थी। नर्मदा के किनारे बड़े भाग में फैला साफ स्वच्छ और सुंदर एक बड़े परकोटे से घिरा स्थान था जिसमें अंदर तीन छोटे मन्दिर, बड़ी और पक्की खुली जगह, बगीचा, धर्मशाला, पुजारी और कार्यालय कक्ष, सदावत वितरण केंद्र। मन को मोहने वाला सब कुछ था वहां।

“लाखे कोई दिख नहीं रहा” मैंने कहा।

“दोपहर बाद का समय है, अंदर होंगे, मैं देखता हूँ” लाखे बोला और आवाज लगायी।

“पंडित जी! पंडित जी...”

एक सज्जन बाहर निकलकर आये। प्रश्न सूचक निगाह से देखने लगे।

“आप पंडित जी...” लाखे ने पूछा।

“पंडित जी अंदर अपना खाना बना रहे हैं। बोलें...”

“समाधि दर्शन को आये थे। आपका परिचय?” मैंने कहा तो वे दल्लान की सीढ़ियां उतरकर हमारे पास कोर्ट यार्ड में आ गये।

“मैं सुरेश महाजन हूँ। पूना से आया हूँ।”

“पूना से ...यहाँ कोई विशेष प्रयोजन?” पूछा मैंने।

“कल महाराज जी की बरसी थी न। हम लोग हर साल बरसी पर यहाँ ज़रूर आते हैं” महाजन जी बोले तब तक उनका एक साथी भी अंदर से निकल आया।

“अजब संयोग है कल बरसी और आज हम यहाँ। क्या महाराज जी ने ही बुलाया है” मैं मन ही मन सोचने लगा।

“क्या सोच रहे हैं जी।”

“यही कि आप इतनी दूर से आये हैं और हम पास रह कर भी अब तक न आ सके।”

“भाग्यशाली हैं कि यहाँ आप आये तो। बड़े चमत्कारी संत थे गौरीशंकर महाराज” वे बताते जा रहे थे और हम लोग जहाँ तीन छोटे-छोटे मन्दिर थे, की ओर चलते जा रहे थे। “ये जो बीच का शिव मन्दिर है वही गौरीशंकर महाराज की समाधि है। बाएं काशीनाथ जी महाराज और दाहिने नर्मदानन्द की समाधियाँ हैं। देखिये पीछे नर्मदा कितनी सुंदर दिख रही हैं।”

“सो तो है, लेकिन ये शिव मन्दिर के नीचे समाधि?”

“अब आप इसी से समझ लो कि गौरीशंकर महाराज क्या थे। शिव रूप ही थे साक्षात्, नर्मदा जी इन्हें सिद्ध थी। बार बार नर्मदा जी ने इन्हें दर्शन दिए थे और इनकी एक ही मांग रहती थी कि शिव इनके पास बाल रूप में आयें। जब किसी तरह नहीं माने तो बाल रूप में ही शिव आ

गये जो आगे चल कर धूनी वाले दादा के नाम से विश्व विख्यात हुए।” महाजन जी बताते जा रहे थे और बोलते बोलते रोमांचित हो रहे थे। बातों बातों में उन्होंने बताया कि वे मेकेनिकल इंजिनियर थे। दादा धूनीवाले में ऐसी प्रीति लगी कि तीस वर्ष नौकरी करने के बाद स्वैच्छिक सेवानिवृत्त हो गये। अब दादा धूनीवाले की सेवा में ही रहते हैं। उन्होंने आठ गादी के बारे में बताया जो सिद्ध संतों के दरबार हैं। जिनमें श्री कमल भारती जी महाराज ओमकारेश्वर, श्री गौरीशंकर जी महाराज खोकसर, श्री दुर्गानंद जी महाराज आवली घाट होशंगाबाद, श्री शिवानन्द जी महाराज छीपानेर सिहोर, श्री दादा जी धूनीवाले खंडवा, श्री हरिहर भोले खंडवा नर्मदा क्षेत्र में और श्री रेवानंद गुरु अम्बाला बुरहानपुर, श्री भक्तानंद जी गुरु नीमगाँव, चोपड़ा जलगाँव श्री सुपदानंद जी गुरु। चहारदी, चोपड़ा जलगाँव ताप्ती किनारे स्थित हैं।

श्री सुरेश महाजन के अनुसार ये सभी दरबार के सिद्ध संत एक दूसरे से कनेक्टेड थे और आज भी हैं। उन्होंने एक वाक्या बताया की जलगाँव में एक पुल छतिग्रस्त हो कर गिरने वाला था। बिल्डर बॉम्बे का था उसे धूनीवाले दादा ने स्वप्न दिया की जलगाँव वाले दरबार में जाय और वहां के संत से पूजा कराये तो संकट टल जायेगा। बिल्डर ने वैसा ही किया और पुल बच गया, जो आज भी सुरक्षित खड़ा है। ऐसे न जाने कितने किस्से, अपने अनुभव महाजन जी बताते जा रहे थे और मैं सोच रहा था कि वे चलते फिरते नर्मदा संतों के ऐनसाईक्लोपीडिया हैं।

यह भी सुखद संयोग था कि मैं आज यहाँ आया और महाजन जी से मुलाकात हुई। अच्छा रहा बरसी के एक दिन बाद आया तो खुलकर उनसे बात हो सकी। बरसी वाले दिन उन्हें फुर्सत न मिलती और आज चूक जाता तो वे यहाँ से चले जाते। चर्चा में वे बता रहे थे कि वे लोग कल ही यहाँ से निकल जायेंगे। आंवली घाट होते हुए खंडवा जायेंगे क्योंकि दादा जी की बीस दिसम्बर को बरसी है। उनकी बातों से लग रहा था कि वे आठों गादी के सभी संतों की बरसी में जाते हैं और इस तरह आधा बरस उनका यात्रा में ही निकलता है।

“आप साईं खेड़ा गये हैं?। आपके जिले में ही है” अचानक वे पूछ बैठे।

“नहीं अभी तक तो जाना नहीं हो पाया” मैं बोला।

“ज़रूर जाइये। वह स्थान दादा धूनीवाले का प्रकट स्थान है। बाबा वहीं प्रकट हुए थे, उनका जन्म नहीं हुआ था। आठ नौ बरस के बालक के रूप में प्रकट हो वे गौरीशंकर महाराज की सेवा में आ गये थे। साईं खेड़ा में नर्मदा के साथ दूधी नदी का संगम है, वही स्थान धूनीवाले दादा जी का प्राकट्य स्थान है। वहां सुदामा प्रसाद अग्रवाल रिटायर टीचर से अवश्य मिलीएगा, वे आपको दादा के चमत्कार के बारे में और बताएंगे।”

मैंने देखा कि महाजन जी भाव विव्हल हो जाते थे सुनाते सुनाते। उनके रोंगटे खड़े हो जाते थे, स्वयं कई बार उन्होंने कहा की वर्णन करते हुए बार-बार उन्हें लग रहा है कि किसी ने टंडी में टंडा पानी उपर डाल दिया हो और शरीर कंप कंपाने लगा हो। भाव के अतिरेक की दशा मैंने महाजन जी की देखी। अंग्रेज कर्नल का वक्तव्य उन्होंने बताया जिसमें उसने कहा था कि भारत में अनेक सिद्ध संत हैं, जिनके लिए कुछ भी करना असम्भव नहीं है।

गौरीशंकर महाराज की विशाल जमात को अंग्रेजों ने रोक दिया कि इतनी बड़ी संख्या को कौन खिलाता पिलाता है।

“नर्मदा मैया देती है।” गौरीशंकर महाराज ने उत्तर दिया था।

अंग्रेजों को भरोसा नहीं हुआ तब गौरीशंकर महाराज ने नर्मदा में हाथ डाल कर हीरे, जवाहरात, सोना चांदी निकाल दिए। आभूषण, रत्नों से टोकरे भर गये।

सचमुच इस दुनिया से परे एक रहस्यमयी दुनिया है, भगवान की दुनिया, सिद्ध संतों की दुनिया। पहले मैं ये सब कपोल कल्पित मानता था किन्तु जब से पॉल ब्रंटन की पुस्तक गुप्त भारत की खोज, रोबिन शर्मा की मोंक हु सोल्ट हिज फेरारी, योगानन्द परमहंस की autobiography of a yogi, को पढ़ा है और अपने अनुभव जो महसूस किये हैं, से साफ लगता है कि इन सब बातों का अर्थ है और ये आंशिक अथवा पूर्ण रूप से सत्य है।

महाजन जी बता रहे थे कि भारत भूमि को संतों का मायका कहा जाता है। उनकी यह बात सोलह आने सही है। एक से एक संत इस धरा पर हुए हैं जिन्होंने योग तप से असम्भव को संभव कर दिखाया है। इन्हें ईश्वर के पुत्र, पैगम्बर कुछ भी कह सकते हैं। वैदिक काल से ही यहाँ भारत में ऐसे ऋषि, मुनि, संतो की लम्बी श्रंखला रही है। ऐसे ईश्वर के दूत, पैगम्बर और

पुत्र भारत के अतिरिक्त शेष विश्व में भी हुए हैं ईशा मसीह, पैगम्बर हजरत मुहम्मद को कौन नहीं जानता।

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में कहा है कि निर्गुण निराकार ईश्वर को जिस रूप में पूजो वह उसी रूप में सगुण साकार हो जाता है। इसीलिए हमें ऐसे अनेक देव तुल्य चरित्रों के उदाहरण मिलते हैं जिनका क्षेत्र विशेष में प्रभाव होता है और वे वहीं पूजे जाते हैं। अन्य स्थान पर कोई अन्य देव की पूजा होते दिखती है। किन्तु ये सभी अपने अपने क्षेत्र में सगुण रूप में अपने अनुयाइयों के सहायक बनते हैं। चाहे वे अवतार हों, अवतारी पुरुष हों या सिद्ध संत।

महाजन जी का जब भी मैं फोन नंबर लिखना चाहूँ, वे हाथ पकड़ लेते और कोई अन्य अनुभव बताने लगते कभी वे कहते कि कैसे दादा धुनीवाले ने एक कलेक्टर के चरित्र पर लगा झूठा दाग अपनी कृपा से मिटा दिया था। कभी नर्मदानंद महाराज के समाधि लेने के बाद भी उन्हें दिखने के अनुभव बताने लगते। उन्हें लग रहा था कि कैसे वे आज कम समय में मुझे अधिक से अधिक बता सकें।

उनसे विदा लेकर हम वहां से चले। पास में ही गोकर्णेश्वर महादेव का मन्दिर नर्मदा किनारे था। मन्दिर की देखभाल ट्रस्ट के द्वारा की जाती है। ट्रस्ट सामाजिक कार्य भी करता है। स्कूल और आंगनवाड़ी को अनेक सामग्रियां ट्रस्ट ने दी हैं। मंदिर परिसर में बनी धर्मशाला में नर्मदा परिक्रमा वालों को रुकने और भोजन सदावत की व्यवस्था है।

महाजन जी ने अनेक संस्मरण और फोटो मुझे भेजे। दूसरे दिन उन्होंने सन्देश भेजा कि आंवली घाट पर दुर्गानन्द जी महाराज दरबार के दर्शन कर छीपाने जा रहे हैं शिवानन्द महाराज के दरबार में, रात्रि में वहीं रुकेंगे। उनका यह सन्देश मुझे भावुक कर गया कि “आपको थोड़ा टाइम मिला, मानो लग रहा था बहुत पुरानी पहचान है, आगे दादाजी जानें।”



दिसम्बर 20 आज नानपा घाट पहुंचा। नानपा ग्राम होशंगाबाद से 25 कि.मी. नर्मदा के दक्षिण तट का गाँव है अर्थात् खोकसर, जहाँ दो दिन पहले गया था, से आगे नर्मदा के बहाव के साथ साथ चलने वाले मार्ग पर स्थित है।



गाँव के बाहर नर्मदा का तट है, जैसे ही ऊँची कगार पर पहुँचे नीचे बहती नर्मदा का दृश्य देख बरबस मुहं से निकला।

“स्विट्जरलैंड वालों को बुला लो, यहाँ आकर कहेंगे कि इतनी सुंदरता तो हमारे यहाँ भी नहीं है।”

“सही कहा आपने, अद्भुत नज़ारा है” लाखे ने जोड़ा।

लहराती हुई जा रही थीं नर्मदा। खोकसर तरफ से नानपा पहुँचने से एकदम पहले खूबसूरत मोड़ लिया है नर्मदा ने जैसे जब खोकसर से निकली हों तब ही मन में खूबसूरत शब्द आ गया हो और यहाँ पहुँच कर धरती पर उतार दिया हो। बीच नदी में एक उथली चट्टान दूर तक चली गई है। चट्टान से टकराकर धारा आवाज निकाल रही थी, जो झरने का आभास देती थी। चट्टान पर असंख्य पक्षी धुप सेंक रहे थे।

कगार से हट कर समतल मैदान में एक भव्य आश्रम बना है। पास जाकर देखा तो उस पर लिखा था ‘जगदानन्द क्रिया योग कुटीर’। उस खूबसूरत आश्रम ने स्थान की सुन्दरता में न जाने कितने चाँद लगा दिए थे। मैं निःशब्द कभी नीचे बहती नर्मदा को देखता, तो कभी उपर बने आश्रम को।

हम किंकर्तव्यविमूढ़ खड़े थे कि पहले नीचे जाकर नदी का सौन्दर्य देखें या आश्रम सह मन्दिर में जायं तभी महाराज जी निकल कर बाहर आ गये। औसत कद काठी के गेरूए वस्त्र पहने मुख पर निश्चलता के साथ तेज लिए स्वामी जी को देखकर बरबस प्रणाम में हाथ झुक गये। बात चीत प्रारंभ हुई। उनका नाम स्वामी गयानन्द गिरि था और वे पश्चिम बंगाल के रहने वाले थे।

“पश्चिम बंगाल! इतनी दूर से यहाँ आ बसने का कोई विशेष प्रयोजन स्वामी जी?” मेरा प्रश्न था।

“सब माई की इच्छा” उन्होंने नर्मदा माँ की ओर हाथ जोड़ते हुए कहा।

“अर्थात्??”

मेरे आश्चर्य करने पर वे मुस्कराने लगे और अपनी आपबीती बताने लगे।

“बहुत पहले की बात है। मैं उज्जैन कुम्भ ‘सिंहस्थ’ में आया था। वहाँ मुझे स्वामी शंकरानन्द सरस्वती नाम के एक महात्मा मिले। उन्होंने मुझे नर्मदा परिक्रमा हेतु प्रेरित किया। उनकी सिद्ध वाणी से जैसे मैं प्रभावित हो गया

और मैंने तुरंत नर्मदा परिक्रमा करने का निर्णय लिया। उनकी ही प्रेरणा से मैंने पहली परिक्रमा की यद्यपि बाद में मैंने उन्हें बहुत ढूँढा पर वे कभी नहीं मिले। उनके बताये निवास अनुसार मैंने ऋषिकेश तक की यात्रा की पर उन्हें नहीं देख पाया। लगता है जैसे मुझे माई को सौंप वे अंतर्ध्यान हो गये थे” उन्होंने कहा और भाव विभोर हो फिर नर्मदा के हाथ जोड़े।

“कब की थी आपने परिक्रमा?”

“पहली 1980-81 में शुरू की थी।”

“कितना समय लगा।”

“तीन साल से अधिक।”

“बाद में भी की क्या?”

“उसके बाद तो तीन बार और कर चुका हूँ। बार-बार माई के सहारे चलते-चलते जब इस स्थान पर आता तो लगता कि माई कुछ ऐसा कर दे कि यही रह जाऊँ सदा के लिए।”

“और माई ने आपकी सुन ली।”

“हाँ 2008 में अंततः मेरी मुराद माई ने पूरी की। गाँव के लोग अच्छे थे कुछ जमीन खरीदी, कुछ दान में मिल गयी और इस तरह यह आश्रम सह मन्दिर का निर्माण हुआ। अब तो यह स्थान इतना मन को रम गया है कि वर्ष में कभी-कभार ही बहार जाना होता है नहीं तो यहीं आनन्द मगन रहते हैं। सुबह उठते ही पयोषिनी नर्मदा जले में स्नान करते हैं और दिन भर क्रिया योग में लगे रहते हैं।”

“हाँ आपके आश्रम में भी जगदानन्द क्रिया योग कुटीर लिखा है।”

“स्वामी जगदानन्द गिरी हमारे गुरु हैं। उनके नाम पर ही यह क्रिया योग कुटीर है। आपने क्रिया योग का नाम तो सुना होगा।”

“हाँ यह संयोग ही है कि मैं आज कल परमहंस योगानन्द की autobiography of a yogi पढ़ रहा हूँ। उसमें क्रियायोग के बारे में बताया है।”

“तब तो आपको यह भी ज्ञात होगा कि पश्चिम बंगाल में लाहड़ी महाराज ने इसे शुरू किया था। लाहड़ी महाराज एक पहुंचे हुए सिद्ध महात्मा थे जो गृहस्थ थे और एक साधारण मनुष्य की भांति उन्होंने शासकीय सेवा पूरी की थी। किन्तु उनके चमत्कार देश विदेश तक फैले थे।”

“हाँ लाहड़ी महाराज के बारे में उस पुस्तक में विस्तार से वर्णन है। योगानंद के गुरु श्री युक्तेस्वर जी के गुरु थे वे।”

“हाँ और लाहड़ी महाराज के गुरु थे बाबाजी।”

“हाँ बाबा जी का वर्णन भी उस पुस्तक में श्रेष्ठ अवतारी पुरुष के रूप में है जो लाहड़ी महाराज के पूर्व जन्म के प्रयासों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से उन्हें गृहस्थ से सन्यास में ले कर आये थे। लाहड़ी महाराज को इन्होंने हिमालय में दर्शन दिए थे। पुस्तक में यहाँ तक लिखा है कि बाबा जी ने युक्तेस्वर जी को भी तीन बार दर्शन दिए थे।”

“ये सत्य है, वे आज भी यदा-कदा पात्र लोगों को दिखते हैं। ईश्वरीय अवतार हैं बाबा जी। लाहड़ी महाराज भी देवत्व तक पहुँचे थे। लाहड़ी महाराज की शिष्य पंक्ति में ही हमारे गुरु जगदानन्द जी हैं, जिन्होंने खड़गपुर के पास स्थित अपने आश्रम से क्रिया योग का विस्तार किया है।”

“और आप भी तो यहाँ उनके नाम पर क्रिया योग कुटीर बना कर प्रचार कर रहे हैं। क्रिया योग वास्तव में क्या है स्वामी जी?”

“अद्भुत है क्रियायोग। conscious breathing - science of tension, relaxation इसमें स्वांस के माध्यम से शरीर के प्रत्येक अंग की क्रिया होती है। क्रिया योग में जो स्वांस का सम्बन्ध शरीर से है उसको सजगता पूर्वक प्रकट करते हैं। स्वांस में फैलने और सिकुड़ने की क्रिया होती है। कहीं पर भी फैलाने और सिकुड़ने की क्रिया करें उसका प्रभाव फेफड़े पर पड़ेगा स्वांस पर पड़ेगा, रक्त के oxygenation पर पड़ेगा, रक्त से carbon dioxide निकलने पर पड़ेगा। जब हम दौड़ते हैं, चढ़ाई चढ़ते हैं या कोई काम करते हैं तो हम गहरी साँस लेने लगते हैं या काम करते करते हमें उबासी आने लगती है। वो इसलिए कि शरीर का प्रत्येक अंग का सम्बन्ध स्वांस से है और इसलिए शरीर के प्रत्येक अंग के प्रत्येक बिंदु पर संकुचन और प्रसार हो रहा है। वैसा ही जैसे पेट और सीने में होता है किन्तु इनकी तरह अनुभव नहीं होता। क्रिया योग में स्वांस के साथ प्रत्येक अंग का कड़ापन और ढीलापन निर्धारित किया जाता है। स्वांस को पूरा भरते हुए अंग विशेष को कड़ा करना और स्वांस को छोड़ते हुए ढीला करना। यह क्रिया प्रत्येक अंग हाथ, पैर, पेट, पीठ, सभी पर होती है। इसके निरंतर अभ्यास से यह आभास होने लगता है कि शरीर के भिन्न भिन्न अंग वेक्स से बने हैं। ये

वेक्स निकट आती हैं तो शरीर बनता है और दूर जाती हैं तो विघटित होता है। इसलिए क्रिया योग में पारंगत सिद्ध संत शरीर को कहीं भी प्रकट कर लेते हैं और कहीं भी अन्तर्धान।”

“स्वामी जी आपका बहुत-बहुत आभार, मैं कैसे आपका शुक्रिया अदा करूँ जो आपने इतनी गूढ़ जानकारी अपने सरल शब्दों में हमें बताई।” मैं कृतार्थ महसूस कर रहा था। तब-तक स्वामी जी का एक शिष्य उनके संकेत पर हमारे लिए ताजे फलों का प्रसाद ले कर आया जिसका सेवन हमने उनकी कुटिया में बैठकर किया। स्वामी जी ने भव्य आश्रम सह मन्दिर बनवाया है किन्तु स्वयं पास में बनी साधारण सी कुटिया में रहते हैं। हम लोग वहीं बैठे उनके पास।

“पयोषिनी नर्मदा जले का क्या अर्थ है स्वामी जी।” लाखे ने पूछा।

“भोर में जब आप नदी के पानी में हाथ डालें तो उपर की परत के बाद नीचे गुनगुना पानी लगता है और ये सदैव दिखता है। यही है पयोषिनी जले।”

हम लोगों ने स्वामी जी से विदा ली। उन्होंने नर्मदा जयंती पर आने का आग्रह किया जिसे मैंने यह कहते हुए स्वीकार कर लिया कि माई कहेगी तो ज़रूर आएंगे। रास्ते में मैं सोचता जा रहा था कि विचित्र संयोग हो रहे हैं इन दिनों। मैं कुछ दिनों से योगानंद जी की ऑटोबायोग्राफी पढ़ रहा हूँ और उसके कुछ अंश मुझे कभी-कभी अविश्वसनीय रूप से अचरज में डाल देते थे, जैसे सैकड़ों वर्षों से बाबा जी द्वारा किये जा रहे चमत्कार, लाहड़ी महाराज की अलौकिक शक्तियाँ, युक्तेस्वर जी का भूत भविष्य वर्तमान देख लेना। किन्तु आज जैसे मेरे संशय माँ नर्मदा के इसी तट पर दूर होने थे वरना क्या कारण है कि लगभग 90 वर्ष पहले लिखी गयी योगानंद जी की जीवनगाथा के उन अंशों को प्रमाणिकता देने और आज भी वैसे ही घटित होने की जानकारी देने पश्चिम बंगाल के ही संत मुझे यहाँ मिले।



## मन बैरागी

आंवली घाट - जैसे ही नानपा से नर्मदा के बहाव के साथ आगे बढ़े, हथेड़ नदी का पुल मिला। आगे चल कर हथेड़ का संगम नर्मदा में हो गया। हथेड़ के बारे में लोक कथा है कि इसका नाम हत्या हरण नदी था। पांडवों ने अपने कुल बन्धुओं की हत्या का दोष इसी नदी में नहा कर मिटाया था। पहाड़ी नदी हथेड़ नर्मदा में मिलकर नर्मदा के जल को और बढ़ा देती है।

आवली घाट पहुंचे। पहले भी यही कोई तीन वर्ष पूर्व इस घाट पर आना हुआ था किन्तु तब में और अब में बहुत अंतर है। शानदार घाट और उतना ही शानदार किनारे पर बना दो मंजिला बहु कक्ष रेस्ट हाउस, जिसमें लगे सुंदर गार्डन के बीच में शिव की विशाल प्रतिमा स्थापित की गयी है। पद्मासन में बैठे शिव का मुख नर्मदा की तरफ है और नर्मदा चट्टानों के बीच अठखेलियाँ करती बह रही है। कहते हैं कि यहाँ नर्मदा का पाट संकरा होने से नदी की गहराई बढ़ गयी है। मनभावन दृश्य है, लगता है जैसे पिता सामने बैठे पुत्री को निहार खुश हो रहे हैं और पुत्री भी किसी शैतान बच्ची की तरह कैसे पतली धारा बन चट्टानों के बीच से लजाईसी निकल रही है।

आंवली घाट का पौराणिक महत्व भी है। ऋषि मार्कण्डेय जी ने स्कन्द पुराण में इसके महत्व का वर्णन किया है। एक और विशेषता है इस घाट की। यहाँ विचित्र नाव चलती हैं जो एक साथ सैकड़ों आदमियों को और अनेक चार पहिया वाहनों को पार उतारती है। विशाल, सपाट नावें आदमी, पशु, वाहन सभी को पार लगा देती हैं।

नर्मदा के सुंदर और रमणीक, नयनाभिराम घाटों को देख कर जो शिकायत बरबस मन में उठती है कि पर्यटन के क्षेत्र में ये कितने उम्दा

साबित हो सकते हैं, यहाँ आंवली घाट में आकर दूर हो जाती है। जिस तरह इन धरोहरों का संरक्षण और विकास होना चाहिए बिल्कुल वैसा ही हुआ है यहाँ। उत्कृष्ट पर्यटन स्थल जहाँ रुकने के आनन्द की कल्पना से ही मन विभोर हो रहा था।

घाट पर आज बहुत भीड़ थी। जाते समय बड़ी मुश्किल से वाहन किनारे तक जा पाया था। ड्राइवर अमजद और लाखे ने बड़ी कुशलता से निर्माणाधीन पुल तक कार को पहुँचाया था। लौटते समय लाखे अमजद को बुलाने चला गया और मैं पैदल आगे बढने लगा। मुझे ध्यान था कि दो दिन पहले ही खोकसर में महाजन जी ने बताया था की आठ गादियों में से एक गादी आवली घाट में भी है, शायद शिवानन्द महाराज की समाधि बता रहे थे।

मैंने एक दुकानदार से पूछा कि शिवानन्द महाराज का आश्रम कौन सा है, वो बता नहीं पाया। सामने एक बड़ा भवन मन्दिर सह धर्मशाला जैसा दिख रहा था जिसके प्रांगण में बड़ी भीड़ थी। सामने सड़क के दोनों किनारों को अनेक वाहनों ने घेर रखा था।

मैंने जिज्ञासावश उसी दुकानदार से पूछा कि ये भीड़ कैसी है।

“बड़े दादा जी की पुण्यतिथि है न आज। उसी का भंडारा है, बहुत दूर-दूर से लोग आते हैं।”

“बड़े दादा जी बोले तो?”

“धूनीवाले दादा जी। खंडवा वाले।”

“क्या? ये उनका स्थान है?”

“हाँ, अंदर धूनी जल रही है, उनके शिष्य दुर्गानंद जी की समाधि है।”

“दुर्गानंद जी ...हाँ हाँ ध्यान आया महाजन जी ने दुर्गानंद जी का दरबार ही बताया था।” मैं अपने आप से बोला।

“मैं अंदर जाना चाहता हूँ। क्या इतनी भीड़ में दर्शन हो जायेंगे।” मैंने दुकानदार से पूछा।

“हाँ हाँ जरूर दर्शन होंगे। करके आइये। सामने जो बड़ा हाल दिख रहा है, उसी में जाइये।”

मैं तेज कदम रखता प्रांगण में घुस गया। एक दो लोगों से पूछता हुआ हाल के पास पहुँच गया। सैकड़ों महिलाएं पूरी सीढ़ियों को घेर कर बैठी थीं।

जैसे तैसे रास्ता बना कर अंदर गया। सामने दुर्गानंद जी महाराज की समाधि थी, समाधि के पीछे कमल भारती जी महाराज, गौरीशंकर जी महाराज, केशवानन्द जी महाराज धूनीवाले दादा जी, हरिहर भोले महाराज के चित्र रखे थे। सबको प्रणाम किया। हाल में बड़े से कुण्ड में धूनी जल रही थी, पालने में सभी कमल भारती जी, गौरीशंकर जी, धूनीवाले दादा जी, छोटे दादाजी, दुर्गानंद जी के बड़े चित्रों को झूला झुलाया जा रहा था।

दो दिन पहले महाजन जी का आग्रह मुझे याद आया।

*“20 दिसम्बर को दादाजी की बरसी है। हो सके तो खंडवा आना।”*

*“अरे कहाँ संभव हो पायेगा।”*

मैंने टालने के उद्देश्य से कहा था। किन्तु आज अनायस इस स्थान पर जो दादाजी से जुड़ा है, उनकी बरसी के कार्यक्रम में शामिल होना क्या महज संयोग था।

*“संतों ने कैसे मुझे गोद में उठा लिया था।”* मैं सोच रहा था।

@EBOOKSIND

मार्गशीर्ष पूर्णिमा - 22 दिसम्बर 18। पहले से ही मन बना लिया था कि आज पूर्णिमा पर नर्मदा स्नान करना है। नदियों में स्नान का महत्व सहस्राब्दियों से हमारे यहाँ चला आ रहा है। सामूहिक स्नान की रिवाज द्रविड़ों में थी और इसीलिए हड़प्पा सभ्यता के नगरों में सामूहिक स्नानागार बने थे। आर्यों ने यहाँ आकर द्रविड़ों से यह सीखा और दोनों के मिश्रण से बने हिन्दू धर्म में इसे धार्मिक क्रिया से जोड़ दिया।

नदियों, जलाशयों में देव वास की अवधारणा प्रचलित है और वो शायद इसलिए भी वैज्ञानिक हो सकती है कि जल पारदर्शी होता है जिस पर हजारों वर्षों से सूर्य, चन्द्रमा और अन्य ग्रहों की किरणें पड़ती हैं और सीधे तलहटी तक जाती हैं। मुझे तो लगता है कि जल तल की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई पर पड़ने वाली किरणें सतत उर्जा का प्रवाह करती हैं जो स्नान करने वाले को सकरात्कता और आशावादिता से लबरेज कर देती हैं। जो किये जाने वाले कार्यों के परिणामों में दिखता है। हजारों वर्षों की उर्जा क्रिया नदियों के जल को दैवीय बना देती हैं। वहीं समुद्र के सम्बन्ध में

यह मान्यता नहीं है और वो शायद इसलिए की समुद्र की गहराई अत्यधिक होती है, इसमें नदियों, जलाशयों की तरह नीचे का जल उपर और उपर का नीचे जाने की निरंतर प्रक्रिया नहीं होगी जो उर्जा के संवाहक और संग्रहण के लिए आवश्यक है। साथ ही इसमें ज्वार भाटा आने के कारण पानी का विचलन चलता ही रहता है।

नर्मदा में गॉड पार्टिकल की बात तो वैज्ञानिक अनुसन्धान में भी मानी गयी है। सब बातों की एक बात कि जो विश्वास के साथ करता है उसे फल मिलता है और ये उन सब के अनुभव की बात है जिन्होंने किया है, वे मेरे भी हैं।

आज भगवान दत्तात्रेय की जयंती भी है। ब्रह्मा जी के मानस पुत्र ऋषि अत्रि के पुत्र हैं दत्तात्रेय। ऋषि अत्रि और उनकी पत्नी अनुसूया के तीन पुत्रों में से एक दत्तात्रेय हैं। अत्रि की अनेक ऋषि मुनियों के साथ ब्रह्मा के मानस पुत्रों में गिनती है। ब्रह्मा को उत्पत्ति का जनक कहा जाता है। उपनिषद में कहा गया है की ब्रह्मा ने तप अर्थात् ताप से, ऊष्मा से मनुष्यों को बनाया। यदि इसे महज धार्मिक कल्पना भी मान लें तो भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि कोई तो होगा जो पहला मनुष्य होगा। डार्विन के विकास के सिद्धांत को भी मानें तो पहले चार पैरों के चौपाये आये होंगे किन्तु उनमें से कोई तो पहला होगा जिसने अपने तप के बल पर, अपने determination के दम पर विकास किया हो। कोई तो ऐसा होगा जो चार पैरों से दो पैरों पर खड़ा हो गया हो, दो पैरों से चलने लगा हो। और यदि हम उसी तपस्वी को ब्रह्मा कह लें तो हर्ज ही क्या है।

वह ब्रह्मा न सिर्फ चला होगा अपितु कुछ आवाजें निकालने का अभ्यास किया होगा जो बोली बनें, कुछ अन्य चौपायों को अपने जैसे बनाने का प्रयास किया हो। कुछ अपने जैसे दो पैरों पर चलने वाले जिन्हें उनका मानस पुत्र की संज्ञा दी गयी हो। वेदांत यह थ्योरी भी देते हैं कि प्रथम पुरुष ब्रह्मा जब अकेलेपन से घबरा गये तो उन्होंने तप से स्त्री की रचना की और इस तरह पुरुष और स्त्री ने मिलकर दुनिया बनाई। तप का प्रभाव हिन्दू mythology में सर्वोपरि है जिसे सभी ज्ञानी, ऋषि मुनियों ने माना है। तुलसीदास जी ने तो यहाँ तक कहा की तप के बल पर ब्रह्मा ने दुनिया रची, तप के बल पर विष्णु जगत का पालन करते हैं, शिव के तप से धरती का संतुलन रहता है।



दत्तात्रेय के बारे में ईमानदारी से कहूँ तो चंद रोज पहले तक कुछ भी नहीं जानता था, सिर्फ नाम सुना था। किन्तु जब से नर्मदा के बारे में पढ़ना शुरू किया तब से दत्तात्रेय का नाम बार बार सामने आ रहा था। महिष्मती के कार्तवीर्य अर्जुन को दत्तात्रेय का उपासक पढ़ा। बड़वानी के राजा द्वारा दत्तात्रेय का मन्दिर बनाने के बारे में पढ़ा और दिलचस्प तो यह कि गौरीशंकर महाराज, दादाजी धूनीवाले और उनकी संत पंक्ति के बारे में महाजन जी की संगति के कारण जब से जानना शुरू किया तब से निरंतर दत्तात्रेय का जिक्र आ रहा है। दादाजी धूनीवाले को शंकर और दत्तात्रेय का अवतार माना जाता है।

महान तपस्वी दम्पति अत्रि, अनुसुइया के यहाँ विष्णु अंश के साथ जन्मे थे दत्तात्रेय। बाद में इन्हें ब्रह्मा, विष्णु और महेश का सम्मिलित स्वरूप माना जाने लगा था। तभी तो इनका चित्र तीन मुख वाला है। कहते हैं कि भगवान दत्तात्रेय ने 24 गुरु बनाये थे। पृथ्वी, सूर्य, वायु, पिंगला वैश्या, हिरण, समुद्र, हाथी, पतंगा, जल मछली, बालक, चन्द्रमा, आग जैसे 24 गुरु थे दत्तात्रेय के।

पृथ्वी से सहनशीलता, पिंगला वैश्या से परमात्मा के ध्यान में ही असली सुख है न कि पैसों के ध्यान में, समुद्र से जीवन के उतार चढ़ाव में भी खुश रहना, जल से पवित्रता और इस तरह चौबीस गुरुओं से कुछ न कुछ सीखा था उन्होंने। नर्मदा खंड में दत्तात्रेय का प्रभाव होने से संभव है कि ज्यों ज्यों माँ नर्मदा के तट पर हम चलते जायेंगे, भगवान दत्तात्रेय के बारे में और भी चर्चा कर पाएंगे।

सलकनपुर, सुप्रसिद्ध देवी धाम है यहाँ। होशंगाबाद से 30 कि.मी. उत्तर पश्चिम में स्थित है माँ बिजासन का यह स्थान। नर्मदा परिक्रमा करने वाले अमूमन पैदल ही पूरा नर्मदा तट चल जाते हैं। इधर कुछ वर्षों से वाहन के द्वारा भी यह परिक्रमा की जाने लगी है इसमें टूर एंड ट्रेवलस वाले बसों के द्वारा पूरी यात्रा करते हैं जो 20 दिन में पूरी होती है। निजी वाहन से भी लोग जाते हैं, जो कुछ और कम दिन में हो सकती है। जैसा की परिक्रमा का नियम है इसमें नर्मदा को दाई ओर रख कर चलना होता है और इस तरह से सलकनपुर वाहन से परिक्रमा करने वाले लोगों को अमरकंटक की ओर जाने पर पड़ता है। परिक्रमावासी यहाँ रुकते भी हैं और माँ के दर्शन भी करते हैं। आवली घाट का उत्तर तट यहाँ से 7 कि.मी. है और सड़क से भलीभांति जुड़ा है।

सलकनपुर में माँ बीजासन जगदम्बा का मन्दिर एक ऊँची पहाड़ी पर बना है। मन्दिर तक तीन तरह से जाया जा सकता है। वाहन से जाने वालों के लिए ऊपर तक अच्छी सड़क बनी है। पैदल जाने वाले चौड़ी पक्की सीढ़ियों का इस्तेमाल करते हैं। और तीसरा साधन है रोप वे, जिसकी ट्रोलियाँ निरंतर ऊपर नीचे आती जाती रहती हैं। किसी भी तरह से जाया जाय, रास्ते भर प्रकृति के नज़ारे दिखाई देते हैं।

ऊपर पहुँचने पर बरबस ही मुहं से निकलता है - अद्भुत! ऊँची पहाड़ी से चारों तरफ के दृश्य जितने लुभावने हैं उतना ही खूबसूरत और विस्तृत परिसर बना है माँ का। रंग बिरंगे फूलों के बगीचों से घिरा साफ सुधरा स्थान जिसके चमकते फर्श और दीवारें सूर्य के प्रकाश को रिफ्लेक्ट करते हैं।

हम वाहन से ऊपर तक गये। ट्रस्ट के अध्यक्ष के कहने पर वाहन मेन गेट तक पहुँच गया था अन्यथा एक कि.मी. पहले ही रोका जा रहा था सबको। आज भीड़ बहुत है, बाहर प्रसाद और जलपान की लम्बी कतारों की दुकानों पर भी मारा मारी थी। मन्दिर में पहुँचने पर पूछा तो पता चला कि हर पूर्णिमा पर अब ऐसी ही भीड़ होने लगी है। मैं अनेक बार इस स्थान पर गये 6 वर्षों में आता रहा हूँ। नवरात्रि के दिनों में यहाँ लाखों की संख्या में दर्शनार्थी आते हैं। उन दिनों भोपाल, होशंगाबाद, बेतुल, खंडवा, छिंदवाड़ा तरफ के लोग रात-दिन पैदल आते हैं और इस कारण चारों ओर की सड़कें आधी या उससे भी अधिक भरी रहती हैं। बमुश्किल ही वाहन उन दिनों सड़कों से निकल पाते हैं। रात-दिन जय माता दी के जयघोष लगते रहते हैं, स्थान स्थान पर धर्म प्रेमी लोग लंगर चलाते हैं जिनमें यात्रियों को मुफ्त भोजन चाय का प्रबंध रहता है।

दूसरी तरफ सीढ़ियों के रास्ते पर दोनों ओर लगी माला प्रसाद की कतार बद्ध दुकानें जो नीचे तक चली गयीं थीं बड़ी सुंदर लग रही थीं। वहाँ से प्रसाद ले हम दर्शन को चले तो चारों ओर की सुन्दरता ने बरबस मन मोह लिया। विहंगम दृश्य से नज़रें नहीं हटती थीं। सुंदर खाइयाँ, दूर दिखती पहाड़ियाँ और बीच में नीचे खेत और तालाब।

“पापा कितना सुंदर लगता है ऊपर से।” बिटिया बोली।

“और मंदिर प्रांगण की सुन्दरता भी उतनी ही है।” पत्नी ने जोड़ा।

“हाँ जैसे होड़ लगी हो प्रकृति में और मंदिर प्रबन्धन में कि कौन बाजी मारता है।” मैं कहाँ चुप रहने वाला था।

मन्दिर ट्रस्ट अध्यक्ष उपाध्यायजी ने एक कर्मचारी साथ कर दिया जिसने अंदर ले जाकर अच्छी तरह से दर्शन कराये। पुजारी जी ने माँ का पूजन करवाया। श्रद्धा और भक्ति से माँ के चरणों में शीश नवा हम बाहर हाल में आ कर कुछ क्षण के लिए बैठ गये। चालक दिलीप फोटो लेने लगा। मेरी दृष्टि हाल के बाहर से लगी लम्बी कतार पर गयी जो अनवरत चल रही थी दर्शन के लिए।

“भक्ति बढ़ती ही जा रही है समय के साथ लोगों में।” मैं सोचने लगा।

“और क्यों न बढ़े। एक ईश्वर ही दिखता है इन्सान को विपत्ति में जो हर संकट से निकालता है। अगर भगवान न हो तो कौन दुष्ट और पापियों से साधारण, सीधे-साधे लोगों को बचाए। अगर दैवीय शक्ति न हो तो इतना बड़ा संसार अराजक हो जाय, अव्यवस्थाएं फैल जाय, नीच पापी मजे में रहे और सज्जन सजा पाते रहें।”

“चलें सर” दिलीप ने टोका तो जैसे मेरी तन्द्रा टूटी।

पहाड़ से हम लोग नीचे उतरने लगे। प्राकृतिक सौन्दर्य इतना अधिक है कि जगह जगह लिखा पड़ा है ‘सौन्दर्य दर्शन और वाहन चालन एक साथ न करें’। नागिन सी लहराती सड़क पर गाड़ी चलाता दिलीप कुशल वाहन चालक की परीक्षा पास कर रहा था। मेरा मन हुआ कि गाड़ी रुकवा कर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाऊं। “पर्यटन प्रेमियों कहाँ हो, नर्मदा के किनारे का सौन्दर्य नहीं देखा तो क्या देखा। यहाँ गहरी खाई में बहती नर्मदा माँ है तो ऊंचे पहाड़ों पर जगदम्बा माँ है। नानपा से कगार, आंवली घाट से घाट और गौरीशंकर महाराज से संत जिनकी आत्मा परिक्रमावासियों के साथ शायद अभी भी परिक्रमा कर रही हो। दादा धूनीवाले के चमत्कार तो शिव का ओमकार रूप सब तो है यहाँ। यदि मन में संशय हो तो यूरोपीय पर्यटकों को साथ ले आओ और कान न पक जाय wow, wow सुनते तो कहना।”



25 दिसम्बर - ईसा मसीह का जन्म दिन। संसार के समस्त सच्चे संतों, ईश्वर पुत्रों और मसीहाओं का सेलिब्रेशन डे - बड़ा दिन। जब से खोकसर में

महाजन जी ने साईं खेड़ा के बारे में कहा था, तभी से वहां जाने का मन कर रहा था। क्रिसमस की छुट्टी का लाभ उठाते हुए आज प्रोग्राम बना ही लिया।

जैसा कि महाजन जी कह रहे थे, साईं खेड़ा होशंगाबाद में न होकर नरसिंहपुर जिले में आता है। बॉर्डर पर होने से कन्फ्यूजन हुआ होगा शायद और उन्होंने होशंगाबाद में बता दिया था। पर जो होता है अच्छा ही होता है। हम अपने जिले में मानकर ही प्रोग्राम बना चले थे। जब पिपरिया से शर्मा वाहन चालक को बिठाया तब मालूम पड़ा की दूसरा जिला है उस स्थान का।

पर जब निकल ही आये तो होशंगाबाद से 150 कि.मी. का रास्ता तय कर, बनखेड़ी होकर पहुंचे साईं खेड़ा तब मेरे साथ लाखे, अमजद और शर्मा थे। मैं ने तो कल्पना की थी कि कोई छोटा-सा गाँव होगा साईं खेड़ा किन्तु पहुँचने पर पता चला कि गाँव नहीं कस्बा है ठीक-ठाक। पूरी बसाहट पार कर दायीं ओर दादा दरबार का रास्ता मिला।

दादा दरबार ठीक-ठीक बना था। न ज्यादा बड़ा और न छोटा। बाहर के कवर्ड बरामदे में अनवरत धूनी जल रही थी। बरामदे से लगा एक बड़ा हाल था जिसमें दादाजी धूनीवाले की सुंदर संगमरमर की मूर्ति बैठी हुई मुद्रा में प्रतिस्थापित थी। अंदर जाकर दर्शन किये। लोग आ जा रहे थे, दरबार में हाजिरी लगा रहे थे। कुछ देर दादाजी के सामने बैठे, अच्छा लगा। बरामदे में आकर धूनी की परिक्रमा की।

मैं बाहर निकला, देखा एक सज्जन मोटर साइकिल के पास खड़े थे, जो अभी अभी दरबार से बाहर निकले थे। उनके साथ एक महिला भी थी।

“आप क्या यहीं रहते हैं” मुझसे रहा नहीं गया।

“नहीं, गाडरवाड़ा से आये हैं।”

“पास में ही होगा?”

“30 कि.मी. दूर है।”

“क्या आते रहते होंगे?”

“हाँ हर सप्ताह आते हैं।”

“कब से आ रहे हैं।”

“बहुत साल हो गये। 2011 से लगातार आ रहे हैं।”

“ऐसा क्या हुआ कि यहाँ आने की प्रेरणा मिली।”

“मेरी पत्नी बहुत गंभीर बीमार थी। एक महात्मा मिले उन्होंने कहा कि पांच मंगल नर्मदा में नहाओ और दादाजी धूनीवाले के स्थान पर सांड खेड़ा जाकर भभूत लो। हमने किया और मेरी पत्नी बिना किसी दवा के ठीक हो गयी। तब से नर्मदा माई और दादाजी में ऐसी लगन लगी हम दोनों हर मंगल यहाँ आते हैं।” उन्होंने पास खड़ी अपनी पत्नी की ओर इशारा करते हुए कहा।

“क्या हुआ था इन्हें” मेरा अचरज बढ़ता जा रहा था।

“कैंसर” उनका उत्तर था।

मैं आवक रह गया, डरते डरते पूछा।

“अब बिलकुल ठीक हैं??”

“आपके सामने खड़ी हैं। खुद देख लीजिये” उन्होंने पूरी श्रद्धा से कहा। 50-55 वर्ष के दरम्यानी दम्पती ने दादा दरबार की ओर हाथ जोड़ लिए।

“क्या नाम है आपका” पास में रखी पत्थर की बेंच पर उनके साथ बैठते हुए मैंने पूछा।

“सीताराम गंगापारी। और ये मेरी पत्नी हैं माया देवी।”

“क्या करते हैं सीताराम जी?”

“ट्रांसपोर्ट का बिजनेस है गाडरवाड़ा में।”

“आपने कहा कि नर्मदा में स्नान कर यहाँ आते हैं। कहाँ करते हैं स्नान?”

“झिकोली घाट है यहाँ से तीन कि.मी.। पहले वहाँ जाते हैं दोनों, स्नान कर माँ नर्मदा का पूजन करते हैं, फिर यहाँ दादाजी के दरबार में हाजिरी लगाते हैं।”

“पर आप तो कह रहे थे की पांच मंगल बताये थे फिर इतने दिनों से क्यों?”

“क्या करें मंगल आते ही खुद ही मन करने लगता है, यहाँ आने का।”

“पर आज क्यों?”

“आज मंगल है न साब” उन्होंने कहा तो मुझे याद आया कि अरे हाँ आज तो मंगल है।

“ये भी एक संयोग है” मैं मन ही मन सोचने लगा। तब तक हमारे पास दादा की सेवा में रहने वाले एक युवक आ गये, अपना नाम बालकदास बताया। सुदामा प्रसाद अग्रवाल के बारे में उनसे पूछा जिनके बारे में महाजन जी कह रहे थे। बालकदास ने बताया की वो बाजार में रहते हैं। पता लगा कि वे पिपरिया गये हैं।

“आप झिकोली घाट जाइये, वहां माताजी मिलेंगी जो दादाजी की सेवा में रहती हैं। यहाँ की देखभाल भी वो ही करती हैं। आपको दादाजी के बारे में उनसे बहुत जानकारी मिलेगी” बालकदास ने कहा और अंदर से लाकर हमें भोग प्रसाद दिया।

हम लोग वहां से झिकोली घाट की ओर चल दिए। पक्की सड़क से झिकोली ग्राम पहुंचे, माताजी के आश्रम के बारे में जानकारी ले घाट की रुख किया।

अंजनी माताजी, यही नाम बताया था लोगो ने वहां, के आश्रम पर पहुंचे। बड़े क्षेत्रफल में बना नर्मदा किनारे सुंदर स्थान। ऊँची कगार पर अंजनी माताजी ने अपना आश्रम बनाया था। वहां से नीचे बहती नर्मदा का दृश्य देखते ही बनता था। दूसरे घाट पर लगी छोटी छोटी दुकानें, नहाने के स्थान, रायसेन को नरसिंहपुर को जोड़ने बना ऊँचा और पक्का पुल जिस पर आते जाते वाहन नर्मदा की सुन्दरता में बहोतरी कर रही थी। नर्मदा का स्वच्छ नीला जल और चारों तरफ की छटा देख कर लगता था कि बस यहीं खड़े रहो, देखते रहो। प्रकृति ने कैसा अद्भुत सौन्दर्य रच दिया है शिव की पुत्री के आस-पास और क्यों न रचती, बॉस की बेटी जो ठहरी।

मैं अपलक माँ नर्मदा को निहारे जा रहा था कि माताजी अपने कक्ष से निकल कर बाहर आयीं। हमलोग उनकी ओर लपके, प्रणाम किया, उन्होंने आशीष दिया और वरांडे में पड़े सोफे पर बैठ गयीं। यही कोई 50-52 वर्ष की उम्र दिख रही थी उनकी, स्वस्थ शरीर पर गेरुए वस्त्र से बड़ा प्रभावी व्यक्तित्व लग रहा था उनका। हम लोग उनके पास नीचे बैठे। अपना परिचय दिया और जब बताया की होशंगाबाद से आये हैं, तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई इसलिए कि हम इतनी दूर से आये हैं और इसलिए भी कि होशंगाबाद भी दादाजी के विभिन्न स्थानों में से एक है।

“माताजी आप कबसे यहाँ इस तरह से रह रही हैं”

“बेटा हम गृहस्थ योगी हैं। साईं खेड़ा में लोग हमें माताजी भी कहते हैं और मौसी भी कहते हैं। हम दोनों ही पति पत्नी ने सन्यास ले लिया है और 2001 से दादाजी की सेवा में आ गये हैं। साईं खेड़ा की व्यवस्था महाराज जी (उनका मतलब अपने पति से था) सँभालते हैं और यहाँ मैं।”

“यहाँ के सौन्दर्य ने आपको आश्रम बनाने को प्रेरित किया होगा शायद” मैंने पूछा।

“माई का सौन्दर्य तो है ही पर प्रेरणा हमें गुरु जी ने दी थी”

“गुरुजी बोले तो?”

“हमारे गुरुजी बर्फानी बाबा, नाम सुना होगा तुम लोगों ने।”

“हाँ हाँ सुना है”

“वे और दादाजी के समकालिन रहे हैं। दादा से उम्र में छोटे थे और उन्हीं के प्रताप से इनका नाम बर्फानी बाबा पड़ा।”

“कैसे?”

“इनका नाम हरिदत्त था। दादाजी ने इनका हिमालय में काया कल्प किया था, तबसे ये बर्फानी बाबा कहलाने लगे। अभी भी स्वस्थ हैं और उम्र 240 वर्ष से अधिक है।”

“पूरा किस्सा बताएं माताजी” आश्चर्य से मैंने पूछा।

“तुमने गौरीशंकर महाराज का नाम सुना है, तुम्हारे होशंगाबाद में ही उनकी समाधि है।”

“हाँ माताजी खोकसर में है।” मैंने कहा।

“वहां गये हो कभी?”

“वहीं जाकर तो चकराघिन्नी बने हुए हैं” मैं मन ही मन बुदबुदाया।

“कुछ कहा तुमने”

“जी..., यही कि गये हैं अभी आठ दिन पहले ही गये थे।”

“गौरीशंकर महाराज त्रिकालदर्शी थे। लगातार अपनी जमात के साथ नर्मदा परिक्रमा करते थे। उनकी जमात में 400 से अधिक साधू चलते थे, हाथी, घोड़ा अलग। पूरी जमात की भोजन व्यवस्था नित्य सुचारु होती थी। वे सामग्री का परिग्रह नहीं करते थे।”

“परिग्रह क्या?” लाखे ने पूछा।

“मतलब संग्रह। जहाँ जैसी सामग्री बची उसे वहीं छोड़ कर जमात के साथ आगे निकल जाते थे। अगले पड़ाव पर भोजन व्यवस्था स्वतः ही हो जाती थी। नर्मदा जी उन्हें सिद्ध थीं, माई से सीधे बात होती थी उनकी। एक बार किनारे पर बैठे थे कि नर्मदा जी ने प्रेरणा दी की रेत में खुदाई कर हंडा निकाल लें।”

“हंडा??” मेरे मुख से निकला।

“धातु का बहुत बड़ा बर्तन, मटके जैसी बनावट का। जिसमें कोई वस्तु, अधिकतर सोना चांदी रख कर मुख बंद कर भूमि में गाड़ देते थे। उन दिनों वही बैंक थी।”

“फिर क्या हुआ” शर्मा ने जिज्ञासा प्रकट की।

“गौरीशंकर महाराज बोले मोंडी तू देती तो है, क्या करना हंडा का।”

“मोंडी???” मेरे मुख से अचरज में निकला।

“हाँ वो नर्मदा माई से मोंडी कहते थे।”

“अच्छा! फिर” मेरा कौतूहल जगा। मेरी क्या सभी की यही दशा थी उस समय।

“नहीं पिताजी मेरे कहने पर खोदो। नर्मदा माई ने कहा।”

“अच्छा वो मोंडी, तो वो पिताजी” लाखे ने जोड़ा।

“हाँ, महाराज तो साक्षात् शंकर का ही रूप थे।” भाव विव्हल हो बोलीं माताजी।

“फिर क्या हुआ” मैं और शर्मा दोनों एक साथ बोल पड़े।

“फिर क्या महाराज ने कहा अपने शिष्यों से कि खोद लो जब मोंडी कह रही है तो। वहीं रेत खोदा गया और थोड़े ही नीचे एक बड़ा हंडा दिखा। शिष्यों ने निकाला। गौरीशंकर महाराज ने ढक्कन हटाया तो उसमें एक 5-6 वर्ष का बालक था” कहते कहते माताजी की आँखें भर आयीं।

“बालक!”

“हाँ, जिन्दा बालक। महाराज जी ने उसे निकाला। वे समझ गये थे कि उनकी बार-बार मांग पर नर्मदा ने ही शिव शंकर से हठ कर उन्हें, उनके पास भेजा है। बालक का नाम रखा केशवानन्द और काशी शिक्षा के लिए



भेजा। अल्प समय में वह बालक काशी से वापस आ गया और महाराज के साथ जमात में चलने लगा। जब कुछ बड़ा हुआ तो जमात का भोजन प्रबंध देखने लगा।”

कुछ क्षण रुककर पुनः बोलना शुरू किया माताजी ने।

“युवा होते ही उस बालक के चमत्कार प्रसिद्ध होने लगे। धीरे धीरे जमात में वह श्रद्धा का केंद्र बन गया। गौरीशंकर महाराज ने जाना कि इस अद्भुत युवा को जमात से अलग हो स्थान स्थान पर जगत कल्याण के कार्य करने चाहिए। और इसीलिए एक दिन उन्होंने केशवानन्द को उनके प्रशंसक छोटे बालक हरिदत्त के साथ जमात से मुक्त कर दिया। गुरु की इच्छा अनुसार केशवानन्द ने भ्रमण शुरू किया वे जहाँ भी जाते धूनी रमाते और इस तरह उनका नाम पड़ा धूनीवाले दादाजी। बालक हरिदत्त दादाजी का प्रिय शिष्य बन गया था। स्थान स्थान पर घूमने, लोगों के कष्ट निवारण करने के बाद दादाजी सन 1901 में यहीं पास में नर्मदा के किनारे सिरसिरी सन्दूक ग्राम में एक विशाल वट वृक्ष में से प्रकट हुए।”

“फिर क्या हुआ माताजी” सब रोमांचित हो रहे थे।

“कुछ ही समय वहाँ रहे कि एक दिन अचानक साईं खेड़ा ग्राम में आ गये और तबसे लगातार 1928 तक साईं खेड़ा ग्राम में ही रहे। वहाँ एक मालगुजार थीं जीजी बाई। उनके एक भाई गुम हो गये थे जिनकी शक्त दादाजी से मिलती थी। जीजी बाई ने उन्हें ही अपना भाई मान लिया। दादाजी ने भी अपनी बहन जीजी बाई से खूब रिश्ता निभाया। वे सिर्फ जीजी बाई के बनाये टिक्कड़ ही खाते थे।”

“ये तो अंग्रेजों का समय था” मैंने जोड़ा

“हाँ और एक बार गांधीजी दादाजी से मिलने साईं खेड़ा आये थे। दादाजी ने ही उन्हें बड़ी लाठी और एक बकरी रखने की सलाह दे कर कहा था कि वो देश को आजाद करा देंगे।”

“क्या सचमुच गांधीजी यहाँ आये थे?” मेरे आश्चर्य की सीमा न रही।

“दादाजी का ही चमत्कार था। जो ट्रेन गाडरवाड़ा रुकती नहीं थी, तकनीकी खराबी के कारण उस दिन रुकी और ट्रेन में बैठे गांधीजी उतरकर दादाजी से मिलने पहुँच गये।”

“अद्भुत! 1928 के बाद दादाजी कहाँ गये।”

“साईं खेड़ा छोड़ने के बाद वे घूमते, भ्रमण करते 1930 में खंडवा पहुंचे और वहीं कुछ ही दिनों में उन्होंने समाधि ले ली। पर समाधि में जाने के पूर्व ईश तुल्य दादाजी ने चार लोगों के जीवन में अत्यंत विशेष कार्य किये।” कहते हुए वे फिर मौन हो हम लोगों को निहार रही थीं।

“कौन से चार लोग, माताजी?” मैंने पूछा।

“साईं बाबा शिर्डी वाले, ताजुद्दीन बाबा नागपुर वाले, गजानन महाराज शैगांव वालों की सिद्धि को बढ़ाया जिन्होंने अपने अपने स्थान पर दैवीय कार्य किये, और जो आज भी पूजे जा रहे हैं।” भावुक हो गयीं माताजी बोलते बोलते।

“और चौथे?” जिज्ञासा हुई मुझे।

“चौथे थे दादाजी के शिष्य हरिदत्त।”

“उनका का क्या हुआ?” शर्मा ने पूछा।

“वे ही तो हैं बर्फानी बाबा, मेरे गुरु”

“जी! अभी तक वो हैं। ये कैसे संभव हो सकता है।”

“बेटा संतों के लिए कुछ भी असम्भव नहीं” झलझलाई आँखों से वे बोलीं।

“हरिदत्त के शिष्यत्व से प्रभावित हो दादाजी ने उन्हें आशीष दिया कि वे हिमालय में जाकर अपने आपको गला दें। वे उनका काया कल्प करेंगे। शिष्य ने गुरु की आज्ञा का पालन किया और स्वयं को हिमालय की बर्फ में गला दिया तब समाधि में जाने से पूर्व दादाजी ने उन का काया कल्प कर उन्हें नवीन जीवन दिया। योग परम्परा अनुसार बर्फानी बाबा की आयु 240 वर्षों से अधिक है।” उनकी वाणी को विराम मिला जब खाना बनाने वाली अम्मा ने आकर कहा कि भोजन प्रसादी तैयार है। माताजी की आज्ञा से हम लोगों ने भोजन प्रसाद लिया और आश्रम में बने दादाजी और बर्फानी बाबा के स्थान पर माथा टेका और चल दिए सिरसिरी घाट की ओर।

रास्ते भर मैं सोचता रहा कि कैसी अद्भुत है इस दुनिया से इतर एक और दुनिया। संत महात्माओं की दुनिया जो देव तुल्य हो दैवीय चमत्कार करते हैं। कैसी है यह देव भूमि जहाँ पर्वत गोवर्धन बन प्रकट हो जाते हैं, जहाँ नदियाँ नर्मदा बन पूज्य हो जाती हैं।

“पुराने समय में ऋषि मुनि अंदर से खाली रहते थे और अपनी अध्यात्म यात्रा को इतना विस्तृत कर लेते थे की उनकी आत्मा का सचमुच परमात्मा से डायरेक्ट कनेक्शन हो जाता था, क्योंकि बीच के सभी विघ्न, सभी हर्डल वे हटा देते थे। वे तप की शक्ति जानते थे, वे मौन की शक्ति पहचानते थे, वे सत्य की ताकत मानते थे वे त्याग के भाव में रहते थे, कांच से पारदर्शी थे। तभी तो वे जब, जहाँ, जिस रूप में चाहते थे निर्गुण निराकार ब्रह्म को सगुण साकार बना लेते थे।” मेरा विचारों का प्रवाह जारी था।

वहां से पश्चिम में नर्मदा के किनारे यही कोई तीन कि.मी. एक गाँव है संदूक। जब हम वहां पहुंचे तो बाहर ही कुछ लोग मिल गये। हमने सिरसिरी घाट के बारे में पूछा जहाँ दूधी और नर्मदा का संगम है और जहाँ वह करतबी विशाल वट वृक्ष है जिसमें से दादाजी के प्रकट होने की कहानी है। लोगों ने बताया कि ये दो जगह हैं एक नहीं। वृक्ष तो इसी संदूक ग्राम में है किन्तु अभी सड़क बनने से वहां तक जाना संभव नहीं है और संगम के लिए हमें फिर 3 कि.मी. पश्चिम में जाना होगा, सिरसिरी घाट वहीं है।

सिरसिरी घाट पहुंचे। घाट जैसा यहाँ कुछ नहीं बना है किन्तु अच्छी बात ये थी की कच्चा मार्ग नदी किनारे तक बना था जहाँ तक गाड़ी चली गयी। वहां कुछ लोग खड़े थे। उनसे पूछा संगम के बारे में तो उन्होंने पास में ही वह स्थान दिखाया जहाँ दूधी नदी का पाथ बना था जो नर्मदा में आकार मिल रहा था। दूधी में पानी नहीं था इसलिए उसकी रेत की रेखा दूर तक जाती दिख रही थी। उपस्थित लोगों ने बताया कि बरसात और उसके कुछ महीनों बाद तक दूधी पर्याप्त जल लेकर आती है पर नवम्बर आते आते सूख जाती है। पौराणिक कथा अनुसार हनुमान जी की माता अंजनी के दूध से प्रवाहित होने के कारण ही इस नदी का नाम दूधी पड़ा था।

नदी किनारे कुछ ऊंचाई पर एक भव्य आश्रम बना था। नदी खेत और दूर-दूर तक बने छिटपुट झोपड़ियों के अलावा वहां कुछ नहीं था और ऐसी जगह इतना विशाल और भव्य भवन देख कर जंगल में मंगल का अहसास हो रहा था। पता चला कि मौनी बाबा का आश्रम है। बाबा के बारे में जानकारी ली मालूम पड़ा की मौनी बाबा तो स्वर्ग सिधार गये हैं उनके शिष्य हैं जो आश्रम की देखभाल करते हैं।

किनारे पर मौजूद लोगो में दूर गाँव से आये पति पत्नी भी थे। उनसे बात चीत में निकल कर आया कि वे सिर्फ यहाँ तक नर्मदा माँ के दर्शन को

आये हैं। उन्होंने बताया कि अक्सर वे लोग यहाँ आते हैं कभी स्नान करते हैं तो कभी दर्शन कर आचमन लेकर चले जाते हैं।

“आचमन?”

“हाँ मैया का जल हथेली पर लेकर उसका पूरी श्रद्धा से पान करो तो स्नान का फल मिलता है” उन्होंने विश्वास से कहा तो मेरा भी मन हो आया आचमन करने का। किनारे पर ही हम खड़े थे और बगल से ही नर्मदा बह रही थी। बिना रेत के इतने पास मिट्टी का किनारा और बाजू में बहती नदी, बहुत कम देखने को मिलता है।

मैं जहाँ खड़ा था, वहीं झुका, देखा निर्मल स्वच्छ जल, तलहटी तक दिख रही थी। दो तीन अंजुली भर पानी पिया और हाथ जोड़ माँ को प्रणाम किया। नदी आगे चली जा रही थी। कुछ ही दूर पर बीच में एक टापू दिख रहा था जिस पर भरपूर हरियाली थी।

“जब नर्मदा भर कर चलती होगी और दूधी भी अपना जल मिलाती होगी तो यह टापू कितना सुंदर लगता होगा” मैं मन ही मन सोच रहा था।

मौनी बाबा के आश्रम में जाने की इच्छा थी किन्तु तब तक लाखे, शर्मा और अमजद ने होशंगाबाद जाने का एक सीधा रास्ता खोज लिया जिसमें लगभग 40 कि.मी. का अंतर आ रहा था।

“सर यहाँ से सीधे उमरधा होते हुए होशंगाबाद निकल चलेंगे” शर्मा ने उत्साहित होकर कहा।

“रास्ता सही है?”

“हाँ सर बीच में दूधी पड़ेगी उसमें पानी न होने से कच्चा रास्ता बना दिया है जिस पर वाहन आसानी से निकल जाते हैं। दूधी पार करते ही हम उमरधा होंगे, अपने जिले में, वहाँ से होशंगाबाद 110 कि.मी. रह जाता है” लाखे ने जोड़ा।

इस नई खोज से उत्साहित हो हम लोग शीघ्र अपने जिले में पहुँचने निकल लिए। एक दो गांवों को पार कर दूधी किनारे पहुँचे। देखा लम्बे पाट की नदी पर सचमुच मिट्टी डाल कर कच्ची सड़क बना दी थी। आसानी से पार कर उमरधा की ओर चल दिए।

“उमरधा भी तो नर्मदा किनारे का गाँव है?” मैंने पूछा।

“हाँ साब, पासी घाट है वहां, अपने जिले का पहला घाट” शर्मा ने कहा किन्तु सायं हो रही थी और होशंगाबाद अभी दूर था इसलिए मैंने उत्साह नहीं दिखाया।

थोड़ी ही देर में हम उमरधा ग्राम की सीमा में आ गये। बड़ा ग्राम है उमरधा शायद जिले के सबसे बड़े गांवों में दूसरा स्थान है। मुझे लग रहा था कि ग्राम पार करने में समय लगेगा, तभी शर्मा बोल पड़ा।

“साब ये जो बाहर से पक्की सड़क जाती दिख रही है, यही सीधे पासी घाट पहुंचती है। ज्यादा दूर नहीं है यहाँ से।”

“चलना है क्या?” बाहर से जाती सड़क और शर्मा का मन देखकर मैंने पूछा।

“हाँ साब, चलते हैं” शर्मा के साथ इस बार लाखे भी बोल पड़ा।

पासी घाट पहुंचे। यहाँ सिरसिरी घाट से बिलकुल अलग नज़ारा। जहाँ सिरसिरी में बिलकुल नदी तक पहुँच गये थे, यहाँ दूर-दूर तक रेत फैली थी। नर्मदा भी क्या है, सचमुच कुंवारी अल्हड कन्या की तरह चंचल है। कहीं कुछ दिखती है तो कहीं कुछ। गाड़ी रेत में तो जा ही नहीं सकती थी इसलिए नीचे कुछ दूर तक जाकर रोक दी। रेत में चलना अच्छा लगा। कुछ दुकानें प्रसाद, फल आदि की लगी थीं।

“बाबा, आप क्या रोज दुकान लगाते हैं” एक बुजुर्ग दुकानदार से पूछा।

“हाँ रोज”

“क्या रोज लोग आते हैं। आज तो भीड़ दिख रही है” मैंने नदी की ओर देखते हुए कहा जहाँ अच्छी खासी भीड़ नहाने वालों की इस समय भी थी जबकि सायं हो चली थी।

“आज मंगल है इसलिए भीड़ है। वैसे रोज कुछ स्नान वाले तो आते हैं।”

“मंगल का क्या कोई विशेष महत्व??”

“हाँ ऊपर हनुमान जी का मन्दिर है। लोग स्नान कर दर्शन करते हैं। सिद्ध मूर्ति है, महाराज जी को रेत में मिली थी उन्होंने स्थापना करायी है।”

“महाराज जी बोले तो??”

“टाटम्बरी बाबा हैं, ऊपर ही उनका आश्रम है।”

“सीता राम जी का स्थान है, ज़रूर जाना” सामने की एक दुकानदार महिला अपने आप ही बोली। उसकी श्रद्धा उसकी वाणी में झलक रही थी।

अब तो हम लोगों का मन भी हो आया मन्दिर जाने का। शर्मा ने बताया कि वह पहले भी आ चुका है किन्तु देर न हो जाय इस कारण बताया नहीं था।

ऊपर पहुँच कर मन्दिर के पास गाड़ी रुकी। उतरते ही मुझे मन्दिर की दीवार दिखी जिस पर लिखा था ‘राम वन गमन मार्ग’। मैं भौचक्का रह गया। कहाँ तो मैं यहाँ आ नहीं रहा था और कहाँ यह विलक्षण स्थान पर पहुँचने का सुखद संयोग। मैं जैसे दौड़ पड़ा अंदर की ओर। जैसे कोई खजाना मिल गया हो। यही सोचता जा रहा था कि इस जिले में 5 वर्ष का समय तो यूँ ही निकाल दिया। 6 वीं साल में जाकर ही स्थान का महत्व समझ क्यों आया। अभी कुछ माह पूर्व माछा मिला और आज ये।

“सचमुच महात्य प्राकट्य होता है। मेरे लिए तो अब हुआ था” मैं कभी उस स्थान के हाथ जोड़ता, कभी नीचे वह रही माँ नर्मदा के।

अंदर मन्दिर परिसर में पहुँचे, ज्ञात हुआ कि श्री रामदास जी महाराज टाटम्बरी बाबा का आश्रम और मन्दिर एक ही परिसर में बना है। महाराज जी तो नहीं मिले उनके शिष्य महाराज करमदास जी मिले। उनसे और प्रांगण में बैठे अन्य लोगों से ज्ञात हुआ कि दिल्ली के डॉ. रामधार हैं उन्होंने राम वन गमन पथ की खोज की है और उसमें उनके द्वारा प्रमाणित किया गया है कि श्री राम सीता जी और लक्ष्मण जी के साथ चित्रकूट से दक्षिण की ओर वन गमन करते हुए एक रात यहाँ रुके थे।

मैं सुनकर रोमांचित हो गया। मैंने अपनी किताब ‘मेरा राम मेरा देश’ में भगवान राम के दक्षिण जाने हेतु जिस पथ की कल्पना की थी वह साकार होती दिख रही थी। चित्रकूट से नासिक, जहाँ पंचवटी थी, तक का जो भी रूट संभव था वह निश्चित ही नर्मदा किनारे से ही गया होगा, ऐसा मेरा मानना था। मैंने नर्मदा को श्री राम द्वारा पार करने और खंडवा की तुलजा भवानी के दर्शन कर अगस्त्य ऋषि के आश्रम की ओर कूच करने की जो कल्पना की थी वह अब सच्ची प्रतीत हो रही है।

अभी कुछ महीनों पहले मैं एक गाँव गया था नाम था मांछा। नर्मदा किनारे का गाँव, गाँव में पटेल के यहाँ बैठे। बातों-बातों में संजय पटेल ने

बताया की पूर्व मुख्य मंत्री ने हाल ही में सपत्नीक पैदल नर्मदा यात्रा की थी, तब वे उनके यहाँ रुके थे।

“क्या पूरा पैदल चलते थे” मैंने उनकी पदयात्रा के बारे में सुना था इसलिए कन्फर्म कर रहा था।

“हाँ, एकदम पैदल, पति पत्नी दोनों हाथ में डंडा लेकर दिन भर पैदल माँ की परिक्रमा पथ पर चलते थे।”

“आपने पहले से ही उनके रुकने का इंतज़ाम किया होगा।”

“कोई इंतज़ाम नहीं किया था, सहज रूप से दोनों परिवार के सदस्यों की तरह रुके थे” संजय पटेल बोले।

“भगवान राम जहाँ रुके हों, वहाँ कौन नहीं रुकना चाहेगा?” सराटे जी बोले जो सोहागपुर से मेरे साथ हो लिए थे।

“मतलब??” मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

“हाँ साब, भगवान राम वनवास के समय हमारे गाँव में एक रात रुके थे।” संजय पटेल ने गर्वित होकर कहा।

“कहाँ??” अब तो आश्चर्य मिश्रित हर्ष से मेरा स्वर काँप रहा था।

“पास में नर्मदा जी के किनारे। अब तो वहाँ मन्दिर बन गया है। सुंदर स्थान है आप ज़रूर जाइये।”

“मैंने देखा है, आपको ले चलता हूँ” सराटे जी बोले।

हम लोग नर्मदा किनारे उस स्थान पर पहुंचे। ऊँची कगार पर विस्तृत भूमि घेर कर मन्दिर परिसर बना था। नीचे कगार से नर्मदा जी का दृश्य अत्यंत रमणीय था। वक्राकर नर्मदा बहती हुई जादू सा पैदा कर रही थीं। कौन ऐसे स्थान पर नहीं रुकेगा। बहुत देर कगार पर खड़ा हो देखता रहा उस सौंदर्य को जिसे भगवान राम ने अपनी उपस्थिति से पावन कर दिया था।

सराटे जी ने बताया कि एक महाराज जी ने यहाँ विकास कराया है जो अयोध्या से कुछ वर्ष पहले आये तो यहीं के होकर रह गये। सचमुच गेस्टहाउस जैसा सुंदर एक भवन बना था कगार पर और छोटे, बड़े अनेक मन्दिर थे। एक मन्दिर का निर्माण किया जा रहा था जिसमें राम सीता विराजमान होने थे। एक स्थान पर, ऊँची छतरी में चरण पादुका बनी थीं

और वहां लिखा था 'श्री राम चरणविंद' भगवान राम के सीता माता और लक्ष्मण के साथ यहाँ रुकने के चिन्ह।

महाराज जी से मुलाकात तो नहीं हो पाई पर स्थान की रमणीकता ने जैसे मन मोह लिया था।

आज पासी घाट पर मुझे वही वाक्या याद हो आया। पूछने पर पता लगा की पासी घाट से नर्मदा किनारे चलने पर पास में ही सांडिया घाट है, जो शांडिल्य मुनि की तपोभूमि रही है और वहां से थोड़ा ही आगे मांछा घाट है। ऐसा लग रहा था कि जैसे सारी स्थिति साफ हो रही थी।

“मांछा घाट पर भी भगवान राम के रुकने के प्रमाण मिले हैं” मैंने कहा।

“हाँ, यहाँ से सांडिया अर्थात शांडिल्य घाट होते हुए भगवान मांछा ही तो पहुंचे थे” करमदास जी बोले।

“शांडिल्य मुनि की भूमि पर भी रुके थे?”

“डॉ रामधार के विवरण के अनुसार नहीं, वहां से निकले थे पर रुके मांछा में ही थे।”

“डॉ रामधार का कांटेक्ट नंबर मिलेगा क्या” मैंने पूछा।

“मेरे पास तो नहीं है हाँ गुरुजी के पास होगा।”

“गुरुजी??”

“टाटमबरी बाबा, यहाँ के महाराज” पास बैठे एक सज्जन बोले।

“कहाँ हैं महाराज जी, मैं उनसे मिल सकता हूँ?”

“अभी तो कुम्भ गये हैं, प्रयाग। आने पर आइयेगा, मुलाकात होगी” करमदास जी बोले।

“हनुमान जी के दर्शन कर आता हूँ” मैंने कहा।

“दर्शन करें, तब तक मैं चाय की व्यवस्था करता हूँ” करमदास जी ने अपनेपन से कहा।

मन्दिर में गया। हनुमान जी की छोटी किन्तु भव्य प्रतिमा स्थापित थी वहां। मन्दिर का काम अभी भी चल रहा था। साथ आये एक बाबा ने रामदास जी महाराज के जगह जगह लगे चित्र दिखाए। हनुमान जी के दर्शन कर मैं बाहर निकला तो छतरी जैसे एक स्ट्रक्चर पर निगाह पड़ी। बाबा ने बताया कि भगवान राम के चरण चिन्ह हैं यहाँ मुझे मांछा फिर याद आया,



वहां भी ऐसी ही छतरी में भगवान के चरण बने थे। पूरी श्रद्धा से मैंने उन चरण चिन्हों पर अपना मष्तिष्क रख दिया। लग रहा था भगवान राम करुणानिधि बन मुझे आशीष दे रहे थे।

पास ही एक विशाल वट वृक्ष था जिसके चारों ओर बड़ी सी भूमि को घेर कर बागड़ लगायी गयी थी। अंदर वृक्ष के मोटे तने पर राम सीता और लक्ष्मण के चित्र लगे थे। शीश झुका, वृक्ष की प्रदक्षिणा कर मैं वापस आया। अनेक लोग बैठे थे वहीं पत्थर के सोफे पर मैं बैठ गया। करमदास जी की चाय भी आ गयी तब तक।

“सर ये राजकुमार यादव जी हैं। वाहन से नर्मदा की परिक्रमा कर रहे हैं” उस समय तक वहां आ गये एक युवक की ओर इशारा कर लाखे बोले।

“कहाँ से आ रहे हैं राजकुमार जी” मेरी जिज्ञासा उन्हें देख बढ़ गयी थी।

“करेली नरसिंगपुर के पास एक जगह है जोवा वहां से आ रहे हैं।”

“परिक्रमा तो इनके मालिक कर रहे हैं पैदल। ये तो गाड़ी लेकर उनके साथ चल रहे हैं” शर्मा ने जैसे खुलासा किया।

“मतलब??” मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

“वो पैदल परिक्रमा करते हैं और मैं वाहन से आगे के स्थान पर पहुंच उनके रुकने आदि की व्यवस्था करता हूँ।”

“कैसे पता रहता है कि आप उन्हें कहाँ मिलेंगे।”

“जैसे आज यहाँ पासी घाट पर रुकने, भोजन की व्यवस्था इस आश्रम में हो गयी। यहीं सुबह यह तय हो जायेगा कि कल कहाँ रुकना है। वहां पर व्यवस्था कैसे और कहाँ होगी।”

“वो कैसे तय करते हो।”

“कुछ तो मुझे आईडिया है, मैं दो तीन बार अलग-अलग लोगों के साथ यह परिक्रमा कर चुका हूँ। जहाँ रुकते हैं वहां भी आश्रम, मन्दिर या ग्राम के लोग बता देते हैं कि आगे कहाँ रुकना चाहिए” राजकुमार बोले।

“तो कल का तय कर लिया” मैंने पूछा।

“हाँ कर लिया न। माछा रुकेंगे।”

“अच्छा यहाँ से पैदल सचमुच एक दिन का रास्ता है मांछा, तभी भगवान राम यहाँ से चल मांछा पहुंचे होंगे सायं तक।” मैं धीरे से बुदबुदाया।

“जी सर?” राजकुमार ने चौंक कर पूछा।

“कुछ नहीं! कहाँ हैं इस समय तुम्हारे मालिक।”

“बस यहाँ पहुँचने ही वाले हैं।”

“क्या करते हैं वे।”

“किसान हैं जोबा के।”

“अच्छा वो ऐसी परिक्रमा करते रहते होंगे” किसान सुनकर मैंने यही सोचा।

“नहीं साब, पहली बार कर रहे हैं।”

“कुछ विशेष कारण।”

“उनकी बेटी IAS बन गयी है। वही मनौती पूरी होने पर कर रहे हैं।”

“क्या???” मैं जैसे उछल पड़ा। किसान सुन कर कुछ समय पहले जिस परिक्रमा को मैं ग्रामीणों की यात्रा सह पर्यटन समझ रहा था। अब एक IAS के पिता द्वारा की जा रही धर्म यात्रा समझ गया था।

“क्या नाम है आपके मालिक का?”

“विश्वास परिहार”

“और बेटी का?”

“तपस्या परिहार”

अब कुछ जैसे पूछने को बचा ही नहीं था। आकाश में सूरज ढल रहा था और उसी के साथ ढल रहा था मेरा अहम। सभी से विदा ले परिसर से बाहर निकलने लगा। वही बड़े वट वृक्ष की बागड़ से झांकती नर्मदा दिखी। अंदर जा बागड़ के किनारे खड़ा हो माँ को आंख मूंद प्रणाम किया और एक संकल्प खुद से लिया विश्वास परिहार जी जैसा।

“माँ मेरा भी संकल्प पूरा करना। मैं भी तेरी ऐसी ही पैदल परिक्रमा करूंगा” खंधे गले से दोहराया मैंने और आँखे पोंछता बाहर निकल आया।



## चल चला चल...

**न**र्मदा भारत की प्रमुख नदियों में से एक। नदियों के बहाव की मान्य परम्परा को तोड़ने वाली नर्मदा पूरब से पश्चिम की तरफ बहती है। हर काम को उल्टा करने वाली इसकी लम्बाई भी 1312 कि.मी. है। जैसे और नदी होती तो 1213 का सीधा माप रखती पर नर्मदा को यह सब कहाँ मंजूर।

अमरकंटक मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले का पहाड़ी नगर। इसी स्थान से निकलती है देश की सबसे अद्भुत नदी। सतपुड़ा और विन्ध्याचल के बीच अमरकंटक जिस पर बसा है वह मैकल पर्वत है। अमूमन नदियाँ पहाड़ों पर जमने वाली बर्फ के पिघलने से बनती हैं या किसी बड़े जल संरचना से किन्तु यहाँ भी नर्मदा ने विचित्र स्त्रोत अपनाया है, अपनी उत्पत्ति का। मैकल पर्वत पर शाल वृक्ष बहुतायत में हैं। इन वृक्षों की विशेषता होती है की ये अपनी जड़ों में टैंक रखते हैं जिनमे जल का भंडार करते हैं। वर्षा में जितना जल आवश्यक है उतना लेकर शेष को भविष्य के लिए जड़ों के नीचे जमा कर लेते हैं। यही जल रिस रिस कर पहाड़ से नदी के रूप में बहने लगता है और नर्मदा का जन्म होता है।

नर्मदा जन्म की पौराणिक गाथा भी है। कहते हैं भगवान शिव एक बार अमरकंटक में तपस्या कर रहे थे और उनके पसीने से प्रकट हुई एक बालिका जिसे भगवान शिव ने नर्मदा नाम दिया जिसका अर्थ था सब सुख देने वाली। शिव ने नर्मदा को सदैव बहने वाली, कभी न समाप्त होने वाली अमर नदी होने का वरदान दिया। राजा मैकल के यहाँ उस बालिका का प्रादुर्भाव हुआ था इसलिए मैकल ने उसे अपनी पुत्री मान पाला। विवाह योग्य होने पर राजा मैकल ने नर्मदा का विवाह राजकुमार सोनभद्र से निश्चित

किया। राजकुमारी नर्मदा की सहेली जुहिला जब उसका सन्देश सोनभद्र के पास ले गयी तो सोनभद्र जुहिला पर आसक्त हो गया। जुहिला ने भी अपनी सहेली से छल कर सोनभद्र के सम्मुख स्वयं को समर्पित कर दिया। नर्मदा इस विश्वासघात को सहन नहीं कर पाई और दोनों को त्याग उलटी दिशा में नदी बन बहने लगी। अमरकंटक पर अभी भी मान्य इस कहानी के साक्षी विपरीत दिशा में बहते सोनभद्र नद और नर्मदा उद्गम से बीस कि.मी. दूर एक उपेक्षित स्थान पर जुहिला नदी का उद्गम है। वहां अभी भी कहते हैं कि नर्मदा के क्षमा न करने से दोनों आज भी श्री हीन हैं।

आज के युग में पौराणिक गाथा से अधिक वैज्ञानिक कारण को ही तरजीह दी जाएगी। किन्तु यह तो हमें मानना ही होगा कि शाल वृक्ष सिर्फ अमरकंटक पर ही नहीं है, देश में अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ शाल की प्रचुरता है, पर और कहाँ-कहाँ ऐसी नदियाँ निकली हैं? पहाड़ से चारों दिशाओं में शाल की जड़ों से निकलने वाला जल कैसे एक नदी में परिवर्तित हो सकता है? कहीं ऐसा तो नहीं कि दैवीय कारण भी अपने पीछे एक वैज्ञानिक परिभाषा रखते हैं, जो हम जैसे विशेष बुद्धि वाले मनुष्यों को संतुष्ट कर सकें।

अमरकंटक मध्यप्रदेश के पूर्वी सिरे पर स्थित है और वहां से निकल कर पश्चिम की ओर बहते हुए वह मध्यप्रदेश को पूरा दो हिस्सों में फाड़ देती है। मध्यप्रदेश की जीवन रेखा नर्मदा को नक्शे में देखा जाय तो हृदय रेखा सी दिखती है। पूरे प्रदेश की यात्रा कर नर्मदा गुजरात में प्रवेश करती है और खम्बात की खाड़ी में समुद्र से मिल जाती है।

नर्मदा के साथ जितना धर्म है उतना ही दर्शन भी है। दर्शन यानि फिलासफी भी और दर्शन यानि पर्यटन भी। कहते हैं जो चीज़ हमारे पास इफरात में होती है उसकी हम कद्र नहीं करते। इसका सबसे अच्छा उदाहरण नर्मदा खंड में पर्यटन का है। नर्मदा ने यहाँ इतना सौन्दर्य उड़ेला है कि संभाले नहीं संभल रहा। यदि कहीं कोई एक साईट होती तो वहां उसे जतन से संभाला जाता पर यहाँ तो भरमार है, किस किस को संभाले।

शुरुआत, शुरुआत से करते हैं। अमरकंटक, नर्मदा का उद्गम स्थल। शिव के गले के रूप में अमरकंटक की धार्मिक मान्यता बहुत है। सतपुड़ा और विन्ध्याचल के संधि स्थल मैकल पर्वत पर स्थित अमरकंटक को यदि सिर्फ पर्यटन के हिसाब से ही देखें तो देश के किसी भी सुंदर हिल स्टेशन

से इसकी बखूबी तुलना की जा सकती है। अमरकंटक की चढ़ाई ही मन को मोह लेती है। साल वृक्षों से आच्छादित मैकल पर्वत पर घूमती सड़कें जादू जगाती हैं और अमरकंटक पहुँचने से पहले ही यह अहसास करा देती हैं कि विधिवत मार्केटिंग के अभाव में वह सम्मान पर्यटन स्थलों में अमरकंटक प्राप्त नहीं कर पाया है जिसका वो हकदार था।

ऊपर पहुँचते ही हम पाते हैं कि अमरकंटक एक अच्छा खासा कस्बा है। रुकने के भिन्न-भिन्न स्थान, मजे मजे का बाजार और अनेक पॉइंट्स जिनमें नर्मदा कुण्ड नर्मदा का उद्गम स्थल, विशाल कल्याण आश्रम, सोननद का उद्गम सोनमुदा, सीताराम बाबा जैसे अनेक रमणीक आश्रम, कबीर चबूतरा जहाँ कबीर ने साधना की थी, मार्कण्डेय आश्रम जहाँ मार्कण्डेय मुनि ने युधिष्ठिर को नर्मदा किनारे के तीर्थों की गाथा सुनाई थी। अनेक झरनों के साथ शहर के किनारे मन को लुभाने वाला कपिलधारा जल प्रपात जहाँ से नर्मदा पहाड़ से कूदती है और मैदानों में दौड़ती है।

नर्मदा का इतिहास मानव इतिहास जितना या उससे भी अधिक पुराना है। नर्मदा के किनारे मनुष्य की बस्तियां प्रागैतिहासिक काल से बसी थीं। होशंगाबाद जिले के सूरजकुंड स्थान पर मिला मनुष्य के असमान्य रूप से बड़े कंकाल से हजारों वर्षों का नर्मदा अस्तित्व सिद्ध होता है। इतिहासकार एल.पी. शर्मा ने अपनी किताब प्राचीन भारत में लिखा है की नर्मदा के किनारे पुरापाषाण काल के मानव अवशेष मिलते हैं। एक लाख वर्ष से भी अधिक पुरानी सोहन संस्कृति जैसे उपकरण नर्मदा घाटी में मिलने के प्रमाण मिले हैं। डॉ. टेरा के अध्ययन के आधार पर वे लिखते हैं कि नर्मदा घाटी जिसमें नरसिंहपुर व होशंगाबाद क्षेत्र मुख्य है, में पुरापाषाण कालीन औजार के साथ लुप्त जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। यहाँ से सोहन संस्कृति, जैसे चापर-चापिंग, हस्त कुल्हाड़े और विदारणियां (क्लीवर) पाए गये हैं। नर्मदा घाटी में एक स्थान हथनौरा से हमें होमो इरेक्टस का कंकाल प्राप्त हुआ है जिसे नर्मदा मानव की संज्ञा दी गयी। होमो इरेक्टस अर्थात वन मानव से होमो सेपियन्स आधुनिक मानव बनने की प्रक्रिया भारत में नर्मदा क्षेत्र में ही घटित हुई थी। नर्मदा घाटी में स्थित भीमबैठका के भित्तिचित्र उनके चित्रकारों को प्रागैतिहासिक काल का मानने के पर्याप्त सबूत देती हैं। नर्मदा के अंचल में नरसिंहपुर के पास भूतड़ा ग्राम में आदि पाषाण युग के पत्थर से बने चाकू, हंसिया पाए गये हैं।

आर्यों के इस देश में आने के बाद उन्होंने सम्पूर्ण उत्तर क्षेत्र में अपना फैलाव कर लिया था किन्तु नर्मदा के नीचे नहीं उतर पाए थे। नर्मदा उस समय उत्तर और दक्षिण की सीमा रेखा थी। यहाँ उत्तरापथ समाप्त होता था और दक्षिणापथ शुरू होता था।

नर्मदा के दोनों किनारों पर दंडकारण्य के घने जंगल थे और इसीलिए आर्य लड़ाकों से अधिक ये स्थान आर्य ऋषि, मुनियों को भाया।

आर्य ऋषि मुनियों के अनुकूल होने से यहाँ अरण्यक संस्कृति ने पैर पसारे। और मार्कण्डेय, कपिल, भृगु, जमदग्नि समेत अनेक ऋषियों ने यहाँ आश्रम बनाये। यहाँ की यज्ञवेदियों का धुआं आकाश में मडराता रहता था। आर्य ऋषियों में एक मान्य परम्परा बनती जा रही थी कि नर्मदा तट पर तपस्या नहीं की तो क्या किया।

द्रविड़ भी यहाँ जंगलों के कारण मोहनजोदड़ो और हड़प्पा समान नगर नहीं बना पाए थे। नर्मदा से बहुत नीचे जाकर विदर्भ क्षेत्र से उनकी बसाहटें शुरू होती थीं। मुनि अगस्त्य ने विन्ध्याचल को पार कर नर्मदा के दक्षिण तट पर जा आर्यों को दक्षिण में पहुँचाया। राम ने वनवास के अंतिम दिनों में नर्मदा के पार उतर दक्षिण विजय कर आर्य और द्रविड़ एकीकरण कराया।

नर्मदा तीन राज्यों में बहने वाली नदी है पर इसकी ममता और वात्सल्य मध्यप्रदेश के हिस्से में अधिक आया है जबकि महाराष्ट्र और गुजरात ने दस फीसदी से अधिक इसका भाग नहीं घेरा है। जहाँ मध्यप्रदेश में 1077 कि.मी. की इसकी लम्बाई है वहीं महाराष्ट्र में 74 और गुजरात में 161 कि.मी. सफर यह तय करती है। नर्मदा के ऊपर तीन बड़े बांध हैं गांधीसागर खंडवा, बरगी जबलपुर और सरदार सरोवर गुजरात

मध्यप्रदेश को अपने हिस्से का समस्त वात्सल्य उड़ेल देने वाली नर्मदा को मध्यप्रदेश ने भी छला नहीं। बड़े बेटे पर माँ का अक्सर लाड दुलार अधिक रहता है किन्तु माँ नर्मदा ने तो गजब कर डाला, नब्बे प्रतिशत मध्यप्रदेश को और शेष 10 प्रतिशत में गुजरात और महाराष्ट्र। पर बड़े बेटे ने भी मातृ भक्ति में कोई कसर नहीं छोड़ी। अमरकंटक से चलने वाली नर्मदा पूरे मध्यप्रदेश में स्वच्छ और निर्मल बहती है, कहीं भी कोई प्रदूषण नहीं। जैसे दोनों छोटे भाइयों को उतनी ही उजली नदी दी जाय जितनी बड़े ने पाई थी। ओमकारेश्वर सा तीर्थ, धुआंधार, कपिलधारा जैसे जल प्रपात, भेड़ाघाट

जैसा संगमरमरी सौन्दर्य, महिष्मती अर्थात् महेश्वर जैसा प्राचीन नगर और जबलपुर जैसा बड़ा शहर।

मध्यप्रदेश की जीवन रेखा कही जाने वाली नर्मदा अमरकंटक से उतर डिंडोरी जिले में प्रवेश करती है विलुप्तप्राय होती बैगा जनजाति की बहुलता का छोटा, सीधा जिला जिसने माँ को होले से निकाला है। यहाँ के लोग अक्सर हाट बाजारों में आने जाने हेतु नर्मदा को पैदल ही पार करते हैं, पर पहले हाथ जोड़ प्रणाम फिर नदी में प्रवेश।

नर्मदा का अगला पड़ाव है मंडला। हरा भरा सुंदर जिला नर्मदा के घाट की खूबसूरती से और इतराने लगता है। यहाँ झर झर करती नर्मदा अपने दूसरे नाम रेवा, जिसका अर्थ है तेज आवाज निकालना, को भी चरितार्थ करती है।

मंडला से जबलपुर। नर्मदा चाहती तो डिंडोरी से सीधे भी जबलपुर जा सकती थी पर मंडला की विनती स्वीकार कर घुमाव लेती हुई मंडला को धन्य कर बढ़ जाती है आगे। जबलपुर नर्मदा के किनारे बसा एक मात्र बड़ा शहर। इसे संस्कारधानी भी कहते हैं। मुझे छिंदवाड़ा पदस्थापना के दौरान अनेक बार जबलपुर जाने का अवसर मिला किन्तु मैं उस समय यह जान ही नहीं पाया कि इसे संस्कारधानी क्यों कहते हैं। पर आज समझ आया है जब देखते हैं कि कैसे जबलपुर ने बड़े शहर की हर बुराई को नर्मदा से दूर रखा और उसे वैसी ही स्वच्छ, सुंदर निकलने दिया है, जैसी वह है।

जबलपुर ने नर्मदा के साथ वह नहीं किया जो गंगा के साथ कानपुर ने किया, जो यमुना के साथ आगरा ने किया। और इसीलिए है वह संस्कारधानी।

बड़े शहर कैसे नदियों को प्रदूषित करते रहे हैं यह नर्मदा ने सुना तो ज़रूर होगा तभी तो सहमी सहमी जबलपुर से निकली लेकिन निकलते ही कैसी प्रसन्नता और उछंखलता है कि पूरी खुशी और गर्जना से गिरती है और धुआंधार जैसा जलप्रपात बनाती है।

भेड़ाघाट, धुआंधार के पास ही तेवर नाम का ग्राम है जिसे कहते हैं की त्रिपुर का अपभ्रंश है। मान्यता है कि भगवान शिव यहीं त्रिपुर का अंत कर त्रिपुरारी बने थे। कहा तो यहाँ तक जाता है कि भेड़ाघाट की संगमरमरी चट्टानें, जिनके बीच से नर्मदा बहती है, पारस पत्थर की सम्भावना रखती हैं। अनेक लोगों ने यहाँ तक कि किसी अंग्रेज बड़े अफसर ने भी पारस पत्थर

को यहाँ ढूँढने के फेर में अपनी जान गवां दी थी। पर कुछ विदेशी लेखकों तक ने अपने विवरण में यहाँ पारस पत्थर होने की बात कही है और यह रहस्य आज तक बरकरार है।

यहाँ से आगे चल नरसिंगपुर जिला मिलता है और ब्राह्मण घाट पर पहुंचती है नर्मदा पर उससे पहले कई धाराओं में बंट कर सतधारा बना देती है। ब्राह्मण घाट जिसे अब बरमान कहते हैं अति प्राचीन स्थान है जिसका वर्णन पुराणों में भी है। जब बात चली है, तो बताते चलें कि स्कन्द पुराण में पूरा एक रेवा खंड है। पौराणिक कथा अनुसार भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय ने नर्मदा के किनारे दोनों तटों के सभी तीर्थों की यात्रा की थी। मार्कण्डेय मुनि, जिनके बारे में कहा जाता है कि 21 बार की प्रलय में भी ये माँ नर्मदा के साथ जीवित रहे, द्वारा भी युधिष्ठिर को नर्मदा के किनारे समस्त स्थानों का महत्व बताया है। उनके वर्णन से लगता है कि नर्मदा के दोनों तटों पर अनगिनत तीर्थ हैं और भगवान शिव के जितने स्थान यहाँ हैं, घनत्व के अनुसार उतने कहीं नहीं।

बरमान के आगे होशंगाबाद जिला मिलता है और नर्मदा यहाँ सिरसिरी घाट पार कर पासी घाट पर होशंगाबाद जिले में प्रवेश करती है। भगवान राम के चरण पड़ने से पावन हुए पासी घाट का वर्णन पूर्व में किया गया है।

पचमढ़ी देश का विख्यात हिल स्टेशन। नर्मदा पथ से दक्षिण की ओर पिपरिया होते हुए मात्र 60 कि.मी. की दूरी पर। पासी घाट के बाद दूसरे सुंदर पर्यटन घाट सांडिया पहुंचने से पहले ही बनखेड़ी से रास्ता बदल पचमढ़ी आसानी से पहुंचा जा सकता है।

सतपुड़ा की रानी पचमढ़ी अंग्रेजों के समय से ही पर्यटन क्षेत्र में अपना नाम किये है। अन्य हिल स्टेशन की तरह यह संकीर्ण न होकर खूब फैलीफूटी है। कई तो समतल मैदान हैं जो पुरानी फिल्मों की याद दिलाते हैं और लगता है मैदान के किनारे बने पेड़ों के झुरमुट से अभी राजेन्द्र कुमार और साधना निकल कर गाना गाने लगेंगे।

रुकने खाने और घूमने की सभी सुविधाएँ हैं यहाँ। देखने की साईट की बात करें तो कई हैं फाल, पीक, लेक, हिस्टोरिकल प्लेस और मन्दिर जो किसी भी आदर्श हिल स्टेशन की पहचान होती हैं वह सब है यहाँ। सतपुड़ा की सबसे ऊँची पीक धूपगढ़ जहाँ से नयनाभिराम सूर्यास्त देखने रोज सैकड़ों



सैलानी पहुंचते हैं। पांडव गुफा जहाँ पांडवों ने अपना वनवास काटा था, दुर्गम ढलान के बाद दिखता शानदार वी फाल, जटाशंकर, सुरम्य वादियों में बना बड़े महादेव मन्दिर और धूपगढ़ जैसी ही ऊँची पहाड़ी पर विराजमान चौरागढ़ महादेव, प्रथम राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रासाद की स्मृति में बना राजेन्द्र उद्यान, लेक, वोट क्लब, हांडी खो और न जाने क्या क्या।

नर्मदा पथ पर फिर लौट चलते हैं। अब आया सांडिया, पुराना स्थान, सुंदर घाट पिपरिया रायसेन मुख्य मार्ग पर पड़ने से सांडिया तक पहुंचना सुगम्य है। सांडिया में घाटों के अलावा शांडिल्य ऋषि की तपोभूमि का स्थान है। पुराणों में सांडिया घाट का भी वर्णन है। याज्ञवल्क्य, वशिष्ठ और जमदग्नि मुनि ने एक बार यहाँ यज्ञ किया। सभी ऋषियों के साथ इसमें कश्यप मुनि को भी आना था पर जब वो नहीं आये तो ऋषियों ने कुशाओं की ग्रन्थि बना उसमें कश्यप ऋषि का आव्हान कर पूजन करने लगे। बीच में ही कश्यप मुनि आ गये और सारी बात जान कर उन्होंने कमंडल से जल लेकर ग्रन्थि पर डाला। सबके देखते देखते वह ग्रन्थि सुंदर युवा मुनि में बदल गया। कश्यप जी ने उसका शांडिल्य मुनि नाम दिया। मुनियों के साथ ऋषि धौम्य के शिष्य उपमन्यु भी थे जिन्होंने अपनी पुत्री का विवाह शांडिल्य मुनि से कर दिया। उन्हीं शांडिल्य मुनि की तपस्थली होने से इसे सांडिया घाट कहते हैं। कगार पर बना अच्छा स्थान है।

सांडिया के बाद सिवनी घाट सांडिया से अपेक्षाकृत ज्यादा सुंदर घाट है। सिवनी में नर्मदा पर पुल बना है और उस पार जाकर उत्तर तट पर मांगरोल घाट है जहाँ मन्दिर हैं पक्का सीढ़ियों वाला सुंदर घाट है। इसके बाद मांझा का सुंदर कगार, नीचे बहती नर्मदा। राम के वनवास समय होशंगाबाद जिले में रुकने का दूसरा स्थान। पूरब से पश्चिम की ओर बहने वाली नदी मांझा से पहले दक्षिण की ओर मुड़ गयी है जो मांझा से ही लगे अझेरा पर फिर पश्चिम मुखी हो गयी है। अझेरा पर कुब्जा नदी का नर्मदा में संगम है मांझा से अझेरा और अझेरा से मांझा की झांकी देखते ही बनती है। मांझा के बाद फिर से नर्मदा का पथ छोड़ कुछ दक्षिण में चला जाय तो 20 कि.मी. की दूरी पर सोहागपुर अर्थात् पुराना शोणितपुर। बाणासुर की राजधानी जिसकी पुत्री उषा से अपने नाती अनिरुद्ध का विवाह कराने स्वयं श्री कृष्ण द्वारका से दल बल के साथ आये थे। बाणासुर को मल्ल युद्ध में परास्त कर उन्होंने उषा से अनिरुद्ध का विवाह यहीं सम्पन्न कराया था।

होशंगाबाद जिले की एक और विशेषता है, यहाँ हमारे दोनों ही अवतार पुरुष भगवान राम और भगवान कृष्ण के आने के संकेत मिलते हैं।

प्रकृति और जंगली जानवरों को देखने के शौकीन पर्यटकों को सोहागपुर के पास सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढ़ई है जो खूबसूरत देनवा नदी के किनारे है।

टाइगर, बाइसन, हिरण के अतिरिक्त अगिनित जीव जंतु सहज ही दिखते हैं मढ़ई में। वन विभाग के अलावा यहाँ अनेक सरकारी, गैर सरकारी रिसोर्ट बन गये हैं।

सोहागपुर से फिर नर्मदा पथ पर पहुंचे तो रेवा बनखेड़ी 20 कि.मी. पक्की सड़क से जुड़ा है। रेवा बनखेड़ी पर पक्का घाट तो नहीं बना पर ऊँची कगार पर फैले बड़े भूखंड में सुंदर राम जानकी मन्दिर, शासकीय भवन पंक्ति बद्ध और विशाल पीपल वृक्ष। जिसकी छाया में बैठ नीचे बहती नर्मदा को निहारना तेज गर्मियों में भी अच्छा लगता है। रेवा बनखेड़ी के बाद ईशरपुर जहाँ राइन नदी का संगम है। यहाँ ऊँची कगार से नीचे तक कम चौड़ी किन्तु पक्की सीढ़ियां गयी है। नर्मदा यहाँ भी मनभावन है। इसके बाद पामली जहाँ पलकमती का संगम नर्मदा से होता है और उसके 4 कि.मी. बाद रामनगर। सुंदर रामनगर घाट जो प्राचीन समय में पांडव दीप कहलाता था। रामनगर में पुराना मन्दिर है जहाँ पांडवों द्वारा स्थापित शिव लिंग आज भी मौजूद है। कहते हैं यहाँ पांडवों ने कुछ दिन वास किया था माँ नर्मदा में स्नान और यज्ञ हेतु। ऊँचाई पर बसा रामनगर से नर्मदा का सौन्दर्य देखते ही बनता है। नीचे उतर कर कच्चा घाट है पर इस प्राकृतिक घाट से भी नर्मदा अपनी सुन्दरता का बखान करती हैं। आगे संगखेड़ा खुर्द के रेतीले लुभावन घाट के बाद नसीराबाद। यहाँ नर्मदा पर फिर से पुल है और उत्तर तट पर नान्देनेर से नर्मदा के फलो की दिशा में चलने पर पक्का घाट जैत और उसके बाद शाहगंज। शाहगंज से पहले बरेली की बात आवश्यक है, जहाँ चमत्कारिक छिन्द वाले दादा के रूप में हनुमान जी विराजित हैं। छिन्द के इस मन्दिर की बहुत मान्यता है और दूर-दूर से लोग यहाँ आते हैं। मंगलवार को तो मेले जैसा माहौल बन जाता है।

शाहगंज साफ सुधरा कस्बा है जिसमें रेस्ट हाउस वाले नर्मदा तट पर पहुंच कर तो शब्द विहीन हो जाते हैं। चौड़ा पाट ले बहती नर्मदा और उपर तट पर बना रेस्ट हाउस जिसकी अपनी लोकेशन लालायित करती है पर्यटकों

को वहां रुकने के लिए। रेस्ट हाउस से नर्मदा तक जाने के लिए पृथक रास्ता बना है। पेड़ों से आच्छादित वह जगह नीचे बहती नर्मदा और रेत का बीच। अद्भुत सौन्दर्य और उतना ही सरकारी प्रयास। दोनों की तारीफ एक साथ यहाँ करने को मन करता है।

रेस्ट हाउस के पास ही दो मंजिला बड़ा और भव्य पृथक भवन बन रहा है जो निश्चित रूप से पर्यटकों को लालायित करेगा और एक साथ अनेक लोगों के रुकने की सम्भावना को बढ़ाएगा। उत्तर तट से आगे बढ़े तो हथनोरा और उस पार सूरज कुण्ड का ऐतिहासिक और वैज्ञानिक घाट। सूरजकुंड की अपनी विशेषताओं के कारण इसे मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम ने अपनी देखरेख में लिया है।

सूरजकुंड के बाद दर्शनीय बांद्राभान जिसके दोनों ही तट खूबसूरत हैं। दक्षिण तट पर तवा का नर्मदा से संगम है। दूर-दूर तक स्वच्छ नर्मदा के साथ चलते रेत के तट गोवा के बीच की याद दिलाते हैं।

पसरे इन्हीं रेत के मैदानों पर बांद्राभान उत्सव का आयोजन होता है जो सरकारी कार्यक्रम होने से इस खूबसूरत जगह में छिपी अनंत संभावनाओं को नकार देता है और नकार देता है किसी विदेशी समुद्री बीच पर रात की रौशनी में नहाये रंग बिरंगे भव्य बीचफेस्ट जैसे आयोजन की सम्भावना को। बांद्राभान का उत्तर तट भी कम खूबसूरत नहीं है। अनेक मन्दिर, आश्रम के पक्के निर्माण के साथ सीढ़ियों वाले पक्के घाट और चट्टानों से टकरा कर झर झर करती, नाद मचाती नर्मदा। सीढ़ियों पर बैठ जाओ तो उठने का नाम नहीं, लगता है नर्मदा को ही निहारते रहें। दोनों तटों को एक साथ देखने की तमन्ना भी नाव वाले पूरी करा देते हैं। कार्तिक पूर्णिमा पर यहाँ विशाल मेला हर साल लगता है। जिसमें नहाने का पौराणिक महत्व है।

बांद्राभान के बाद सीधे होशंगाबाद शहर में प्रवेश। पूरा शहर नर्मदा के किनारे बसा होने से अनेक सुंदर घाट हैं यहाँ जिनमें सेठानी घाट, विवेकानन्द घाट, वीर सावरकर घाट। होशंगाबाद से ही लगे बुधनी में नर्मदा के उत्तर तट का सुंदर घाट है। उत्तर तट पर ही हनुमान गढ़ी है जहाँ सुंदर मन्दिर और बाग है। पक्की चौड़ी सीढ़ियां नर्मदा के रेत तक पसरी हैं। यहाँ से दक्षिण तट पर बसे होशंगाबाद नगर को at a glance देखा जा सकता है।

होशंगाबाद भोपाल से दक्षिण में 70 कि.मी. की दुरी पर है और इसी रास्ते में ठीक बीचों बीच यानि होशंगाबाद से 35 कि.मी. की दूरी पर है

भीमबैठका जो अपने प्रगैतिहासिक शैल चित्रों के कारण विश्व प्रसिद्ध है और जिसे वर्ल्ड हेरिटेज का दर्जा प्राप्त है। भीमबैठका पहुंचने का एक मार्ग शाहगंज से भी जाता है। विन्ध्याचल की लुका छिपी के बीच सागौन और खेर के जंगल से होते हुए दोहटा घाटी पर बलखाती सड़क से सीधे भीमबैठका पहुंचा जा सकता है जो 30 की.मी. है। त्रिभुज बनाना हो तो भीमबैठका से बुधनी।

बुधनी से 23 कि.मी. की दूरी पर माता का सुप्रसिद्ध सलकनपुर मन्दिर है। दक्षिण तट पर चल रहे लोग भी होशंगाबाद से नर्मदा पुल पार कर बुधनी होते हुए कुल 30 कि.मी. की यात्रा कर सलकनपुर पहुंच सकते हैं। होशंगाबाद जिले में ही मात्र 18 कि.मी. दूर इटारसी है जो रेलवे का बड़ा जंक्शन है और जहाँ से चारों दिशाओं के लिए ट्रेन उपलब्ध हैं। होशंगाबाद से निकलने के बाद नर्मदा अपने पूरे रौ में आती है। जैसे होशंगाबाद में मिले मान सम्मान ने दूना जोश भर दिया हो। तभी तो रंधाल निकलते ही अनजाने से गाँव बरनडुआ में चित्रकला, संगीतकला और नृत्यकला जैसी सभी कलाएं दिखाई हैं।

अकल्पनीय! अद्भुत! सोचा ही नहीं जा सकता कि गुमनाम से गाँव में यह रूप भी होगा नर्मदा का। पर्यटन विभाग अफसोस नहीं करेगा बल्कि यहाँ तो अवाक् ही रह जायेगा। स्पष्ट सात धारायें, कोई पूरब से आ रही कोई उत्तर से। टीलों और बड़े पथरों ने जगह जगह बाँट दिया है नर्मदा को। स्वच्छ जल बोल्टर से निकलता हुआ इतना साफ कि तलहटी स्पष्ट दिखती है। झर-झर करती शोर मचाती, पथरों, बोल्टर से निकलती साफ नर्मदा यहाँ उत्तराखंड की पहाड़ी नदियों का आभास कराती है। पर मैदान में पहाड़ का अहसास, यह तिलस्म तो नर्मदा ही रच सकती है।

आगे तालनगरी और फिर खोकसर, जहाँ गौरीशंकर महाराज की समाधि है, होते हुए नर्मदा खरखेड़ी पहुंचती है। खरखेड़ी का सुंदर घाट और घाट पर बने मन्दिर मन को लुभाते हैं। ये गाँव हिंदी की प्रसिद्ध कवि भवानीशंकर मिश्र का है। इस जिले में यह भी एक विशेषता है, या माँ नर्मदा का आशीष कि एक से एक साहित्यकार हुए हैं यहाँ। माखनलाल चतुर्वेदी बाबई के थे तो हरिशंकर परसाई जमानी इटारसी में जन्मे थे।

खरखेड़ी के बाद नानपा। उफ! क्या जादू जगाने वाली सुन्दरता है यहाँ। ऊँची कगार से नीचे कोण देकर बहती हुई नर्मदा कितनी सुंदर लगती है। नदी के बीच फैली समतल चट्टान से टकरा कर झरने की आवाज निकालती

है रेवा। चट्टान पर अनेक पंछी बैठे रहते हैं। कगार पर बने सुंदर आश्रम के स्वामी जी बता रहे थे की साइबेरियन बर्ड्स भी यहाँ आती हैं।

नानपा के बाद आंवली घाट, घाट से ठीक पहले हतेड नदी मिलती है नर्मदा से। आंवली घाट का विशेष महत्व है। कहते हैं वनवास के समय यहाँ पांडव कुछ समय के लिए रहे थे और उन्होंने हस्तिनापुर नाम का ग्राम बसाया था। जीवंत घाट है आंवली घाट जहाँ प्रकृति और मनुष्य दोनों ने ही सुन्दरता बिखेरने में कदमताल की है।

आंवली घाट से भिलाड़िया घाट होती हुई नर्मदा हरदा जिले में प्रवेश करती है। भिलाड़िया के सामने उत्तर तट पर शिव का प्रसिद्ध मंदिर नीलकंठ है, जहाँ नर्मदा और कोलार नदी का संगम है।

हरदा भी कभी होशंगाबाद का ही भाग था। पर बंटवारे के पहले की देखें तो नर्मदा सबसे अधिक यदि किसी जिले में बहती है तो वह है होशंगाबाद, 250 कि.मी. के करीब है इस संयुक्त जिले में नर्मदा की लम्बाई जो महाराष्ट्र और गुजरात दोनों के जोड़ से भी अधिक है।

हंडिया घाट हरदा का सबसे प्रसिद्ध घाट है। दक्षिण तट पर हंडिया तो उत्तर पर नेमावर है जो देवास जिले में आता है। नेमावर प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है जहाँ भगवान शिव सिद्धनाथ के रूप में विराजे हैं। पुराण में नेमावर का विशेष महत्व बताया गया है। जैन धर्म का भी नेमावर प्रसिद्ध तीर्थ है।

पौराणिक कथा है कि कुबेर ने नेमावर के सिद्धनाथ जैसी ही स्थापना करने की भगवान शिव से आराधना की। कुबेर की भक्ति से प्रसन्न होकर शिव ने उन्हें हंडिया में रिद्ध नाथ के रूप में अपनी स्थापना की अनुमति दी थी। नेमावर अथवा हंडिया नर्मदा का नाभि स्थान है। अर्थात यहाँ नर्मदा बिलकुल आधी दूरी तय कर लेती है।



## रूँ ही अनायास

2 जनवरी 19 कलेक्टर के साथ आकस्मिक भ्रमण पर चलना है, यह सन्देश कल ही मिल गया था। ठीक समय पर चुनिन्दा अधिकारियों के साथ काफिला रवाना हुआ और अचानक तय हुआ कि रायपुर और बीकोर जायेंगे। मैं मन ही मन शारदा को धन्यवाद देने लगा और नर्मदा के प्रति कृतज्ञता जो माँ ने अपने किनारे बुलाया है। कल ही चालक अमजद ने पूछा था कि सूरज कुण्ड गये हैं और मैंने एक बार जाने की सूचना दी उसे किन्तु यह तो मैं ही जानता था की कुछ दिन से सूरजकुंड और बांद्राभान जाने की इच्छा थी और बीते इतवार को जाने का मन भी बनाया था पर जा न सका।

रायपुर के बाद तवा पार कर बीकोर जाने के लिए नर्मदा के किनारे किनारे चलने लगे।

“ये रास्ता नर्मदा परिक्रमा करने वालों के लिए ही बना है” अमजद गाड़ी चलाते-चलाते बोला।

“अबकी बार जब भी परिक्रमा वाले मिलें, मुझे मिलवाना” मैंने कहा।

मैं सोच रहा था कि बीकोर में भ्रमण जल्द निपट गया तो लौटते में जी भर कर माँ के साथ समय बिताऊँगा। सच में ही मन की हो गयी और बारह बजे से पहले ही काम निपट गया। वापसी में मैं काफिले को छोड़ धीरे धीरे नर्मदा किनारे चलने लगा। बीकोर से सूरजकुंड तक का लगभग 5 कि.मी. का सफर नर्मदा ने बड़े मौज में पूरा किया है। एक जगह धनुष कुण्ड लिखा देखा तो जाकर तफसील की, सचमुच यहाँ नर्मदा धनुष का आकार ले बह रही थी। उत्तर तट पर हथनोरा दिख रहा था जहाँ नर्मदा ने बड़ा-सा तालाब का रूप ले लिया था। सूरज कुण्ड पहुंचे, कुछ आवाजाही दिख रही थी।

“ये लो साब, आप कह रहे थे परिक्रमावासी से मिलना है, मिल लो”  
अमजद ने कहा और एक बुजुर्ग की ओर इशारा किया।

“आप क्या परिक्रमा कर रहे हैं दादा।”

“जी”

“कहाँ से आ रहे हैं?”

“सतरामऊ डोबी से।”

“ये कहा पड़ता है?”

“यहाँ से पल्ली पार ग्राम है।”

“आप के साथ और भी लोग हैं?”

“हाँ, कुल पांच लोग हैं। ये बैठे हैं, खाना बना रहे” कहते हुए उन्होंने इशारा किया नजदीक ही चार लोग भोजन तैयार कर रहे थे।

“आप सभी साथ में हैं?” कहते हुए मैं वहाँ चला गया जहाँ वे खाना बना रहे थे।

“हाँ साब, पांच लोग हैं।”

“ग्राम भी एक ही होगा?”

“सतरामऊ डोबी से ही हैं सभी।”

“क्या नाम है आपका?” मैंने एक साथ बैठ बाटी बना रहे पति पत्नी से पूछा।

“मेरा भजन लाल मालवी और ये मेरी पत्नी है गायत्री बाई।”

“कबसे कर रहे हैं यात्रा।”

“दो माह पहले यहीं दूसरे पार हथनौरा से उठाई थी परिक्रमा।”

“कोई विशेष प्रयोजन?” मैंने पूछा।

“हाँ एक मन्त थी, जो पूरी हो गयी, इसलिए परिक्रमा कर रहे हैं”

“बताएँगे क्या थी?” मारे उत्तेजना के मुझसे रहा न गया

“नाती की तबियत अचानक बहुत खराब हो गयी थी। कैसे भी सही नहीं हो रही थी। घबराहट के मारे एक ही सहारा दिखा। किनारे आकर हाथ जोड़ विनती की कि मैया दया करो। जैसे बन पड़ेगी तुम्हारी परिक्रमा करेंगे” भजनलाल जी ने नर्मदा की ओर हाथ जोड़ कहा।

“और मैया ने हाल ही दया कर दी बाबूजी, नाती ठीक हो गया” गायत्री देवी सजल नेत्रों से बोलीं।

“माई की महिमा का कोई बखान नहीं है साब, जो मांगो, देती है” श्रद्धा से जुड़े हाथों के साथ भजनलाल बोले।

“उसी समय आपने शुरू कर दी यात्रा?”

“बस निकल पड़े माँ माई की सेवा में। रविदास उनकी पत्नी और जो आपको मिले थे भगवान दास, वो भी तैयार हो गये।” भजनलाल के हाथ अभी भी नर्मदा की ओर जुड़े थे।

“कब तक पूरी कर लेंगे?”

“कोई हिसाब नहीं है। घर पर थे तो तमाम हारी, बीमारी, परेशानी पर जब से माई की गोद में घूम रहे हैं बड़ा आनंद है साब, सो कोई जल्दी नहीं, जब हो जाय” इस बार रविदास बोले।

“हाँ बाबूजी बड़ा चैन है, खाना भी कभी-कभार ही बनाना पड़ता है, नहीं तो जगह जगह धर्मशालाओं में सदावत्त की व्यवस्था है” गायत्री बोलीं।

“कौन करता है??”

“एक से एक धर्मात्मा पड़े हैं साब, खाना, नाश्ता, चाय, जूता चप्पल, कपड़ा सब की व्यवस्था करते हैं।” भजनलाल ने कहा।

“ऐसा नहीं कि बोझ समझ रहे हों, पूरी श्रद्धा से करते हैं” रविदास बोले।

“नर्मदा मैया के दोनों ओर एक बात तो स्पष्ट हुई है कि जितने पापी हैं, उनसे अधिक धर्मात्मा हैं” भजनलाल ने जोड़ा।

“यहाँ से कब निकलेंगे?” मैंने पूछा।

“सूरजकुंड जगह भा गयी है, आज तो रुकेंगे यहीं, कल निकलेंगे।” भजनलाल ने कहा।

“घर वालों की याद नहीं आती?”

“सब मिलने आये थे कल तीनों लड़के, तीनों बहुरं, नाती। नाती जिसके लिए हमने परिक्रमा बोली थी, बाबा का इतना लाडला है कि दिन भर फोन करता है, बाबा को” गायत्री देवी बोलीं।

“हाँ चले हुए दो माह हो गये हैं, सबको कल देख लिया तो अच्छा लगा” भजनलाल बोले।



“कहाँ-कहाँ घूम आये परिक्रमा में?”

“पल्ली पार से उठाई थी, नर्मदा के उत्तर तट पर बरमान, नरसिंगपुर, जबलपुर मंडला, होते हुए अमरकंटक तक गये वहां से डिंडोरी मंडला, बरगी, भेड़ाघाट, सांडिया, मांझा होते हुए यहाँ आ गये हैं। आधी से कुछ कम परिक्रमा हो गयी है” रविदास ने उत्तर दिया।

मैंने अनुमान लगाया की लगभग 1000 कि.मी. की यात्रा उनके द्वारा हुई है। पर दो माह का समय तो कम लगा। जिज्ञासा वश मैंने पूछा।

“पर कम समय में इतनी दूरी तय कर ली आपने।”

“कहीं-कहीं बस ले ली थी जब ज्यादा ही ठण्ड पड़ी” इस बार भगवान दास बोले। सबको कुशलता से परिक्रमा करने की शुभकामनाएं दीं और मैं उनसे विदा ले घाट पर नीचे उतर गया। माई का आचमन किया, हाथ जोड़ विनती की।

उपर आया तो अमजद बोला।

“यहाँ की एक विशेषता है साब, नर्मदा यहाँ विशेष कोण लेती है जिससे सूरज की सीधी रौशनी पड़ती है यहाँ जल पर। सूरज की अल्ट्रा वाइलेट किरणें यहाँ जल को औषधीय महत्व का बना देते है।”

“सिर्फ यही बात नहीं है, यहाँ की। सूरज भगवान ने यहाँ तपस्या की थी और दानव को मारा था, जो किसी के मारे नहीं मर रहा था। उसकी विशालकाय हड्डी, कंकाल कोई दस बरस पहले यहाँ तट से वन विभाग वाले ले गये थे। अभी भी होशंगाबाद में देखी जा सकती हैं” एक युवक जो तट पर छोटी दूकान लगाये था, पास आकर बोला।

“आपका नाम?” मैंने पूछा।

“चिरौंजी केवट” उसने बताया।

कहाँ रहते हैं?

“गुडला। वहां से भी माई निकली है।”

“कितना बड़ा कंकाल था वो” मैंने जानना चाहा।

“कुल कितना बड़ा था यह तो पता नहीं पर बीस फुट लम्बी उसके हड्डियों का अवशेष मिला था” चिरौंजी ने बताया।

“आप क्या यहाँ नियमित दूकान लगाते हैं। विक्री हो जाती है?”

“परिक्रमावासी आते जाते हैं। इतवार को बड़ा मेला लगता है यहाँ।”

“मेला??”

“हाँ साब दूर-दूर से लोग आते हैं, त्वचा के सफेद दाग यहाँ रविवार को नियमित नहाने से दूर हो जाते हैं” चिरौंजी ने एक और विशेषता बताई सूरजकुंड की।

मुझे लगता है इतिहासकार एल.पी. शर्मा ने हथनौरा में जिस होमो इरेक्टस का कंकाल मिलना बताया था, वह और सूरजकुंड का दानव संभव है एक ही हैं क्योंकि हथनौरा और सूरजकुंड नर्मदा के उत्तर दक्षिण के आमने सामने के तट हैं। बहरहाल सूरजकुंड को मध्यप्रदेश टूरिज्म ने पर्यटन स्थल घोषित किया है। यहाँ धर्मशाला और शेड बने हैं, बड़ा सीमेंटेड चबूतरा है जिस पर लोग बैठते हैं, नर्मदा माँ की आराधना करते हैं, पिकनिक मनाते हैं।

सूरजकुंड से बांद्राभान के लिए निकल लिए। पूरे रास्ते विन्ध्याचल के समानांतर चल रहे थे जिससे स्पष्ट था कि नर्मदा भी हमारे साथ-साथ ही विन्ध्याचल के किनारे बह रही थी। तवा को पार कर बांद्राभान पहुँचे। संगम स्थल जाने हेतु गाड़ी नीचे उतार दी।

बांद्राभान रमणीक स्थल। मन को मोह लेने वाली सुन्दरता नर्मदा के उत्तर तट पर दिख रहे मन्दिर और उनके पीछे उन्नत भाल लिए मदमस्त विन्ध्याचल पर्वत, स्वच्छ जल से भरी नर्मदा का चौड़ा पाट, पास में दक्षिण किनारे पर धीरे-धीरे आकर मिलती तवा। तट पर दूर तक फैली रेत। मैं अक्सर यहाँ आकर यह सोचता हूँ कि क्यों दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों के लोग बांद्राभान जैसी शांत और जीवंत जगह पर नहीं चले आते सुकून के लिए। गोवा के बीच पर घूमने वाले कभी यहाँ की रेत में बैठ कोई शाम गुजार कर तो देखें।

नर्मदा परिक्रमा करने वालों का एक दल यहाँ भी मिला। परिक्रमा वालों के देख कर लगता है कि हजारों कि.मी. की यात्रा जिसमें अधिकांश रास्ता निर्जन है, नर्मदा है, घाटियाँ हैं, वन है, पहाड़ हैं पर निर्विघ्न यात्रा होती है। सूरजकुंड पर भजनलाल जी बता भी रहे थे की कैसे लोग आगे बढ़ कर परिक्रमावासीयों की सेवा करना पुण्य का काम समझते हैं। इससे तो एक बात ही समझ आती है कि नर्मदा का अदृश्य प्रभाव है यह कि इस क्षेत्र में धर्म है, सदाचार है और यह सब माँ नर्मदा के कारण ही है अन्यथा इसी

मध्यप्रदेश में ऐसे भी स्थान हैं जहाँ इस प्रकार की यात्रायें खतरे से खाली नहीं हैं, अपहरण, लूट, हत्या जैसे अपराध वहाँ आम बात है।

माँ नर्मदा के किनारे जाकर यहाँ भी आचमन किया। माँ के सम्मुख हाथ जोड़ प्रार्थना की कि माँ अपनी ही गोद में बनाये रखना। सबके संकल्प पूरे करती है, मेरे भी पूरे करना। इंस्टैंट फल देने वाली माँ हम पर कृपा करना।

“ऐसा क्या था जो आपको सात समन्दर पार यहाँ खींच लाया।”

संगम से ऊपर आ मैं नर्मदा किनारे एक आश्रम में चला गया। फ्रेंच महिला थीं उस आश्रम की निवासी। बड़े भू भाग में फैला हरा भरा और शांत आश्रम सबका मन मोह ले पर एक विदेशी महिला, और वह भी फ्रांस जैसे विकसित देश की, द्वारा अकेले यहाँ रहने की बात ने ही मुझे रोमांचित कर दिया था। मैं उन्हें देखते ही पूछ बैठा।

“मेरा शुरू से ही अध्यात्म में रुझान था। इंडिया ने बचपन से ही मुझे बहुत आकर्षित किया। 12 वीं पढ़कर फर्स्ट इयर में एडमिशन लिया पर मन तो जैसे इंडिया के लिए मचल रहा था। सब छोड़ छाड़ यहाँ चला आया।”

मैंने देखा कि वो हिंदी बहुत अच्छी बोल रही हैं। बस स्त्रीलिंग की जगह पुलिंग प्रोनाउनशेसन करती थीं। पर उनके मुख से बड़ा अच्छा लग रहा था। वो मुझे कुछ दिखाने अंदर चली गयी तभी एक और स्वामी आते दिखे।

“आप भी फ्रांस के हैं?”

“जी हाँ” उन्होंने भी स्पष्ट हिंदी बोली।

“अरे आप भी अच्छी हिंदी बोलते हैं।”

“हाँ वर्षों से यहाँ रह रहे हैं।”

“क्या माताजी के साथ ही आये थे।”

“नहीं अलग-अलग समय अलग अलग स्थान से आये हैं। यहाँ ही मिला माताजी से।”

“क्या नाम है आपका।”

“सुमेर मुनि।”

“ये तो यहाँ का नाम है, फ्रांस का नाम?”

“जेयराठ”

“और माताजी का?”

“राधा मुनि, फ्रांस में ये पित्रुरु थीं।”

“आप भी क्या यहीं रहते हैं?” मैंने पूछा।

“कहाँ, ये आधा समय यहाँ, आधा घूमते रहते हैं” सुमेर मुनि के बोलने से पहले ही माताजी बोल पड़ीं, जो waste पेपर से आश्रम में बने खूबसूरत हैंडीक्राफ्ट ले कर आयीं।

“आपने तो बहुत सुंदर टोकरी, गमले, पेनदान, कलश बनवाए हैं।”

“बांद्राभान की कुछ लड़कियां आती हैं उन्हें ही सिखाना भाता है मुझे। अब तो इतने बन गये की स्टाल लग जाय।” हंस कर उन्होंने कहा।

“बांद्राभान आपको अच्छा लगता है।”

“नर्मदा के सभी किनारे अच्छा लगते हैं। ये सबसे अच्छा लगा।”

“यहाँ कैसे आये आप।”

“मैं 24 वर्ष की उम्र में फ्रांस छोड़ा। दस साल यहाँ परिवारजक बन घूमा। पंजाब, ज्वाला देवी सभी जगह गया, इसी बीच गुरु मिले। कुछ समय उनके पास बिता प्रेरणा मिली नर्मदा परिक्रमा की। 1997-99 में पैदल परिक्रमा की। पूरी नर्मदा इतनी भाई की इसी के किनारे रहने की ठानी और अंत में ये जगह भायी और मेरी यायावरी यहाँ आकर रुकी।”

“कबसे रह रही हैं यहाँ।”

“2000 से। सन्यासियों के लिए जिन स्थानों की महत्ता बताई है वे सब खूबी हैं यहाँ”

“मतलब?”

“हमारे हिन्दू धर्म में साधू, सन्यासियों के लिए पहाड़, नदी, संगम इन तीन स्थानों के पास रहने हेतु आदर्श स्थान बताये हैं और यहाँ तो सब है देखें नर्मदा निर्मल जल लिए बह रही है नीचे, नर्मदा को आंचल में समेटे उस तरफ विन्ध्याचल दिख रहा है और संगम तो है ही यहाँ” उन्होंने कहा। हमारे हिन्दू धर्म कहने पर अच्छा लगा फिर ख्याल आया की क्यों न कहें राधा मुनि जो हैं अब।

सचमुच अद्भुत दृश्य था। हम लोग बात करते आश्रम के किनारे आकर खड़े हुए। रिटेनिंग वाल कटाव रोकने हेतु बनी थी। दूर तक फैली

रेत, सुंदर नर्मदा जल, ऊँचा विन्ध्याचल, पूरब की ओर तवा का संगम। वे हमें एक गुफा में नीचे ले गयीं। सकरी गुफा लगभग 10 फुट नीचे तक गयी थी। नीचे उनका साधना स्थल था जहाँ काली देवी, जगदम्बा और उनके गुरु की विशाल फोटो लगी थीं। गुफा से बाहर आकर हम लोग आश्रम की एक छोटी लाइब्रेरी में गये जहाँ भगवद्गीता, रामायण, पुराण जैसे ग्रन्थ रखे थे। पीछे एक विशाल वृक्ष था जो बरगद और पीपल का मिश्रित रूप था। बरगद की टहनियां नीचे आ आकर अनेक स्थानों पर भूमि में जाकर मोटे तने का रूप ले चुकीं थीं।

“माताजी को इस वृक्ष से बहुत लगाव है। खुद ही तमाम बरगद जड़ों को जमीन में गाड़ती हैं, अपने हाथों से।”

“इसीलिए तो इतना विशाल बन गया है। बरगद पीपल दोनों एक साथ और इतना भव्य विशाल मैंने पहले कभी नहीं देखा। इसके नीचे खड़े हो नर्मदा कितनी सुंदर दिखती हैं।”

“मेरा भाई फ्रांस से पूछता रहता है कि कैसे मैं यहाँ अकेली इस गाँव में रह रही हूँ। मैंने कहा कि आकर देख जाओ तो समझ आ जायेगा कि भरा पूरा प्रकृति का सुंदर साथ है, कहाँ अकेली हूँ” बरगद की एक लटक रही जड़ को मिट्टी में दबाते हुए माताजी बोलीं।

“तो उन्होंने क्या कहा?”

“आ रहा है मेरे पास अगले महीने”

“तब तो आपको बड़ी खुशी हो रही होगी।”

“उसके लिए खुशी भी है और चिंता भी।”

“चिंता??”

“इतनी रमणीकता में यहीं न रम जाय। मैं तो अकेली थी उसका तो परिवार है।” कहते हुए निश्चल हंसी हसने लगीं। मैं एक घंटा से अधिक उनके साथ था और नोटिस कर रहा था कि बार-बार वे बच्चों की तरह खिलखिलाने लगती थीं। उम्र का कोई अंदाज नहीं लग रहा था शायद 55 के ऊपर रही होंगी, पर तेज इतना की युवा भी हल्के लगे उनके सामने। अपरिग्रह, अस्तेय की अनुगामी जिनके पास अपनी साधना और माँ नर्मदा के साथ के अतिरिक्त उस बड़े से भूभाग में एक गाय, फूलों की क्यारियां, शिवलिंग, माँ काली की मूर्ति, दो गुफाएं और छोटी-सी कुटिया के अलावा

यदा-कदा आने वाले स्वामी जी यानि सुमेर मुनि और उनके मथुरा से आये मित्र मथुराप्रसाद के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था।

मथुराप्रसाद ने बताया की तीन चार वर्ष पहले यहाँ आये थे, तबसे जब भी मन होता था चला आता हूँ। उन्होंने विशेष आग्रह कर चाय पिलाई, माताजी का स्नेह और आशीष के साथ हमने उनसे विदा ली।

जब सूरजकुंड से चला था तो बांद्राभान तक के रास्ते भर मैं सोचता रहा कि सूरजकुंड में निश्चित ही गंधक होगा नर्मदा के पानी में। पर जब बांद्राभान से चला तो सोच रहा हूँ कि कैसा चुम्बक है नर्मदा के जल में जो यहाँ आता है जा ही नहीं पाता। किसी फिल्म का डायलॉग याद आ रहा था, जैसे माँ कह रही है।

*“यहाँ लोग आते अपनी मर्जी से हैं, पर जाते मेरी मर्जी से हैं।”*

@EBOOKSIND 

## नेमावर यानि नाभि

5 जनवरी 19, आज अमावस्या है, शनिश्चरी अमावस्या। कहते हैं जैसा देश वैसा भेष। कहीं भी रहा मुझे नहीं मालूम रहता था कि कब अमावस्या है और कब पूर्णिमा। पर माँ नर्मदा ने अपने तट पर बुला ही लिया है तो फिर क्यों न याद रहे कब कौन सा पर्व है। यदा-कदा पर्व पर स्नान यह सोचकर शुरू किया कि जब रह ही रहे हैं यहाँ तो कभी-कभार स्नान में क्या बुराई उल्टा कुछ पुण्य ही मिलेगा। पर अब यह बात नहीं क्योंकि अब यह क्रिया आनंद देने लगी है।

सो सुबह ही स्नान कर सिवनी मालवा के लिए निकल गया। होशंगाबाद जिले का सबसे बड़ा उपखंड सिवनी मालवा 50 कि.मी. की दुरी पर है। आवश्यक बैठक अटेंड कर दोपहर बाद हरदा की ओर बढ़ गया। जब से नर्मदा की गाथा बीचो बीच पहुंची है तभी से नाभि प्रदेश की यात्रा का मन हो रहा था। आज यह अवसर मिल गया और हरदा होकर हंडिया जाने का प्लान बनाया।

चालीस कि.मी. की यात्रा कर हरदा पहुंचे और वहां से हंडिया के लिए निकले तो पता चला कि अभी 20 कि.मी. और चलना है इंदौर रोड़ पर। सड़क अच्छी थी सो जल्द ही हंडिया सामने था। गाड़ी से उतरते ही दिखा नर्मदा का चौड़ा पाट, नीचे तक गयी सीढ़ियां और नीचे दूर तक फैला पक्का सीमेंटेड प्लेटफार्म। पहले से पढ़ रखा था इसलिए रिद्ध नाथ मन्दिर के बारे में पूछा। पार्किंग वाले ने सामने इशारा किया जहाँ प्राचीन मन्दिर दिख रहा था। वहां पहुँचने पर बाहर ही एक ग्रामीण सज्जन मिले जिन्होंने उसे रिद्ध नाथ मन्दिर होने की सहमति दी। सफेद चूना पत्थरों से बना मन्दिर स्थापत्यकला

का तो विशेष नमूना नहीं था किन्तु चारों ओर फैली विशाल छत नुमा उस जगह पर गोल गुम्बद की तरह बना वह मन्दिर अच्छा लग रहा था।

गोल वरांडा पार कर गर्भगृह में प्रवेश किया। काले पत्थर का बना शिवलिंग आकर्षक लग रहा था। नतमस्तक हो प्रणाम किया भोले बाबा को। निकट ही पंडित जी बैठे थे, बात चीत शुरू हुई।

“मन्दिर बहुत पुराना है?” मैंने पूछा।

“ग्यारह हजार साल पुराना है।”

“इतना प्राचीन!”

“भगवान राम से भी पहले का है। धन के देवता कुबेर ने स्थापना की थी रिद्ध नाथ की।”

“यहीं क्यों?”

“जब रावण ने कुबेर से लंका छीन ली तो उन्होंने यहाँ नर्मदा के किनारे भगवान को स्थापित कर तपस्या की। शिव भोले नाथ प्रसन्न हुए और कुबेर को अपने कैलाश पर जगह दी, जहाँ उन्होंने अलकापुरी बसाई।”

“उस पार बताते हैं की सिद्ध नाथ नाम से शंकर भगवान का मन्दिर है।”

“हाँ ये बड़े भाई हैं और वो छोटे भाई। दोनों ही स्थानों पर पूजन करने का ही पूर्ण लाभ मिलता है।” पंडित जी ने बखान किया।

“आपका नाम?”

“पंडित नवीन व्यास।” उन्होंने अपना परिचय दिया, तब तक साथ आये लाखे ने अंदर का फोटो लिया। हमने पंडित जी से विदा ली। बाहर निकल कर आये। अब खुली छत की बाउंड्री से नीचे नर्मदा को देखने लगे। सामने ही नेमावर घाट दिख रहा था। नर्मदा के दोनों किनारों पर अनेक सुंदर घाट हैं पर आमने सामने एक जैसे सुंदर घाट बहुत कम हैं। ओमकारेश्वर जैसा ही यह सुंदर नज़ारा किन्तु दोनों ओर एक जैसा पब्लिक फ्लो यहीं देखने को मिलता है।

सीढ़ियों से नीचे उतर कर बड़े और लम्बे चौड़े प्लेटफार्म पर खड़े हो नर्मदा का सौन्दर्य निहारा। सामने के घाट के मन्दिर, पूर्वी ओर हिन्दू धर्म और पश्चिम की ओर जैन धर्म के स्थापित हैं जो इस पार से अमावस्या की भीड़ के कारण और भी अच्छे लग रहे थे। नदी पर ऊँचा बना सड़क



पुल जो बेतुल हरदा और इंदौर हाईवे को जोड़ता है दिन भर वाहनों की आवाजाही से स्थान को और रोचक बना देता है।

दोनों तरफ खूब भीड़ थी। घाटों के बीच नाव भी चल रही थीं। लाखे ने सुझाव दिया कि नाव से पार चलते हैं और अमजद को गाड़ी ले वहीं बुला लेते हैं। एक बार को मेरे मन में आया भी फिर लगा कि उस पार अधिक भीड़ होने से वाहन को ढूँढना मुश्किल हो सकता है, यही सोच कर आईडिया ड्राप कर दिया।

वापस चलने लगे तो एक दुकान पर मैं रुक गया। एक सज्जन को वहां बैठे देख कर पूछा।”

“आप यहीं रहते हैं।”

“हाँ यहीं, हंडिया में।”

“दुकान आपकी है?”

“नहीं, परिचित की है, बैया आ रहा है।”

“क्या नाम है आपका?”

“अजीत शाह” उन्होंने नाम बताया।

“अजीत जी, इसे हंडिया क्यों कहते हैं?” बहुत देर से घुमड़ रहा प्रश्न मैंने दागा।

“एक पीर बाबा हुए हैं हंडियस भडंग, बड़े पहुंचे हुए थे। उनका सोटा और हांडी आती थी यहाँ। एक बार किसी महिला ने उसमें कुछ डाल दिया, सोटा तो चला गया पर हांडी वापस नहीं जा पायी और यहीं रह गयी। तबसे इस स्थान का नाम हंडिया पड़ गया।”

“उनका कोई स्थान है?”

“हाँ पास ही मजार है उनकी, देखने लायक जगह है, हर साल उर्स भरता है वहां” अजीत शाह बताते हुए रोमांचित हो रहे थे।

“गुफा भी है वहां बाबा की” तब तक दुकानदार वापस आ हमारी वार्ता में शामिल हो गया।

“अजमेर सी प्रसिद्ध दरगाह बनती पर क्या करें” पीर बाबा पर इतना भरोसा अजीत शाह जी का कि उनकी समय अनुसार प्रसिद्धि न बढ़ने का अफसोस कर रहे थे।

हंडिया से चले, पुल पर आये, नेमावर को चले तो बायीं ओर च्यवन श्री का आश्रम दिखा। आज पुल के बीच से दोनों तट का नज़ारा देखते ही बनता था। पर्व स्नान करते, मस्ती में गाते लोग और छोटी छोटी दुकानों की श्रृंखला किसी बड़े तीर्थ का आभास करा रहे थे। पुल पार कर दूसरे छोर पर आये। यहाँ बाईं ओर जैन धर्म का भव्य स्थान जिसमें संत विद्यासागर जी के आशीर्वाद से विशाल पंच वाम पति एवं त्रिकाल चौबीसी मन्दिर बना है। मैं सोचने लगा कि एक से एक संत हुए हैं और सभी धर्मों में लेकिन एक स्थान पर सबकी कर्मस्थली अमूमन नहीं होती पर यहाँ दोनों तटों पर एक बात निकल कर आयी है कि नर्मदा के इस विशेष क्षेत्र को हिन्दू, मुस्लिम, जैन सभी प्रमुख धर्मों के संतों ने संवारा है।

दाहिनी ओर स्नान घाट होने से उधर ही पैदल निकल गये। मुख्य मार्ग से 300 मीटर की दूरी पर था घाट, पर दोनों ओर सजी दुकाने मेले का आभास दे रही थीं। घाट पर पहुँचे, यहाँ हंडिया के तट से इतर सीढ़ियों वाला पारम्परिक घाट बना था जिसकी नदी किनारे लम्बाई और ऊंचाई खूब थी और स्नानार्थियों की भीड़ उसे भव्यता प्रदान कर रही थी। कुछ देर घाट पर खड़े हो, पास से गुजरते पुलिस कर्मी से सिद्ध नाथ मन्दिर का पूछा। उपर किले नुमा बड़ी इमारत की ओर उसने इशारा किया।

चढ़ाई चढ़ सिद्धनाथ मन्दिर पहुँचे। शानदार शिल्प, हजारों वर्ष पुरानी भारतीय स्थापत्यकला कला का अद्भुत उदाहरण। ऊपर विशाल परकोटे से घिरे काले पत्थर का बना ऊँचे बुर्ज वाला मन्दिर और बगल में नीचे बहती नर्मदा जैसे जादू जगा रहे थे। मन्दिर की नक्कासी तो देखते ही बनती थी। लाखों तो इतना मुग्ध हो गया की जगह जगह के फोटो खींचने लगा जैसे दर्शन की कोई जल्दी नहीं हो। इस मन्दिर में भीड़ थी सो दर्शन करने के लिए लाइन में लग मैंने लाखों को आवाज दी। धीरे धीरे सरकती लाइन के साथ अंदर गर्भगृह में पहुँचे। काले पत्थर के शिव लिंग, उन पर चढ़े बेल पत्र फूल, मंत्रोच्चार करते पुजारी मन को मोह लेने वाली दशा थी वहाँ।

दर्शन कर बाहर आये। छत पर पेरापेट के सहारे खड़े हो शांत बहती निर्मल नर्मदा को निहारने लगे। मन्दिर के बारे में पूछा, वहीं बैठे एक सज्जन बताने लगे कि सिद्ध नाथ बाबा उत्तर तट पर आदि काल से बैठे हैं। कुबेर ने तपस्या कर इन्हीं के जैसे शिवलिंग की स्थापना करनी चाही तो भोलेनाथ ने उन्हें दक्षिण तट पर रिद्ध नाथ नाम से शिव लिंग की स्थापना करने का आदेश दिया।

“सब बहाने बाजी है” मैं बुदबुदाया।

“कुछ कहा आपने?” वे सज्जन पूछने लगे।

“नहीं! कुछ नहीं” उनसे कहा और आगे बढ़ गया। पर मैं सोचने लगा कि पिता के लिए बेटी हमेशा छोटी बच्ची ही होती है। बेटों के बारे में तो मैं नहीं कह सकता, वो उनके पिता बताएँगे पर बेटी के बारे में अपना अनुभव कहता हूँ कि जब भी मैं किसी बात पर उसे कहता हूँ कि अभी तो वो बच्ची है, बहुत छोटी है तो मेरी पत्नी टोकती है कि बाईस वर्ष की बेटी को छोटा क्यों कहते हो। मैं सहमति से सिर हिलाता हूँ पर फिर भूल कर किसी बात पर बेटी को छोटी बच्ची कहने लगता हूँ। आज यहाँ आकार जाना कि पुत्री नर्मदा यहाँ आधी दूरी तय कर लेती है, अभी तो आधा सफर और है यही सोच कर कैसे पिता के रूप में बहाने से शिव दोनों ओर बैठ गये हैं। नर्मदा भी कैसे दोनों तटों पर पिता की उपस्थिति से शांत बहती हैं यहाँ। न कलकल, न शोर और न कूदफांद जिसके लिए रेवा नाम पड़ा उनका।

चिंता तो बेटियाँ को देखने की है और इसी लिए सिद्धनाथ हों या रिद्धनाथ, त्रिलोकीनाथ यहाँ बेटी के पिता ज्यादा हैं। बेटियाँ होती ही ऐसी हैं, फूलों सी नाजुक, हवाओं सी अल्हड, चिड़ियों सी चंचल तभी तो पिता को उनकी चिंता करनी होती है फिर चाहे वह पिता मेरे जैसा साधारण व्यक्ति हो या शिव सदृश्य जगतपालन हार।

नेमावर से चले होशंगाबाद की ओर, नर्मदा के उत्तर तट पर हैं अभी हम और वापस अमरकंटक की दिशा में जा रहे हैं। बीच में छीपानेर भी जाना है जो नर्मदा के किनारे दादाजी धूनीवाले का स्थान है।

“हम अपने होशंगाबाद पर ही नहीं इतरा सकते” गाड़ी में बैठते ही मैंने कहा।

“नहीं सर, एक से एक स्थान हैं नर्मदा किनारे” लाखे बोला।

“जहाँ आओ वहीं लगता है कि इतना सुंदर पहले नहीं देखा।”

“किसी का तो एक ही घाट सुंदर होता है। यहाँ तो दोनों ही खूबसूरत है। आंवली घाट पर भी आमने सामने घाट है पर दक्षिण घाट जितना सुंदर है, उत्तर नहीं। बाकी जगह तो अभी तक आमने सामने घाट ही नहीं देखे।” अमजद ने जोड़ा।

“हाँ यहाँ तो तीर्थ का तीर्थ और पर्यटन का पर्यटन।” मैंने कहा।

“सर नेमावर को देख कर तो लगता है यहीं बस जाएं।” बातों बातों में लाखे ने कहा तो मैं सोचने लगा।

“नर्मदा के तटों पर न जाने कितने ऐसे स्थान हैं जहाँ जाकर लौटना बड़ा मुश्किल है। पूरी परिक्रमा करने के बाद या दोनों तटों को देखने के बाद भी कोई वापस चला जाता है तो सचमुच बड़ा वीर होता होगा। अन्यथा संभावना तो यही है कि कहीं न कहीं हार कर नर्मदा तीर ही बसा मिलेगा। अनेक संत, स्वामी हैं जो नर्मदा किनारे बस गये हैं। उनसे पूछो तो यही कहेंगे की परिक्रमा करते करते स्थान भा गया और ठहर गये।”

छीपानेर नर्मदा के उत्तर तट पर बसा एक ग्राम। ग्राम पंचायत है यहाँ। मुख्य मार्ग से आठ कि.मी. अंदर पक्की सड़क से जुड़ा। गाँव तक की सड़क और गाँव के रास्तों की हालात और ठीक करने की गुंजाईश है। इतने बड़े संत के नाम से स्थान है तो उसके अनुरूप स्वच्छ साफ परिवेश रखना भी ज़रूरी है। बहरहाल गाँव में घुसते ही हमने दादाजी का स्थान पूछा तो लोगों ने इशारा किया और हम चल दिए।

रास्ते पर कहीं-कहीं पानी भरा था। अभी तक देख कर लग रहा था कि कोई साधारण स्थान होगा। यह भी लग रहा था कि ग़लत तो नहीं आ गये यहाँ तक। शाम का समय हो रहा है और दूर होशंगाबाद तक जाना भी है। यदि यहाँ आने का आईडिया ड्राप कर देते तो अभी तक तो नसरुल्लागंज पहुंच गये होते।

सोचते-सोचते नर्मदा के किनारे तक पहुंच गये। देखा मेला लगा हुआ है यहाँ। अनेक दुकानें, अनेक स्त्री पुरुष, बच्चे, चहल-पहल रौनक ही रौनक। गाँव की तस्वीर से बिलकुल उलट यहाँ का दृश्य। मन पुलकित हो गया। सोचा पहले घाट पर चलते हैं फिर आश्रम।

घाट चौड़ाई में दूर तक फैली सीढ़ियों का बना था। दूर से कोण देकर आती नर्मदा अच्छी लग रही थी। यहाँ बड़ा पुल बन रहा था उस पार तक। पानी कम हो गया है यहाँ नर्मदा में सो घाट की सीढ़ियों से दूर चली गयी है पर फैली रेत भी अच्छी लग रही है यहाँ। नीचे रेत तक गये अनेक लोग आ जा रहे थे। पीला वस्त्र ओढ़े एक सज्जन आते दिखे उनसे दादाजी के आश्रम का पूछा। पीछे की ओर संकेत कर उन्होंने बताया तो पलट कर देखा एक भव्य ऊँची इमारत। एक क्या बल्कि दो एक साथ बनी हुई किसी बड़े

शहर की मल्टीस्टोरी बिल्डिंग की तरह दिखाई दे रही थी। नर्मदा की रेत पर खड़े होकर देखने पर आश्रम का व्यू लुभावना लग रहा था। अब लग रहा था कि यहाँ नहीं आते तो चूक हो जाती।

नर्मदा के दर्शन कर ऊपर आये। मेले की भीड़ में एक से पूछा।

“ये मेला क्या आज अमावस्या के कारण लगा है।”

“आज का नहीं ये तो 15 दिन से लगा है। पूर्णिमा से अमावस्या तक।”

“क्या हर पूर्णिमा से अमावस्या तक लगता है।”

“नहीं साल में एक बार अभी लगता है।”

“कोई विशेष कारण?”

दादाजी यहाँ आये थे इन दिनों। उन्हीं की याद में लगता है। इस वर्ष से दादाजी को यहाँ आये 100 वर्ष हो रहे हैं इसलिए और बड़ा लगा है।

उन्होंने कहा तो मैंने देखा सचमुच ग्रामीण मेले के हिसाब से काफी बड़ा है और शाम होने को आई पर लोगों विशेषकर स्त्रियों का उत्साह देखते ही बनता था। झुण्ड के झुण्ड दुकानों पर टूट रहे थे और मेला क्या सभी घरेलू सामान, खेल खिलोने, वस्त्र, खेती किसानों के औजार, खाने पीने के होटल सब कुछ था वहाँ।

मेले में से रास्ता बना हम आश्रम की ओर मुड़ गये। मेन गेट से अंदर गये, भक्त निवास जैसी बिल्डिंग के बगल से चौड़ी सीढ़ियां बनी थी जो तकरीबन 10 फुट ऊपर तक जाती थीं। भक्त निवास पर खड़े एक सज्जन ने उधर ही इशारा किया और हम सीढ़ियां चढ़ ऊपर चले गये।

ऊपर विशाल खुली छत और उससे लगे अनेक छोटे-छोटे भवन दिखे। सीधे हाथ पर ऊँची बड़ी बिल्डिंग जो नीचे मिली भक्त निवास के साथ ही बनी थी और उतनी ही सुंदर लग रही थी। वहीं दो तीन लोग बैठे दिखे, उनसे दादाजी का स्थान पूछा। संकेत से बताया, बहुत ज्यादा उत्साह बात चीत करने का उनमें नहीं दिखा। हमें इशारे से बता वे अपनी बातों में मशगूल हो गये।

जाकर हमने दादाजी के स्थान पर शीश झुकाया। एक से अधिक संतों के चित्र वहाँ लगे थे। बाहर निकल कर आये। पंडितजी मिल गये उनसे धूनी का स्थान पूछा जो सामने ही था। जाकर प्रणाम किया। धूनी स्थल के बगल में दो मटियां बनी हुई थीं और उनके आगे चौड़ी छत, छत से नीचे बहती नर्मदा का सुंदर दृश्य। वहाँ खड़े हो जैसे कुछ क्षण के लिए तो सोच में पड़

गये कि क्या देखें, बहती सुंदर नर्मदा माई या उपर बने संतों के सुंदर मठ।

तब तक हमें कुछ जिज्ञासु जान वहां के लोगों ने चाय ऑफर की तो उन्हीं के पास आकर बैठ मैं चाय पीने लगा। एक दो सिप लेकर बातचीत शुरू की।

“आप लोग कहाँ से आये हैं?” पति पत्नी लग रहे एक जोड़े से मैंने पूछा।

“ग्वालियर से” 55-60 वर्ष की आयु के लगभग दिख रहे पुरुष ने जवाब दिया।

“ग्वालियर में कहाँ से?”

“डबरा से हैं।”

“साहब भी ग्वालियर के ही हैं” लाखे ने कहा तो उनकी रूचि मुझमे और बढ़ गयी।

“डबरा के पास गाँव है सालवई। वहां के रहने वाले हैं।” इस बार स्त्री ने जवाब दिया। “नाम क्या है आपका?”

“हरनाम सिंह और इनका राधाबेटी” पुरुष ने उत्तर दिया।

ये आपकी पत्नी हैं?

“जी”

“कब से आ रहे हैं यहाँ?”

“100 साल से आ रहे हैं। पहले हमारे स्वसुर आते थे अब हम लोग आते हैं” राधा बेटी ने गर्व से बताया।

“क्या हर साल आते हैं?”

“ये मत पूछो, जब दादाजी बुला लेते हैं तब आ जाते हैं। कई बार तो वापस जाते हैं, फिर आ जाते हैं।” हरनाम सिंह बोले।

“ऐसा क्यों?”

“ये सब दादाजी की मर्जी है। आपको यहाँ कई लोग मिलेंगे जो बताएँगे कि गये ही थे कि फिर बुलावा आ गया।” इस बार एक दूसरे सज्जन जो नीचे मिले थे, ने आकार जोड़ा।

“अरे आप तो नीचे मिले थे। क्या नाम है आपका।”

“शिव प्रसाद। यहीं पास में फगवाड़ा है हमारा गाँव।”

“पास में है, तब तो आप आते जाते रहते होंगे।”

“साब यहाँ पास दूर का कुछ नहीं है, सब दादाजी की मर्जी है, जब बुलाते हैं तो दूर वाला भी दौड़ा चला आता है।” हरनाम सिंह ने जोड़ा।

“दादाजी चमत्कार करते हैं आपके साथ।”

“वे सबके साथ करते हैं। आपके साथ भी कर देंगे।” हरनाम सिंह ने केजुअली कहा उनके चेहरे के भाव बता रहे कि जैसे यह कोई बड़ी बात ही नहीं है। विश्वास की पराकाष्ठा, जहाँ कोई शक नहीं कोई संदेह नहीं। अद्भुत है भक्तों की दुनिया।

मेरी रूचि देख हरनाम सिंह मुझे फिर से दादाजी के स्थान पर ले गये। कक्ष खोल कर फिर दर्शन करवाए और रखे चित्रों के बारे में बताने लगे कि बीच का चित्र बड़े दादाजी धूनीवाले का है, उनके बगल में छोटे दादाजी हरबोले का है और फिर दो चित्रों की ओर इशारा कर एक को शिवानन्द जी महाराज और दूसरे को उनके शिष्य नर्मदा नन्द जी महाराज बताया। तब तक पंडित जी भी आ गये।

“पंडित जी भी ग्वालियर के हैं।” हरनाम सिंह ने बताया।

“क्या नाम है आपका पंडितजी।” मैंने आदर से पूछा।

“गजानन डीकरे।”

“कब से हैं यहाँ।”

“दस वर्ष पहले ग्वालियर से आया था यहाँ दादाजी की सेवा में ऐसा रमा कि जाने का मन ही नहीं हुआ।”

“और परिवार?”

“अकेला ही हूँ, शादी की नहीं।” 40 वर्ष की आयु के दिख रहे पंडित जी ने कहा और बाहर ले गये मुझे।

“आइये आपको दोनों की समाधि दिखाते हैं।”

पंडित जी और हरनाम सिंह जी मुझे सबसे पहले शिवानन्द महाराज की समाधि पर ले गये जो सुंदर मढ़िया में थी और उनके सामने की मढ़िया नर्मदानंद जी महाराज की समाधि थी। दोनों को प्रणाम किया। इसके बाद सामने की बड़ी बिल्डिंग में मैं उनके साथ गया। वहाँ संतों की मूर्तियाँ कांच में रखी थीं। सबसे पहले गौरीशंकर महाराज की मूर्ति, उसके बाद दादाजी धूनीवाले की, फिर हरबोले दादा, उसके बाद शिवानन्द महाराज और फिर नर्मदानंद जी महाराज। मैं अपनी जिज्ञासा रोक न सका।

“इतना भव्य और सुंदर स्थान बना कैसे?”

“दादाजी धूनीवाले की समाधि तो आपको पता ही है कि खंडवा में है। वे अपने गुरु गौरीशंकर महाराज की जमात में थे, नर्मदा परिक्रमा करते हुए यहाँ आये और कुछ दिन यहाँ वास किया। उनके शिष्य शिवानन्द महाराज ने इस स्थान का विकास किया और इसे यह भव्य रूप दिया उनके शिष्य नर्मदानंद जी ने।” हरनाम जी बता रहे थे।

“एक ही कक्ष में सभी संत बिठा दिए कितना अद्भुत लगता है।” मैंने कहा।

“हम आपको ही नहीं नर्मदा मैया को भी लगता है तभी तो कभी-कभी यहाँ तक आ जाती है, अपने सुपुत्रों का एक साथ अभिषेक करने।” कहते कहते भावुक हो गये हरनाम सिंह जी।

पूरा प्रांगण दिखा हमें प्रसादी दी और साथ ही कुछ पुस्तकें भी भेंट की। पंडित जी ने अपना नंबर दिया और फिर आने का आग्रह कर हमें सबने विदा किया।

वापस चलने लगे। गाड़ी में बैठ कर सोचते सोचते एक बात मैंने नोट की कि भक्त लोग अपनी ही मस्ती में रहते हैं। वे बहुत जल्द खुलते नहीं है और न ही उन्हें आगे बढ़ कर बताने का चाव रहता है, जब तक वो यह न जान लें कि जानने वाला मनोरंजन के लिए नहीं जान रहा बल्कि कुछ कुछ उसकी भी रुचि है, कुछ-कुछ उनकी ही राह का राही है या हाल ही में सही पर उनके रास्ते पर चलना शुरू किया है। तभी वो खुलते हैं, बताते हैं। हाँ एक बार खुल गये तो उन्हें लगता है कि जैसे सब बता दें। नर्मदा किनारे भक्तों की विचित्र है दुनिया। मैं सोच रहा था कि माई की इतनी अनुपम छटा, तटों की रमणीकता, जगह जगह के अद्वितीय स्थान, ऋषि मुनियों के आश्रम और अप्रतिम सौन्दर्य। संभव है कि विश्व में कोई ही ऐसी नदी हो जो पूरी की पूरी इतनी रमणीक हो। पर जितनी चर्चा होनी चाहिए उतनी होती क्यों नहीं? फिर मुझे एक ही बात लगी कि :

“तेरी सफर की मस्ती पूछूं तो किससे पूछूं माँ।  
जो तुझमें रम गया, वो खामोश हो गया।।”





## नर्मदे हर...

9 जनवरी 19

“ना...आर ...मा... दे हा ...र” मोनजा, जर्मनी युवती, ने कक्ष में घुसते ही दोनों हाथ उठा कर कहा तो हम जितने लोग उस कमरे में थे सभी आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता में जोर-जोर से बोलने लगे “नर्मदे हर ...नर्मदे हर।”

आज सुबह जब अखबार में पढ़ा कि विदेशी युवती नर्मदा की परिक्रमा कर रही है और कल होशंगाबाद पहुंची है तथा आज ही सुबह निकल जाएगी तो रोक न सका स्वयं को। अपने स्टाफ में पंकज को डिटेल लेने को कहा। एक घंटे बाद वाहन चालक दिलीप का फोन आया।

“सर वो यहीं पर रुकी हैं अपने अंकल के यहाँ। अभी एक घंटे बाद निकल जाएँगी।”

“कौन?”

“जिनके लिए आपने पंकज भैया को बोला था।”

“अपने अंकल के यहाँ?? अरे भई वो विदेशी लड़की हैं। यहाँ उनके कौन अंकल होंगे?”

“हाँ सर मैं उन्हीं विदेशी मैडम की बात कर रहा हूँ। अपने अंकल मतलब मेरे अंकल के यहाँ रुकी है।”

“ओह!” मैं मुस्कराया।

“ये तो अच्छा संयोग है।”

“आ जाइये सर मुलाकत करा देते है।” दिलीप बोला तो मैंने उसे पंकज और ओंकार को भी बुलाने का कह शीघ्र तैयार हो निकल लिया।

विवेकानन्द घाट के बिलकुल सामने प्रदीप वर्मा जी के यहाँ ठहरे थे वे तीनों। मोनजा वोल्वा, सचिन साचियाँ और सजेश सुकुमारन। वर्मा जी ने शिष्टाचार वश हमें कक्ष में बिठाया और सचिन, सजेश को खबर की। दोनों ने आकर अपना परिचय दिया। सचिन, हरियाणा के रहने वाले हैं, ने टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस से मास्टर डिग्री हासिल की है। सजेश केरला के रहने वाले हैं और अमेरिकन मिलिट्री की नौकरी छोड़ नर्मदा परिक्रमा कर रहे है। दोनों से चर्चा कर ही रहे थे की मोनजा ने अपनी शैली में मुश्किल हिंदी में नर्मदे हर कहते हुए कक्ष में प्रवेश किया।

सचिन ने मोनजा को हमारा परिचय दिया और बताया की उनकी परिक्रमा से प्रभावित होकर हम उनसे मिलने आये हैं। सामान्य शिष्टाचार के साथ ही मैंने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

“क्या थी, जो आपको खींच लायी नर्मदा परिक्रमा करने??”

“मैं जर्मनी की रहने वाली हूँ। स्कूलिंग के बाद यूनिवर्सिटी तक की पढ़ाई करने के बाद भिन्न-भिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों, धार्मिक मान्यताओं के बारे में जानने की लालसा जागी और लगभग 50 देशों की यात्रा की। मेरे माता पिता ने मेरा पूरा साथ दिया। जगह-जगह भटकने के बाद मुझे इंडिया में सुकून मिला और मैं ऋषिकेश पहुंच गयी आज से तीन वर्ष पहले। वहां मेरी मुलाक़ात सचिन और सजेश से हुई जिन्होंने मुझे नर्मदा परिक्रमा के बारे में बताया। मैं इंडिया के रिलीजियस ट्रेडिसन के बारे में जान रही थी। स्ट्रक्चर की परिक्रमा के बारे में सुना था पर नदी की परिक्रमा! मेरी जिज्ञासा जागी और मैं अधिक से अधिक इसके बारे में जानने को उत्सुक हुई।”

“क्या स्वयं परिक्रमा करने की इच्छा हुई या जो परिक्रमा करते हैं उनसे जानकारी लेने का मन बनाया?”

“शुरू में खुद परिक्रमा का मन नहीं हुआ, सोचा एक लड़की होने के नाते मेरे लिए संभव नहीं होगा परिक्रमा करना, पिकनिक के रूप में कुछ चल कर देखा जाय। यही विचार कर अमरकंटक पहुंचे। पर वहां जाकर अपने आप ही प्रेरणा जगी और मैं निकल पड़ी सचिन और सजेश के साथ।”

“आप तो जर्मनी जैसे विकसित देश से आयी हैं, शुरू में जब झाड़ियों, काँटों, कच्चे रास्तों पर चली होंगी तो नहीं लगा कि लौट चले?”

“शुरू में लगा। मैं अपने आप से पूछती कि मैं क्यों आयी इतनी कठिन यात्रा में, पर अंदर से एक ही जवाब आया *she called, so i came*। मुझे लोग आश्चर्य से देखते और मुझसे पूछते तो मैं कहती *she called, so i came ...she called, so i came*।”

“अभी तक तो देशी लोगों से ही सुना था ‘चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है’ अब विदेशी भी गाने लगे *she called, so i came*। माताओं के स्वभाव भी एक से ही होते हैं फिर चाहे वैष्णो माता हों या नर्मदा माता” मैं सोचने लगा।

“आप को एक माह से अधिक परिक्रमा में हो गया है। लोगों को आपने परिक्रमा करते नजदीक से देखा है। उनकी आस्था को देखा है। क्या अनुभूति हुई आपको।”

“अद्भुत! नर्मदा सचमुच माँ है, वह बोलती है, देखभाल करती है, जो मांगों देती है। सब उसकी कृपा महसूस करते हैं फिर चाहे एक साधारण किसान हो या साधू” मौनजा ने हैरत में डाल दिया मुझे भी और कक्ष में बैठे हर किसी को। “आपने भी महसूस की??” मैंने दबे स्वर में पूछा।

“अंदर से अनुभूति हुई है। मेरा तो कम्पलीट ट्रांसफॉर्मेशन हो गया है। मुझे लगता है कि जिस शांति और सत्य की खोज में मैं भटक रही थी वह मुझे माँ नर्मदा के किनारे मिली है।”

“वापस जर्मनी जाने का कब है इरादा?”

“अब तो माई जाने। मेरी कोई योजना नहीं, सब माँ नर्मदा पर निर्भर है।”

“तो क्या सदैव के लिए यहीं बसने का इरादा है?”

“जैसा माई चाहे” नर्मदा की ओर दोनों हाथ फैला मौनजा बोलीं तो हर कोई चकित था।

सचिन ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि वो मेघा पाटकर के साथ नर्मदा अभियान से जुड़े थे। मैंने बीच में उन्हें टोका।

“मेघा पाटकर जी को आप कैसे जानते थे?”

“वो हमारे इंस्टिट्यूट TISS से ही pass out हैं।”

“ओह! फिर?”

“उनके साथ नर्मदा के किनारे राजघाट पर कुछ समय बिताया 2013 में। नर्मदा को और जानने की इच्छा हुई। सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक परिदृश्य कैसा है, डैम बनने से कैसे इसका पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। उसी समय उज्जैन में कुंभ के लिए नर्मदा का पानी क्षिप्रा में ले जाया जा रहा था। इन सबका क्या प्रभाव होगा कैसे इसके पानी को अन्य जगह ले जाने से इसका eco system प्रभावित होगा। यही सब जानने 2015 में साइकिल से नर्मदा की यात्रा प्रारंभ की।”

“क्या पाया” मैंने पूछा।

“जिस सब के लिए निकला था, वो सब तो अनुभव हुआ पर अलग से भी कुछ अंदर जाग्रत हुआ।”

“क्या?”

“वो तो आप भी जानते हैं ...बताने का क्या” सचिन ने मुझसे रहस्यमयी वाणी में बोला जैसे जो वो कहना चाह रहे हैं उसे मैं बिना सुने पूरी तरह समझ रहा हूँ। जैसे वो कह रहे नैनन की गति नैनन जाने।

तभी वर्मा जी ने सबके लिए चाय मंगवा ली। चाय पीते हुए तय हुआ कि सामने विवेकानन्द घाट पर चलते हैं। सभी लोग जैसे थे वैसे ही उठ कर घाट कि ओर चल दिए। रास्ते में मैंने वर्मा जी से जानना चाहा कि उन्हीं के यहाँ कैसे ये लोग रुके। क्या कोई संयोग था। वर्मा जी ने बड़ी interesting बात बताई।

उन्होंने कहा कि पिपरिया में एक समिति बनी है ‘जय मातादी समिति’। वो उसी समिति के सदस्य हैं, उनके जैसे पचास से अधिक सेवाभावी लोग उस समिति में हैं। उनकी समिति पैदल नर्मदा परिक्रमा करने वाले लोगों की सेवा करती है। उन्हें ठहराना, भोजन आदि की व्यवस्था समिति निशुल्क करती है। पिपरिया से खबर आ गयी थी इनके बारे में।

“कैसे आयी खबर?”

“समिति के अध्यक्ष महंत संदीप शर्मा जी हैं, बड़े मिलनसार और सेवा भावी व्यक्ति हैं। उन्हीं ने फोन किया था।”

“इन्होंने कैसे यहाँ आपका निवास ढूँढा था?”

“मैं स्वयं चला गया था। गूढ़ला पर ये लोग मिल गये थे वहां से इनके साथ ही आया था।”

“अरे वाह! क्या हर बार जाते हैं?”

“नहीं जब इनके जैसे यहाँ के भौगोलिक स्वरूप से अनभिज्ञ लोग आते हैं, तभी इन्हें लेने जाना होता है। अधिकांश परिक्रमावासी को होशंगाबाद की लोकेशन का आईडिया होता है, चूँकि ये यहाँ से अनजान थे इसलिए चला गया था।”

“लाकर आपने अपने यहाँ ठहराया। परिवार में disturbance नहीं होता?”

“पूरा परिवार बड़े मन से परिक्रमावासियों की सेवा करता है।”

“वह तो मैं देख ही रहा था। कैसे आपका बेटा और बेटी दौड़ दौड़ कर सबकी देखभाल कर रहे थे।”

“वह जो ऊपर का portion है मकान का जिसमें ये लोग ठहरे थे, हमने परिक्रमावासियों के लिये ही आरक्षण कर दिया है।” वर्मा जी बड़े गर्व से बता रहे थे।

“सचमुच ये बड़ा कार्य है। लोग तो आये दिन आते रहते होंगे। सबको निशुल्क रूकवाना, भोजन आदि की व्यवस्था वह भी पूरे मन से करते हैं।”

“सब माई की कृपा है। वही कराती है, उसने हमें इस योग्य बनाया, अपने दर पर ठहराया, लोगों की सेवा का, उनसे मिलने का अवसर दिया।”

“आप जैसे और लोग भी होंगे यहाँ। वे लोग भी वैसे ही करते हैं जैसे आप कृतज्ञता के भाव से यह सब करते हैं।”

“कई लोग हैं साब, जो चुपचाप सेवा में लगे हैं, जिन्हें माँ ने अवसर दिया। अब देखो न आप कहाँ यह विदेशी लड़की हमारे यहाँ आती किन्तु माँ ने मिलाया। जिस जिससे मिलेगी होशंगाबाद और यहाँ के लोगों की सदाशयता के बारे में तो बताएंगी।”

“यह तो आपने सही कहा। अच्छा वर्मा जी आप तो भांति भांति के नर्मदा भक्तों से मिलते रहते हैं। क्या इतने कम उम्र के लोगों के दल परिक्रमा में देखे हैं आपने।”

“आपने तो मेरे मुख की बात छीन ली। मैं भी कल से यही सोच रहा हूँ कि अक्सर अथेड़ अथवा और बड़ी उम्र के लोग परिक्रमा करते देखे हैं। हमारे क्षेत्र के युवा लड़कों का दल भी परिक्रमा करते मिल जाते हैं पर उनका उद्देश्य अध्यात्म से अधिक पर्यटन होता है। पर 25-26 वर्ष के ये युवा, जिनमें विदेशी लड़की भी है, कितने भक्ति भाव से भरे हैं जो नर्मदा के साक्षात् देवी रूप को स्वीकार कर उसमें पूर्ण समर्पण दिखा रहे हैं। सच है, सब चमत्कार इस माई का ही है, किसको कहाँ से बुला ले, कहाँ भक्ति में लगा दे।” नर्मदा के हाथ जोड़ वर्मा जी बोले।

तब तक हम लोग घाट की आधी सीढ़ियाँ उतर चुके थे। विदेशी युवती को देख घाट पर जितने लोग थे, कौतूहल वश पास आने लगे थे। हमें भी जिज्ञासा थी कि देखें मोनज़ा क्या करती हैं। फुर्ती से नीचे उतरते हुए उसने आखिरी सीढ़ी पर खड़े हो। “ना...आर ...मा... दे हा ...र” बोला जोर से और नंगे पैर नीचे उतरी। हमारे एक साथी ने उसे फूल दिए नर्मदा जी में डालने। उसने फूल दोनों हाथों में लिया और वापस कर दिया, जल में नहीं डाला। अंजुली में माँ नर्मदा को लिया पूरी श्रद्धा से नदी में छोड़ा जैसे हम लोग अर्घ्य देते हैं।

घाट पर जितने लोग थे सब मोनज़ा का माँ नर्मदा में devotion देख कर हतप्रभ थे। सबके चेहरों पर खुशी थी। कुछ लोग नर्मदा में स्नान भी कर रहे थे। एक पंडित जी भी आकर खड़े हो गये थे हमारे पास, अचानक बाएँ दिशा में देख चिल्लाने लगे।

“अरे तुम्हें शर्म नहीं आ रही, ये विदेशी कन्या नर्मदा में फूल भी नहीं डाल रही कि प्रदूषित न हो जाय और तुम हो कि साबुन से नहा रहे हो।” उनके तेज स्वर के कारण हम सबकी दृष्टि बाएँ घूमी तो देखा एक व्यक्ति सचमुच साबुन लगा कर नहा रहा था जिसे नर्मदा वाले गंभीर त्रुटि मानने लगे हैं।

“अब इसमें उसकी क्या ग़लती। ज़रूरी तो नहीं कि जिसने नर्मदा किनारे जन्म लेने का सौभाग्य पाया हो वह उसकी कद्र भी जानता हो। यह तो वही बात हुई जो वर्मा जी कह रहे थे कि माँ नर्मदा ही सब कराती है, कौन उसे देवी माने, कौन बहता पानी, यह भी माई ही तय करती है।” मैं सोच ही रहा था कि मोनज़ा पूजन कर उपर की सीढ़ियों पर आ गयी। होशंगाबाद के लोगों की हॉस्पिटैलिटी और बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की

आवश्यकता पर जब वह अपना सन्देश दे रही थी तभी सचिन और सजेश ने नर्मदा को प्रणाम किया।

हम लोग वापस आने लगे। मेरे साथ सजेश चल रहे थे, जिनसे ज्यादा बात नहीं हो पायी थी। मैंने प्रश्न किया।

“आप तो केरल से हैं। केरल में भी इस प्रकार की नदी है?”

“oh no! नदियाँ तो कई हैं पर नर्मदा जैसी कोई नहीं।”

“क्यों?”

“यह क्यों शब्द मेरे मन में भी था पर दूसरे रूप में। मैं सोचता था कि क्यों केरल में जन्मे शंकराचार्य नर्मदा के किनारे पहुंच उसकी वन्दना करने लगे। ऐसा क्या है नर्मदा में जिसने महान शंकराचार्य को भी अपना भक्त बना लिया था। पर यहाँ आया तो जाना कि अद्भुत है नर्मदा, साक्षात् देवी, वात्सल्यमयी माता। पवित्रों में पवित्र नदी।”

“पवित्रों में पवित्र??”

“हमारे यहाँ नदियाँ तो कई पवित्र हैं पर नर्मदा जैसी कोई नहीं। अन्य नदियों को वे ही लोग देवी मनाते हैं जिनका उससे कुछ लाभ है पर नर्मदा को तो वह भी देवी मानता है जिसका उससे कुछ लेना देना नहीं। नर्मदा ही नहीं उसके तटों की मिट्टी भी पवित्र है तभी तो इसके किनारे रहने वाले न सिर्फ नर्मदा की सेवा को तत्पर रहते हैं अपितु उसके पास आने वाले हर किसी की अतिथि देवो भव के रूप में सेवा करते हैं।”

“और आपको नर्मदा के इसी रूप ने लालायित किया?”

“हाँ मैं चाहता हूँ की समर्पण और सेवा भाव यहाँ से सीख हम इसे अगर कहीं और फैला सके तो सच्ची सेवा होगी नर्मदा की। एक बात और है जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वो है ‘नर्मदे हर’ का घोष।”

“वो कैसे?”

“मैंने देखा कि क्या बच्चे, क्या जवान और क्या बूढ़े जब पूरी शक्ति से नर्मदे हर बोलते हैं तो जितनों के कानों में उनका घोष पड़ता है वे भी जोर से बोलने लगते हैं ‘नर्मदे हर ...नर्मदे हर’। मैं कई दिनों तक सोचता रहा पर समझ न आया किन्तु जैसे ही मैंने एक दिन यह घोष सुनकर जोर से बोला ‘नर्मदे हर’। मुझे इसका रहस्य समझ आ गया।”

“और क्या था वह रहस्य?”

“मैं चौंक गया ...अरे यह तो योग है। नर्मदे हर कोई नारा नहीं है। योग है शरीर को सकारात्मक उर्जा से भर लेने का। शरीर की समस्त नकारात्मक उर्जा को बाहर निकलने का योग। जब भी हम जोर से बोलते हैं नर्मदे हर तो शरीर के एक-एक अंग में स्फूर्ति भर जाती है। ऐसा लगता है कि शरीर में फैलाव हो गया हो, चैतन्यता आ गयी हो, शरीर उर्जा से भर गया हो। मन दौड़ने को कर रहा हो। यह तो औषधि है हर व्याधि को दूर करने की।” सजेश बोल रहे थे और उनके भावों की तीव्र अनुभूति हमें स्पष्ट दिख रही थी।

“Amazing! मैंने तो कभी सोचा ही नहीं इस बारे में। सच कहा आपने ‘नर्मदे हर’ योग है जीवन में सकारात्मकता भरने का, नकारात्मकता हटाने का। सच में यह औषधि है शरीर की व्याधियों को मिटाने की।”

मैंने कहा और बार-बार मेरा ध्यान इसी ओर जा रहा था कि सचमुच एक से सुन दूसरा उससे भी अधिक जोश में बोलने लगता है।

नर्मदे हर...

नर्मदे हर...

नर्मदे हर...





## पाप नाशिनी

**15** जनवरी 19 मकर संक्रान्ति। बहुत दिनों से भिलाडिया घाट जाने की इच्छा पूरी हुई भी तो आज मकर संक्रान्ति के दिन। कुछ सरकारी काम आ गया या ये कहे कि माँ ने बहाना दे दिया आने का।

होशंगाबाद से 75 कि.मी. से अधिक ही होगा भिलाडिया घाट। बीच में शिवपुर कुछ आवश्यक काम निपटाते हुए जब भिलाडिया पहुंचे तो ठीक 3 घंटे का सफर होशंगाबाद से हो चुका था। रास्ते भर लगता रहा कि कितना दूर है पर जैसे ही घाट के नजदीक पहुंचे तो लगा कि किसी अन्य लोक में ही आ गये। अभी तो घाट शुरू ही नहीं हुआ पर उसकी प्रस्तावना ही इतनी सुंदर है तो घाट कैसा होगा। बड़ा-सा समतल मैदान और उसके चारों तरफ बने आश्रम, धर्मशाला, मन्दिर, स्कूल, आंगनवाड़ी और खूब सारे वृक्ष।

मेरे साथ सिवनी मालवा से परियोजना अधिकारी राम कुमार सोनी और पर्यवेक्षक रेखा यदुवंशी भी थे। भिलाडिया पहुंचते ही राहुल यादव पंचायत कर्मी और महेश शर्मा मिल गये। स्कूल और आंगनवाड़ी देखने के बाद वे हमें बड़े उत्साह से सभी आश्रमों, समाजों की धर्मशालों के बारे में बताते हुए घाट पर ले गये।

अद्भुत! घाट पर पहुंचते ही मुख से निकला। यूँ तो होशंगाबाद में अनेक घाट हैं, अनेक किनारे हैं जिन्हें देख कर लगता है कि नर्मदा ने इस जिले पर कुछ ज्यादा ही लाड़ दिखाया है। पर पक्की सीढ़ियों युक्त घाटों की बात करें तो होशंगाबाद के घाटों के अतिरिक्त वैसा ही स्टेडियम की सीढ़ियों जैसे भव्य घाट यदि कहीं देखने को मिला तो वह भिलाडिया घाट ही था। चौड़ाई और ऊंचाई दोनों ही विशाल। लगभग 100 सीढ़ियों का घाट तो रहा

ही होगा। घाट के दोनों ओर भव्य मन्दिर एक शिव शंकर का और दूसरा राम मन्दिर और दोनों आमने सामने 200 मीटर के फासले पर। जैसे सौन्दर्य की जितनी कलाएं हैं सब नर्मदा तट पर सजीव हो गयी हों जैसे।

इतने इंदिरियर में इतने सुंदर स्थान की कल्पना मैंने तो नहीं की थी। जोश में भर सीढ़ियों से नीचे उतरते चले गये। नर्मदा के जल का आचमन किया, भीड़ थी घाट पर।

“आज संक्रान्ति के कारण आस-पास के लोग स्नान को आते हैं, जैसे हम भी दूसरे ग्राम से आये हैं।” महेश ने स्पष्ट किया।

“अमावस्या पर तो और भीड़ रहती है। छोटा मोटा मेला ही लग जाता है।” राहुल बोले।

“मेले की व्यवस्था पंचायत से करते होंगे?”

“नहीं साब, वह बड़ा सा मैदान, जिस पर मेला लगता है, मंडलोई जी की जमीन है वे ही व्यवस्था करते हैं। ये घाट और मन्दिर सभी उन्हीं के द्वारा बनवाये गये हैं।” राहुल ने स्पष्ट किया।

“क्या! इतना सारा निर्माण और इतनी व्यवस्था अकेले व्यक्ति द्वारा कैसे की जाती होगी। इसमें तो उन्हें कोई लाभ भी नहीं होता होगा।”

“पीढ़ियों से उनका परिवार नर्मदा मैया की सेवा में रहता है, वे लाभ के लिए नहीं करते, उनकी श्रद्धा है माँ नर्मदा के प्रती इसलिए करते हैं।”

साफ सुथरा घाट। पर्याप्त पानी लिए शांत भाव से बहती नर्मदा। दूसरी ओर भी भीड़ थी। रेत भरने को सैकड़ों ट्रैक्टर लगे थे। आंवली घाट जैसे ही यहाँ भी विकराल नौकाएं चलती हैं जिनमें गाड़ी और सवारी एक साथ पार उतरते हैं।

बहुत देर खड़े हो माँ को निहारता रहा। सैकड़ों लोग मकर संक्रान्ति के इस अवसर पर माँ नर्मदा में डुबकी लगा कर पुण्य कमा रहे थे। पाप नाशिनी में डुबकी लगा अपने पाप धो रहे थे। आँख मूँद मैं भी माँ से प्रार्थना करने लगा सबके पाप धोने की।

“माँ लोग तेरे दर पर सुख लेने आते हैं, दुःख छोड़ने आते हैं, पाप मिटाने आते हैं। तू सबकी सुनती है, सबकी मनोकामना पूर्ण करना, सबके पाप हरना।”

मैं आँख मूँद बुदबुदा रहा था। अचानक मेरे मस्तिष्क में आया कि क्या सचमुच सारे पापी इस निर्मल बहती धारा में अपने पापों को धोने के अधिकारी हैं। हमने जब जब अधर्मी और पापी की कल्पना की है, हमारे जेहन में दो ही पात्र उभरते हैं। राम विरूद्ध रावण में रावण या पांडव विरूद्ध कौरवों में दुर्योधन। ये ही सबसे बड़े खलनायक हैं, बड़े अधर्मी, घोर पापी। दोनों ही घटनाओं में स्वयं ईश्वरीय अवतार के द्वारा पापियों के विनाश की कल्पना की गयी है। जैसे भगवान ने ही example सेट किये हों कि कौन पापी होगा, कौन धर्मात्मा। किन्तु मुझे तो लगता है कि भगवान के सामने खलनायक बन कर खड़े होने वाले में भी कम से कम इतनी योग्यता होनी चाहिए कि भगवान उसे मारने के लिए, उसकी ओर देख तो सकें अन्यथा मार कैसे पाएंगे। वो इतना भी नीच पापी न हो कि अति घृणा से उसकी ओर देखा ही न जा सके। बाण और चक्र उन पापियों को छूना भी न चाहें वितृष्णा से। क्योंकि रावण और दुर्योधन ने सोचा भी नहीं होगा कि इसी धरती पर कोई इतना नीच कर्म भी कर सकता है कि अपने क्षणिक शारीरिक सुख के लिए किसी नाबालिग का जीवन और सम्मान दोनों ही समाप्त कर दे। किसी परिवार की जीवन भर की खुशियाँ महज चंद मिनटों में खत्म कर दे।

“तो माँ ऐसे पापी जब भी पाप मिटाने आयें, तुझमें डुबकी लगाते ही उनके शरीर के हर अंग से पीप टपके।”

आस्था और विश्वास की ओट में कैसे नीच बहुरूपिये उन्हें अपनी वासना का शिकार बना लेते हैं जो अबोध उन्हें भगवान का दर्जा दिए थीं।

“ऐसे नीच भी तुझमें डुबकी लगायें तो तेरा शीतल जल उनके लिए आग का दरिया बन जाय।”

शंकर की बेटी से संसार की बेटियों की सुरक्षा की जैसे कामना कर रहा था मैं।

चोर शब्द से ही नफरत होती है हमें, किन्तु उन्हें क्या कहें जो उस संस्था को ही एक झटके में खोखला कर दें जिसने उन्हें रोजी रोटी दी। चोरी की सजा चोर खुद भुगतता है पर उन गंदे कीड़ों को क्या कहें जो खुद चोरी करते हैं और दूसरों को फंसा देते हैं। उनके घण्टित कार्यों की सजा निर्दोष झेलने को विवश होते हैं।

“ऐसे अति पापी चोरों को तेरा अमृत जल ऐसा विष बन जाय कि जब तक उनकी साँस चले उनका धिनोना शरीर हर घड़ी भट्टी की तरह जले।”

माँ से इन विचित्र मांगों को करते समय मैं कतई असहज नहीं था, क्योंकि अब तक मेरा और नर्मदा का सम्बन्ध माँ बेटे सा हो गया था और अब मुझे माँ के सामने कुछ भी मन की बात कहने से झिझक नहीं लगती।

घाट पर कुछ समय बिता हम लोग ऊपर आये। सबसे पहले शिव के मन्दिर में जाकर शंकर और हनुमान को नमन किया। अच्छा, साफ सुथरा परिसर, पीछे बगीचा। यहाँ से नीचे बहती नर्मदा और भी जादू जगा रही थी। शिव दर्शन के बाद राम मन्दिर गये। यह मन्दिर शिव मन्दिर से भी बड़ा बना है। ऊंचाई पर बने गर्भ गृह में पूरा राम दरबार विराजमान है। तिवारी जी वहाँ पंडित जी थे जिन्होंने पूजन कराया, अंदर वरांडा में रायबहादुर निर्भय सिंह मंडलोई का बड़ा सा चित्र लगा था।

“इन्होंने ही दोनों मन्दिरों का निर्माण कराया था। घाट के लिए बहुत सी जमीन दान दी थी। बहुत बड़े माल गुजार थे। अंग्रेजों ने राय बहादुर की उपाधि दी थी।” मुझे उस चित्र को देखते पा, तिवारी जी ने बोले।

“इन्हीं के वंशज हैं मंडलोई जी जो वर्तमान में जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष हैं और जिन्होंने घाट का निर्माण कराया है।” मेरी सूरत अबूझ लगी तो राहुल ने कहा।

तिवारी जी से विदा ले घाट परिसर में बने आश्रमों की ओर मुड़ गये। राहुल हमें कैलाश आश्रम में ले गये। बड़े भूभाग में फैले आश्रम का भवन पक्का किन्तु साधारण था पर उसमें एक साथ 100 लोगों के रुकने की पर्याप्त व्यवस्था थी। पक्के कमरे, रसोईघर जिसमें सदैव परिक्रमावासियों के लिए सदावत बनता ही रहता था। आश्रम का निर्माण स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज के द्वारा किया गया था जिनके स्वर्गवास के कारण अब उनके शिष्य स्वामी लक्ष्मानानंद जी द्वारा इसका संचालन किया जा रहा है। स्वामी जी ने हमें आग्रह से बिठाया, चाय पिलाई और जानकारी दी कि नर्मदा के भक्त जब चाहे आश्रम में आ सकते हैं उनके रुकने भोजन की निशुल्क व्यवस्था रहती है।

कैलाश आश्रम से निकले तो मैदान को घेरे भिन्न भिन्न समाजों की धर्मशालाएं और मन्दिर दिखे। तब तक स्कूल के शिक्षक राजेश यादव हमारे

पास आ गये। राजेश पास के ग्राम के ही रहने वाले हैं। बात चीत से बड़े उत्साही लगे।

“ये सारी जगह मंडलोई जी ने दान में दी है। जो कुछ भी आप देख रहे हैं उन्हीं के प्रयास हैं।”

“बड़े मन से करते हैं नर्मदा की सेवा।”

“तभी तो साब जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष के रूप में अनेक झंझावत झेल गये पर माँ की कृपा से सब ठीक हो गया।” राजेश ने बड़े गर्व से बताया।

“अभी नर्मदा जयंती आ रही है। आप समय निकाल कर आना यहाँ पूरे दिन मेला चलता है। मंडलोई जी हजारों लोगों का भंडारा करते हैं।” राहुल ने जोड़ा।

“रात को तो बहुत अच्छा लगता है। रात भर भजन चलते हैं पूरा परिसर रोशनियों से नहाया रहता है आप ज़रूर आइये।” राजेश भी उत्साह दिखा रहे थे।

बातों-बातों में पता चला कि ग्राम की जनसंख्या 600 के करीब है। किन्तु घाट के आश्रमों और धर्मशालाओं में 1000 लोगों की एक साथ रूकने और खाने की व्यवस्था हो सकती है।

राहुल, राजेश, आंगनवाडी अनीता, महेश से विदा ले और पुनः आने का वादा कर हम लोग चल पड़े वापस। गाड़ी में बैठते ही पर्यवेक्षक, जो अब तक मेरी रुचि समझ गयी थीं, ने पास ही चाँदबड़ कुटी चलने का प्रस्ताव दिया। सोचा वैसे तो भिलाडिया घाट ने मन खुश कर दिया है पर रास्ते में है, चलो देखते चलते हैं। कोई चार कि.मी. चलने के बाद चाँदबड़ कुटी पहुंचे। गाड़ी से उतरते ही सामने आश्रम और नीचे बहती नर्मदा का दृश्य देख लगा कि नहीं आते तो बड़ा नुकसान हो जाता।

“नर्मदे हर” आश्रम के सामने खुले परिसर में बैठे तीन चार लोगों में से भगवा वस्त्र धारी एक सज्जन बोल पड़े।

“नर्मदे हर, आश्रम देखने आये थे, उम्मीद नहीं थी इतना रमणीक स्थान होगा।” मैं बोल पड़ा।

“सब उसकी कलाएं हैं। नीचे घाट पर जाकर देखेंगे तो आप को और अच्छा लगेगा।” “अवश्य। पहले दर्शन कर लें।” मैंने कहा और मन्दिर के

चबूतरे पर प्रणाम कर चढ़ गया। बड़ा वरांडा नुमा चबूतरे पर शिव लिंग स्थापित था। सामने गणेश जी का मन्दिर और बाजू में हनुमान जी की मड़िया बनी थी। चबूतरे से माँ नर्मदा का सौन्दर्य और अलौकिक लग रहा था। गणेश जी के मन्दिर के बाहर बड़ा बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था परमहंस अद्वैत आश्रम।

“इसे अद्वैत आश्रम क्यों कहते हैं?” नीचे उतरते ही मैंने पूछा तो भगवा वस्त्र धारी जो उस आश्रम के प्रबन्धक लग रहे थे। अपने साथियों को कुर्सियां लगाने का निर्देश दे वे मेरी ओर मुखातिब हुए।

“बैठिये, अब आपने प्रश्न ही ऐसा कर दिया है कि बताना पड़ेगा।” वे बोले। तब तक और भी लोग आश्रम के पास आगये। कुर्सियां लग गयीं, हम लोग बैठ गये।

“अद्वैत का अर्थ है एक, दो नहीं। अर्थात् सब कुछ परम ब्रह्म का है, दूसरा कोई नहीं। इसीलिए यहाँ मैं नहीं चलता।”

“मैं नहीं चलता?” मेरी जिज्ञासा हुई।

“कोई भी यहाँ यह नहीं कहता कि मैं करने वाला हूँ, मैंने किया, मैं करूँगा। हमारे गुरुदेव ने इसी आधार पर इस आश्रम की स्थापना की थी और इसी लिए इसका नाम रखा परमहंस अद्वैत आश्रम। यहाँ वही परमहंस है जो अद्वैत है जिसका स्वयं का कोई पृथक अस्तित्व नहीं।”

“अद्भुत! कौन थे आपके गुरु??”

“वैसे तो नाम का यहाँ महत्व है ही नहीं पर आपकी अध्यात्म में रूचि जान पड़ रही है इसलिए बता देते हैं। उन्हें ओवेरसियर बाबा कहते हैं।”

“ओवेरसियर बाबा! क्या पहले वो इंजिनियर थे?”

“हाँ यहीं नहर विभाग में थे। सब कुछ छोड़ कर सन्यास ले लिया था।”

“कोई विशेष कारण?”

“बस नर्मदा माँ के दर्शन जब तब करते थे। कोई काम बोला था माँ के सामने, एक ही मन में लगी थी कि काम हो जायेगा तो सदावत चलाएंगे नर्मदा परिक्रमावासीयों हेतु। काम भी हुआ और एक सिद्ध महात्मा भी मिले जिनकी प्रेरणा से वे स्वयं ही सन्यासी बन गये।”

“कौन सिद्ध महात्मा?”

“बाबा रामचन्द्र थे। एक रात वे यहाँ आये, ओवेरसियर बाबा भी उनके साथ थे। बाबा रामचन्द्र को रात्रि में यहाँ माँ की आभा के दर्शन हुए और प्रेरणा मिली यहीं आश्रम बनाने की। उन्होंने ओवेरसियर बाबा को इसी स्थान पर आश्रम स्थापित करने को कहा। बाबा रामचन्द्र की तस्वीर वहाँ उस पेड़ के नीचे अभी भी स्थापित है जहाँ वे साधना करते थे।”

“माँ की आभा, आपका मतलब नर्मदा माँ की आभा उन्हें महसूस होती थी?”

“उन्हें ही नहीं बाद में ओवेरसियर बाबा को भी दिखी और अनेक बार हम सबको यहाँ वह आभा महसूस होती है। यहाँ बिना किसी बड़ी तैयारी के सदावत चलता रहता है। हम कोई प्रयास नहीं करते। अपने आप भंडार भरे रहते हैं। आप चल कर हमारा भंडार देखें सकल पदार्थ हैं वहाँ और इफरात में हैं।”

“अवश्य आपका विश्वास ही कह रहा है कि सचमुच कोई सामग्री का आभाव नहीं होता होगा। इतना सुंदर स्वरूप है इस आश्रम का, क्या ये इसी रूप में आपके गुरु द्वारा बनवाया गया था।”

“शुरुआत तो एक कबेलू के टपरे से हुई। गुरुदेव की इच्छा और माँ नर्मदा का आशीष कि जो काम शुरू हुआ तो कैसे बनता चला गया ये सिर्फ महसूस करने की बात है, कहने की नहीं।”

“लेकिन हुआ तो आपके सामने ही होगा?”

“हाँ मैं 30 वर्ष से जुड़ा था यहाँ। पास में ही मेरा गाँव था, प्रहलाद नाम था यहाँ आने से पहले। अब तो नाम का कोई मतलब नहीं रह गया है जबसे अद्वैत कुछ-कुछ समझ में आया है। इस आश्रम में मैंने सब कुछ होते देखा है। जिस स्थान पर आप बैठे हैं वह किसी टीले पर कक्षप के बैठे होने का आभास देता है। हम सबने यहाँ काम शुरू किया, जन भागीदारी बनाई किन्तु शासकीय रोड़ा आ गया। कुछ नहीं सूझा तो थक हार कर माँ के सामने जा बैठे।”

“माँ यानि नर्मदा माँ?”

“हाँ नर्मदा माई से विनती की कि माँ तेरी प्रेरणा से ये शुरू किया, सब तू कराने वाली, हम तो कुछ नहीं, अब ये कैसा विघ्न, तू ही दूर कर हम तो कुछ नहीं जानते न समझते हैं। जाने क्या हुआ कि अपने आप

रास्ता निकलता गया। जिनकी जमीन थी उन्होंने खुशी-खुशी दान दे दी, सरकारी इमदाद आ गयी, लोग जुड़ते गये, जनसहयोग मिलता गया और काम चल पड़ा।”

“और इतना भव्य बन गया आश्रम जिसे देखकर कल्पना की जा सकती है जैसे पंचवटी हो, नीचे बहती नदी, ऊपर शांत सुरम्य कुटीर। शायद भगवान राम और सीता ने ऐसे ही किसी स्थान पर बनाई होगी अपने सपनों की पंचवटी।” मैं विभोर हो गया।

“एक साथ नहीं बना। जैसे-जैसे इच्छा बढ़ती गयी, माँ पूरी करती गयी। परिक्रमावासी आते थे, यहाँ पेड़ों के नीचे रुकते थे। माँ से कहा कि इनके लिए अथिति शाला बन जाय और लाखों का सहयोग आ गया। आप के पीछे जो बड़ा सा भवन देख रहे हैं, वही है मांगलिक भवन। हीरापुर के महाराज यहाँ से निकले, स्थान भा गया, चतुर्मास किया और एक भवन निर्माण की आर्थिक सहायता दे गये।”

“यानि लोग यहाँ से निकलते हैं और रुक जाते हैं। चाहे सन्यासी हों या साधारण परिक्रमावासी सबको आपकी यह रमणीक भूमि भा जाती है।”

“सब माँ की आभा है। अब देखिये ये महाशय गुजरात से सब कुछ छोड़कर आये हैं। परिक्रमा कर रहे थे, हमारी जगह भा गयी तो रुक गये।” एक 65-66 वर्ष के सज्जन की ओर इशारा कर वे बोले।

“क्या! आप गुजरात से परिक्रमा करने आये हैं?”

“आया हूँ नहीं आया था अब तो यहीं नर्मदा खंड का होकर रह गया हूँ।”

“आप लोग घाट पर हो आओ फिर विस्तार से बातें करेंगे। तब तक मैं खिचड़ी प्रसाद और चाय मंगवाता हूँ।” प्रहलाद जी बोले।

पहले उस पेड़ के पास गये जिसके नीचे 36 वर्ष पूर्व बाबा रामचन्द्र बैठे थे और वहाँ उन्हें नर्मदा की अदृश्य शक्ति का भान हुआ था। पेड़ के नीचे शिव लिंग के साथ बाबा का चित्र रखा था। स्थान को प्रणाम कर पलटे तो माँ नर्मदा का विहंगम दृश्य दिखा। दूर एक curve बनाती हुई आती नर्मदा का सौन्दर्य मनोहारी था वहाँ, जल्दी दृष्टि हटाई क्योंकि लग रहा था कि ज्यादा देर देखते रहे तो आंखे न चिपक जायं।

“सर ये जो दूर घुमाव दिख रहा है माँ नर्मदा का, कहते हैं वहाँ अदृश्य शक्ति का भान होता है लोगों को।” पर्यवेक्षक रेखा ने बताया।



“ऊँची कगार पर आश्रम था। इतनी ऊँचाई से नीचे तक सीढ़ियां बनी पहली बार देख रहा था। कुछ खड़ी चढ़ाई के साथ चौड़ा स्थान ले बनी सीढ़ियां अद्भुत दृश्य बना रही थीं। पेड़ों के झुरमुट से नीचे का तट बुला रहा था जैसे। जगह-जगह गरज, चहक करती रेवा यहाँ बिना शोर किये बह रही थी।

“सर यहाँ कितनी शांति है।” रेखा ने कहा तो मुझे जगह को कम कर आंकने जैसा लगा यह वाक्य। वस्तुतः मुझे तो लग रहा था उस कक्षप नुमा टीले पर सर्वत्र शांति ही शांति है इतनी शांति कि थैलों में भर भर कर ले जाई जा सके फिर भी कम न पड़े।

सीढ़ियां उतर नीचे गये। राम कुमार आधी सीढ़ियों को उतरने के बाद दर्द के कारण वहीं खड़े रह गये और नीचे नहीं उतरे। एक बार को तो हमें लगा कि बहुत सीढ़ियां हैं, आधे रास्ते ही माँ नर्मदा दर्शन कर लौट चले किन्तु नीचे का दृश्य इतना सुंदर था कि लोभ संवरण न कर सके नजदीक से माँ को निहारने का।

नीचे उतर अंजली भर माँ का आचमन किया, हाथ जोड़ कुछ समय खड़े रहे। आंख खोल एक टक देख रहा था कभी नर्मदा के चौड़े पाट, लबालब स्वच्छ पानी से भरी, दूर सामने चट्टान नुमा पहाड़ी जिसके कारण नर्मदा ने अपना मार्ग बदला था और बल खाती इस किनारे पर आ लगी थी या यह भी कह सकते हैं की सीधी निकल जाती पर कक्षप पहाड़ी ने ऐसा सौन्दर्य रचा कि माँ दौड़ी चली आयी।

मुझे लगता है कि नर्मदा के किनारे पर्यटन ही पर्यटन है। मैं गणित का विद्यार्थी रहा हूँ और गणित की भाषा में कहें तो होशंगाबाद सबसे सुंदर जिला है। और वह ऐसे कि सारी सुन्दरता माँ नर्मदा ने अपने तटों पर जमा कर रखी है। चूँकि होशंगाबाद में नर्मदा तट की लम्बाई जिलों में सबसे अधिक है, इसलिए होशंगाबाद सबसे सुंदर है। अफसोस! अफसोस यह बात 6 वर्ष बाद समझ आयी।

उपर चढने लगे। रामकुमार ऊपर से ही फोटोग्राफी कर रहे थे। कहने लगे कि सिवनी मालवा में मुझे 8 वर्ष से अधिक हो गया पर यहाँ आने का सौभाग्य आज ही मिल पाया। मैंने मन ही मन कहा। “वही बात कि जब जब जो जो होना है, तब तब सो सो होता है।”

ऊपर आये, सभी लोग इंतज़ार कर रहे थे, फिर से महफिल जम गयी। सभी कुर्सियों पर जम गये और गुजराती सज्जन मन्दिर के चबूतरे की सीढ़ियों पर बैठ गये। उनके सामने शिवलिंग शोभित था जो ऊँची जलहरी के कारण आकर्षक लग रहा था।

“ये शिवलिंग क्या आपके गुरुजी के सामने ही स्थापित हुआ था या बाद में आपने बनवाया।”

“बनवाता कौन? ये तो स्वयं ही नर्मदा जी से प्रकट हुए थे।” प्रबन्धक महाशय बोले।

“अर्थात्?” कौतूहल वश पूछा मैंने।

“गुरुजी के समय ही ये ग्राम के एक गडरिया को नर्मदा जी में मिले थे। शिवलिंग, ऊँची बड़ी सी जलहरी और नंदी ये सभी वहीं मिले। गुरुजी ने उनकी यहाँ प्राण प्रतिष्ठा करायी।”

“पीछे मन्दिर में गणेश जी हैं, पर शिव जी बाहर बरांडे में है।”

“हाँ गुरुजी ने यही कहा था कि इन्हें ऐसे ही खुले में रखना लोगों के लिए। जब से भोले बाबा यहाँ आये हैं कभी बाढ़ का पानी आश्रम में नहीं घुसता।”

“और वो लगते भी ऐसे ही अच्छे हैं, दिन भर दर्शन करो आते जाते और वे भी नर्मदा मैया को देखते रहते हैं ऊपर से” इस बार गुजराती सज्जन बोले।

“आप कुछ अपने बारे में बताइए। क्यों परिक्रमा की बात आपके मन में आयी?”

“मैं गुजरात के जूनागढ़ का रहने वाला हूँ, मेरा वहाँ हीरे का बहुत बड़ा कारोबार था। अहमदाबाद, मुंबई, सूरत, जयपुर जैसे बड़े शहरों में व्यापार था और इसी सिलसिले में मेरा जगह जगह आना-जाना लगा रहता था। नर्मदा को भी अनेक बार सफर के दौरान क्रॉस करता था पर इस के बारे में मुझे कोई खास फीलिंग नहीं थी, जैसी सब नदियाँ वैसी नर्मदा। हाँ सूरत में ताप्ती के तट पर यदा-कदा गया था पर नर्मदा से कोई भावनात्मक सम्बन्ध नहीं था।”

“हाँ आपके जूनागढ़ के पास से तो निकली भी नहीं हैं नर्मदा।”

“सही कहा आपने। यदि निकली होती तो बचपन से सुनते और कोई भाव बनता, पर नहीं था। साधारण व्यापारियों की तरह दौलत कमाने में मशगूल था। भरा पूरा परिवार पत्नी बेटे सब थे। कुछ कुछ रुझान अध्यात्म में होने लगा था इसलिए पूजा पाठ नियमित हो गया था। एक दिन किसी दूसरे के माध्यम से रात को 11 बजे प्रेरणा हुई नर्मदा परिक्रमा की। दूसरे दिन दोपहर के 1 बजे घर छोड़ दिया।”

“घर छोड़ दिया! मतलब??”

“पूरी तरह वैराग। सबको बुलाया और बोल दिया घर छोड़ कर जा रहा हूँ। तिजोरी की चाबी पत्नी को सौंपी, व्यापार बेटों का समझाया एक थैला लिया उसमें एक तौलिया, एक लंगोट डाला और निकल गया।”

“और उन्होंने जाने दिया?”

“उन्हें विश्वास ही नहीं था की ऐसे चला जाऊंगा। वे तो इसे मेरी सनक समझ रहे थे जो दो चार घंटे में पूरी होते ही मैं वापस आ जाऊंगा। पत्नी से सिर्फ नर्मदा तट तक पहुँचने का किराया लिया। परिवार वाले सोच रहे थे कि न मेरे पास कपड़े हैं, न पैसा तो कब तक बाहर रहूँगा। ज्यादा से ज्यादा एक दिन, दो दिन। आज पांच साल हो गये वापस नहीं गया।” “क्या कोई नाराजी थी घर वालों से, कोई असंतोष जिसने मजबूर किया घर छोड़ने को?” मैंने प्रश्न किया।

“कहा न वैराग। सब कुछ सामान्य चल रहा था। घर में कोई मतभिन्नता भी नहीं थी। बस प्रेरणा हुई और तज दिया सब। चलते समय घर वालों से कहा कभी ढूँढने की कोशिश न करना और न कभी आँसू बहाना मेरे लिए।”

“आप ने बताया पांच साल से घर छोड़ दिया, तो क्या तब से पैदल नर्मदा परिक्रमा कर रहे हैं आपकी तो उमर भी काफी दिख रही है।”

“65 का होने को आया और रही बात पैदल परिक्रमा की तो एक बार कर चुका हूँ, ये दूसरी बार है।”

“अद्भुत! इस उमर में कोई परेशानी नहीं होती पैदल चलने में।”

“माँ के पास आने भर की परेशानी है, एक बार जो आ गया तो परेशानी होती नहीं हैं, मिट जाती हैं। माँ पर छोड़ दो वह न भूखा सुलाती है न हारी बीमारी होने देती है, न आसरा की चिंता न कपड़े की कमी। यहाँ तो चलते चलते रोगी निरोगी हो जाते हैं।”

“ये तो सही है नर्मदा मैया के किनारे ऐसी ऐसी जड़ीबुटी हैं जिनके शरीर में लगने से शरीर युवा और निरोगी होने लगता है।” प्रबन्धक महाशय बोले इस बार।

“विश्वास की बात है, जो इस पर छोड़ देता है उसे क्या नहीं मिल जाता। एक महिला की बात बताऊँ उसकी 10-12 साल की लड़की को दिखता नहीं था। बेटी को ले माँ की परिक्रमा उठाई अमरकंटक से, मुझे रास्ते में मिली, पैदल बेटी को लेकर चल रही थी। रेवा सागर पहुंचते-पहुंचते बेटी देखने लगी।” गुजराती महाशय बोले।

“दूसरी परिक्रमा पूरी होने के बाद भी क्या वापस नहीं जायेंगे घर।”

“नहीं, जाना ही नहीं है इसीलिए तो फोन वगैरह भी नहीं रखता, पता पड़ेगा तो गाड़ियों से लेने आ जायेंगे। किसी को अपना परिचय भी नहीं देता वो तो आप की आस्था दिखी तो इतनी बात कर ली। अन्यथा अकेला ही चलता हूँ, जो मिला नर्मदे हर, बिछुड़ गया तो नर्मदे हर, दुबारा मिलने की कोई चाह नहीं। हाँ माँ ने इतना स्नेह दिया है तो बदले में कुछ सेवा निशुल्क कर देता हूँ लोगो की।”

“कैसी सेवा?”

“पटेल बाबा नर्मदा किनारे मिलने वाली जड़ीबुटी से दर्द की दवा अच्छी बनाते हैं। कैसा भी घुटने, हड्डी का दर्द हो, छूमंतर” प्रबन्धक महाशय बोले।

“अच्छा! क्या मुझे भी मिल सकती है। पांच साल पहले एक एक्सीडेंट हुआ था, तब से परेशान हूँ।” इस बार रामकुमार बोले।

“दो दिन में आपको दवा मिल जाएगी। मेरी माँ चाहेगी तो आप बिलकुल ठीक हो जाएँगे।” नर्मदा की ओर हाथ जोड़ दिए उन्होंने कहते कहते।

“तो आपको पटेल बाबा कहते हैं। पूरा नाम क्या है?”

“वो तो इन्होंने बता दिया, मैं बताता नहीं हूँ पर आपको बता देता। मुझे जूनागढ़ में भी सभी पटेल के नाम से ही जानते थे। बाबा तो नर्मदा किनारे लगा दिया इन जैसे प्रेमियों ने।” प्रबन्धक महाशय की ओर इशारा कर वे बोले।

“आपने प्रारंभ में ही अद्वैत का अर्थ कह दिया था इसलिए प्रश्न अप्रासंगिक है, फिर भी पूछता हूँ, आपका पूरा नाम?”

“वैसे तो यहाँ कई लोग आते हैं, चले जाते हैं। न वो कुछ जिज्ञासा दिखाते हैं, न हम कुछ बताते हैं पर आपके साथ ऐसा नहीं है। जितना आप जानना चाह रहे हैं उससे ज्यादा हमें बताने की इच्छा हो रही है। मेरा नाम प्रहलाद सिंह गुर्जर है और सिवनी मालवा के पास गाँव है मेरा। अब तो न नाम याद रहता है और न ही गाँव।”

“तो आप गुर्जर हैं। आश्चर्य है, क्योंकि गुर्जर लोग अक्सर इतने अध्यात्मिक होते नहीं हैं।” रेखा, पर्यवेक्षक चकित हो बोली।

“मैंने कहा न यहाँ कोई दूसरा है ही नहीं सब एक ही ब्रह्म में dissolve हो चुके हैं। अद्वैत हैं सभी द्वैत नहीं। इसलिए न अपना कोई नाम है न ही कोई समाज। सब कुछ एक ही है इसलिए क्या फर्क पड़ता है कि कौन क्या था पहले।” प्रहलाद जी बोले।

“सत्य कहा आपने। यहाँ आकर बहुत अच्छा लगा। अब इजाजत चाहेंगे।” मैंने कहा और पटेल बाबा की ओर मुखातिब हुआ।

“आप कब तक हैं यहाँ।”

“दस दिन हो गये हैं। एक आध दिन में निकल जाऊंगा।”

“फिर कभी मुलाकात होगी।” मैंने हाथ जोड़ प्रणाम किया।

“माँ की इच्छा।” उन्होंने फिर नर्मदा की ओर हाथ जोड़ दिए।

सबसे बिदा ले वापस आने के लिए निकल लिए। वाहन चालक अमजद ने बताया कि बाबरी घाट होते हुए भी लौटने का रास्ता है, तो अच्छा लगा उसका सुझाव और बिन प्रयास एक और घाट देखने की बात बनती देख मन प्रसन्न हो गया।

गाड़ी में बैठा-बैठा मैं सोच रहा था कि अजब ही संसार है माँ नर्मदा का। कोई सात समंदर से चला आता है, कोई बसा बसाया व्यापार छोड़ माँ के तटों पर घूमता है। 25 वर्ष का युवा यहाँ 65 वर्ष की पकी उम्र का अध्यात्मिक व्यक्ति लगने लगता है तो 65 वर्ष वाला 25 वर्ष के तरुण समान दौड़ता है।

अद्भुत हैं माँ तेरे रंग, तेरे घाट निराले।

छोड़ा देश, तजा वैभव, घूमें ये मतवाले॥

## पांडव द्वीप

**19** जनवरी 19। कुछ माह पूर्व माझा गया था, तभी से रामनगर के बारे में सुना था। माझा की कगार पर खड़ा जब नर्मदा के सौन्दर्य को निहार रहा था, उसी समय किसी ने कहा था कि रामनगर का घाट भी ऐसा ही अच्छा है। उसी दिन से रामनगर जाने का मन था पर महरूत आया आज।

होशंगाबाद पिपरिया मार्ग से 12 कि.मी. अंदर जाना था रामनगर को। सेमरी हरचंद पर ही रामनगर निवासी ओमप्रकाश सराटे आ गये थे लेने। सेमरी हरचंद से पामली तक सड़क गयी है जिसका पुनर्निर्माण चल रहा था जगह-जगह। ओमप्रकाश जी ने बताया कि पामली पहुँचने से 2 कि.मी. पूर्व ही रामनगर के लिए बायीं ओर रास्ता गया है।

रास्ते भर दोनों ओर हरे भरे खेतों में फसलें लहलहा रही थीं। इंच इंच जमीन हरी थी। समय काटने के उद्देश्य से मैंने बात चलाई।

“फसलें तो बहुत अच्छी हैं। ज्यादातर गेहूँ दिख रहा है। कौन-कौन फसल होती हैं।”

“गेहूँ और चने की पैदावार होती है यहाँ, अरहर भी है। वैसे तो नर्मदा पट्टी में सब होता है बाबई में धान बहुत होता है, बनखेड़ी में गन्ना। अब तो किसान संतरा, केला, पपीता, आम जैसे फल भी करने लगे हैं।” ओमप्रकाश बोले।

“जमीन अच्छी है यहाँ की।” मैंने जोड़ा।

“माँ नर्मदा का प्रताप है। नर्मदा की रेत महीन है और इसके किनारे की जमीन में इसकी रेत खेतों की मिट्टी में मिली होने से मिट्टी में porosity बढ़ा देती है जिससे पानी नीचे तक जाता है और खूब जड़ों को सिंचता है।

जो मिट्टी चिकनी होती है उसमें पानी एक लेयर बना लेता है और उससे नीचे नहीं जा पाता। पर हमारे यहाँ की मिट्टी की उर्वरता का कारण मिट्टी में रेत का मिला होना है।” ओमप्रकाश ने समझाया।

“तभी यहाँ के खेत खूब पैदावार देते हैं।”

“हाँ साब कभी-कभी पूर भी नदी में आ जाती है।”

“पूर?”

“मतलब बाढ़।”

“हाँ, उससे तो बहुत नुकसान होता होगा।”

“नुकसान नहीं साब, फायदा।”

“मतलब??” मैं जोर से चौंका।

“हाल में तो नुकसान दिखता है पर आगे पैदावार बम्पर होती है।”

“सो कैसे?”

“जिस साल आती है उस साल तो गल्ला, पशु, मकानों का नुकसान दिखता है पर आने वाले समय में जब नदी से बाढ़ उतरती है तो उपजाऊ मिट्टी खेतों में छोड़ जाती है।”

“ये तो मैं नई बात सुन रहा हूँ। मैंने तो अभी तक यही जाना था कि बाढ़ आने से बहुत नुकसान होता है।”

“यही नहीं साब, सतरंगी मिट्टी तो छोड़ती ही है नर्मदा, साथ ही बरसों से जमे मिट्टी के नुकसानदायक तत्वों को भी बहा ले जाती है।” अमजद ने जोड़ा।

“तुम्हें कैसे मालूम?”

“मेरा गाँव शाहगंज भी तो नर्मदा के किनारे है।”

“इसका आशय तो ये हुआ कि नर्मदा किनारे वाले बाढ़ को भी अच्छा मानते हैं और यहाँ बाढ़ नर्मदा में आती भी खूब है। 3-4 साल में एक बार तो आ ही जाती है।” मैं बोला “और एक बार की बाढ़ जमीन की 3-4 साल के लिए उर्वरता बढ़ा देती है। मेरा खुद का किया अनुभव है की बाढ़ के बाद 3-4 साल तक कम लागत में दुगनी उपज होती है।”

“और बाढ़ का मुआवजा मिलता है सो अलग।” मैंने कटाक्ष किया।

“अब वो तो साब हाल के नुकसान की भरपाई के लिए ज़रूरी है, नहीं तो किसान उठ ही न पाए।” ओमप्रकाश ने मार्के की बात की।

बात करते करते हम लोग उस मोड़ पर आ गये जहाँ से बाएं रामनगर के लिए रास्ता मुड़ा था। माइलस्टोन लगा था जिस पर लिखा था रामनगर 1.4 कि.मी.।

“इसे रामनगर क्यों कहते हैं। क्या माझा की तरह यहाँ भी भगवान राम आये थे।” मैंने पूछा।

“नहीं सर, यहाँ पांडव आये थे।”

“अच्छा” मैं हँसा।

“सर मैं मजाक नहीं कर रहा। पांडवों ने अपने वनवास काल में यहाँ कुछ दिवस रह कर यज्ञ कराया था। इसीलिए इसे पांडव द्वीप कहते हैं।” ओमप्रकाश की वाणी में गर्व था।

“ओह! क्या सचमुच?”

“हाँ साब चलकर आपको दिखाते हैं। पांडवों ने यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी। वो अभी भी वहाँ है।”

“आश्चर्य! तब तो हम ऐतिहासिक जगह में हैं” मैं बोला तब तक गाड़ी गाँव में घुस चुकी थी। ठीक-ठीक गाँव, न ज्यादा बड़ा, न ज्यादा छोटा। गाँव की गलियों से निकाल ओमप्रकाश सीधे हमें नर्मदा तट पर ले गये।

एक बड़े से पीपल के नीचे हमें रोका। गाड़ी से उतरते ही सामने मन्दिर दिखा जिसमें रामायण का पाठ चल रहा था। दाहिनी ओर काफी नीचे नर्मदा बह रही थी जिनके तट तक जाने को ढलान पर कच्ची पक्की सीढ़ियां बनी थी जो सड़क जितनी चौड़ी थीं। मन्दिर के पीछे स्कूल और आंगनवाड़ी थी। ओमप्रकाश जी की पत्नी ग्राम में आंगन वाड़ी कार्यकर्ता थीं इसलिए सबसे पहले हम आंगन वाड़ी केंद्र गये।

मन्दिर के बगल से कच्चा रास्ता आंगनवाड़ी के लिए जाता था। रास्ते से नीचे दिखती लहराती, बलखाती नर्मदा अत्यंत मनोहारी लग रही थीं। कुछ दूर सीधी जाकर 110 डिग्री का मोड़ ले दायें मुड़ गयी हैं और वह मोड़, हरा पानी, चौड़ा पाट क्या अद्भुत दृश्य है।

आंगनवाड़ी, स्कूल देखकर लौटे तो फिर वही नीचे बहती नर्मदा पेड़ों के झुरमुट से अलग-अलग स्थान पर खड़े हो देखने लगा, फिर लगा स्कूल के



बच्चे मेरी इस दीवानगी को क्या कहेंगे, यही सोच कर चल दिया। ओमप्रकाश अब मंदिर ले गये। मंदिर परिसर में बाहर 4 लोग बैठे थे। अंदर वरांडा में रामायण का पाठ चल रहा था।

“आप लोग इसी गाँव के हैं?” साधारण शिष्टाचार के बाद मैंने पूछा।

“हाँ इसी गाँव के।” एक सज्जन बोले।

“मैं आंगनवाड़ी विभाग का जिलाधिकारी हूँ। आपके गाँव का नाम सुनकर आया हूँ। ओमप्रकाश जी बता रहे हैं यहाँ पांडवों ने शिवलिंग स्थापित किया है।”

“सही बताया है आपको, इसका पुराना नाम पांडव द्वीप है। ये पांडवों की यज्ञ भूमि रही है। उन्हीं के द्वारा इस शिव लिंग की स्थापना की गयी है। दर्शन कर लें आप भी” कहते हुए बगल के एक पुराने मन्दिर की ओर दूसरे सज्जन, जो अपेक्षाकृत सबसे बुजुर्ग लग रहे थे, ने इशारा किया।

मन्दिर में जाकर शिवलिंग के दर्शन किये छोटा यही कोई 1 फुट का काले पत्थर का बना था शिवलिंग जिसके बारे में दावा किया जा रहा था कि इसे पांडवों ने थापा है। सच जो भी हो पर एक बात ने मुझे चौंकाया। जैसे ही मैंने वह शिवलिंग देखा मुझे एक और स्थान के शिवलिंग की याद आ गयी।

केदारनाथ उत्तराखंड की सुरम्य वादियों में 4000 मीटर की ऊँचाई पर बना विश्व का सबसे ऊँचाई पर बना ज्योतिर्लिंग है। मैं कभी वहां नहीं गया, बद्रीनाथ हो आया हूँ पर अभी केदारनाथ नहीं जा पाया। पर जो भी तस्वीर केदारनाथ की अब तक देखी है और जो शिवलिंग वहां है, जिन्हें फोटो में देखा है, एक साम्य पैदा कर रहे थे इस रामनगर के शिवलिंग से। अमूमन शिवलिंग parabolic होते हैं पर रामनगर के शिवलिंग वैसे नहीं हैं ये तो elliptical हैं जैसे केदारनाथ के दिखते हैं। फर्क इतना ही कि केदारनाथ के बड़े हैं और ये छोटे। एक और आश्चर्यजनक साम्य है दोनों में कि दोनों ही पांडवों द्वारा स्थापित किये गये हैं।

शिव लिंग को प्रणाम कर जहाँ रामायण हो रही थी वहां गये, पीछे राधा कृष्ण का मन्दिर और बाजू में एक और पुराना शिव मन्दिर, दालान और वरांडा मिलाकर 100 से अधिक लोगों के रुकने जैसी जगह थी वहां। मन्दिर के पुराने महंतों के चित्र लगे थे।

परिसर घूम कर आये तो फिर वहीं बैठ गये जहाँ सब लोग थे। परिचय हुआ जो सज्जन सबसे पहले पांडव शिवलिंग के बारे में बता रहे थे उनका

नाम रविशंकर पटेल था, सबसे बुजुर्ग व्यक्ति लक्ष्मण गोस्वामी थे और भगवा वस्त्र पहने थे लखन गोसाईं। बात होने लगी।

“काफ़ी रमणीक दृश्य है नर्मदा जी का आपके यहाँ।” मैंने कहा।

“तपो भूमि है ये। यहाँ पांडवों ने वास किया था और यज्ञ कराया था। देवता भी यहाँ, ऐसे स्थानों को तरसते हैं।” लखन गोसाईं बोले।

“पुराणों में वर्णन है इस स्थान का। परिक्रमावासियों को यहाँ तीन दिन रुकने का प्रावधान दिया है।” रविशंकर पटेल बोले।

“तो क्या रुकते हैं यहाँ? भोजन आदि की व्यवस्था कौन करता है।”

“रुकते हैं, कई कई बार तो 250 तक लोग रुके हैं। भोजन आदि की व्यवस्था हेतु नियमित सदावत चलता है। सेमरी हरचंद के अग्रवाल सेठ, इस गाँव के धनी व्यक्ति लगातार सदावत की सामग्री निशुल्क पहुंचाते हैं। “लक्ष्मण गोस्वामी बताने लगे।

“रामायण भी नियमित चल रही है। कब से कर रहे हैं इसे?”

“दो वर्ष से लगातार चल रही है। गाँव वाले मिल कर करते हैं। परिक्रमावासी जब रुकते हैं तो इसका लाभ उठाते हैं।” रविशंकर पटेल बोले।

अयोध्याकाण्ड चल रहा था रामायण में। मेरे द्वारा भी रामायण का पाठ शुरू किया गया है। तीन माह पूर्व दशहरा के दिन शुरू किया था। आज उसमें भी अयोध्याकाण्ड शुरू हुआ है। अयोध्याकाण्ड की शुरुआत तुलसी बाबा ने शिव स्तुति से ही की है और यहाँ भी शिव जी, नर्मदा माँ और पास पीपल के नीचे विराजे हनुमान जी के सम्मुख अयोध्याकाण्ड चल रहा था। मन गदगद हो गया। प्रसंग चल रहा था जब भरत जी अयोध्या आते हैं और पिता की मृत्यु, भाई का वन गमन सुनते हैं और यह भी कि सब कुछ उनके नाम पर किया गया है तो टूट जाते हैं बुरी तरह, उस कलंक के अकल्पनीय दुःख को सोचकर।

*हित हमार सियपति सेवकाई। सो हर लीन मातु कुटिलाई॥*

सच है किसी को दूसरों के कर्मों के कारण कलंक मिले तो कैसे जी पायें। भरत जी के तो भाई ही राम थे सो उन्हें लगने वाला कलंक पुण्य में बदल

गया था। पर हर किसी के पास राम सा भाई तो नहीं होता। पर ऐसे निर्दोष जो दूसरों के कुकर्मों के कारण कलंकित होने वाले हों उन पर भाई न सही ईश की तरह तो कृपा कर सकते हैं राम। शिव के लिए तो तुलसी बाबा ने भी लिखा है भावी टार सकें त्रिपुरारी और रही बात हनुमान जी की तो वह तो जगत विख्यात संकट मोचन हैं। राधा कृष्ण, शिव और हनुमान का संयुक्त स्थान और नीचे बहती कृपालु नर्मदा माँ। सबको प्रणाम कर चलने लगा तो रविशंकर जी ने पुनः आने का आग्रह किया।

“इतने रमणीक स्थान पर कौन बार-बार नहीं आना चाहेगा।” मैं सीढ़ियों से उतरते हुए बोला।

“मैं अभी बृन्दावन गया था। वहां के पंडा कह रहे थे कि परिक्रमा तो हमारे यहाँ भी गिर्राज जी की होती है और लगता भी बहुत अच्छा है यहाँ, पर जितना अच्छा आपके यहाँ नर्मदा परिक्रमा में लगता है उतना कहीं नहीं।” लक्ष्मण गोस्वामी गर्व से बताने लगे।

ओमप्रकाश अब हमें रपटा नुमा सहर से नीचे ले चले। बीच बीच में सीढ़ियाँ भी मिल जाती थीं। लगभग 200 फीट नीचे जाकर माँ नर्मदा का मनोरम कच्चा तट मिला जो लम्बाई में दूर तक चला गया था। यहाँ उल्टा C बनाती हुई बह रही थी नर्मदा। पामली की तरफ से आने और रामनगर पार कर सतवासा की ओर जाने में अर्ध चन्द्राकर हो मनभावन लग रही हैं नर्मदा। कच्चे घाट से नीचे जा स्वच्छ जल को हाथ में ले आचमन किया, माँ से प्रार्थना की। कुछ देर रुक कर वापस चल दिए।

ओमप्रकाश जी ने आग्रह किया तो उनके यहाँ चाय पीने चले गये। अमूमन मैं गाँव में चाय अवॉयड करता हूँ। क्योंकि मैं पीता हूँ बिना शक्कर की और गाँव में कितना भी कह लो वे स्नेहवश थोड़ी-सी चीनी तो चाय में डाल ही देंगे और उनकी थोड़ी सी बन जाती है बहुत मीठी। पर ओमप्रकाश जी ने पक्का वादा किया कि बिलकुल फीकी ही बनेगी चाय तो चले गये उनके यहाँ।

न बड़ा, न छोटा पर ठीक-ठाक कच्चा, पक्का घर था उनका। सामने कच्चा सहर निकल रहा था। उनके खुले वरांडा में बैठे तो सहर से आने वाले लोग निरंतर दिख रहे थे। साफ सुधरा घर था बाहर तुलसी एक ऊँचे घरुए में लगी थी, बगल में गाय बंधी थी।

“रास्ते पर ही घर है, चहल-पहल रहती होगी सारे दिन” मैंने पूछा।

“परिक्रमावासी यहीं से निकलते हैं, इसलिए दिन तो दिन कभी-कभी रात में भी आना जाना लगा रहता है।” ओमप्रकाश बोले।

“यानि परिक्रमापथ पर ही है आपका घर, बड़े सौभाग्यशाली हैं।” मैंने उनके मन की बात कह दी।

“सो तो हैं साब, चार साल पहले एक महात्मा आये थे। आये क्या परिक्रमा करते जा रहे थे, घर के सामने रुक गये। हमने आग्रह कर अंदर बुलाया तो वे आ तो गये पर बैठे नहीं। एक ग्लास पानी पिया और चलते चलते बोले कि परिक्रमावासियों को अगरबत्ती दे दिया करो। तबसे हमने नियम बना लिया कि जो भी परिक्रमावासियों को निकलते हम देख लेते हैं उन्हें अगरबत्ती का छोटा पकेट अवश्य देते हैं।” ओमप्रकाश बोले।

“क्यों देते हैं? मेरा मतलब वो लोग क्या करते हैं उन अगरबत्ती का।”

“घाट पर जाकर माँ नर्मदा को लगाते हैं।” विनीता जी, उनकी पत्नी, बोलीं जो इतने में चाय ले आयीं थीं।

“और उसका पुण्य आपको भी मिलता होगा?”

“मिला है साब। जब से यह किया है घर में सब कुछ अच्छा चल रहा है, सुख शांति है, हारी बीमारी नहीं है, धन लाभ भी खूब हो रहा है। असीम कृपा हुई है मैया की।” ओमप्रकाश जी बोले, मैंने देखा वे आँखे मूंदे नर्मदा की ओर हाथ जोड़े बैठे थे।

चाय पी, उनसे विदा ले लौट दिए होशंगाबाद की ओर। इस बार वो निर्माणाधीन 12 कि.मी. का मार्ग अखरा नहीं। माँ नर्मदा के सौन्दर्य के साथ साथ एक ऐतिहासिक स्थान को देखने का संतोष जो मन में था।

होशंगाबाद के 7-8 कि.मी. पहले कुछ लोग पैदल जाते दिखे। सभी के हाथ में लाठी, कंधे पर प्लास्टिक की चटाई, हाथ में स्टील का डब्बा लिए तेजी से होशंगाबाद की ओर चले जा रहे थे। अमजद ने बताया कि वे परिक्रमावासी हैं।

“पर ये तो नर्मदा पथ नहीं है। सड़क पर क्यों आ गये हैं ये लोग।”

“इन दिनों खेतों में पानी होने से ये पैदल गामी सड़क पर आ जाते हैं, अब होशंगाबाद से फिर ये नर्मदा पथ पकड़ लेंगे।” मैंने देखा है कि अमजद को भी काभी जानकारी है फिर भी संशय से मैंने पूछा।

“पर ये क्या पक्का है कि ये लोग नर्मदा परिक्रमावासी हैं। हो सकता है सलकनपुर देवी माता के यहाँ जा रहे हों। वहाँ भी तो लोग पैदल जाते हैं।”

“जाते हैं साब, पर एक तो अभी उनका समय नहीं है नवदुर्गा के आस-पास उनके जत्थे निकलते हैं। दूसरा इनके पास पानी का एक डिब्बा और एक छोटी चटाई के अलावा कुछ नहीं है और ये नर्मदा परिक्रमावासियों की ही पहचान है।” अमजद confidently बोला, इसी वार्तालाप में गाड़ी बहुत आगे बढ़ गयी। अब मेरा मन रह रह कर उन लोगों से बात करने का हो रहा था। मैंने अनुमान लगाया कि अब वे काफी पीछे रह गये थे और हम लोग शहर में घुसने लगे थे। घर पास आया जान मैंने उन लोगों से मिलने का आईडिया ड्राप कर दिया क्योंकि दिन के 4 बज रहे थे और भूख भी बहुत तेज लगी थी।

खाना खाते में फिर उन परिक्रमावासियों से मिलने का विचार आया। पत्नी और बेटी से बात कर रहा था पर मन उन्हीं की तरफ था कि “*ग़लती हो गयी उनसे मिलना चाहिए था।*” दरवाज़े पर दस्तक हुई, देखा चरन एलेक्ट्रिसियन को लिया खड़ा था। घर में छोटा मोटा काम होना था।

अचानक मेरे दिमाग़ में आया कि अगर वे लोग पैदल नर्मदा परिक्रमा कर रहे हैं तो हमारी कॉलोनी के बगल से ही तो निकलेंगे क्योंकि मुख्य मार्ग तो यहीं, बगल से जाता है। सोचा एक चांस लिया जाय और सड़क तक चल कर देखते हैं, यदि वे दिख गये तो ठीक नहीं तो वापस लौट आऊंगा। अब तक तो 20-25 मिनट हो गये हैं शायद वे आते ही हों। यही सोचकर मैं टहलता हुआ मुख्य मार्ग पर आ गया। पिपरिया की तरफ नजर दौड़ाई, क्षीण संभावना से देखा। वाह! क्या टाइमिंग थी, कुछ दूरी पर दिख रहे थे लोग आते। आगे बढ़, खड़ा हो गौर से देखने लगा। आकृतियों स्पष्ट हो रही थीं। वही लोग थे एक के पीछे एक आ रहे थे। और नज़दीक आये देखा कुल पांच लोग थे।

“आप लोग क्या नर्मदा परिक्रमा कर रहे हैं।” जैसे ही वे पास आये, मैंने पूछा।

“नर्मदे हर, सही पहचाना आपने। हम लोग परिक्रमावासी हैं” सबसे आगे चल रहे सज्जन बोले। अब तक वे सभी रुक गये और बातचीत चल पड़ी।

“पर नर्मदा परिक्रमा पथ तो अलग है। आप उसे छोड़ कर सड़क पर क्यों आ गये?”

“माई के किनारे ही चल रहे थे। खेतों में पानी के कारण सेमरी हरचंद पर सड़क पर आ गये थे। अब होशंगाबाद से फिर किनारे किनारे चलेंगे।”

“कहाँ से आ रहे हैं आप लोग?”

“हम सभी धुले महाराष्ट्र से आ रहे हैं। धुले डिस्ट्रिक्ट के ही रहने वाले हैं।”

“क्या नाम हैं आपके?”

“मेरा नाम ज्ञानेश्वर विका और ये मनोज महाराज शिल्पी हैं।” लीडर जैसे व्यक्ति ने और दोनों के भी नाम बताये पर वे सभी एक साथ बोल पड़े तो समझ नहीं आये।

“आप इतनी दूर के हैं, क्यों लगा आपको कि नर्मदा परिक्रमा करनी चाहिए जबकि धुले के तो आसपास से भी नहीं निकली है नर्मदा।”

“रिश्तेदारों, परिचितों से सुना था नर्मदा परिक्रमा के बारे में। बस प्रेरणा हुई और चले आये।” ज्ञानेश्वर जी बोले।

“कैसा लगा आपको यहाँ?”

“बहुत सत्व है मैया का। जितना बोलेंगे उतना ही कम है” ज्ञानेश्वर जी भाव विभोर दिख रहे थे।

“कैसे?”

“अब देखिये हमें चार महिने के करीब हो गया। हमारे पास कुछ नहीं है। हमें ये भी नहीं मालूम होता की कहाँ रुकेंगे। दोपहर का भोजन कहाँ होगा, रात को कहाँ खायेंगे। सब व्यवस्था मैया करती है।”

“मैया ने कभी भूखा नहीं सोने दिया। कभी ठंड में नहीं सिकुड़ने दिया।” मनोज महाराज शिल्पी, दूसरे सज्जन बोले।

उन्होंने कहा तो मुझे लगा की सचमुच इनके पास तो कोई सामग्री नहीं है। वस्त्रों की हालत देखकर भी नहीं लग रहा था कि पैसे टके भी इन पर ज्यादा होंगे। फक्कड सभी अपनी मस्ती में दिख रहे थे। सभी 50 के ऊपर के ही दिख रहे थे पर एक दम तरोताजा।

“कितने दिन की परिक्रमा और रह गयी है।”

“बस पूरी होने को है 6-7 दिन की और बची है। ओंकार जी पहुंच कर पूरी हो जाएगी।” एक अन्य सज्जन बोले।

“और वो भरूच?”

“सब हो आये। 18 अक्टूबर को ओंकार जी से ही उटाई थी परिक्रमा। रेवा सागर, भरूच होते हुए अमरकंटक गये और अब वापस ओंकार पहुंचने वाले है।” ज्ञानेश्वर जी बोले।

“कितना चल लिए होंगे?”

“3000 कि.मी. से ज्यादा चल चुके हैं” चौथे सज्जन बोले।

“हम कहाँ चलते हैं, वो तो वही चलाती है, लगता है जैसे गोद में उठाये खुद ही चली जा रही हो, उसी की महिमा है। जितना कहें उतना थोड़ा है” ज्ञानेश्वर जी, उनके लीडर फिर भाव विभोर हो गये।

“आप सबको परिक्रमा निर्विघ्न पूरी होने की शुभकामनाएं। माँ नर्मदा की कृपा बनी रहे” मैंने कहा तो वे सभी नर्मदे हर कहते हुए आगे बढ़ गये और मैं खड़ा सोचता रह गया कि कहाँ-कहाँ से लोग चले आते हैं इस अद्भुत यात्रा में जिसमें हजारों कि.मी. पैदल चलने के बाद भी कहते हैं कि सब माँ कराती है।

*तेरी रहमत का माँ, अजीब करिश्मा देखा।  
कि चलती तू है, और पहुंचता मैं हूँ॥*



## नवनाथ

29 जनवरी 2019

कई बार विचित्र किन्तु सत्य बातें अखबारों से भी मालूम पड़ जाती हैं। आज ही सुबह पढ़ा कि महाराष्ट्र के अहमदनगर से कोई नवनाथ हैं जो सपत्नीक अपने दो वर्ष के बेटे के साथ पैदल नर्मदा परिक्रमा कर रहे हैं। मिलने की इच्छा हुई, पता चला कि होशंगाबाद के विपरीत बुधनी उत्तर तट से अमरकंटक के लिए निकल गये हैं और होशंगाबाद 2 माह बाद आएंगे। पहले तो सोचा जब होशंगाबाद आयेंगे तब मिल लेंगे पर मन नहीं माना, फोन नंबर लिया बात की।

“आप नवनाथ जी बोल रहे हैं।”

“जी, नर्मदे हर।”

“नर्मदे हर! मैं होशंगाबाद से बोल रहा था। सुना है आप परिवार सहित पैदल परिक्रमा कर रहे हैं।”

“हाँ, हाँ।

“तब तो आप होशंगाबाद आयेंगे लौटते हुए।”

“आयेंगे, पर डेढ़ दो माह लगेंगे।”

“क्या मैं जान सकता हूँ कि आप परिक्रमा क्यों कर रहे हैं।”

“हमारे गुरु जी गंभीर बीमार थे, उम्र मात्र 39 साल थी लोगों के लिए अच्छा काम कर रहे थे। आदि गुरु शंकराचार्य के कामों को आगे बढ़ा रहे थे। हम चाहते थे कि वो सही हो जाय।”



“कहाँ रहते थे आपके गुरु।”

“अहमदनगर महाराष्ट्र में, हम भी वहीं के रहने वाले हैं।”

“क्या नाम उनका।”

“विकासानन्द जी महाराज।”

“अच्छा तो क्या गंभीर बीमारी थी उन्हें।”

“ट्यूमर हो गया था उन्हें, ब्रेन ट्यूमर।”

“फिर क्या हुआ?”

“डॉक्टर्स से सम्पर्क किया, पर गुरुजी को नहीं बताया। कहीं से कोई राहत नहीं मिली तो नर्मदा मैया को हमने बोल दिया एक दिन, मैया ने डेढ़ महिने में ही सही कर दिया, बस परिक्रमा शुरू कर दी माई की।”

“तो आप तो पूरे परिवार के साथ निकल लिए।”

“सबकी इच्छा थी, कुछ नर्मदा मैया की रक्षा के लिए भी करना चाहते थे कि कोई गंदगी न करे, हम भी नहीं करते, लोगों को बोलते हैं।”

“पति पत्नी तो ठीक हैं पर आप तो छोटे बालक को भी ले आये।”

“अरे वो तो हमसे भी ज्यादा मैया को जानता है।”

“आपके यहाँ तो नर्मदा हैं नहीं फिर आप कैसे इससे जुड़ गये?”

“हम तो 2011 से मैया की सेवा में हैं। पहले तो मुझे नर्मदा मैया के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मेरे कुछ मित्रों ने परिक्रमा के बारे में बताया तो लगा कि तपश्चर्या है, करते हैं। पहली बार शुरू की। दोस्त तो सब छोड़ गये पर मुझे मैया की आस लग गयी और मेरे साथ मैया के चमत्कार होने लगे।”

“चमत्कार! कैसे चमत्कार?”

“मैया मुझे साक्षात् दिखने लगी और मैं मैया के भाव में डूब गया।”

“फिर?”

“पहली परिक्रमा पूरी की 2012 में, घर आया तो घर वाले शादी की जिद करने लगे। जो पत्नी हैं उनके घर से रिश्ता आया था। पहले तो मैंने मना किया शादी से फिर शर्त रखी की मेरे साथ शादी के बाद नर्मदा परिक्रमा करनी पड़ेगी।”

“बड़ी कठिन शर्त रख दी आपने।”

“नहीं ये तो खुश हो गयीं। इनका सन्यास की ओर झुकाव हो रहा था, सोचा शादी नहीं करेंगे तो परिक्रमा के पुण्यलाभ से वंचित हो जायेंगे। इस तरह दोनों एक जैसे प्राणी माँ ने मिला दिए और शादी के बाद सबसे पहला काम हमने परिक्रमा का ही किया।”

“कब की परिक्रमा जोड़े से।”

“2013 में शादी हुई, तुरंत हम निकल लिए। शूलपाणी की झाड़ी में पहुंचे तो लोगों ने मना किया कि रास्ते में भीलों द्वारा लूटपाट हो जाएगी, महिला को लेकर निकलना तो बहुत खतरनाक है। पर मेरा मैया पर बहुत भरोसा है और उसी के सहारे हम सकुशल, बिना डर के सवा महीने शूलपाणि के अंदर पदयात्रा पूरी कर सके।”

“उसके बाद क्या जीवन चर्या रही?”

“दोनों ने मैया की सेवा में पूरी तरह स्वयं को अर्पित कर दिया। अब तो कथा कीर्तन करते हैं और जो भी मिलता है उसमें 25 प्रतिशत मैया की सेवा में लगा देते हैं। हर साल नर्मदा जयंती के समय शूलपाणि की झाड़ी में आश्रम में जाकर भंडारा करते हैं।”

“ये तो सचमुच पुण्य का काम है।”

“हाँ माई की सेवा का ही फल है कि अब तो बच्चा भी वैसा ही मिला है।”

कैसा?

“पक्का माई भक्त है। वो तो हम दोनों से ज्यादा जानता है नर्मदा को। कहता है मेरे को मैया दिख रही है।”

“अरे वाह! अभी कितना बड़ा है।”

“26 दिसम्बर को 2 वर्ष का हुआ है, तभी से परिक्रमा शुरू की। कुछ ही दिन हुए कि दस्त लगने से वह बीमार हो गया। तबियत बिगड़ने लगी तो हम दोनों ही रोने लगे कि माई हम तो तेरे भरोसे यहाँ आये हैं, कहाँ जायं, कहाँ ले जायं, यहाँ तो कोई डॉक्टर भी नहीं मिलेगा, अब तू ही देख। इसके बाद वह सो गया और एक घंटे बाद सही होकर खड़ा हो गया। मैंने उसे कंधे पर बिठा लिया थोड़ी देर में चिल्लाने लगा।”

“चिल्लाने लगा! क्यों??”

“देखो देखो मेरी नर्मदा माई, हँस रही है। देखो पिताजी वह बैठ रही है।”

“क्या सचमुच ऐसा बोला।”

“हाँ बार-बार कहता है कि मेरी नर्मदा माई मेरा बहुत ख्याल रखती है। एक दम शंकराचार्य लगता है जब ऐसे बोलता है तो। हम दोनों ही धन्य हैं ऐसा बेटा पा कर।”

“अब जब आप दोनों ही अध्यात्म में इतने डूबे हैं तो सन्तान तो ऐसी होनी ही थी।” मैंने कहा तो नवनाथ खुश हो गये।

नवनाथ लौटते समय संयोग से होशंगाबाद में मिले। जहाँ दोनों पति पत्नी 30 वर्ष से कम आयु के स्वस्थ कपल लग रहे थे वहीं उनका बेटा सचमुच शंकराचार्य सा या किसी संत का बाल रूप लग रहा था।

“कैसी सनक है, कैसा सुरुर है। गृहस्थी के शुरुआत में, जब आटा दाल के भाव में उलझे रहते हैं नव दम्पति, ये हाल हैं तो आगे क्या होगा।” मैं सोच रहा था।



## शांडिल्य की तपस्थली

2 फरवरी 19

**सां**डिया रह रह कर बुलाता था सो आज मन बना निकल पड़े सुबह ही। होशंगाबाद से 100 कि.मी. पूरब में नरसिंगपुर की दिशा में नर्मदा किनारे स्थित सांडिया ऋषि शांडिल्य की तपोभूमि कहलाती है।

पिपरिया में प्रमोद गौर परियोजना अधिकारी और पर्यवेक्षक इंतज़ार कर रहे थे। मेरे वहां पहुंचते ही वे सिलारी चौराहे पर आ गये और बिना रुके दोनों वाहनों निकल पड़े सांडिया की ओर।

नर्मदा यहाँ से अंदर तीन कि.मी. हैं सो तय हुआ की पहले सिवनी घाट चलेंगे। वाहन में बैठे और शीघ्र सिवनी घाट पहुंच गये। सिवनी पिपरिया रायसेन मुख्य मार्ग पर स्थित है। रमणीक घाट, नीचे नदी बह रही, उपर सड़क पर पुल बना, दूर तक फैला रेत, टप्पर की शक्ल में पंक्तिबद्ध लगीं अनेक दुकाने। लगता है इस क्षेत्र का यह प्रमुख नर्मदा घाट है। अनेक लोग अभी भी स्नान कर रहे थे। अंदर एक चट्टान पर बने शिवलिंग स्थान को और सुंदर बना रहे थे।

“यहाँ एक गाय है जो बिना बियाये ही हमेशा दूध देती है” ममता आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, जो उस समय तक घाट पर आ चुकी थी, ने बताया।

“हाँ सर मैंने भी देखी है कामधेनु” मंजुला ने समर्थन किया।

“कामधेनु?” मैं चौंका।

“उसे कामधेनु ही कहते हैं, सब लोग उसके दर्शन करते हैं। यहीं ऊपर सीताराम आश्रम में रहती है” ममता बोली।

“ऐसा है तो हम भी चलेंगे” मैंने कहा और हम लोग ममता के बताये अनुसार ऊपर सीताराम आश्रम में आये। आश्रम में बने मन्दिर के दर्शन किये तब तक महाराज जी को ममता ने कामधेनु दिखाने हेतु आग्रह किया तो उन्होंने अंदर जाने की अनुमति दे दी।

हम लोगों में जाकर देखा, एक सफेद गाय जिसकी सुडौलता और पीठ पर कुछ आगे से उठी हुई निकली पूछ सामान्य गायों से उसे सचमुच अलग करती है। ममता और मंजुला पहले भी आते रहे हैं इसलिए जाते उन्होंने गाय को प्रणाम किया। उनके देखा देखी हमने भी हाथ जोड़ लिए।

*“क्या अद्भुत है नर्मदा, इसके तीर सब मिलता है, कामधेनु गाय भी”* मैं सोच ही रहा था की ममता ने त्यागी आश्रम के बारे में बताया जो ज्यादा दूर नहीं मात्र 2 कि.मी. पश्चिम की ओर था।

“वहां क्या है?”

“सिद्ध स्थान है, आप चलिए, अच्छा लगेगा आपको।”

ममता ने कहा और हमें त्यागी आश्रम ले गयीं। रास्ते में उन्होंने बताया कि प्रेम दास त्यागी जी महाराज के कारण उस स्थान का नाम त्यागी आश्रम पड़ा जिसमें अब जीजी बाई और लखन दास महाराज रहते हैं।

“जीजी बाई क्या हैं?”

“9 वर्ष की आयु में विधवा हो गयी थीं जीजी बाई, बहुत पैसे वाले परिवार की लड़की थीं, ससुराल भी सम्पन्न था। सब कुछ छोड़ कर सन्यास ले लिया। अपनी सारी सम्पत्ति जो भी इन्हें मायके, ससुराल से मिला, इसी आश्रम में लगा दी। पूरे क्षेत्र में बड़ा आदर है जीजी बाई का।” ममता ने बताया।

“और महाराज जी कौन हैं?” मैंने जिज्ञासा प्रकट की।

“लखन दास महाराज भी अनेक वर्षों से सन्यासी रूप में रह रहे हैं इसी आश्रम में। पहले आप गृहस्थ थे, फिर साधू हो गये। परिक्रमावासियों की सारी व्यवस्थाएं लखन दास महाराज ही देखते हैं।”

बातचीत करते करते हम त्यागी आश्रम आ गये। सबसे पहले प्रेमदास महाराज की समाधि पर गये, प्रणाम किया। उसके बाद ममता हमें अंदर आश्रम में ले गयीं, जो खुली जगह में साधारण सा बना भवन था पर जगह खूब थी। कई कमरे थे, वरांडा था, अनेक पशु बंधे थे दूध हेतु।

नीचे, बहुत नीचे नर्मदा बह रही थीं। रमणीकता देखते ही बनती थी यहाँ से नर्मदा की। चौड़ा पाट, आधे में पानी, आधे में चमकती रेत। सामने दूसरी ओर अर्थात् उत्तर तट पर बना एक भव्य और सुंदर आश्रम जिसकी पक्की सीढ़ियाँ का घाट नर्मदा के सौन्दर्य को और बढ़ा रहा था।

“वो दूसरी ओर क्या है?” मैंने पूछा।

“मांगरोल है सर” शर्मा चालक ने उत्तर दिया।

अनेक पलों को वहीं कगार पर खड़े हो नर्मदा मैया को निहारते रहे। तब तक ममता ने आश्रम में हमारा परिचय दे दिया था। लौटकर वरांडा की ओर चले तो एक वृद्ध सीधी-साधी महिला बैठी दिखी बाहर कच्चे, गोबर से लिपे प्रांगण में।

“सर ये ही हैं जीजी बाई” ममता ने बताया तो उनकी सादगी देखकर बरबस ही प्रणाम को झुक गया। पास बैठे तपसी वेश धारी शीघ्रता से उठे और वरांडा में चटाई बिछा दी। हम लोग उसी पर बैठ गये, वे अंदर पानी, चाय की व्यवस्था हेतु अंदर चले गये। “इन्हीं को लखनदास महाराज कहते हैं” ममता ने परिचय दिया। तब तक लखनदास जी बाहर आ हमारे पास बैठ गये। दुबले पतले साधारण की शक्त सूरत के लखनदास जी कोई 50 वर्ष की आयु के रहे होंगे।

“आप को कितना समय हुआ यहाँ।”

“गृहस्थी छोड़ी तबसे यहीं है” उन्होंने संक्षिप्त उत्तर दिया।

“आपके यहाँ तो परिक्रमावासियों का आना जाना लगा रहता होगा। उनके रुकने, भोजन की व्यवस्था यहाँ हो जाती है?” मैं पूछ रहा था।

“हाँ आते रहते हैं, कल ही 10-12 लोग रुके थे।”

“कभी-कभी ज्यादा भी आ जाते होंगे, तब कैसे यहाँ व्यवस्था होती होगी?”

“100-200 आदमी भी एक साथ आते हैं। सबकी व्यवस्था होती है। नर्मदा जी की कृपा से कितने भी व्यक्ति आ जायं पूर्ति हो जाती है।”

“इतने लोगों को राशन, भोजन और रुकने के वस्त्र आदि की व्यवस्था में आपको सहयोग तो लगता होगा?”

“जब जैसी आवश्यकता होती है, तब तैसी प्रेरणा मैया भक्तों को देती है और वे सब व्यवस्था कर जाते हैं, हमें कहीं जाना नहीं पड़ता, न मांगना

पड़ता है” लखनदास जी बोले। चाय आ गयी थी। हम लोगों ने चाय ली, प्रसाद समझ कर ग्रहण किया। कुछ देर बैठे रहे, उठकर विदा मांगी चले, फिर एक बार मांगरोल आश्रम को व्यू करते हुए कगार पर खड़े हो गये।

“सर आप नर्मदा जी पर क्यों नहीं लिखते। जैसी आपकी प्रवृत्ति है आप खूब लिख सकते हैं इस पर। हम लोगों के जिक्र भी उसमें आ सकेंगे।” प्रमोद बोले।

“और क्या कर रहा हूँ” मैं मन ही मन बोला।

“ठीक कह रहे हो, चलो चलें” कहते हुए मैं चल दिया त्यागी आश्रम से।

सिवनी के बाद सांडिया। मील भर लम्बा सुंदर घाट। रेत पर अनेक दूकाने लगीं इस स्थान को स्थायी मेले का रूप दिए थीं।

यहाँ दो वर्ष पूर्व आये थे जब नर्मदा में एजोला घास बहुत बढ़ गयी थी उन दिनों। जलकुम्भी की तरह बढ़ने और जल को समाप्त करने वाली एजोला ने पूरी नदी ढक लिया था। लगता था कि कैसे हटेगी। ये तो नर्मदा को ही समाप्त कर देगी, अगर ऐसे ही बढ़ती रही तो। यही सोचकर सामाजिक संगठन और प्रशासन उन दिनों जगह जगह श्रम दान करते थे।

आज देखते हैं तो नामोनिशान नहीं है एजोला का। अर्थात् गंगा की तरह नर्मदा में भी वह शक्ति है कि अपने को शुद्ध कर सके, प्रदूषण मुक्त कर सके।

सिवनी और सांडिया घाट की विशेषता है कि ये लम्बे रेत के तट हैं इन पर पक्की सीढ़ियां नहीं बनी हैं उसका कारण शायद धरातल से बहुत नीचे नहीं हैं दोनों जगह पर नर्मदा। पर दोनों ही घाट किसी समुद्र के बीच का अहसास कराते हैं।

बहुत देर नदी किनारे रेत में खड़े रहे तभी एक युवक पास आया। अपना परिचय दिया सुन्दरम सोनी सांडिया में ही पंचायत सहायक पद पर कार्यरत था। सुन्दरम ने बताया कि पर्वों पर बहुत भीड़ होती है और हर मंगलवार को सिवनी और सांडिया दोनों घाटों पर बहुत भीड़ रहती है।

“मंगलवार को ही क्यों?” मैंने पूछा।

“पास में ही छिंद वाले हनुमान जी का सिद्ध और प्रसिद्ध स्थान है, लोग नर्मदा में स्नान कर उनके दर्शन को जाते हैं” सुन्दरम ने बताया।

“वो नदी में क्या बन रहा है?” प्रमोद ने पूरब की ओर इशारा कर पूछा।

“जल मंच बन रहा है, नर्मदा जयंती के लिए। यहाँ नर्मदा जयंती बहुत भव्य होती है आईयेगा आप लोग। पटेल जी अपने खर्चे से सारी व्यवस्था करते हैं। मंच भी वो ही खड़े होकर बनवा रहे हैं।”

“कौन पटेल जी?” मेरी जिज्ञासा हुई।

“महेन्द्र सिंह पटेल हैं, यहीं के रहने वाले हैं। सारी व्यवस्था खुद करते हैं। किसी से कोई चंदा नहीं लेते। हर साल 4-5 लाख रुपये इसी आयोजन पर खर्च कर देते हैं।”

“क्या अभी होंगे” मैं उत्सुक हुआ।

“हाँ हैं न सर। चलना चाहेंगे वहाँ तक?”

“चलो” मैंने कहा और हम लोग रेत में धीरे धीरे बढने लगे।

अस्थायी जल मंच के निर्माण स्थल पर पहुंचे। कारीगर काम कर रहे थे। एक लम्बे चौड़े सज्जन यही कोई 35-40 वर्ष की वय के उन्हें निर्देश दे रहे थे।

“भैया जी नमस्ते। ये साहब लोग आये हैं होशंगाबाद से” सुन्दरम ने कहा तो वे सज्जन पलट कर हमारी ओर अभिवादन कर देखने लगे।

“सुन्दरम बता रहे थे कि पूरा आयोजन आप ही कराते हैं। 4-5 लाख हर साल खर्च करते हैं। इतना व्यय खुद करते हैं, कभी गाँव वालों से मांगने का विचार नहीं आया?” मैंने जानना चाहा।

“जब देने वाली ये है तो किससे मांगे साब।” नर्मदा की ओर इशारा कर बड़ी सहजता से बोले महेन्द्र जी।

“आपको ये प्रेरणा कैसे मिली नर्मदा जयंती पर कार्यक्रम करने की?” मैं रोक न पाया खुद को।

“मैं इस गाँव का निवासी नहीं हूँ। काम की तलाश में यहाँ आया। शून्य से शुरुआत की माँ देती गयी मैं करता गया। हर साल अमरकंटक भी जून जुलाई में जाता हूँ भंडारा करने” महेन्द्र पटेल कहने लगे।

“अरे वाह। इतनी भक्ति नर्मदा की” मैं चौंक गया।

“सब वही कराती है साब, हम आप क्या करेंगे” महेन्द्र जी ने हाथ जोड़ दिए नर्मदा के।



“एक बात तो है नर्मदा भक्तों में, ये लोग गजब के विनम्र होते हैं, विनीत और उदार इतने की कभी भी मैंने किया, मैं करता हूँ जैसे वाक्य इनके मुख से सुने नहीं।”

सोचते हुए हमने विदा ली महेंद्र जी से।

अब बारी उस तपोभूमि की जिसके कारण इस स्थान का नाम सांडिया पड़ा। शांडिल्य ऋषि की तपोभूमि। सुन्दरम ने घाट से दिखाया ऊँची कगार पर बना एक छोटा आश्रम। मेरी चलने की इच्छा जान वह हमें ग्राम से निकाल कर ले गया उस भूमि के टुकड़े पर जहाँ आश्रम बना था।

ग्राम से बाहर नर्मदा के ऊँचे कगार पर सादा रहवास और दूर से दिखता एक छोटा मन्दिर। गाड़ी से उतर कर हम लोग लोहे के सादा गेट को खोल आगे चले।

“अभी कोई रहता है यहाँ?”

“हाँ साब एक बाबा रहते हैं, वर्मा के रहने वाले हैं। सब लोग उन्हें चाइयां महाराज कहते हैं” सुन्दरम ने बताया।

“कहीं नहीं जाते और सबका हाल जानते हैं, बहुत पहुंचे हुए महात्मा हैं” शोभा कार्यकर्ता बोली जो गाँव से एक और आंगन वाड़ी कटकवार को लेकर हमारे साथ हो ली थीं।

आश्रम पर पहुंचे। छोटी सी जगह, बड़े इमली के पेड़ की छाया। साफ सुथरा स्थान, पक्का कोर्ट यार्ड, एक तरफ छोटा शिव मन्दिर और दूसरी ओर बाबा जी की साधारण कुटी। नीचे बहती नर्मदा अद्भुत रमणीक और शांत जगह का मिला जुला रूप था वहां। एक तखत पड़ा था और दो तीन चटाई जिस पर आने जाने वाले बैठते हैं।

हम लोग चटाइयों पर बैठ गये। थोड़ा ही इंतज़ार करना पड़ा और पास बनी कुटी से एक दुबले पतले लम्बे साधू वेश धारी निकले। सुन्दरम को उनके आगे झुकते देख हम लोगों ने प्रणाम किया। पक्का हो गया की यही चाइयां महाराज है।

“बैठे आप लोग कहाँ से आना हुआ।” तखत पर बैठते हुए वे पूछने लगे, तो परिचय दिया।

मैंने देखा साधू बाबा सिर्फ एक धोती पहने हैं, ऐसे जाड़े के दिनों में भी धड़ पर उघड़े बदन हैं, झुरियां चेहरे पर और लम्बी दाढ़ी, सिर पर

जटाएं, लम्बी किन्तु पतली भुजाएं। अजब आकर्षण था उनके व्यक्तित्व में।

“महाराज जी कुछ बताएं हमें आपके बारे में, कहाँ से हैं और यहाँ कब से हैं?”

“मैं रंगून का रहने वाला हूँ। 21 वर्ष तक विभिन्न जगह घूमने और नर्मदा माई की अनेक परिक्रमा करने के बाद यह जगह मुझे भा गयी और यहीं रह गया। अब तो इस स्थान से यदाकदा ही बाहर जाता हूँ। अभी कलकत्ता ज़रूर गया था। रंगून वर्मा की ओर का होने के कारण अनेक शिष्य कलकत्ता के हैं वे आते रहते हैं, मैं भी कभी-कभार उधर चला जाता हूँ। अब तो यही जगह रास आती है। नित्य 4 बजे सुबह नर्मदा में स्नान करता हूँ और शिव शंकर का अपनी कुटिया में ध्यान करता हूँ। ग्राम वाले अच्छे हैं जो काम बताओ कर देते हैं।”

“इस स्थान के बारे में कुछ बताइए।”

“ये स्थान जहाँ हम लोग बैठे हैं, शांडिल्य ऋषि की तपोभूमि है। यहीं पर शांडिल्य मुनि ने तप किया था, कृष्ण और उनके भाई बलदेव को यहीं शिक्षा दी थी। उनके तप से सिद्ध हुई है ये जगह। गायत्री मन्त्र का बड़ा महत्व है इस स्थान पर। यहाँ हर कोई नहीं आ सकता था। मुझसे पहले बहुतों ने प्रयास किये पर टिक नहीं पाए। उस स्तर की साधना करने पर ही मैं रुक पाया हूँ यहाँ।”

“इतना पौराणिक स्थान और फिर आपकी साधना, तब तो यहाँ परिक्रमावासियों का आना जाना लगा रहता होगा। उनकी व्यवस्था भी आपके यहाँ होती होगी।”

“अपने आप सब होती हैं। माँ सबकी मनोकामना पूरी करती है और भक्त बिना कुछ बताये सब व्यवस्था कर जाते हैं। यहाँ कई भक्त हैं गाँव में, आप जानते होंगे” महाराज जी बोले।

“नहीं मैं किसी को नहीं जानता, एक महेंद्र पटेल ज़रूर मिले थे जो नर्मदा जयंती कराते हैं” मैंने कहा।

“वो भी महाराज जी के शिष्य हैं। जब गाँव में आये थे तब कुछ नहीं था उनके पास। महाराज जी ने ही उन्हें नर्मदा भक्ति का सूत्र दिया और आज सब कुछ है उनके पास” शोभा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बोली।

“हाँ, ये तो वह भी कह रहे थे” मैंने समर्थन किया। तब तक महाराज जी ने सबके लिए चाय मंगा ली। बीच बीच में उनके शिष्य फोन पर उनसे सलाह लेते जाते थे इसलिए बातचीत का क्रम कई बार टूटा।

“ये निर्माण क्या ग्राम पंचायत करा रही है” महाराज जी को फिर किसी का फोन आ गया अवसर जान मैंने सुन्दरम से पास ही हो रहे निर्माण के बारे में पूछा।

“नहीं साब, ये यज्ञशाला है, महाराज जी ही बनवा रहे हैं। वे हर साल यहाँ यज्ञ कराते हैं।” सुन्दरम जा जवाब था।

“इतना बड़ा निर्माण, यज्ञ आयोजन, तो इसमें तो बहुत पैसा लगता होगा कैसे महाराज जी मैनेज करते होंगे ये तो बहुत ही साधारण रहते हैं।” महाराज जी को फोन में व्यस्त देख मैंने धीरे से पूछा।

“साब कुछ मत पूछो। क्या चमत्कार है इनका, लोगों को तो आमंत्रण मिलता है सब व्यवस्था पता नहीं कैसे महाराज जी करते हैं कौन सिद्धि है ये ही जाने” सुन्दरम बताने लगा। तभी महाराज जी ने फोन रख दिया।

“मन्दिर के दर्शन कर लेते हैं” मैंने उनसे जैसे अनुमति मांगी हो।

“हाँ हाँ ज़रूर जाओ, शंकर परिवार और शांडिल्य ऋषि की प्रतिमा है उपर।”

हम लोग ऊपर चढ़े। देखा शिव लिंग और गणेश, पार्वती नंदी की मूर्तियों के साथ शांडिल्य ऋषि की मूर्ति भी थी। सभी के हाथ जोड़ दर्शन कर रहे थे की महाराज जी का स्वर आया।

“अब आ गये हो तो आते रहना।”

“जी महाराज जी ज़रूर” मैं उपर से ही बोला।

“वो तुम जिस परेशानी में फंसे हो उसका काट भी मैं ही करूंगा।” वे बोले तो मैं अवाक रह गया। बिना किसी भूमिका के सीधे सीधे बोल दिया जैसे मन की बात पढ़ लेते हों। मैं कुछ बोल नहीं सका तो प्रमोद मुझसे बोला।

“सर महाराज जी आपसे कह रहे हैं।”

“जी महाराज... जी... जी” जैसे मैं गड़बड़ा गया था।

नीचे उतर कर आये, महाराज जी को प्रणाम कर चलने की अनुमति ली और निकल आये उस अबूझ दुनिया से फिर कभी आने का वादा कर।

गाड़ी पिपरिया की ओर चली जा रही थी। प्रमोद के साथ मैं शांत बैठा था पर गाड़ी की रफ्तार से ज्यादा तेज इस समय विचारों की रफ्तार थी। आखिर क्या है नर्मदा, एक सी मानसिकता, एक से एक रमणीक स्थल, एक से एक महंत, साधू, सन्यासी एक से एक घाट और एक से बढ़कर एक समाज पर सब कुछ लुटाने वाले नर्मदा भक्त। लगता है पूरे नर्मदा खंड की एक सी ही कहानी। जितना इसके घाट और किनारे बसे गाँव देखता हूँ उतना ही अचरज से भर जाता हूँ।

पैदल परिक्रमा का संकल्प तो पासी घाट पर 25 दिसम्बर को लिया था सो वह तो पूरा होने पर होगा किन्तु वाहन से नर्मदा परिक्रमा या जैसा नाम दिया है हनुमान परिक्रमा ज़रूर दो बार में लगाने की इच्छा है जिसमें एक बार में होशंगाबाद से दक्षिण तट पर चलते हुए रेवा सागर जाना और भरूच होकर उत्तर तट से वापस होशंगाबाद वाया बुधनी। दूसरी बार में बुधनी से उत्तर तट पर अमरकंटक तक और फिर मंडला, जबलपुर होकर वापस होशंगाबाद। बस समय तलाश रहा हूँ किन्तु खोकसर में सुमित गौर की कही गयी बात भी सही लग रही है जिसमें उनका कहना है कि दस कि.मी. नर्मदा किनारे चलो फिर लौट जाओ किन्तु चलो किनारे किनारे तभी नर्मदा के चमत्कार से साक्षात् हो सकेगा। और इस नाते तो अभी पूरा होशंगाबाद भी नहीं हो पाया है तो क्यों न यहाँ की ही इंच इंच देख ली जाय क्योंकि जहाँ जाता हूँ कुछ न कुछ नई चमत्कारिक बात सामने आ जाती है।

पिपरिया पहुंचे। सायं होने को थी, इच्छा हुई संदीप शर्मा से मिलने की। संदीप शर्मा और उनके साथी 'जय माता दी' समिति का संचालन करते हैं जो नर्मदा परिक्रमावासीयों की मदद करती है, उनके भोजन, रुकने और वस्त्र आदि की व्यवस्था करती है, नर्मदा को प्रदूषण मुक्त करने पर कार्य करती है। जर्मन युवती मोनज़ा के होशंगाबाद में वर्मा जी के यहाँ रुकने पर इस समिति के बारे में ज्ञात हुआ तभी से इनसे मिलने का मन था।

संदीप जी को फोन लगाया प्रमोद ने तो उन्होंने तुरंत आने की सहमति दे दी और 20 मिनट तो तब हुए जब वे अपने 7-8 टीम मेम्बर के साथ मिलने आ गये। परिचय हुआ तो हमने बताया की नर्मदा बचाओ और बेटी बचाओ अभियान एक साथ चलाना हैं।

“बहुत अच्छा विचार है। हम लोग तैयार हैं, बताइए क्या सहयोग चाहेंगे आप” संदीप जी बोले।

“हमने टैग लाइन दी है ‘नर्मदा है तो जल है, बेटी है तो कल है’। इसी को लेकर नर्मदा तट के प्रमुख घाटों पर नर्मदा और बेटी को बचाने की अपील करते हुए बड़े बड़े होर्डिंग लगाये जायं। पम्पलेट, स्टीकर छपवाए जाकर नर्मदा परिक्रमावासीयों को वहां दिए जायं जहाँ वे होशंगाबाद में प्रवेश करते हैं। ये दोनों ही काम आपके सहयोग से हो सकेंगे इसलिए आपकी समिति को हम इस अभियान में जोड़ना चाहते हैं।”

“हमारी समिति खुशी-खुशी करेगी यह काम। अभी तक तो बिना प्रशासन की निगाह में आये हम लोग नर्मदा की और नर्मदा परिक्रमावासीयों की सेवा करते रहते थे अब आपके बेटी बचाओ के साथ जुड़कर करेंगे तो और भी उत्साही लोग मिलते जायेंगे। आखिर नर्मदा को भी तो बेटी माना गया है। “संदीप बोले तो सबने सहमति में सिर हिलाया।

“पूरे जिले में हमारे पास ऐसे स्थान, आश्रम, धर्मशालाओं की जानकारी है जहाँ हम लोगो को ठहराते हैं” चौरासिया जी, समिति के सदस्य बोले।

“जैसे त्यागी आश्रम सिवनी, इस क्षेत्र का सबसे अधिक परिक्रमावासियों का पसंदीदा स्थान। हमारी समिति वहां सामग्री पहुँचाने का कार्य करती है। वहां के महाराज बड़े संत हैं” संदीप बोले।

“त्यागी आश्रम तो हम आज ही होकर आ रहे हैं। वहां तो एक बूढ़ी जीजी बाई और लखनदास जी मिले थे” मैंने कहा।

“अरे वह लखनदास जी महाराज ही तो सिद्ध संत है।” संदीप ने रहस्य खोला।

“पर वे तो बहुत सीधे शांत रहते हैं। उन्हें देख तो नहीं लगता की ये कोई संत होंगे” मैंने आश्चर्य प्रकट किया।

“यही तो उनकी विशेषता है, चुपचाप अपना काम करते हैं, सिद्धी ऐसी है कि नर्मदा के पानी को घी बना दें।” संदीप बोले।

“अद्भुत!” मैं अवाक रह गया।



## अजब नर्मदा, गजब सन्यासी

नर्मदा ने सन्यासियों को त्रिलोक दर्शी बनाया या सन्यासियों ने नर्मदा में दैवीय तत्व मिलाये। ये बहस का विषय हो सकता है पर सच तो यह है कि इस मामले में जितनी अजब नर्मदा है, उतने ही गजब इसके तटों को तपस्थली बनाने वाले सन्यासी हैं। ज्ञानी जाने और वे ही मीमांसा करें, हम जैसे साधारण लोग तो यही कहेंगे कि माँ नर्मदा की अलौकिक शक्ति थी जिसने संत मुनियों को अपने तट पर बुलाया और उन संतों की तपस्या का प्रभाव था कि नर्मदा में god particles बढ़ते ही चले गये।

गंगा यमुना के दोआब ने आर्यों को आकर्षित किया और उन्होंने वहां के दलदल भरे जंगलों को जलाने अग्नि का अहवाहन किया। अग्नि का सहारा ले आर्यों ने गंडक नदी तक की भूमि को जलाकर, सुखाकर अपने रहने योग्य बनाया, खेती योग्य बनाया। समतल, उपजाऊ भूमि और अनुकूल जलवायु ने आदर्श स्थिति रची और आर्यों की बसाहट उस क्षेत्र में घनी से और घनी होती चली गयी।

गंगा यमुना का आदर्श क्षेत्र आर्यों को इतना भाया कि उन्होंने नीचे उतरने का प्रयास ही नहीं किया और नर्मदा घाटी का कौमार्य अक्षत बना रहा। नर्मदा खंड में घना जंगल, घाटियाँ होने से सतत एकांत के अभिलाषी ऋषियों को खूब भायी यह जगह और अजब नर्मदा के गजब सन्यासियों ने तिलस्म रच दिया नर्मदा खंड में।

मार्कण्डेय, भृगु, जमदग्नि, कपिल, कबीर, शंकराचार्य की तप स्थली नर्मदा घाटी ने शुरू से ही त्रिलोक दर्शी और अंतरमन की आवाज पहचानने वाले संत दिए पर जहाँ और नदियों ने आधुनिकता के फेर में पड़ अपने

चुम्बकीय तत्व में कमी पाई वहीं नर्मदा ने समय निकलने के साथ भी अपनी विशेषता नहीं खोई और जो और नर्मदा के चारों ओर तब था वो आज भी है अगर उस स्तर के संत फकीर हों तो। तभी तो प्राचीन काल से चली आ रही संत परम्परा में कमल भारती, गौरीशंकर महाराज, दादाजी धूनीवाले, हंडियस भड़ान जैसे संत फकीर होकर चले गये तो उनकी लौ को जलाने वाले सीताराम बाबा अमरकंटक या सियाराम बाबा भट्टयान खरगोन आज भी मौजूद हैं।

भृगु - नर्मदा खंड में भृगु का नाम पहले ऋषि के रूप में आता है जिनके नाम से भृगु कच्छ नगर एक दम नर्मदा के मुहाने पर था जिसे आज भरूच कहते हैं और यहीं नर्मदा 1312 कि.मी. की लम्बी यात्रा पूरी कर अरबसागर में मिलती है। भृगु मुनि ने यहीं तपस्या की थी और उनके नाम से भृगु वंश चला जिसमें जमदग्नि, परुशराम जैसे तेजस्वी ऋषि हुए। भृगु के वंशज भार्गव ब्राह्मण कहलाये और माना जाता है कि भार्गवों की उत्पत्ति गुजरात के भरूच क्षेत्र में है जहाँ से माइग्रेट होकर भार्गव जगह जगह बस गये।

भृगु को पौराणिक कथाओं अनुसार लक्ष्मी का पिता माना जाता है। यद्यपि लक्ष्मी को सागर समुद्र की बेटी कहा जाता है। संभव है कि कुछ कनेक्शन इस कथा से मिले।

हिरन्यकश्यप का पड़पोता बलि एक वीर योद्धा था उसने धरती और देव सभी पर विजय पाई थी। बलि को अजेय बनाने में भृगु ऋषि का भी हाथ था जिन्होंने बलि के लिए होशंगाबाद के पास उत्तर तट पर भारकच्छ स्थान पर गायत्री पुरश्चरण यज्ञ किया था जिसके प्रभाव से बलि विश्व विजेता बन गया।

बलि से उसकी राजधानी मजूरी में जाकर वामन रूप धर विष्णु ने तीन पग भूमि में बलि को ही नाप लिया और राजा पर अधिकार तो राजा की भूमि पर अधिकार के नाते बलि के राज्य की पूरी भूमि विष्णु की हो गयी जिन्होंने ऋषियों के तपादि हेतु महेंद्र पर्वत को ले बाकी सारी भूमि बलि को वापस कर दी। किन्तु बली ने शर्त रखी कि भूमि के स्वामी विष्णु ही रहेंगे वह ट्रस्टी के रूप में राज्य की देखभाल करेगा। साथ ही बलि ने विष्णु को सदैव उसके राज्य के पास रहने और सागर की पुत्री लक्ष्मी से विवाह हेतु राजी कर लिया। चूँकि भृगु का सम्बन्ध बलि से था इसलिए संभव है कि

भृगु ने उस विवाह में लक्ष्मी का कन्यादान किया हो या पुत्री मान विवाह की कोई रस्म की हो।

भृगु इस नाते विष्णु के स्वसुर हुए जिनके बारे में एक वाक्या यह भी है कि एक समय विष्णु के पास जाने पर उनका यथोचित सम्मान न करने पर उन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी जिसे विष्णु ने बड़प्पन दिखाते हुए नम्रतावश अपनी ही भूल मान भृगु से क्षमा मांगी थी। इस प्रसंग पर हमारी महान धर्मनिरपेक्ष संस्कृति के एक महान वाहक 'रहीम' ने लिखा।

*का रहीम हरि को घटो, जो भृगु मारी लात॥*

मार्कण्डेय - पुराणों में सबसे अधिक जिस नर्मदा तटीय ऋषि का जिक्र है वो मार्कण्डेय हैं। कहा गया कि ये उस समय भी थे जब प्रलय हुई और उस महाप्रलय में दो का ही अस्तित्व बचा था, एक मार्कण्डेय और दूसरी नर्मदा।

मार्कण्डेय ने नर्मदा की परिक्रमा की और उसके तट पर स्थित 500 से अधिक तीर्थों का वर्णन अपनी स्मृति के आधार पर अमरकंटक में युधिष्ठिर को सुनाया जब पांडव वनवास अवधि में वहां आये थे। स्कन्द पुराण में नर्मदा खंड के नाम से जिसका वर्णन है ये वही मार्कण्डेय और युधिष्ठिर का वार्तालाप है जिसमें मार्कण्डेय युधिष्ठिर को नर्मदा तट के एक एक तीर्थ का न सिर्फ वर्णन करते हैं अपितु उसका महात्य भी बताते हैं और साथ में युधिष्ठिर की जिज्ञासा भी शांत करते हैं।

मार्कण्डेय मुनि के स्थान अमरकंटक में हैं और नर्मदा परिक्रमा पथ पर भी। ओमकारेश्वर में भी मार्कण्डेय मुनि की प्रसिद्धि है। मार्कण्डेय मुनि ने अपनी विलक्षण मेधा से अनेक ग्रन्थ लिखे और उपासना के मन्त्र दिए जिनमें अपराजिता स्त्रोतं जैसी रचनाएँ भी हैं।

शंकराचार्य - आदि गुरु शंकराचार्य ने न तो नर्मदा की परिक्रमा की और न ही नर्मदा किनारे आश्रम बनाया किन्तु नर्मदा खंड में जितना योगदान इनका है ईसा के बाद समय में और किसी सन्यासी का नहीं रहा।

788 AD में केरल, उस समय के मालाबार, के छोटे से गाँव कालड़ी में शिवगुरु और सुभद्रा की इकलोती संतान के रूप में जन्मे शंकर बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के किन्तु वैरागी स्वभाव के थे। 8 वर्ष की आयु में माँ को बमुश्किल राजी कर घर छोड़ सन्यासी बन गये।



परिवारजक के रूप में भटकते भटकते ओमकारेश्वर आ पहुंचे और यहीं उन्हें गुरु मिले गोविन्द पाद जो वेदांती थे और जिन्होंने शंकर को पूरे भारत में भ्रमण करने की आज्ञा दी। अद्वैतवाद की दीक्षा ले शंकराचार्य ने गुरु की आज्ञा मान सारे देश में भ्रमण किया और पूरे देश में अद्वैत का विस्तार किया जिसमें जीव और ब्रह्म दो नहीं एक ही हैं, अद्वैत हैं। इसी का सूत्र था अहम ब्रह्मास्मि, अर्थात् मैं ही ईश्वर हूँ।

महेश्वर, तत्समय महिष्मति, में ही उन्हें मंडन मिश्रा से शास्त्रार्थ किया और उन्हें पराजित किया तब उनकी पत्नी भारती ने शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया और लम्बे वादविवाद के बाद पराजित हुई। शंकराचार्य ने पूरे देश की धार्मिक एकता से राजनैतिक एकता स्थापित करने का स्वप्न देखा और उसे फलीभूत कराने उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम चारों दिशाओं ने मठ स्थापित किये। द्वारका, पुरी, बदरीनाथ और श्रंगेरी में मठ स्थापित कर निर्वल पड़ रहे हिन्दू धर्म को देश का सबसे शक्तिशाली धर्म बना दिया।

मात्र 32 वर्ष की उम्र में, ईसा के बाद विश्व में जन्मे सर्वाधिक प्रभावशाली संतो में से एक इस महान सन्यासी की जीवन लीला समाप्त हो गयी पर इस अल्प जीवन में जो उन्होंने दिया उससे भारतीय समाज कभी उन्नत नहीं हो पायेगा।

नर्मदा से शंकराचार्य का सम्बन्ध अद्भुत है तभी तो केरल से पैदल चलकर अनेक नदियों को पार कर जब वे ओमकारेश्वर में नर्मदा के सम्मुख खड़े हुए तो उनके मुख से अनायस निकलने लगा।

*त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे*

नर्मदाष्टक की रचना शंकराचार्य ने की थी जो आज नर्मदा की स्तुति का मूल आधार है और घर घर में गाया जाता है। जो भी नर्मदा भक्त होगा उसे नर्मदाष्टक याद होगा। नर्मदाष्टक सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही नहीं है, जो नर्मदा में विश्वास करता है, नर्मदा के प्रति जिसकी आस्था है और जो एटीट्यूड ऑफ ग्रेटीट्यूड को मानने वाला है वो नर्मदा के समक्ष जब भी खड़ा होगा तब गायेगा।

*कृतान्त-दूतकालभूत-भीति-हारि वर्मदे।  
त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे॥*

दुरन्त-पाप-ताप-हारि-सर्वजन्तु-शर्मदे।  
त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवि नर्मदे॥

आज भी केरल के अनेक लोग इसी पहेली को सुलझाने नर्मदा के तटों पर भटकते हैं कि विलक्षण प्रतिभा के धनी, देवत्व तक पहुंचे उनके आचार्य शंकर, जिन्हें न किसी ईश ने, न किसी पर्वत, नदी ने इतना प्रभावित किया जितना नर्मदा ने। आखिर क्या है नर्मदा में जो शंकराचार्य जैसे को भी अपना भक्त बना लेती है और वह गाने लगता है।

त्वदीय पाद पंकजम नमामि देवि नर्मदे॥

कमल भारती जी - ने सबसे पहले जमात स्थापित कर नर्मदा की पैदल परिक्रमा की। उनकी जमात में हाथी, घोड़े बैलगाड़ियाँ, झंडा निशान के साथ सैकड़ों की संख्या में साधू महात्मा रहते थे। जमात के साथ कमल भारती महाराज ने नर्मदा की तीन परिक्रमायें की। तत्पश्चात् जमात का काम अपने शिष्य गौरीशंकर को देकर स्वयं उससे अलग हो गये। मंडलेश्वर के निकट मर्कटी संगम पर आश्रम बना कर रहने लगे। कालान्तर में चौबीस अवतार नामक स्थान पर ओमकारेश्वर में बस गये और वर्ष 1912 में अपने भौतिक शरीर का परित्याग कर दिया।

नर्मदा की परिक्रमा ही अपने आप में अद्भुत अनुभूति होगी, तिस पर सैकड़ों की संख्या में मनुष्य और पशुओं को लेकर पैदल चलना और वह भी तीन हजार से अधिक किलोमीटर तक, यह विचार आना ही बड़ी बात है और सच में कमल भारती महाराज से पहले किसी के मन में हजारों वर्षों में कभी यह विचार नहीं आया। इसीलिए उनकी यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

गौरीशंकर महाराज - जमात के कार्य को आगे बढ़ाने, जमात का स्वरूप भव्य बनाने और कभी किसी के आगे हाथ न पसारने के कारण इस स्वाभिमानी संत के चमत्कार नर्मदा खंड में आज भी गाये जाते हैं। कमल भारती जी के शिष्य और उनकी जमात में भंडारी का कार्य देखने वाले गौरीशंकर जी में अध्यात्म के ऊँचे स्तर को समय रहते कमल भारती ने पहचान लिया था और अपना प्रिय शिष्य बना जमात उनके हवाले कर दी।

गौरीशंकर महाराज ने जमात के कार्य को आगे बढ़ाया। उनकी जमात कमल भारती की जमात से भी विशाल हो गयी थी। गौरीशंकर महाराज जनम भर नर्मदा परिक्रमा करते रहे, इन्होंने नर्मदा के किनारे गायत्री पुरश्चरण किये।

गौरीशंकर महाराज एक सिद्ध पुरुष माने जाते रहे हैं। इनकी अनेक चमत्कारी गाथाएं नर्मदा खंड में आज भी बड़े चाव से गाई जाती हैं। कहते हैं इन्हें नर्मदा सिद्ध थीं। नर्मदा के जल से पूड़ियाँ सिकवाना और द्रव्य ना रहने पर नर्मदा जी से मांग लेना, अपने चमत्कारों के कारण ये अग्रेजों तक में चर्चा के विषय थे। इनकी किवदंतियों में यह भी चर्चित है कि शूलपाणि की झाड़ियों में इन्हें अस्वत्थामा के दर्शन हुए थे।

गौरीशंकर महाराज के अनेक शिष्य हुए जिनमें प्रमुख हैं विश्व प्रसिद्ध दादाजी धूनीवाले। काशीनाथ, नर्मदानंद, बरफानी बाबा जैसे संत भी उनकी जमात थे।

खोकसर, होशंगाबाद से 12 किमी दूर नर्मदा किनारे इनका भव्य स्थान है जहाँ इन्होंने वर्ष 1888 में जीवित समाधि ली थी। आज भी देश में दूर दूर से लोग समाधि के दर्शन करने खोकसर पहुंचते हैं।

दादाजी धूनीवाले - नर्मदा खंड के सबसे चर्चित संत केशवानन्द जी हुए जिन्हें सभी दादाजी धूनीवाले के नाम से जानते हैं। कहते हैं कि स्वयं शंकर शिव के बाल रूप में गौरीशंकर महाराज को तब मिले थे जब इनकी आयु 8 वर्ष थी। गौरीशंकर महाराज ने इन्हें अपना शिष्य बना काशी अध्ययन के लिए भेजा। वहां से आने के बाद उन्हें जमात में शामिल कर लिया गया। वर्षों वरष जमात में रहने के बाद अपनी समाधि वर्ष 1888 में गौरीशंकर महाराज ने उन्हें जमात का नया संत घोषित किया।

शिव और दत्तात्रेय के अवतार माने जाने वाले दादाजी 1901 में नरसिंहपुर के साईंखेडा में पुनःप्रकट हुए और वहां अनेक वर्ष तक रहे। साईंखेडा में ही उनके चमत्कार फैलने लगे और लोग उनके पास अपनी समस्याओं का हल पाने आने लगे थे। दादाजी सदैव अग्नि जला कर रखते थे जिसे धूनी कहते थे। इस धूनी की राख से दादाजी ने गाँव के गाँव महामारी से ठीक कर दिए, लोगों के असाध्य रोग सही कर दिए। जो कष्ट में आया उसके कष्ट हर लिए। ऐसी ही न जाने कितनी बातें साईं खेडा से चारों ओर फैल गयी थीं। कहा तो यहाँ तक जाता है कि वर्धा नागपुर जाते

समय गाँधी जी संयोग से दादाजी से मिलने आये थे और दादाजी ने ही उन्हें लाठी साथ रखने की सलाह देकर भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की थी तथा उन्हें भारत को स्वतंत्र कराने का अशीर्वाद दिया था।

दादाजी 1929 में साईं खेडा से चले और छीपानेर होते हुए खंडवा पहुंचे जहाँ वे तीन दिन रुके और वहीं 1930 में समाधिस्थ हो गये। उनके देहत्याग के बाद खंडवा में उनकी समाधि स्थल पर जाने वालों के साथ चमत्कार होने लगे और देखते देखते उनका समाधिस्थल एक तीर्थ बन गया। आज खंडवा नगर में उनका भव्य स्थान है जहाँ वे बड़े दादाजी के रूप में और संत हरिबोले छोटे दादाजी के रूप में समाधि लिए हुए हैं।

दादाजी धुनीवाले अपने समकालीन शिर्डी के साईबाबा, नागपुर के ताजुद्दीन बाबा की तरह ही ख्यातिनाम थे और उनका यश समय के साथ बढ़ता चला गया। दादाजी के समय और उनके बाद नर्मदाखंड में अनेक संत हुए जिन्हें दादाजी घराना में सम्मिलित माना जाता है। हर वर्ष गुरुपूर्णिमा के दिन लाखों की संख्यामें उनके शिष्य, अनुयायी खंडवा पहुंचते हैं।

सियाराम बाबा - खरगोन जिला मध्यप्रदेश में नर्मदा के किनारे एक गाँव है भट्टयान। उसी ग्राम में ठीक नर्मदा तट पर संत सियाराम का आश्रम है। वर्तमान में जहाँ बाबा का निवास है वह क्षेत्र डूब में आ रहा है। सरकार ने इन्हें मुआवजे के दो करोड़ 51 लाख रुपये दिए थे जिसे इन्होंने खरगोन के ही ग्राम नांगलवाडी में नाग देवता के मन्दिर में दान कर दिया। उनकी दान में दी इस बड़ी राशि से वहाँ भव्य मन्दिर, गौशाला का निर्माण किया जा रहा है।

बाबा पूरे संत फकीर हैं। लाखों रुपये कोई दान देना चाहे नहीं लेते सिर्फ दस रुपये लेते हैं और रजिस्टर में देने वाले का नाम जरूर लिखते हैं। इसी राशि से नर्मदा परिक्रमावासीयों का भोजन और उनके रुकने की व्यवस्था बरसों से अनवरत करते आ रहे हैं। आश्रम में सारा दिन दर्शन करने वालों के लिए चाय बनाई जाती है। सौ वर्ष से अधिक की उम्र हो गयी है और प्रतिदिन प्रातः नर्मदा में स्नान करना और नर्मदा जल लाकर पूजन करना अभी भी नित्य का नियम है।

सीताराम बाबा - अमरकंटक में निवासरत सीताराम बाबा के सानिध्य में कुछ समय बिताने का अवसर उस वक्त मिला जब परिवार सहित आज से

8 वर्ष पूर्व अमरकंटक गया था। छिंदवाडा से हमारे साथ मरकाम आये थे। वस्तुतः उन्हीं के आग्रह पर अमरकंटक घूमने का प्लान बनाया था। मरकाम मेरे पास परियोजना अधिकारी के रूप में कार्यरत थे और अमरकंटक के बड़े मुरीद थे। साल में एक दो चक्कर उनके अमरकंटक के लग जाया करते थे। होशंगाबाद ट्रान्सफर हो चुका था, सोचा फिर मौका मिला न मिला, सो निकल गये। दो दिन अमरकंटक रुके, पूरी यात्रा ही बेहद दिलचस्प रही, मेकल पर्वत, नर्मदा कुण्ड, कपिल धारा, सोनमुदा, जोहिला कूप, कल्याण आश्रम, बाजार, एमपीटी का होटल सभी आज भी चलचित्र की भांति स्मृति पटल पर चलते हैं।

यात्रा के दुसरे दिन मरकाम के कहने पर सीताराम बाबा के आश्रम गये। रास्ते भर सोचते जा रहे थे कि मरकाम की रूचि आश्रमों, बाबाओं में है इसलिए उनकी भावना को टेस न पहुंचे सो हो आते हैं। दूर दूर तक फैले हरे भरे अमरकंटक में कोई तीन चार किमी नर्मदा कुण्ड से पश्चिम दिशा में जाने पर एक पतली कूल के किनारे पेड़ों के झुरमुट में कच्चा आश्रम बना था। मरकाम ने गाड़ी रुकवाई, सामने पानी से भरी कूल बह रही थी, हमें उसे पार कर जाना है। पहले मरकाम उतरे, पार निकल गये। अब हमारी बारी थी, कूल इतनी पतली थी कि एक बार में एक ही निकल सकता था, नंगे पैर मैं उतरा, मेरे पीछे बेटी शालिनी और उसके पीछे उसकी माँ।

“सर जानते हैं, आप नर्मदा जी को पार कर रहे हैं” थोड़ी ऊंचाई पर खड़े मरकाम ने जोर से बोले।

“क्या...!!” मैं बुरी तरह चौंका, जिसे हम कूल समझ रहे थे वो नर्मदा थी।

“पापा ये नर्मदा हैं? इतनी छोटी?” चौंकने की बारी इस बार शालिनी की थी।

“बताओ, बचपन में एक बार इस में डूबते डूबते बची थी और आज ऐसे पार कर रहे है की घुटने भी नहीं डूबे” मंजुल के स्वर में विस्मय था।

“अब तो होशंगाबाद जा ही रहे हैं वही डूबी थीं, वहीं बताना माँ नर्मदा को” मैंने पार पहुंच मजाक किया।

“हाँ ...जिससे वो फिर डूबा दें” मंजुल ने कहा तो सब हँसने लगे।

सभी उस पार अब आश्रम के द्वार पर थे। तब जानकारी नहीं थी पर अब समझ आया कि हम नर्मदा के उत्तर तट से दक्षिण तट पर आये थे वहां। धार इतनी पतली थी कि लगता ही नहीं था कि आगे चल कर ये कैसी विशाल नदी बनी थी। ये तो वैसा ही था कि शेरनी की बच्ची जन्म पर इतनी छोटी की गोद में खिलाओ पर बड़ी हो जाय तो पास जाने में डर लगे।

आश्रम में घुसे, अंदर देखा एक बड़े कच्चे कमरे में बैठे थे वृद्ध साधू। मरकाम ने बताया था की बाबा की आयु 100 वर्ष के उपर हो गयी है। सामने कृश काय शरीर को देख कर लग भी रहा था कि अगर वे शतायु हों तो कोई बड़ी बात नहीं।

लम्बे, झुरियों दार चेहरा और उस पर सफेद बड़ी दाड़ी और सिर पर जटाओं दार लम्बे सफेद बाल लिए जमीन पर दरी बिछाये बैठे उस साधारण किन्तु तेजोमय वृद्ध मुनि को देखते ही श्रद्धा से शीश झुक गया उनके आगे।

“अरे आज तो किशोरी जी आयी हैं” शालिनी को देखते ही बोल पड़े सीताराम बाबा।

हमें बड़ा अचरज हुआ फिर लगा की शायद वे हर कन्या को जानकी नाम से ही संबोधित करते हों खासकर बेटू जैसी 14 वर्षीय किशोरी बालिकाओं को। पर उनका विशेष अनुराग शालिनी के प्रति था, जिसके पैर भी उन्होंने छुए जबकि हम सब उनके आगे नतमस्तक थे। यह सब देखकर जितने भी गिनती के लोग उस समय बाबा के पास बैठे थे, वे भी आश्चर्य कर रहे थे।

आश्रम में लोगों की आवाजाही लगातार बनी हुई थी। एक बात तो उस माहौल को देख कर लग रही थी कि इस साधारण से दिखने वाले गजब सन्यासी की बड़ी धाक थी वहां और आस पास के लोग उन्हें चमत्कारी संत मानते थे।

बाबा ने बड़ी आत्मीयता से हमें भोजन कराया। आलू बुखारे के फल भेंट किये और बार बार आशीष दे हमें बिदा किया था। उनसे मुलाकात तो साधारण थी पर उसकी flavor लम्बे समय तक रही।



## सोई जाऊइ जेहि...

**12** feb 19 नर्मदा जयंती के दिन पुरे जिले में एक विशेष अभियान प्रारम्भ किया 'बेटी है तो कल है, नर्मदा है तो जल है'। चूँकि होशंगाबाद में नर्मदा का, अन्य जिलों की तुलना में, सर्वाधिक लम्बा तट है। और चूँकि नर्मदा को भी बेटी माना जाता है समुदाय में, इसलिए नर्मदा के साथ बेटी बचाओ को जोड़ते हुए नर्मदा और बेटी दोनों को बचाने का संकल्प प्रमुख घाटों पर लेने होर्डिंग्स के माध्यम से सभी को जोड़ा जाना तय किया। समुदाय की सहभागिता इस जिले में उत्कृष्ट रही है, सो इसी परम्परा को बढ़ाते हुए यह विशेष पहल करने की ठानी।

इसी सिलसिले में जब बांद्राभान गत माह जाना हुआ तो फ्रेंच साध्वी राधा माँ के आश्रम गये थे तभी उन्होंने नर्मदा जयंती पर आने हेतु आमंत्रित किया था। विशेष अभियान की तैयारियों में दिमाग से निकल गया पर राधा माँ को ध्यान रहा और चालक दिलीप से कहला भेजा कि आना है।

सभी प्रमुख घाटों पर होर्डिंग्स कार्य की प्रगति ले दोपहर को बांद्राभान के लिए निकल गये। सोचा यही कोई छोटा मोटा कार्यक्रम जयंती के दिन रखती होंगी राधा माँ किन्तु जब आश्रम पहुंचे तो अद्भुत द्रश्य था वहां। लगभग 150 कन्याओं का भोज चल रहा था। हम यानि मैं, सशक्तिकरण अधिकारी भार्गव जी और परियोजना अधिकारी धर्मेन्द्र अग्रवाल, भोज के अंतिम दौर में ही पहुंचे थे। भोज के बाद का द्रश्य तो और भी विचित्र था। राधा माँ, उनके साथ के फ्रांसिसी साधू गण सभी कन्याओं के पैर पूज कर उन्हें दक्षिणा भी दे रहे थे।

“सर, एक तरफ ऐसे लोग हैं जो हिन्दू धर्म की इतनी आलोचना करते हैं, और दूसरी तरफ ऐसे विदेशी लोग भी हैं जो इसी धर्म में हम लोगों से भी ज्यादा रच बस गये हैं। एसा क्यों?” मेरे बगल में बैठे धर्मेन्द्र ने पूछा जो राधा माँ और उनके सहयोगी फ्रेंच साधुओं की बहुत देर से गतिविधि देख रहे थे।

“सही कह रहे हो” मैंने बस इतना ही कहा, इससे ज्यादा मुझे कुछ सूझा ही नहीं। भोज के बाद आश्रम का चक्कर लगा, नर्मदेश्वर शिव लिंग, जो राधा माँ ने स्थापित कराये थे, के दर्शन कर हम लोग लौट आये, बात आयी गयी हो गयी।



बहुत दिनों से इच्छा थी कि घर पर रुद्राभिषेक कराया जाय। पिछली बार जब कराया था तो भिंड से उमेश शास्त्री को बुला लिया था। उमेश काशी में संस्कृत, ज्योतिष और वेद पढ़े हैं। पत्नी और बेटी की इच्छा हुई कि उमेश पंडित को ही बुलाया जाय। बात की, महूर्त देखा और माघपूर्णिमा के दो दिन पूर्व तय समय पर आकर उमेश ने विधिवत रुद्राभिषेक कराया। दूसरे दिन पचमढ़ी को निकल गये। उमेश की इच्छा पर्यटन की नहीं थी पर जब बताया कि पचमढ़ी मात्र पर्यटन स्थल ही नहीं हैं, शिव जी का बहुत बड़ा स्थान है, जहाँ शिवरात्रि पर लाखों श्रद्धालु आएंगे, तो वे खुशी खुशी तैयार हो गये।

पचमढ़ी में उन्हें जटाशंकर के पहले दर्शन कराये। जटाशंकर की कहानी है कि शिव भोलेनाथ भस्मासुर से भागते हुए जटाशंकर में जा छिपे थे। यहीं उन्होंने जटा पत्थरों पर पटकती थीं। अभी भी पत्थरों में प्राकृतिक चिन्ह हैं कहीं शेषनाग के, कहीं मकर के और कहीं जटाओं के। उमेश को वहां के पंडितजी ने बताया कि जटाएं पटक कर यहीं त्याग दी थीं शंकर भगवान ने।

“जटाएं छोड़ दी होंगी जिससे पहचान न पाए भस्मासुर, फिर भी नहीं बचे” पंडित जी की बात सुन कर हंसते हुए बोले उमेश।

“हाँ यहाँ से भाग कर जहाँ छिपे थे, वो स्थान भी यहीं हैं”

“क्या सच! हम लोग चलेंगे वहां?”

“बिलकुल, वहीं चल रहे हैं” मैंने कहा। धुंध और शीतलता के खास अहसास के साथ हम लोग सीढियां चढ़ने लगे। बीच बीच में शिव की भिन्न



भिन्न भंगिमाओं की प्रतिमाएं, सतपुड़ा के जंगलों से निकली जड़ीबुटी से बनीं आयुर्वेदिक दवाओं की दुकानें, हनुमानजी का मन्दिर जिसमें रामेश्वरम के पानी में तैरने वाले पत्थर मौजूद हैं, सभी देखते हुए ऊपर आये।

अगला पड़ाव पांडव गुफा। ऊँची शिला या कहीं पहाड़ी में बनीं प्राचीन गुफाएं जो सच ही प्राचीन समय में रुकने के मुफ़ीद स्थान रहे होंगे।

“क्या वाकई यहाँ पांडव आये थे। वैसे लगता तो है इन ऊँची गुफाओं को देख कर” विस्मय से पूछा उमेश ने।

“पचमढ़ी का नाम ही इन पांच गुफाओं के आधार पर पड़ा है” प्रमोद परियोजना अधिकारी, जो हमारे साथ ही पिपरिया से आये थे, ने कहा।

“इतिहास को देखें और उनके वनवास पथ पर गौर करें तो लगता है कि पांडव यहाँ आये होंगे” मैंने जोड़ा।

“कैसे सर?” प्रमोद की जिज्ञासा बढ़ी।

“उत्तर से दक्षिण की ओर आते में भीमबेटका एक स्थान है, यहाँ से 150 किमी उत्तर की ओर, जिसे भीम से जोड़ कर देखा जाता है की वनवास समय में पांडवों ने जब वहाँ वास किया तो वह स्थान भीम की बैठक थी। उस स्थान से दक्षिण पूर्व में 70 किमी पांडव द्वीप है नर्मदा के किनारे जहाँ कहा जाता है की पांडवों ने वनवास के समय वहाँ रुक कर यज्ञ किया था और शिवलिंग की स्थापना की थी।”

“अरे वाह! आप ने तो रूट ही बना दिया” उमेश बोले।

“पांडव द्वीप से और पूरब की ओर चले तो पचमढ़ी और यहाँ से अगर पूरब उत्तर की ओर बढ़ें तो अमरकंटक।”

“अमरकंटक! क्या वहाँ भी गये थे पांडव” प्रमोद पूछने लगे।

“हाँ, मार्कण्डेय मुनि से नर्मदा पुराण सुना है युधिष्ठिर ने वहाँ।”

“तब तो सच ही होगा यहाँ पांडव निवास” उमेश की शंका का समाधान हो गया था जैसे।

पांडव गुफा और उसके साथ लगे खूबसूरत गार्डन को देख हम बाहर निकले। सायं के 5 बज चुके थे। हम हमारा अगला स्थान महादेव गुफा। पचमढ़ी से भी दस किमी आगे उपर की ओर। गाड़ी पक्की, सुंदर पहाड़ियों, घाटियों से होकर जाती सड़क पर दौड़ रही थी।

“ये है वो स्थान जहाँ महादेव छिपे थे आकर, जब जटाशंकर में भी बात नहीं बनी” जैसे ही हम बड़ा महादेव पहुंचे, गाड़ी से उतरते हुए मैं बोला। महादेव को बड़ा महादेव भी कहते हैं। गुफा तक जाने की पक्की, चौड़ी सीढियां पर चलते हुए उमेश प्राकृतिक सौन्दर्य को अचरज से देख रहे थे।

“यहाँ तो हर पत्थर, हर पेड़ कोई न कोई आकृति लिए है” उमेश बोले।

“भोले बाबा की नगरी है, आपको हर शिला में आकृति बनती दिखेगी। और नीचे जंगल में नागद्वारी जाओ तो बड़ी बड़ी चट्टानें स्पष्ट लगेंगी की गणेश जी बैठे हैं” चन्द्र प्रकाश शर्मा ड्राईवर बोले।

“नाग द्वारी??” उमेश ने पूछा अचरज से।

“हाँ यहाँ नाग देवता का बहुत पुराना मन्दिर है नीचे जंगल में। नागपंचमी पर दस दिन का मेला लगता है वहां। लाखों लोग आते हैं उस मेला में। अधिकांश महाराष्ट्र के। प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है वहां की। छोटे छोटे झरने, बहती पतली नदी, चट्टानें, वृक्ष, जंगली जानवर सब मिलकर आदमी को वशीभूत कर लेते हैं” प्रमोद ने वर्णन किया।

बातें करते करते हम लोग महादेव गुफा पहुंच गये। बाहर से देखने पर अंदर रौशनी में पूरा दृश्य दिख रहा था। कोई 200 मीटर गहरी गुफा, बीच में जलहरी जैसी आकृति में पानी भरा जो उपर पहाड़ से रिस रिस कर टपक रहा था।

अंदर घुसे, सामने ही शिव लिंग स्थापित था। दोनों तरफ पतली राह थी जाने और आने को जिसमें झुक कर चलना पड़ता है। धीरे धीरे शिवलिंग तक पहुंचे।

“वाह रे भोले बाबा जगह तो सही चुनी छिपने की पर छिप नहीं पाए” उमेश मजे ले रहे थे शंकरजी के। भक्त की दुनिया भी अजीब है। प्यार प्यार में कुछ भी कह लेते हैं अपने इष्ट से।

“अब फाइनली वह जगह जहाँ जाकर शिव बाबा ने समाधि लगाई और विष्णु ने आकर उनकी समस्या दूर की” बाहर निलकंठे ही मैं बोला।

“तो अब वो जगह भी यहीं है” उमेश ने व्यंग किया।

“हाँ वो देखो... चौरागढ़” प्रमोद ने ऊँगली से इशारा किया ऊँचे पहाड़ की ओर।

“क्या!!!” इस बार तो मुहं खुला का खुला रह गया उमेश का।

“हाँ उमेश, जब यहाँ भी बात नहीं बनी तो भोलेबाबा निकल कर चौरागढ़ चढ़ गये और ऊंचाई पर जाकर विष्णु को समाधि से बुलाया। विष्णु ने उसी पहाड़ पर मोहनी रूप धर भस्मासुर को मारा और शिव को त्रासमुक्त किया” ऊँचे पहाड़ को अपलक देख रहे थे उमेश।

सायं हो चली। हम लोग अब उस रेस्ट हाउस की ओर जा रहे थे, जहाँ हमें रुकना था। महादेव गुफा के दाहिनी ओर चढ़ाई पर गाड़ी चलती जा रही थी। रेस्ट हाउस, जैसा कि बताया गया था, महादेव नाम से ही था और महादेव पहाड़ियों में ऊपर बना था जो बमुश्किल आधा किमी रहा होगा गुफा से।

रेस्ट हाउस पर जैसे ही गाड़ी पहुँची, सब दंग रह गये उस नजारे को देख जो गाड़ी से उतरते ही हमारे सामने था। चारों ओर जंगल, पहाड़ियाँ, अटखेलिया खाते बादल, सुंदर हरा भरा रेस्ट हाउस और सबसे बड़ी बात ...पहाड़ी के सामने ही चौरागढ़।

सामने के दूसरे पहाड़ पर स्थित था चौरागढ़ जिसका मन्दिर अपने उन्नत शिखर के साथ स्पष्ट दिख रहा था।

“कहाँ सर पहाड़ पर रुक रुक कर चौरागढ़ की झलक ले रहे थे और कहाँ सामने ही दिख रहे हैं” प्रमोद बोले।

“अद्भुत है, सचमुच अकल्पनीय” मुझसे रहा न गया।

“सर इस सौन्दर्य के आगे तो मनाली जैसे स्थान भी फीके लगेंगे” प्रमोद बोले।

तभी वहाँ का उत्साही केयर टेकर गौची दूरबीन ले आया। दूरबीन से चौरागढ़ मन्दिर के स्पष्ट दर्शन किये सबने।

सायं के 6:30 बज रहे थे। सायं ढलने लगी थी। अँधेरा धीरे धीरे छा रहा था। रेस्ट हाउस के वरामदे में सभी लोग बैठ गये। प्रमोद और शर्मा को वापस पिपरिया जाना था पर उनका मन ही नहीं हो रहा था जाने का। मैंने समझा बुझा कर उन्हें वापस किया।

रात गहराने लगी। मैं और उमेश अभी भी वरामदे में बैठे हैं। उपर चाँद चमक रहा था जिसने पूरे वातावरण में चांदनी में भिगो कर नशा फेंका था। क्या पेड़, क्या पौधे, क्या छितरे भवन, मन्दिर रेस्ट हाउस सभी चांदनी

में बुरी तरह भीग कर सिकुड़े खड़े हों जैसे। मदहोशी ऐसी कि न आदमी बोल रहे हैं, न जगली जानवर, न पछी और न पेड़।

सामने चौरागढ़ की ओर तो टकटकी लगा कर देख रहे थे जबसे यहाँ आये हैं। रात हो जाने से अब मन्दिर नहीं दिख रहा था, सिर्फ पहाड़ी थी और ऊपर जलती लाइट से बनता एक चमकदार बिंदु।

“ये तो पूरा कैलाश पर्वत लगने लगा” मैंने सामने पहाड़ देखते हुए कहा।

“सचमुच कैलाश का ही छोटा रूप दिख रहा है। पूरा पहाड़ शिवलिंग के आकार में आ गया है।” उमेश बोले देखते देखते नशा हो रहा है।

“ऐसी जगह ही तो वैराग्य उपजता है। लगता है बस ध्यान करते रहो और सामने शिव हों चौरागढ़ के रूप में” उमेश ने भेद खोला जैसे।

“हाँ जब सामने यह हालात हैं तो पास जाने पर क्या होगा”

“होगा क्या अभी वैराग्य का भाव आ रहा है फिर सचमुच वैराग्य हो जायेगा। वैसे भी शिव के स्थान पर आने से वैराग्य जन्म लेता है और ब्रन्दावन जाने पर भक्ति।”

“मतलब?” मैंने पूछा।

“शिव महा योगी हैं इसलिए उनके सम्मुख पहुंचने पर वैरागी मन होने लगता है जबकि ब्रन्दावन में संसार में रह कर भक्ति कैसे की जा सकती है यह सिखाता है।”

“तुम तो वृन्दावन भी जाते रहते हो। क्या अंतर है इस जैसी जगह और वृन्दावन में?”

“यहाँ की शांति बुद्ध और महावीर बना सकती है तो वृन्दावन में भक्ति रस बहता है जिसको पीकर हर कोई डोलता है। तभी तो हमी लोग नहीं अग्रेज भी अपने मन्दिर से हरे रामा हरे कृष्णा कहते हुए निकलते हैं और पूरी भक्ति में डूब परिक्रमा लगाते हैं हम लोगों से भी तेज।” उमेश बखान रहे थे।

“पूरा माहौल कृष्ण मय हो जाता होगा इसलिए सभी उन्हें पाने के लिए लालयित होते होंगे”

“पाने की तमन्ना भक्तों में नहीं होती वे तो ईश के स्वरूप में ही खोकर उनके नाम को ही जपते हैं और इसी में सुख पाते हैं। वहां तो रसखान

जैसे भी पहुंच कर कृष्ण के बाल रूप के दीवाने हो जाते हैं। ऐसी है भक्ति की महिमा।”

उमेश बोले तो मैं चौंका, जैसे मुझे उस दिन धर्मेन्द्र की कही उस बात का उत्तर मिल गया हो। *“क्यों हिन्दू धर्म की इतनी आलोचना होने के बाद विदेशी लोग भी इसके दीवाने हो जाते हैं?”* धर्मेन्द्र ने पूछा था उस दिन और जवाब मिला आज।

“चाहे इसाई धर्म हो, इस्लाम हो या कोई और सभी में ईश्वर को पाने के दो मार्ग बताये हैं। ज्ञान और कर्म मार्ग। सभी धर्म ईश्वर को निर्गुण निराकार मनाते हैं और या तो कर्म के द्वारा या ज्ञान के द्वारा ईश्वर तक जाने के मार्ग बताते हैं। एक मात्र हिन्दू धर्म ही ऐसा है जो ज्ञान और कर्म के साथ ईश्वर प्राप्ति हेतु भक्ति मार्ग भी बताता है। निर्गुण निराकार ब्रह्म को सगुण साकार रूप में मानने का साहस हिन्दू धर्म ही कर पाया है।”

कर्म मार्ग जहाँ कर्ता को गलत कर्म न होने की चिंता में डाले रहता है वहीं ज्ञान मार्ग में कुछ छूट न जाने का भय बना रहता है पर भक्ति मार्ग में सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें न भय है, न चिंता और सच पूछा जाय तो ईश्वर मिल जाय ऐसी कोई विशेष लालषा भी नहीं है इसमें। यह तो प्रक्रिया का आनन्द लेने का मार्ग है इसमें भक्त सगुण साकार ईश्वर के रूप में इतना खोया रहता है कि ईश्वर सझात मिल जाय तो ठीक ओर न मिले तो भी ठीक। उसका स्वरूप ही इतना आनन्दित करने वाला है कि किसे पड़ी है ईश्वर को खोजने की। इसलिए जो हिन्दू धर्म के करीब आया वह इसी में रमा और इसी में मगन हुआ। फिर चाहे विदेशी भक्त हों चाहे देशी। चाहे नर्मदा की परिक्रमा कर रहे हों चाहे गिर्राज जी की, चाहे मथुरा में पड़े हों चाहे अयोध्या में।

“भोजन लग गया साहब” गोची बोला तो जैसे मेरी तन्द्रा टूटी हो।



आज रात में उमेश को वापस जाना है। सुबह पचमढ़ी से लौट नर्मदा स्नान हो गये थे। सोचा सायं को नर्मदा आरती दिखा कर सेठानी घाट से ही रवाना कर देंगे। यही सोच कर 8 बजे हम उमेश को लेकर सेठानी घाट पहुँच गये। आरती शुरू होने वाली थी। व्यवस्थापक दुबे जी ने देखा तो लपककर पास

आये और आरती के आयोजक स्थान पर बिठा दिया ले जाकर जहाँ कोई अन्य परिवार भी बैठा था। उमेश ने उस द्रश्य की कल्पना ही नहीं की थी जो सामने था। हजार के लगभग लोग होंगे वहाँ, पंडितों का समूह पंक्तिबद्ध उपर प्लेटफार्म पर बैठा था, उनके सामने बड़े बड़े अनेक मुहं वाले दीपक रखे थे। बगल में बने मंच पर पूजन सम्पन्न कराने वाले ब्राह्मण और नर्मदाष्टक, भजन, आरती गाने वाले लोग थे। मधुर गायन चल रहा था जो वातावरण को स्वर्गिक बना रहा था।

“अद्भुत! ये तो बनारस जैसा द्रश्य है। यदि नहीं आता तो इतना भव्य आयोजन देखने से वंचित रह जाता” उमेश बड़ी देर शब्दहीन रहने के बाद बोले।

मुख्य आयोजक स्थल पर बैठा, नर्मदा के मधुर स्तुतियों की गूँज धीरे धीरे कानों में पड़ रही थी और मैं कल सुबह दुबे जी के फोन का सोचने लगा।

“हलो! सर मन्नु दुबे बोल रहा था।”

“हाँ दुबे जी बताएं।”

“सर कल पूर्णिमा है। आरती है माँ नर्मदा की।”

“हाँ दुबे जी मुझे पता है। हर बार की तरह इस बार भी कन्या पूजन कराएँगे।”

“वही मैंने सोचा, याद दिला दूँ।”

“याद है दुबे जी हम तो हर पूर्णिमा का इंतजार करते हैं।”

“सर एक बात और करनी थी।”

“जी बताएं” मैं बोला।

“जिन्हें आरती करानी थी उन्हें कोई इमरजेंसी आने से अगली तिथि मांग रहे हैं। अब मेरे सामने अभी की तैयारी की चिंता है। आप कुछ मदद करा सकते हैं।”

“बताइए क्या करना है?”

“मैं सोच रहा हूँ कि आधी व्यवस्था आप कर दें, आधी की मैं कोई और देखता हूँ।”

“ठीक है” मैंने कहा और मुझे ध्यान आ गया पिछले माह की आरती के बारे में। पिछली बार कन्या पूजन के बाद मैं चला गया था किन्तु घर

जाते समय रास्ते भर मलाल रहा की पूरी आरती में शामिल नहीं हुआ। तभी ये विचार आया की संभव है हमें अगली तिथि अपने आप मिल जाय और हम पूरी श्रद्धा के साथ माँ की आरती कर सकें। दयालु माँ ने अपने आप कैसी व्यवस्था बनाई।

आरती चालू हो गयी। नर्मदा की आरती, नर्मदाष्टक, नर्मदा गीत बड़ा अद्भुत शमा था जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। बड़ा विशाल दीपक मेरे पास भी था जिसे मैं औरों के अनुसार घुमा रहा था माँ की ओर। हमने भी एक बार माँ नर्मदा की आरती करायी थी सेठानी घाट पर। तब का यह वाक्या भी याद आया की नर्मदा आरती कराने का संकल्प मैंने अपने पहले कार्यकाल में लिया था किन्तु बिना आरती कराये मेरा ट्रान्सफर हो गया और बात आयी गयी हो गयी। जब दुबारा ट्रान्सफर होकर होशंगाबाद आया तो पहले ही दिन लाखे वाहन चालक बोला।

“सर आपने नर्मदा माँ की आरती बोलने के बाद करायी नहीं थी, इसलिए माँ ने आपको दुबारा यहाँ बुलाया है।”

“ठीक कह रहे हो लाखे। बात कर लें, जब भी समय मिले हम तैयार हैं” मैंने कहा था और उसके अगले माह में हमें अनायास ही आरती कराने का अवसर मिल गया।

और आज भी माँ नर्मदा की आरती के आयोजक अकस्मात ही बने हैं। पूरी तन्मयता के साथ स्वर लहरियां उठ रही थी। आनन्द इतना की वर्णन नहीं, जो वहां बैठा था वह इस शानदार नर्मदा स्तुति के गायन का साझी था। एक घंटा चला वह स्वर्गिक सुख देने वाला आयोजन। आरती के बाद इच्छा हुई नीचे उतर माँ नर्मदा के पास बैठने का, आचमन करने का।

सीढियां उतर नीचे गये। नर्मदा का आचमन किया। पास बैठ गये, सोचने लगा की माँ आखिर तू क्या है। मुझे रामचरितमानस की वह चौपाई याद आ रही थी जिसमें मुनि वाल्मीकि श्री राम से कहते हैं की तुम्हें वही जान सकता है जिसे तुम जनाते हो और तुम्हें जानते ही वह तुम्हारा हो जाता है, तुमसा हो जाता है। मुझे लगा यह बात राम के लिए ही नहीं, नर्मदा माँ के लिए भी उतनी ही सही है और मैं धीरे धीरे गुणगुनाने लगा।

सोइ जानत जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई॥

## शीलकंठ

कल यानि 26 फरवरी 19 को भारतीय वायुसेना ने LOC पार कर पाकिस्तान के आतंकी अड्डे ध्वस्त कर दिए। न जाने कितने सालों बाद भारतीय होने पर भारतियों को गर्व हुआ था। पूरे दिन इतराते इतराते काम करते बीता किन्तु शाम तक नर्मदा पार जाने का हमने भी मन बना लिया था।

दुसरे दिन आकर सिवनी मालवा काम निपटाया और शिवपुर होते हुए लुचगाँव केंद्र का निरीक्षण करते हुए उमरिया के लिए निकल गया। पहले जब भिलाडिया घाट आया था तभी लोगों ने उस पार शीलकंठ और नीलकंठ के बारे में बताया था तभी से वहां जाने का प्लान बना रहा था। उमरिया से बड़ी सपाट नाव चलती हैं जिन पर गाड़ी सहित पार उतरा जा सकता है।

उमरिया घाट पर जब पहुंचे तो नाव घाट पर लगी थी। ऐसी नावों के बारे में सुना तो बहुत था पर आज इस रोमांच को अनुभव करने का मौका मिला था। अमजद ने बड़ी कुशलता से गाड़ी नाव में चढ़ा दी। उस सीन को देख कर मुझे शान फिल्म का वह सीन याद आ गया जिसमें सुनील दत्त गाड़ी चलाते हुए सीधे ट्रक में चढ़ जाते हैं।

एक दम फ्लैट नाव नर्मदा में ऐसे तैर रही थी जैसे कोई बड़ा सा चबूतरा पानी में उतर आया हो। हमारी चार पहिया वाहन, कुछ बाइक और अनेक लोग उस नाव पर थे और इंजन का शोर मचाती नाव चली जा रही थी उस पार। जीवन में पहला और अद्भुत अनुभव था। नर्मदा के उपर से निकलती नाव, गाड़ी पर हाथ रखे वैसे ही खड़े थे जैसे अक्सर खड़े हो जाते हैं पर आज की exercise अलग है क्योंकि आज गाड़ी के पास खड़े जरूर



हैं पर न गाड़ी खड़ी है और न हम क्योंकि दोनों ही जा रहे हैं।

घाट पर उत्तरते ही सामने मन्दिर था। साथ आये महेश, जो अक्सर यहाँ आते रहते थे, हमें मुख्य मार्ग से मन्दिर ले गये। खुली पर्याप्त फैली जगह में अनेक रचनाएँ थीं। एक छोटा मंदिर शिव का उससे लगा बड़ा मन्दिर नर्मदा का जो हाल ही में बना था। साफ सुथरा, चिकने फर्स का एक बड़ा हाल जो परिक्रमावासीयों के रुकने के लिए था। पास में ही लाइन से बने तीन चार कमरों की हॉस्टल नुमा इमारत। पास ही बंधी एक गाय और उसका बछड़ा।

दिन के तीन बजे थे सो नर्मदा मन्दिर बंद था, पर शिवमन्दिर खुला था। शिव भोले बाबा के दर्शन किये।

पास मैदान में एक गाड़ी खड़ी थी, सोचा कोई क्लू मिलेगा इसलिए गाड़ी मालिक को तलाशने महेश चले गये और थोड़ी ही देर में 30 वर्ष के लगभग उम्र का गेरुए वस्त्र पहने युवक महेश के साथ आता दिखा।

“सर ये पटेल साब हैं जिनकी गाड़ी खड़ी है। पुजारी जी तो मिले नहीं” महेश ने युवक का परिचय दिया।

“आप क्या यहीं रहते हैं” मैंने पूछा।

“भोपाल में रहता हूँ। यहाँ अक्सर आता रहता हूँ। परिक्रमावासियों के लिए सदावत भोजन की व्यवस्था करवाता हूँ”

“भोपाल से यहाँ आकर नर्मदा परिक्रमावासियों की सेवा??”

“दरअसल मैं रहने वाला तो उस पार के अर्चना गाँव का हूँ। अक्सर गाड़ी पार करा कर यहीं से अपने गाँव जाता था। आते जाते इस मंदिर पर रुकता था की अचानक विचार आया की मुझे भी कुछ सेवा रेवा दे और तत्क्षण ही यहाँ परिक्रमावासियों के लिए भोजन आदि करने की व्यवस्था हो गयी। एक गाय भी बांध ली जो परिक्रमावासियों को चाय आदि के लिए दूध की व्यवस्था करती है। दो लोग रख दिए हैं जो सारा काम करते हैं, मैं बीच-बीच में आकर देख जाता हूँ, किसी सामग्री की कोई कमी हो तो रखवा जाता हूँ।”

“कब से कर रहे हैं यह?”

“पांच साल से लगातार जारी है”

“क्या नाम है आपका?”

“विनोद पटेल।”

“विनोद जी भोपाल में क्या करते है?”

“प्राइवेट कम्पनी में जॉब करता हूँ”

“प्राइवेट जॉब और इतना बड़ा काम .आप जो सदावत चला रहे हैं उसमे तो हर माह हजारों खर्च होता होगा”

“सब व्यवस्था हो जाती है। गाँव में खेती बहुत है। पिता चाचा सभी मदद करते हैं इस काम में और फिर रेवा माँ तो है ही” विस्वास से कहा विनोद ने।

“यहाँ पर शिव मन्दिर है जिसे शीलकंठ कहते है। शील कंठ कैसा नाम है पहली बार सुन रहे हैं”

“ये शिव जी का नाम है। नर्मदा खंड में शिव नाम बदल बदल रहते हैं, पास में पूरब की ओर नीलकंठ भी हैं और यहाँ से पश्चिम में पातालेश्वर भी हैं।”

“हाँ नील कंठ तो जाना है”

“पातालेश्वर भी जरूर जाइये। अनोखा शिवलिंग है। बगल से सिक्का डालो तो स्पष्ट लगेगा टन तन करती आवाज के साथ जैसे नीचे पाताल में गिर रहा हो” विनोद बताने लगे।

“तब तो पहले वहीं जाते हैं, बाद में नील कंठ”

“होकर आइये, तब तक मैं चाबी मंगा कर रखता हूँ”

विनोद ने कहा तो हम लोग निकल लिए पश्चिम दिशा में नर्मदा के बहाव के साथ किनारे किनारे। नर्मदा परिक्रमा पथ पर गये वर्षों में सरकारों ने काम किया है इसलिए सड़कें जरूर अच्छी बन गयी हैं। कोई तीन किमी चले होंगे, टिगाली गाँव आया।

“यहाँ दो तीन साल पहले बड़ी नावों को लगा कर नर्मदा पर अस्थाई पुल बना लिया था। एक दिन एक महात्मा जी आये, उसी नाव पुल से पार कर रहे थे कि एक गरीब आदमी को पुल ठेकेदार द्वारा सताया जा रहा था। महात्मा जी ने रोका पर वह नहीं माना तो उन्होंने जाने किसे फोन किया। दो घंटे में कलेक्टर एस पी यहाँ खड़े थे। पूरा पुल तुड़वाकर नर्मदा मैया का पत्तो खुलवाया।”

“कौन थे महात्मा जी पता चला?” मैंने आश्चर्य से पूछा।

“पता नहीं कौन थे। साक्षात् रेवा मैया थीं या कौन मूर्ति। जाने कहाँ गायब हो गये हाल ही” महेश नर्मदा की ओर हाथ जोड़ते हुए बोले।

टिगाली से निकल दो किमी और चले होंगे कि सतदेव गाँव आया, इसी गाँव में नर्मदा किनारे पातालेश्वर स्थित हैं। सड़क सीधी मन्दिर तक गयी है। मन्दिर पर पहुंचे, गाड़ी से उतरे, सामने रमणीक द्रश्य था। ठीक करार पर नर्मदा के एन किनारे बना मन्दिर और आश्रम। सामने हनुमान जी के दर्शन कर प्राचीन शिव लिंग को देखने पहुंचे। गर्भ ग्रह में गये, देखा काले पत्थर का बड़ा शिवलिंग। आश्रम में एक सज्जन मिले जिन्होंने शिवलिंग के बगल से खाली स्थान दिखाया जो जलहरी और लिंग के बीच में था। उन्होंने बताया कि इस स्थान की कोई थाह नहीं थी अब तो इसे भर दिया है क्योंकि लगातार लोग इसमें कुछ न कुछ डालते रहते थे जिससे शिवलिंग को हानि की सम्भवना थी।

“बहुत सुंदर स्थान है। नीचे बहती नर्मदा ऊपर शिव जी। बैठ जाओ तो उठने का नाम ही न लो।”

“बाप बेटी का यही रूप देखने तो हम लोग यहाँ बैठे रहते हैं” वे सज्जन बोले।

कुछ घड़ी वहां बिता हम लोग वापस चल दिए। विचार बना की पहले नीलकंठ हो लें फिर वापस शीलकंठ। वाहन वापस दौड़ रहा था कि एक स्थान पर आकर महेश बोल पड़े।

“उस पार नर्मदा के आपको घाट दिख रहा है?”

“हाँ दिख तो रहा। और अच्छा भी लग रहा है।”

“ये गोवन्दा घाट है, यहाँ गंजाल नदी का संगम है”

“मन्दिर, सफेद पुती सीढ़ियों का सुंदर घाट है जो यहाँ से दिख रहा है”

“एक से एक सुंदर स्थान हैं। अभी हम जहाँ चल रहे हैं वहां नीलकंठ से पहले मंडी है वह घाट भी अच्छा है”

मुझे लगा कि बीच में रोकने की इच्छा है महेश की इसलिए बोला की पहले नीलकंठ जायेंगे। महेश सहमत हो गये। शीलकंठ गाँव पार कर दो किमी ही चले होंगे कि मंडी आ गया। गाँव का नाम ही मंडी था। महेश ने

सड़क से ही दिखाया मंडी घाट का मन्दिर और दो मंजिला धर्मशाला। देखते ही इच्छा हो आयी की लौट कर जरूर जायेंगे।

यही कोई 3-4 किमी और चले होंगे कि नीलकंठ आ गया। गाँव में घुसे तो पता चला की दो स्थान हैं एक नया आश्रम और एक प्राचीन मन्दिर स्थान। पहले नये आश्रम मन्दिर गये। नर्मदा किनारे आश्रम व मन्दिर से लगा दो मंजिला अनेक रूम वाला सुंदर नवीन भवन वहां भी बना था जैसा मंडी में दिखा। यह पहली बार ही देख रहा था कि नए भवन जिन्हें धर्मशाला कहें लॉज कहें या होटल। पर बड़े सुंदर बने थे, परिक्रमावासीयों के लिए।

आश्रम और धर्मशाला से नीचे बहती नर्मदा का सुंदर दृश्य था। अंदर गये मन्दिर के साथ ही एक समाधि स्थल भी था जिस पर लिखा था चमत्कारी समाधि, महंत वैकुण्ठगिरि परमहंस।

“महाराज जी ने कब समाधि ले ली?” महेश पंडित जी से पूछने लगे।

“11 वर्ष हो गये” पंडित जी ने बताया।

“बाहर महाराज जी की गाड़ी देख कर तो मुझे लगा की वो हैं आश्रम में।”

“हाँ उन्हीं की गाड़ी है, उनकी याद में हमने ऐसे ही रख छोड़ा है”

“ये चमत्कारी समाधि क्यों लिखा है?” मुझसे रहा न गया

“सर, सचमुच चमत्कारी संत थे महाराज जी मैंने अपनी आँखों से देखा है, मुझे भभूत दी प्रसाद में हाथ पर आते ही किसमिस बन गयी थी”

“अच्छा!” मुझे घोर आश्चर्य हो रहा था।

“115 बरस की उमर में समाधि ली थी महाराज जी ने। यहाँ वो 15 से 20 साल रहे थे। पुरे क्षेत्र को पता है उनके चमत्कार” पंडित ने कहा तो श्रद्धा से सिर झुकाया हमने।

वहां से चले तो प्राचीन मन्दिर की ओर गाड़ी मोड़ दी। प्राचीन मन्दिर जिसे नीलकंठ कहते हैं।

नील कंठ मन्दिर के पास पहुंचे तो गाड़ी से उतरते ही दिन में आंखें जैसे चौंधिया गयी हों। अद्भुत दृश्य था। अनेक मोड़ लेती नर्मदा और उसमें संगम करती कोलार नदी। ठिठक गया कुछ घड़ी के लिए। कैसा अनुपम सौन्दर्य रचा है माँ नर्मदा ने। कुछ क्षण मौन खड़ा उस दृश्य को निहारते, मन्दिर गये, देखा विशाल, अद्भुत, शानदार शिवलिंग। खुद को रोक न सका अंदर गर्भ गृह में जाकर लिपट गया पिंडी से।

“वाह भोले बाबा कदम कदम पर बैठे हो नाम बदल बदल कर। बेटी से दृष्टि हट न जाय। मेरी दशा भी तुम्हारी जैसी ही रहती है जब बिटिया पास होती है” सोचते हुए, बहुत देर बैठा रहा। वहीं से देखा बाहर गर्भ ग्रह के नंदी की प्रतिमा थी। बड़े आकार में नंदी किन्तु बदला स्वरूप था उनका, अनोखा ही मुख था, बैल जैसा तो कतई नहीं लग रहा था। सोचा बनाने वाले ने गलती कर दी होगी।

बाहर निकले तो मन्दिर के महंत जी मिल गये। परिचय हुआ, बताने लगे कि जूना अखाड़ा से जुड़े हैं वे और नाम है रेवापुरी जी महाराज। स्थान के बारे में कहने लगे।

“समुद्र मंथन के बाद जब शिव ने विष पिया तो उसकी जलन को शांत करने यहाँ इस संगम स्थान पर आ बैठे। माँ नर्मदा और कोलार नदी के संगम की शीतलता से उनका विष से जलता कंठ शांत हुआ और उसी कारण यह स्थान नील कंठ कहलाया।”

“बहुत ही सुंदर स्थान है, इतनी रमणीय जगह छोड़ कर जाना भी कोई क्यों चाहेगा। इसीलिए भोले बाबा सही होने के बाद भी यहीं रह गये होंगे।”

“ठीक अनुमान लगाया, नंदी को देख कर समझ जाओगे की भोलेनाथ ने यहाँ कितना समय गुजारा होगा।”

“हाँ नंदी की बनावट तो बड़ी विचित्र लगी।”

“वो जान बुझ कर ऐसी है। जब सती दक्ष के यज्ञ में जाने की जिद करने लगी तो शिव ने नंदी से कहा की वो सती को लेकर जाएँ। जब सती नंदी पर चढ़ने लगीं तो नंदी ने सोचा की माँ की सवारी तो शेर है इसलिए आप देखेंगे की सती नंदी पर चढ़ने की चेष्टा कर रही थीं उसी समय नंदी ने अपना स्वरूप शेर में बदल लिया। इसीलिए यह नंदी आपको बैल और शेर का मिला जुला स्वरूप लगेगा।” महंत जी बोले तो मैंने दुबारा जाकर देखा,

“सच कह रहे हैं महंत जी” मन ही मन सोचता हुआ मैं वापस आया।

“एक और आपको अद्भुत बात बताते हैं यहाँ की” महंत जी कह रहे थे, जैसे ही मैं निकट पहुंचा वे बताने लगे।

“ओमकारेश्वर में कहते हैं की पर्वत ऊँ की आकृति बनाता है पर यहाँ माँ ने सज्ञात ऊँ बनाया है।”

“कहाँ?” मैं अचरज से पूछने लगा।

“मैं आपको बताऊंगा नहीं, आप स्वयं देखें। बस इतना क्लू दूंगा कि आप नर्मदा के उत्तर तट पर हैं और यहीं से आपको दक्षिण तट पर होने का आभस भी दूर नर्मदा की धार देख कर होगा।”

“उन्होंने दूर इशारा किया तो देखा भूमि की पट्टी के उस पार फिर से नर्मदा की धार दिख रही थी। लगता था कहीं दूर जाकर U टर्न लिया है नर्मदा ने।

“सर मेरी समझ में आ गया। वो रामगढ़ के पास मोड़ लिया है माई ने उस धार को मिला कर ऊँ बनता है और कोलार ने मिल कर घुंडी बना दी है सो स्पष्ट ऊँ दिखने लगा है” पुरे उत्साह से चीखे महेश।

“बिलकुल सही पहचाना, अब एक और विशेषता बताते हैं यहाँ की। ये दो नीम देख रहे हैं” महंत जी ने दो नीम पेड़ों की ओर इशारा किया। एक प्रांगण में था और दूसरा पक्के फर्श के बाहर किनारे पर।

“दोनों की पत्ती चख कर देखें” उन्होंने कहा तो महेश तोड़ लाये दोनों पेड़ों से पत्तियां। चखा, जो अंदर था उसकी पत्तियों में कड़वाहट नहीं थी जबकि बाहर वाले में उतनी ही कड़वाहट जितनी नीम में होती है।

“ये कैसे संभव हुआ?” मुझे आश्चर्य हुआ

“जो अंदर है, उसने हमारे सत्संग के कारण अपना स्वभाव बदल लिया और कड़वाहट छोड़ दी जबकि जो बाहर रहा वह वैसा का वैसा ही रह गया” महंत जी बोले तो मुझे लगा की सही कह रहे हैं शायद।

वहां से चले, सोचा रास्ते में मंडी पड़ेगी, देखते चलेंगे। मंडी के घाट पर पहुंचे।

“यहाँ का मन्दिर भी पुराना है” महेश बोले, जैसे ही हम लोग गाड़ी से उतर घाट की ओर चले।

“किसका है?” मैंने पूछा।

“शंकर भगवान का।”

“यहाँ भी शिव जी” उलाहने देने की भंगिमा बनाये मैं गर्भ ग्रह में घुसा। यह तो मानना होगा की नर्मदा तट जितने सघन शिव जी के मन्दिर हैं, उतने संसार में कहीं नहीं।

हर एक दो किमी पर शिव मन्दिर नर्मदा किनारे मिल जायेगा और वह भी दोनों तटों पर। इस मंडी के मन्दिर की विशेषता भी अन्य नर्मदा किनारे शिव मन्दिरों से मिल जाएगी। शिवलिंग के निकट बैठ जाओ, नर्मदा जी सामने सीधे दिखती हैं।

हाथ जोड़े, शिव को प्रणाम किया। बाहर बैठे नंदी के सामने शीश झुकाया और बाहर निकला। मन्दिर ऊंचाई पर बना था, घाट नीचे था। मन्दिर के चबूतरे से नीचे पक्की सीढ़ियों से बना साफ सुथरा सुंदर घाट था। सफेद रंग से पुता होने से और अच्छा लग रहा है। एक बात तो माननी पड़ेगी की वैसे तो दक्षिण तट और उत्तर तट पर स्थित दोनों ओर के स्थान अच्छे हैं पर आज के देखे गये खंड में उत्तर तट ने बाजी मारी थी। पातालेश्वर, शील कंठ, मंडी और नीलकंठ। ये सभी स्थान 10 किमी में ही हैं, जबकि इनके सामने की पट्टी में सिर्फ गंजाल संगम घाट ही अच्छा है।

बाहर निकले, मुंडेर पर खड़े हो नर्मदा के सौन्दर्य में खोये जा रहे थे की एक नाव दिखी जो तेजी से बीच नदी में किनारे की ओर आ रही थी। इंजन से चलने वाली नाव की गति और ध्वनि आकर्षक लग रही थी।

“नाव भी चलती हैं यहाँ पार कराने। कितनी अच्छी लग रही है।”

“अच्छी तो लग रही है पर अच्छी है नहीं” महेश की बाणी रहस्यमयी थी।

“क्या मतलब?”

“मतलब ये की ये आदमियों की नहीं रेत निकालने की नाव नहीं है।”

“रेत निकालने की?”

“हाँ ये तो बीच नदी से रेत निकालते हैं।”

“बीच नदी से! नाव में भरकर रेत लाना, कोई रोकता नहीं है।”

“अरे साब, कभी रोकते भी हैं, कभी नहीं रोकते। ये तो दिन रात इसी गोरखधंधे में लगे रहते हैं” महेश निराश भाव से बोले।

“जरूरी नहीं कि नर्मदा के किनारे जन्म लेना, रहना सबके लिए सौभाग्य की बात हो। कुछ लोगों का यहाँ रहना तो नर्मदा के लिए दुर्भाग्य कहा जायेगा। कोई रेत निकाल निकाल नदी को क्षति पहुंचा रहा है तो कोई इसे गंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा” मैं मन ही मन सोचने लगा।

मंडी से चलने लगे, बाहर आये सुंदर धर्मशाला यहाँ भी दो मंजिल भव्य बनी थी। परिक्रमावासियों के लिए रुकने की अच्छी व्यवस्था है।

मंडी से शील कंठ पहुंचे तो चार बज चुके थे। मन्दिर गये तो पता चला कि देर हो जाने से विनोद जा चुके थे। परिक्रमावासियों के लिए बने हाल में जाकर देखा दो लोग रुके थे। एक सागर के और दुसरे गुजरात अंकलेश्वर के थे। अंकलेश्वर के सज्जन से परिचय लिया।

“प्रकाश मेहता मेरा नाम है, अंकलेश्वर गुजरात का रहने वाला हूँ।”

“अकेले ही हैं या कोई और भी हैं साथ में।”

“अकेला ही हूँ।”

“परिक्रमा का कोई विशेष कारण?”

“बरसों से मन में इच्छा थी। सब इंजिनियर के पद से रिटायर हुआ तो लगा की अब माई की सेवा में जाना चाहिए और एक दिन निकल आया”

“कितने दिन हो गये?”

“आज 56 दिन हो गये और आधी परिक्रमा हो चुकी है।”

“यात्रा में कोई अनुभूति?”

“अनेक” कहते कहते भावुक हो गये मेहता जी। कुछ क्षण जैसे कहीं खो गये, संभले, फिर बोले।

“अनेक अनुभूति होती हैं, अनेक चमत्कार। एक दिन रामपुर पहुंचने वाले थे की पहले ही नदी किनारे 20 फुट का एक मकर लेटा दिखा। उस क्षेत्र में मकर नहीं हैं, सबने कहा की मकर का दिखना नर्मदा में सज्ञात माई का दिखना होता है”

“आप को अकेले दिखा और भी कोई थे साथ।”

“तीन लोग और चल रहे थे, उन्हें भी दिखा।”

“वे अब साथ नहीं चल रहे।”

“एक साथ नहीं चल पाते। इसलिए संगी साथी मिलते बिछुड़ते रहते हैं यहाँ। कई तो बीच से लौट भी जाते हैं”

“लौट भी जाते हैं?”

“हाँ जो माई में श्रद्धा और विश्वास को छोड़कर सिर्फ एड्वेंचर के लिए आते हैं, उनमें से अनेक लौट जाते हैं क्योंकि मुझे तो लगता है की



आध्यात्मिकता की इस यात्रा में माँ भी भीड़भाड़ नहीं चाहती।”

मेहता जी ने बड़ी बात कह दी थी। “माँ भी नहीं चाहती कि आध्यात्मिकता की इस यात्रा में भीड़भाड़ हो, अर्थात् वे ही लोग रहें जो रम्यता के साथ इसकी पवित्रता भी रखे, इसकी अध्यात्मिक ऊंचाई को संभालें” मैं सोच रहा था।

“यहाँ मध्यप्रदेश में तो नर्मदा को देवी माँ के रूप में मान कर पूजते हैं, पैदल परिक्रमा करते हैं। गुजरात में इसे कैसे देखते हैं” मैंने पूछा।

“भाव समान है, अंतर जीवन पद्धति का है। जहाँ मध्यप्रदेश में सत्तर फीसदी लोग कृषि पर आधारित हैं, गाँव में रहते हैं, उनके लिए नित्य ही चार पांच किमी पैदल चलना आम बात है। खेतों में घूमना उनकी दिनचर्या है। वर्ष में कुछ माहों में उनके पास पर्याप्त समय रहता है, इसलिए नर्मदा की परिक्रमा पैदल करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। जबकि गुजरात में व्यवसायी वर्ग अधिक है जो ग्रामों से इतर नगरों में रहते हैं उनके लिए इतना सरल नहीं होता कच्चे रास्तों पर पैदल चलना।”

“सही व्याख्या की है आपने” मैं उनकी प्रशंसा किये बिना न रह सका। “पर इसका ये मतलब नहीं की नर्मदा की आराधना में वे पीछे रहते हों। न सही पैदल, वे वाहनों से नर्मदा परिक्रमा करते हैं। पूरी करते हैं, अनेक बार करते हैं।”

“किन्तु आप भी तो गुजराती है। आप तो पैदल चल रहे हैं, अकेले चल रहे हैं।”

“इंजिनियर होने के नाते मेरी जीवन शैली भी ऐसी ही रही। कच्चे साईट पर रहना, पैदल चलना, शहर से दूर रहना। इसलिए मुझे नहीं अखरती और फिर मेरा तो संकल्प था की पैदल चलूँगा। यह भी बता दूँ की जो गुजराती पैदल परिक्रमा करते हैं, वे अक्सर अकेले करते हैं। परिवार को पूरी तरह छोड़ कर करते हैं। मैं भी किसी से बात भी नहीं करता, कभी कभी पत्नी के अलावा।”

मेहता जी से रोचक वार्तालाप चल ही रहा था कि मंजुल पब्लिकेशन से कपिल जी का फोन आया।

“संजय जी बधाई हो आपकी ‘नीलकंठ’ फाइनल होकर प्रिंटिंग के लिए जा रही है।”

मैं जैसे जहाँ खड़ा था, वहीं खड़ा रह गया। उतर ही नहीं सूझ रहा था “वाह रे नीलकंठ आज ही दर्शन, आज ही किताब फाइनल”

“कहाँ हैं?” मुझे कुछ न बोलते देख उन्होंने पूछा।

“नीलकंठ के पास”

“जी...?”

“मेरा मतलब है शीलकंठ नर्मदा किनारे शिव मन्दिर पर खड़ा हूँ, नीलकंठ हो आया हूँ जो इसी के पास है।”

“बहुत खूब! फिर से एक बार बधाई।”

“आपको भी ढेरों बधाई, धन्यवाद” मैंने कहा।

नाव में गाड़ी चढ़ा दी गयी थी। महेश इशारे से बुला रहे थे। पीछे से सीढ़ियां उतर घाट की ओर चल दिया। इस बार तो नाव पहले की तुलना में काफी बड़ी थी। हमारी गाड़ी के अलावा कोई 4-5 गाड़ियाँ और थीं उस पर अनेक लोग, दुपहिया वाहन भी थे। मैं शायद अंतिम यात्री था, नाव वाला बार-बार जल्दी आने का संकेत कर रहा था।

मेरे नाव तक पहुँचने से पहले ही इंजन स्टार्ट हो गया था इर नाव सरकने लगी थी नाव परिचालक ने हाथ बढ़ा मुझे सहारा दिया और मैं लगभग छलांग लगाते हुए नाव पर चढ़ा।

“क्या सीन है?”

मैं रोमांचित हो गया। लगा जैसे अभी 25 वर्ष का युवक हूँ। फ्लैट नाव पानी पर तैरने लगी और मैं एक किनारे पर जाकर खड़ा हो गया। सूर्य ढल रहा था, पानी में उसकी किरणें चांदी की भांति चमक रही थीं। जी चाह रहा था की दोनों हाथ फैला ऐसा पोज दूँ जैसा टैटानिक फिल्म में हीरो देता है। उमर और पद दोनों का लिहाज कर थम गया।

पोज देने से तो स्वयं को रोक लिया पर गाना गाने से नहीं रोक पाया और मैं गुनगुनाने लगा।

नदिया चले, चले रे धारा। चंदा चले, चले रे तारा॥

तुझको चलना होगा। तुझको चलना होगा॥



## जींद खुले तो नर्मदा दिखे...

कहते हैं कि गंगा मोक्ष दायिनी है। जीवन में जो भी पाप पुण्य किये हों, सबका हिसाब कर देती है गंगा और उसमें आस्था से डुबकी लगाने वालों को अंत समय में मोक्ष दे देती है। पर नर्मदा? ...यदि गंगा मोक्ष दायिनी है तो नर्मदा जीवन दायिनी है। गंगा मृत्यु के बाद गति सुधार देती है तो नर्मदा जीते जी गति सीधी कर देती है, जीवन को उमंग और उत्साह से भर देती है। इसीलिए इसका नाम नर्मदा है ...नर्मदा संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है आनन्द देने वाली, खुशी देने वाली।

सबसे बड़ी बात है कि यदि इस ग़लतफहमी में जाय कि उसके पास पहुँचते ही वह कुछ उठाकर देगी, तो ग़लत है। हाँ उससे भी बड़ी बात है कि उसके सामने जाते ही निराशा में डूबा, जीवन से हताश व्यक्ति भी उत्साह से भर जाता है प्रफुल्लित हो जाता है। जीवन जीने की इच्छाशक्ति और दृढ़ होती है उसके सामने। पहाड़ों और जंगलों को चीरती, अटखेलियाँ करती, नाद मचाती, अल्हड किशोरी की तरह मस्ती से नाचती गाती, दुर्गम स्थानों पर भी खिलखिलाती नर्मदा को देखते ही फिर से जीने की तमन्ना जाग जाती है।

इसीलिए कहते हैं कि गंगा सप्तमी के दिन स्वयं गंगा नर्मदा में स्नान करने आती है। ये कल्पना है पर इसलिए भी ठीक लगती है कि वर्ष भर लोगों के पाप धोते-धोते गंगा भी जीवन से निराश हो जाती होगी और इसीलिए स्वयं को rejuvenate करने, नई उमंग और नई आशा के साथ काम में लगने ही वह नर्मदा में जाती है स्नान को। एक बार डुबकी लगाते ही गंगा भी तरौताजा हो जाती है अगले साल की मेहनत के लिए, लोगों के पाप धोने के लिए। वैसे तो गंगा को नर्मदा की माँ माना गया है, पर बेटी की महिमा को माँ भी मानती है।

नर्मदा के सुखर की बात ही और है। मजे की बात है कि एक दम से कुछ नहीं होता। जाते रहें उसके सामने तो पता ही नहीं चलता कि पानी से बहने वाली एक नदी कब जीवंत हो जाती है और कब नदी से देवी और देवी से माँ बन जाती है। कभी-कभार जाने वाला नित्य जाने लगता है और नित्य जाने वाला कहने लगता है 'नींद खुले तो नर्मदा दिखे'।

अजीब नशेड़ियों की दुनिया है। लगता है सारे पियक्कड़ घाट-घाट पर इकट्ठा हो जाते हैं और नर्मदा के सुखर में बहकते रहते हैं। बड़े-बड़े बंगलों में और बड़े-बड़े महानगरों में रहने वालों को नर्मदा किनारे आने से बचना चाहिए क्योंकि अगर आ गये तो न बंगले अच्छे लगेंगे, न गाड़ियाँ और न ही मेगासिटी। बताने का उद्देश्य यही है कि कोई बाद में न कहे कि बताया नहीं।



“कौन कहता है कि भगवान दिखाई नहीं देता, एक वही तो दिखाई देता है, जब कोई दिखाई नहीं देता।”

मैंने यह कोटेशन कहीं पढ़ा था, मुझे बहुत अच्छा और सच्चा लगा। आजकल सोशल मीडिया का जमाना है, अनेक अच्छी बातें, अच्छे कोटेशन पढ़ने को मिल जाते हैं। ज्ञान, सूचनाएँ, जानकारी इफरात में उपलब्ध है। जिसको जो अच्छा लगे वह ले सकता है।

*अति अगाध, अति ओधर, नदी कूप सरवाय।  
सो ताकों सागर जहाँ जाकी प्यास बुझाय।।*

यानि जिसकी प्यास जहाँ बुझे वह घाट, वह कूप उपलब्ध है। गहरा, उथला सब कुछ। अब इन्टरनेट को ही नदी मान लें। इसके दो तट हैं एक पर पोर्न मटेरियल भरपूर है तो दूसरे घाट पर राम कथा है, भगवद कथा है। एक से एक वाचक, साधक, गायक जिसे सुनना हो सुनें। motivational लीडर, motivational सौन्ना और यहाँ तक कि ऑटोबायोग्राफी ऑफ़ अ योगी जैसी ऑडियो बुक भी एक क्लिक दूर हैं।

ज्यादा ज्ञान न बघारते हुए, मैं फिर उसी बात पर लौटता हूँ, कि 'कौन कहता है कि भगवान दिखाई नहीं देता, एक वही तो दिखाई देता है, जब

कोई दिखाई नहीं देता'। मुझे तो यह बात सोलह आने सही लगती है। लगती क्या है, है सौ फीसदी सही। पर ये किसी के कहने पर समझ नहीं आती, जब तक खुद महसूस न हो। अब ये बात अलग है कि किसको कब अनुभूति होती है, पर ये पक्का है कि जब होती है तब सारी डेढ़ अक्ल अपने आप छंट कर एक रह जाती है और सारे किन्तु, परन्तु गायब हो जाते हैं, हम ढूंढें तब भी नहीं मिलते और तब नींद खुलती है कि कितना भरमाये थे ये ढोंगी विचार और हम इन्हें पा कर खुद को बड़ा चतुर, आधुनिक मानते रहे।

*छतों के चिराग कब के बुझ गये होते।  
कोई तो है जो हवाओं के हाथ थाम लेता है॥*

जैसे सब दूर वातावरण में रेडिओ के गाने तैर रहे हैं पर जब तक रेडिओ नहीं होगा हम सुन नहीं पाएंगे। सब दूर सीरियल, फिल्में मौजूद हैं पर बिना टी.वी. के नहीं दिखतीं। ऐसा भी नहीं है की रेडिओ में गाने भरे हों या टी.वी. में फिल्में स्टोर हों। वो सब तो हमारे आस-पास हैं, सर्वत्र हैं पर उन्हें प्रकट करने को हमें रेडिओ, टी.वी. चाहिए। अब इसी तरह यदि भगवान के बारे में तुलसी बाबा ने कहा तो क्या ग़लत कहा।

*हरि व्यापक सर्वत्र समाना।  
प्रेम ते प्रकट होय मैं जाना॥*

तो रेडिओ, टी.वी. की तरह भगवान को प्रकट करने का इंस्ट्रूमेंट है 'प्रेम'। ईश्वर से प्रेम हो तो उसे प्रकट होने में कहाँ इनकार है। वैसे तो प्रकट करने के चक्कर में हम पड़ें ही क्यों "उसका अहसास ही काफी है मौज के लिए" इसीलिए जो प्रेमी होते हैं वे उसकी परीक्षा नहीं करते अपितु हर वक्त उसकी उपस्थिति का अहसास करते हैं।

नर्मदा के साथ भी यही है। वह तो हर वक्त सामने है और वही गीत गाती है जो गंगा ने गाया है। "मानो तो नर्मदा माई, ना मानो तो पानी भाई"। जितने नर्मदा के उपासक हैं वे तो सचमुच उसके सामने जाते ही माँ के अहसास से भर जाते हैं। क़दम-क़दम पर उसका आभास करते हैं वे कभी नहीं कहते कि नर्मदा देवी रूप में दिख जाय, माँ रूप में सामने

आ जाय। किसी किसी को अहसास हो भी जाता है जैसे नवनाथ के छोटे बच्चे ने दावा किया। कोई जहाँ मकर नहीं होते वहाँ मकर देखने को माँ का साक्षात् मान लेते हैं। कहते हैं गौरीशंकर महाराज को नर्मदा बालिका के रूप में दिखती थीं।

पर नर्मदा प्रेमी कभी इस पचड़े में नहीं पड़ते कि किसे किस रूप में दिखीं। उन्हें तो जिस बहते रूप में दिखती हैं वही उनके लिए पर्याप्त है उससे ज्यादा की तमन्ना नहीं। पर हाँ बहती नर्मदा माँ उनको सदैव दिखनी चाहिए। जब भी सवेरा हो तो माँ के दर्शन से ही आंख खुले तभी तो वे कहते हैं “नींद खुले तो नर्मदा दिखे”।



“गलचा!! ये कैसा नाम है?” गाड़ी जब गाँव में मुड़ी तो मैंने पूछा।

“ये तो गाँव पहुँचकर ही पता चलेगा सर” सोमेन्द्र बोला जो मेरे साथ सोहागपुर से ही आया था। सोहागपुर के नर्मदा किनारे के गाँव जिन्हें अभी तक देखा नहीं था, को देखने की इच्छा से सुबह ही निकल पड़ा था। सबसे पहले भटगांव गये। गाँव में घुसते ही निराशा हुई। अभी तक जितने भी नर्मदा किनारे भ्रमण किये हैं ये गाँव सबसे अनाकर्षक लग रहा था। आश्चर्य की बात तो ये कि पूरे गाँव में बबूल लगे थे और जगह-जगह मिट्टी के टीले जो चम्बल के बीहड़ों की याद दिलाते हैं।

“नर्मदा के किनारे इतना बेरौनक गाँव तो पहली बार देख रहा हूँ।” मन ही मन सोचता हुआ आगे बढ़ा। गाँव से लगी ही हैं नर्मदा पर इस नेमत की कोई कद्र नहीं। कोई घाट नहीं, मन्दिर नहीं, परिक्रमावासियों के रुकने, उनके सदावत की कोई व्यवस्था नहीं, जैसी अमूमन सभी किनारे के गाँव में देखी है। बड़ा दुखद लगा पर गाँव वालों से मिला तो उनका रूखा व्यवहार देखकर समझ आ गया कि इसीलिए सर्वत्र सौन्दर्य बिखेरने वाली नर्मदा भी यहाँ बेनूर है। यहाँ आकर एक बात तो समझ आयी कि नर्मदा के सौन्दर्य में मात्र नर्मदा का ही प्रताप नहीं है, किनारे रहने वाले लोगों का भी हाथ है। अर्थात् जैसे लोग हैं वैसी ही नर्मदा भी है।

जब निराश होकर लौटने लगा तो एक साइन बोर्ड पर नाम पड़ा ‘गलचा’। मैं बोल पड़ा।

गलचा पहुंचे। केंद्र के बाद घाट गये। आशा भार्गव कार्यकर्ता भी साथ चल दीं। रास्ते में उन्होंने बताया कि पक्का घाट नहीं है। प्राइवेट जमीन से होकर नर्मदा जी तक जाते हैं। पहले तो लगा लौट दें, कौन 1 कि.मी. ऐसी धूप में चलेगा। फिर लगा कि जब आ ही गये हैं तो चलते हैं और अनमने मन से हमने कदम बढ़ाये।

खेत में से होकर पैदल चलने लगे। कोई 200 मीटर अंदर एक बड़े पीपल वृक्ष के नीचे मन्दिर के बगल से रास्ता था किनारे तक जाने को। तेज धुप में ये तय था कि एक कि.मी. से भी अधिक की दूरी बैचन किये थी। गेहूं की फसल के बीच से रास्ता था पगडंडी जैसा।

“जिसका खेत है वो आपत्ति नहीं लेते कि आते-जाते लोग फसल खराब करते हैं” मैंने पूछ लिया।

“पटेल साहब के खेत हैं, उनका तो कहना है कि जितने ज्यादा लोग उनके खेत से निकल कर नर्मदा जी जायेंगे उतनी ही उनकी फसल अच्छी होगी। ये मन्दिर और आश्रम भी उनकी ही जमीन पर बना है।”

“एक ये गाँव है, एक भटगांव था। अंतर भी दिख रहा है, यहाँ चारों ओर छायादार, फलदार वृक्ष लगे हैं बबूल दिख नहीं रहा। जबकि पास में ही है भटगांव में ये।” मैंने कहा। बात करते नर्मदा किनारे पहुंचे। कच्ची कगार से नीचे स्वच्छ बहती नर्मदा सुंदर लग रही थीं। थोड़ा आगे बढ़ने पर मोड़ लिया है नर्मदा ने जो और रमणीक दृश्य बना रहा था। धुप तेज थी, इसलिए लौट दिए। रास्ते में मन्दिर जाने का मन हुआ। निकट पहुंचे तो देखा मेन गेट पर लिखा था ‘गालव ऋषि की तपोभूमि’। अब तो जिज्ञासा हुई कि मन्दिर आश्रम के मंहत से मिला जाय। अंदर जाकर हनुमान जी और शंकर भगवान के दर्शन किये। मंहत जी से मिलने की इच्छा बताई। कार्यकर्ता आशा भार्गव ने अंदर जाकर हमारा परिचय दिया तो मंहत जी मिलने को राजी हो गये।

अंदर गये, देखा बड़े से हॉल नुँमा वरांडे में तख्त पर मंहत जी बैठे थे। 50 के आसपास की वय के आकर्षक व्यक्ति थे वे। प्रणाम कर सामने कुर्सी पर बैठ गया।

“दिन में आपके आराम में खलल डाला” मैंने सकुचाते हुए कहा।

“नहीं नहीं। हम तो जाग ही रहे थे। हाँ आप लोग इतनी गर्मी में घूम रहे हैं ये देख कर कष्ट हुआ।” कहते हुए उन्होंने अपने सेवकों को हमें

लस्सी पिलाने को आवाज दी। सेवकों ने तुरंत लस्सी और फल लाकर दिए। लस्सी पीकर और फल खाकर लगा कि इस गर्मी में बड़ी राहत मिली। कुछ घड़ी बैठे सुस्ताने कि महाराज जी से पूछ लिया।

“महाराज जी ये बाहर गेट पर लिखा है गालव ऋषि की तपोभूमि।”

“हाँ, यहाँ गालव ऋषि ने तप किया था। इसीलिए इस गाँव का नाम गलता पड़ गया।”

“गालव ऋषि ने तप किया था? यहाँ?”

“दरअसल ऋषि होने से पहले गालव एक राजा थे, उनके कोई संतान नहीं थी। किसी ने उन्हें सलाह दी कि नर्मदा किनारे तप करने से संतान होगी। तब वे यहाँ आये और इसी गाँव के मणि घाट पर उन्होंने अपने शरीर को गलाने की हद तक तप किया। तप और यज्ञ के प्रभाव से उन्हें संतान हुई पर नर्मदा के किनारे की भक्ति उन्हें इतनी भायी की ऋषि हो गये।”

“पर महाराज जी नर्मदा किनारे ही तप करने से उन्हें संतान हुई? यह भी तो संभव था की कहीं भी तप करते तो संतान होती।”

“नहीं इस स्थान का विशेष महत्व है। मैंने स्वयं अजमाया है। मेरे दो शिष्य आगरा के रहने वाले जिन्हें 4-5 लड़कियाँ थीं पुत्र नहीं था। मैंने यहाँ के घाट की पीपल के नीचे की मिट्टी दी, आज दोनों के यहाँ पुत्र हैं।”

“क्या सचमुच?”

“अरे दूर क्यों जाते हो। जिनकी जमीन पर हम बैठे हैं, उन पटेल की भी यही कहानी है। ये राजकुमार पटेल 5 भाई हैं, पर इनके पिता को भी यहीं इसी स्थान पर यज्ञ तप करना पड़ा था अन्यथा वंश बढ़ ही नहीं रहा था। राजकुमार के पिता स्वयं भी अपने ननिहाल थर पर आये थे क्योंकि उनके नाना के कोई पुत्र नहीं था। जब राजकुमार के पिता को भी संतान हीन होने का दंश झेलना पड़ा तो उन्होंने भी नर्मदा की शरण ली। और आज देखो न, सिर्फ 5 लड़के हुए, वंश बढ़ा, अपितु समृद्धि भी खूब आयी। तभी तो नर्मदा जी को इतना मानते हैं की परिक्रमावासियों के लिए सदैव रुकना, भोजन सभी की व्यवस्था उनके द्वारा होती है। इतना अच्छा आश्रम, बाग बगीचा लगवाया, शंकर भगवान और हनुमानजी के मन्दिर बनवाए। नर्मदा जयंती पर विशाल भंडारा करते हैं।”



“आप कब से हैं महाराज जी यहाँ।”

“मैं 2010 से यहाँ हूँ।”

इससे पूर्व?”

“देवास जिले में नर्मदा किनारे सतवास के निकट धर्मेश्वर स्थान है, जहाँ कहते हैं पांडवों ने तप किया था, मैं वहीं रहता था। पटेल साहब आग्रह पूर्वक यहाँ लिवा लाये हैं।”

“क्या नाम लिखते हैं आपका?”

“योगेश्वरानन्द सरस्वती कहते हैं सभी मुझे?”

“आपके पास बैठ कर बहुत अच्छा लगा।” कहते हुए मैंने इजाजत ली। उन्होंने अपना फोन नंबर दिया आते रहने की हिदायत दी और स्नेह से हमें बिदा किया।

गलचा की यात्रा अच्छी रही। नर्मदा के प्रताप की कहानियाँ सुनकर हम आगे बढ़े या सही शब्दों में कहें तो पीछे चले क्योंकि दक्षिण तट पर हम थे और पूरब की ओर बढ़ रहे थे। थोड़ी ही देर में अझेरा पहुंचे। गाँव से लगा घाट जो था तो कच्चा पर देखने में अच्छा लग रहा था। नीचे उतरे, किनारे पर खड़े हो पूरब दिशा में देखा तो जैसे कुछ याद आ गया।

“अरे ये तो मांझा है” पूरब की ओर ऊँचे कगार पर बने मन्दिर को देख कर मैं बोल पड़ा।

“जी सर ये वही मांझा है जहाँ आप पहले गये थे” किरण को भी याद आ गया।

“अरे मैं क्या, यहाँ तो भगवान राम गये हैं। एक रात रुके थे भगवान राम, सीता माता और लक्ष्मण जी के साथ।”

“बिल्कुल सर वही है।”

“यहाँ से कितना खूबसूरत लग रहा है दृश्य, मांझा का कगार, नीचे बहती नर्मदा और अझेरा के आने से पहले 90 डिग्री का कोण लेकर मुड़ी है। अद्भुत ...अकल्पनीय सौन्दर्य।”

“सर जहाँ मुड़ी हैं वहाँ नर्मदा से कुब्जा नदी आकर मिली हैं। यहाँ नर्मदा कुब्जा संगम के कारण भी इस स्थान की मान्यता है।”

“क्या वह संगम स्थान हम देख सकते हैं।”

“जी सर एक और घाट है वहां से स्पष्ट दिखता है, यहाँ के बाद वहीं चलेंगे।” किरण ने आश्वासन दिया और हम चल पड़े।

ऊपर आये, गाड़ी में बैठ थोड़े ही चले होंगे की किरण ने स्पष्ट किया कि गाँव की कार्यकर्ता का पास में घर है और उसने चाय के लिए आग्रह किया है। ज्यादा विलम्ब न हो इस शर्त के साथ हम लोग गाड़ी से उतर पड़े। कार्यकर्ता ने आकर अभिवादन किया और हमें ले चली घर की ओर जो सामने ही था। गाँव के सार्वजनिक स्थान पर चौपाल जैसा चबूतरा और हनुमान जी का मन्दिर पीपल वृक्ष के नीचे बना था। वहीं सामने एक बड़ा-सा दल्लान जिसका लम्बा वरामदा था, जिसमें तख्त और सोफे पड़े थे।

दल्लान में पहुँचते ही कार्यकर्ता घर का गेट खोलने लगी। जैसे पर्यवेक्षक ने उससे कुछ कहा।

“परेशान न हो यहीं बाहर ही बैठेगे” मैंने कहा।

“सर आपको संगम दिखाना है” कार्यकर्ता बोली।

“संगम और घर के अंदर?”

“सर आयें तो सही” वह बोली और गेट खोल कर एक तरफ खड़ी हो गयी।

“अरे वाह! ये तो पूरा नर्मदा जी के किनारे ही बना है तुम्हारा घर” अंदर घुसते ही मैं चौंक गया। नीचे बहती नर्मदा नदी और ऊपर समानांतर में बना कार्यकर्ता का घर। पेड़ पौधों हरियाली से आच्छादित कच्चा किन्तु सुंदर भवन।

“और सर ये रही कुब्जा। अभी सूख गयी है। हमारे घर के बगल से ही आकर यहाँ नीचे मिल जाती हैं।” कार्यकर्ता ने संकेत से दिखाया। नीचे कुब्जा का पाथ बना था जो सूख गया था। दक्षिण की तरफ से आकर कार्यकर्ता के घर के ठीक बगल से आकर नर्मदा में मिल जाती है।

अब ठीक सामने मांझा दिख रहा था। थोड़ा-सा दायें ही वह 90 डिग्री का कोण था जहाँ से नर्मदा मुड़कर जहाँ हम खड़े थे वहां से नीचे बहती हुई पश्चिम में चली गयी है।

“इसका मतलब मांझा उत्तर से दक्षिण की ओर बह कर आने वाले नर्मदा पाथ पर बना है। अर्थात् मांझा से पहले पश्चिम की ओर बहने वाली

नर्मदा ने दक्षिण की ओर छलांग लगायी और अझेरा पहुँच फिर से कोण बना पश्चिम की ओर बहने लगी। इसका तो यह मतलब हुआ की उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाले भगवान राम ने नर्मदा किनारे रुकने का भी वही स्थान चुना जहाँ स्वयं नर्मदा उत्तर से दक्षिण की ओर बह रही है। अद्भुत!”

मैं बहुत देर अवाकू खड़ा उस नयनाभिराम दृश्य को देख रहा था। नर्मदा जैसे भगवान राम की उपस्थिति से और पावन और मनोहर हो गयी थी तभी तो न जाने कितने दृश्य एक साथ बना रही थीं। जैसे पिता के मित्र, स्वामी और सखा को अपनी सारी बाल क्रियाएं दिखा कर सिखा रही हो रेवा।

कार्यकर्ता तब तक चाय ले आयी। मेरी जैसे तन्द्रा टूटी हो,

“क्या नाम है आपका?” चाय हाथ में लेते हुए मैंने पूछा।

“राज कुमारी शाह” उसका उत्तर था।

“सचमुच के शाह हैं ये लोग। जिस दृश्य के लिए हर कोई तरसता हो वह इन्हें सहज ही उपलब्ध है। ये सोच रही होंगी कि हम लोग कितने भाग्यशाली हैं, अधिकारी हैं, और हम सोच रहे थे कि ये कितनी भाग्यशाली हैं जो इतने पावन पवित्र स्थान पर रह रही हैं। पूरे घर के सामने नर्मदा सदैव अपनी उपस्थिति से मन मोहती हैं। अब इनके लिए बिन प्रयास ही उपलब्ध है जिसे न जाने कितने मांगते हैं कि ‘नींद खुले तो नर्मदा दिखे’” चाय की चुस्कियों के साथ मैं मन ही मन सोच रहा था।



## मौज फ़कीरा तूँ...

नर्मदांचल के बड़े संत हुए हैं राम जी बाबा। होशंगाबाद में इनकी समाधि बनी है। हर साल इनके नाम पर राम जी बाबा मेला लगता है जो माघी पूर्णिमा से शुरू हो एक माह तक चलता है। मेला क्षेत्र के हिसाब से पर्याप्त बड़ा लगता है जिसमें न सिर्फ़ होशंगाबाद बल्कि आस-पास के जिलों से भी लोग आते हैं। बाबा की समाधि मन्दिर के सामने ही मेला लगने से लोगों को एक पन्थ दो काज हो जाते हैं। मेला का मेला और दर्शन के दर्शन।

रामजी बाबा होशंगाबाद के पास किसी गाँव के निवासी थे, गृहस्थ थे, जो अन्य साधारण किसानों की तरह खेती किसानी का काम करते थे पर उन्हें यह सब रास नहीं आता था शुरू से ही विरागी प्रवृत्ति के होने से जब सांसारिक जीवन से मन उकता गया तो गाँव छोड़ नर्मदा तवा संगम के पास घानाबड़ गाँव में तम्बाकू की दुकान लगा ली। बताते हैं कि बाबा तो दिनभर ईश भक्ति में खोये रहते थे और खुली छूट थी सबको जो जितनी चाहे तम्बाकू ले जाय और जितना मन करे पैसे रख जाय।

बताते हैं कि धीरे-धीरे उनके संतत्व की चर्चाएँ चारो ओर फैलने लगीं। ध्यान और समाधि में मग्न औषड़दानी हो उन सबको आशीष देते जो अपनी परेशानी ले कर आता। उनके वचन फलने लगे और वे सिद्ध बनते चले गये।

इस बार जब मेला लगा तो मन में आया कि मेला प्रारंभ दिन ही समाधि मन्दिर चला जाय किन्तु बताया की उन दिनों बड़ी भीड़ रहती है। पहले जब यहाँ रहा तो सुना था कि बाबा के मित्र एक मुस्लिम संत थे। जब तक उनके यहाँ निशान न चढ़ जाय तब तक मेला प्रारंभ ही नहीं होता। हिन्दू मुस्लिम एकता की ऐसी मिसाल देखने की तीव्र इच्छा को बड़ी मुश्किल

जब्त किया और मेला समाप्ति के बाद एक दिन शाम को पहुंच गये समाधि स्थल, साथ में लाखे और अमजद।

बीचों-बीच शहर में बड़े क्षेत्रफल में फैला स्वच्छ, सुंदर परिसर। संगमरमर के खम्बो, फर्श और चारों ओर बने मन्दिरों ने खूबसूरती में चार चाँद लगा दिए थे। बीचों बीच समाधि स्थल।

“इतनी सुंदर जगह यहाँ लोग आते नहीं हैं क्या?” मन्दिर के बाद समाधि के दर्शन कर मैंने नीचे उतरते हुए पूछा।

“बहुत आते हैं सर। अभी-अभी शाम के मन्दिर खुले हैं अब ताँता लगेगा आने वालों का। लोगों में बड़ी मान्यता है यहाँ की और उनकी मनोकामनाएं पूरी भी होती हैं।” लाखे बोले समाधि मन्दिर के पीछे ही एक अहाते में पुराना स्थान जो शायद बाबा की जगह रही हो, अभी भी आबाद लग रही थी। जाकर देखा, व्यवस्थापक जी वहीं मिले, लाखे ने परिचय कराया।

“आप यहीं रहते हैं?” मैंने पूछा।

“हाँ बाबा की इच्छा” नपातुला उत्तर उनका।

“इस भवन में क्या है?”

“यहाँ बाबा की पादुकाएं रखी हैं।”

“बाबा कब हुए थे?”

“बहुत पहले हुए हैं। तुलसीदास जी से भी पहले।”

“कोई साहित्य मिलेगा?”

“हाँ बाबा की गायी हुई साखियाँ हैं वो किताब आपको दिलाते हैं” कहते हुए उन्होंने अपने सहायक को आवाज दी।

“बताते हैं की मेला लगता है तो बाबा को कोई मुस्लिम संत दोस्त थे उनके स्थान पर जाकर शुरू करते हैं। मैं अखबार में भी पढ़ रहा था मेला के समय।”

“बाबा के एक फकीर मित्र थे गौरी शाह। दोनों में गाड़ी छनती थी। यहाँ इनकी समाधि पर मजार का चिन्ह है तो उनकी मजार पर इस समाधि का चिन्ह। जब भी मेला लगता है तो यहाँ समाधि से चादर जाती है गौरी शाह की दरगाह पर निशान रूप में। हिन्दू मुस्लिम सभी उस चादर को यहाँ

से ले जाते हैं और दरगाह पर चढाते हैं, तभी मेला शुरू होता है।”

“कितना अच्छा लग रहा है यह सुनकर। हिन्दू मुस्लिम एकता की ऐसी मिसाल काश सब जगह मिले। गौरी शाह जी की मजार कहा हैं। मैं जाना चाहूँगा” मैंने कहा।

“ज़रूर जाइयेगा। रेलवे स्टेशन के आगे ग्वाल टोली में है। कोई भी बता देगा।”

“सर हम लोगों ने देखी है” लाखे बीच में बोल पड़े।

हमने उनसे किताब ले विदा ली। और स्थान में व्यवस्थाओं की तारीफ की।

“अच्छा ये लगा की अभी हाल ही में इतना बड़ा मेला लगा फिर भी स्थान इतना नीट एंड क्लीन” मैं बोला।

“सब उन्हीं की कृपा है, वे ही कराते हैं” बाबा की पादुकाओं में शीश झुका वे बोले।

रेलवे स्टेशन एरिया को पार कर हम लोग ग्वाल टोली पहुच गया। ये एक पुराना और बड़ा मोहल्ला था पर रेलवे की काफी जगह होने से खुला खुला भी लग रहा था। कुछ ही अंदर गये होंगे कि मजार का गुम्बद दिखने लगा। निकट पहुंचे, देखा ऊँचे प्लेटफोर्म पर, सफेद रंग से पुता वह एक बड़ा मकबरा था जिसे पक्के परकोटे से घेरा गया था। गाड़ी से उतर अंदर गये। दरगाह में उस समय कोई दर्शनार्थी नहीं था।

“चलो अच्छा है, शांति है। कोई नियम टूटने पर टोकाटाकी की चिंता तो नहीं रहेगी” मैंने सोचा और सीढ़ियां चढ़ अंदर प्रवेश कर गया। अक्सर हम लोग अन्य सम्प्रदाय के उपासना स्थल पर जाते हैं तो नियम कायदा न जानने की झिझक रहती है। पर यहाँ कोई था नहीं इसलिए इत्मिनान से अंदर खड़े हुए, मजार को प्रणाम किया। सहसा मेरी दृष्टि दरगाह में उपर गयी। लिखा था।

*सुल्तान-ए-मालवा*

*हजरत सैय्यद होशंगशाह गौरी बादशाह रहमतुल्लाह तआला अलैह*

पढ़ते ही मेरा दिमाग चकराया। मैं तुरंत बाहर निकला। वहां के व्यवस्थापक असगर भाई से बात की।

“असगर भाई क्या यही मजार है राम जी बाबा के दोस्त गौरी शाह की।”

“जी हाँ उन्ही की मजार है जहाँ मेला से पहले चादर चढती है।”

“पर यहाँ तो सुल्तान ए मालवा होशंगशाह लिखा है।”

“वही तो गौरी शाह हैं।”

“पर होशंगशाह तो मांडू के सुल्तान थे जिन्होंने होशंगाबाद बसाया था, जिनका किला भी नर्मदा किनारे है, यहाँ के राजा थे वे।”

“वो यही हैं। यहाँ उनके दो स्थान हैं और मांडू में एक।”

“मतलब!”

“गौरी शाह बादशाह ने जब होशंगाबाद बसाया तो वे यहीं रहने लगे थे मांडू छोड़कर। यहाँ बागरा गाँव जिसे अब बागरा तवा कहते हैं में गौंड राजाओं का राज था जो बड़े अत्याचारी थे, प्रजा को बहुत सताते थे। गौरी शाह ने उन्हें फतह किया था किन्तु उस लड़ाई में वे शहीद हुए थे, उनका सरे मुबारक बागरा में रहा, वहाँ भी इनकी दरगाह है। धड़े मुबारक यहाँ रहा इस स्थान पर और मांडू में छोटी ऊँगली रही। वहाँ भी इनका मकबरा है।”

“हाँ वो तो मैंने देखा है संगमरमर का बना विशाल मकबरा, स्थापत्यकला का शानदार नमूना है। मांडू में गौंड बता रहे थे कि उसी मकबरे की डिजाइन ली थी शाहजहाँ ने ताजमहल के लिए। वहाँ तो यह भी कहा जाता है कि होशंगशाह ने जीते जी ही वह मकबरा अपने लिए बनवा लिया था।”

“हाँ उसके बाद ही होशंगाबाद बसाया और यहीं रह गये थे” असगर भाई बोले।

“रामजी बाबा से मित्रता कैसे हुई?”

“राजाओं और फकीरों का मेल तो सदा ही होता रहा है। गौरी शाह यहाँ के शासक थे जो खुद भी धीरे-धीरे फकीर बनते जा रहे थे ऐसे में उन्हीं रामजी बाबा मिले और दोनों के एक विचार होने से दोस्ती ऐसी पक्की हुई कि रोज एक दूसरे को मिले बिना चैन नहीं पड़ता था।”

मैं लौट दिया। रास्ते भर किसी से कुछ नहीं बोला। रह रह कर यही विचार आ रहे थे कि ये कैसे संभव है की जिस सुल्तान का इतिहास मांडू में कुछ बरस पूर्व सुना था कि मालवा रियासत को स्वतंत्र करने और उसका

पहला सुल्तान बनने का श्रेय दिलावर खां को जाता है। दिलावर खां के बेटे होशंगशाह ने मालवा की राजधानी धार से हटाकर मांडू बनाई थी। मांडू विन्ध्याचल के पहाड़ों में बसा सुरम्य और दुर्गम स्थान था जिसे सामरिक और रमणीक दोनों महत्व का जान होशंगशाह ने आबाद किया। इसी होशंगशाह ने होशंगाबाद बसाया था। चूँकि मांडू घूमने होशंगाबाद से ही गये थे इसलिए होशंगाबाद के प्रथम शासक का मूल स्थान और उनके वार में ज्यादा जानने की दिलचस्पी थी इसलिए होशंगशाह का मकबरा बड़े जतन से देखा जिसमें संगमरमर ने अद्भुत तिलस्म रचा था। होशंगाबाद से आया जानकर गाइड भी हमें होशंगशाह के बारे में और और अधिक बता रहा था।

“इनका किला तो होशंगाबाद में भी नर्मदा किनारे बना है। हमने देखा है अभी भी उसके मजबूत अवशेष हैं वहां।”

“किला ही नहीं वहां इनकी कब्र भी बनी है।”

“वहां बनी है? तो यहाँ ये मकबरा?” मेरी जिज्ञासा बढ़ी।

“यहाँ तो इन्होंने जीते जी अपना मकबरा बनवाया था” गाइड बोला।

“जीते जी बनवा लिया?” शालिनी ने आश्चर्य प्रकट किया।

“कहते हैं होशंगशाह ने अपने पिता का कत्ल किया था। इसी डर से कि कहीं उनके साथ भी यह न हो, अपने जीते जी ही यह मकबरा बनवा लिया था।”

“तो माना कौन सा जाता है?” मंजुल ने पूछा।

“मूल दरगाह तो होशंगाबाद में ही है। पर यहाँ भी कुछ अवशेष दफन किये गये थे।” मुझे वही ट्रिप याद आ रही थी आज। ये कैसे संभव है कि मांडू का वह सुल्तान जिसने अपने पिता तक को कत्ल किया यहाँ नर्मदा किनारे आकर गौरी शाह हो गया। मैं सोच रहा था कि माँ तू क्या है जो होशंगशाह जैसे सुल्तान को फकीर बना देती है, पीर बना देती। मेरे विचारों की श्रृंखला एक सुंदर आवाज़ से टूटी। दरगाह की ओर कोई गाता चला जा रहा था।

वाह वाह रे मौज फकीरा नूं ...वाह वाह रे ...वाह वाह रे॥





## सगुण

शंकराचार्य अद्वैत वाद के जनक कहे जाते हैं। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, न्यूटन ने हमें भली भांति समझा दिया है। इसीलिए अद्वैत की प्रतिक्रिया में हम द्वैत को जानते हैं। अद्वैत का मतलब दो नहीं होना, एक होना। अहम ब्रह्मास्मि, मैं ही ब्रह्म हूँ। जबकि द्वैत मार्गी ब्रह्म और जीव को अलग मानते हैं। द्वैत मार्गी भी रामानुज से अनेक महान संत हुए।

आत्मा और परमात्मा एक ही हैं, दो नहीं हैं। ईश ही जीव है, जीव ही ईश है कहने वाले शंकराचार्य जब नर्मदा के तट पर आये तो नर्मदा की स्तुति गाने लगे, नर्मदाष्टक रच दिया। मुझे बार-बार यही बात समझ नहीं आ रही थी कि अद्वैत वादी शंकराचार्य को नर्मदा की स्तुति की क्या आन पड़ी क्योंकि यह तो द्वैत वाद हुआ। किसी की उपासना तो हम तभी कर सकते हैं जब उसे अपने से पृथक माने, फिर चाहे वह देव हो, ईश हो, पर्वत हो या नदी। अद्वैत वाद तो स्वयं से पृथक किसी भी अस्तित्व को नकारता है तो स्तुति कैसी, पूजा कैसी।

मुझे यह द्वैत, अद्वैत का झमेला समझ नहीं आया, कभी नहीं आया। पर जब गीता पढ़ी तो कुछ कुछ पल्ले पड़ा कि क्या हो सकता है यह। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को सांख्य योग और कर्म योग बताया है। सांख्य योग वह है जिसमें योगी स्वयं को ईश से पृथक नहीं मानता, उसमें एकीकार हो जाता है, कर्ता का कोई भाव ही नहीं रहता, जो कर रहा है ब्रह्म ही कर रहा है। कर्म योग में योगी कर्ता का भाव तो रखता है पर किये जाने वाले हर कर्म को परमात्मा के लिए, उसकी इच्छा से, उसकी आज्ञा से करता है। अर्थात् कार्य वह स्वयं करता है पर ईश के लिए, उसके निमित्त।

तो सांख्य योग हुआ अद्वैत और कर्म योग हुआ द्वैत। सांख्य योगी कह सकता है की वही ब्रह्म है, अहम ब्रह्मासि पर यह अहंकार की स्थिति नहीं है, यह तो अपना सारा आस्तित्व ईश्वर में डिसॉल्व करने की अवस्था है। कर्म योग में कर्ता ईश को अपने से पृथक् मानता है, पर सारे कर्म उसे समर्पित करता है। उसकी इच्छा से करता है, बिना किसी फल की चाह के क्योंकि जब कार्य ही दूसरे के लिए कर रहे हैं, दूसरे का कर रहे हैं तो खुद क्यों फल चाहें, जैसा ईश चाहे, जैसा मालिक चाहे। सेवक तो बस मालिक को खुश करने की चेष्टा करता है। मालिक खुश तो वो खुश।

कृष्ण कहते हैं, कि दोनों ही योग मुझे पाने के मार्ग हैं, दोनों ही मुझे प्रिय हैं पर जो मुझे तत्व से जान लेता है, मुझमें एकीभाव होता है वह मुझे अधिक प्रिय है। रामचरित मानस में भी राम कहते हैं कि मेरी भक्ति चार तरह के लोग करते हैं। अर्थार्थी यानि भौतिक सुख की मांग वाला, आर्त जो संकट से निकलना चाह रहा है, जिज्ञासु जिसे मुझे जानने की ललक है और ज्ञानी जो मुझे तत्व ज्ञान से जानता है और मुझमें ही स्थित रहता है।

इसका तो मतलब यही हुआ की सांख्य योग कर्म योग से भी बड़ा है। कर्म योगी सब कुछ ईश्वर को अर्पित करता है, लाभ, हानि, यश-अपयश जो भी है, ईश का है, मैं तो उसी के लिए कार्य कर रहा हूँ। पर कितना भी उच्च कोटि का कर्म योगी होगा उसमें कभी न कभी अहंकार आ सकता है। सारे कर्म ईश्वर को समर्पित कर भी किसी कर्म में उसकी आसक्ति हो सकती है, मेरे अलावा इसे कौन कर सकता था, का भाव आ सकता है पर सांख्य योगी! वह तो यह सोच ही नहीं रहा की मैं हूँ। न मैं हूँ, न मैं करने वाला हूँ। जब उसका पृथक् आस्तित्व ही नहीं है तो उसमें अहंकार लेश मात्र भी नहीं आ सकता। और इसीलिए राम भी कहते हैं, कृष्ण भी कहते हैं कि मुझमें मिल जाने वाला, मेरे एकीभाव में रहने वाला मुझे सबसे अधिक प्रिय है। यही अद्वैत है।

पर सांख्य योग की अवस्था तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को पहले कर्म योग में पारंगत होना होगा। यानि अद्वैतवाद की स्थिति द्वैत वाद से ही निकलती है। दोनों ऊपर नीचे हैं, अलग नहीं। हाँ यह बात और है कि उच्च कोटि का कर्म योगी द्वैत दर्शन में ही मग्न रहे। उसे स्वयं का आस्तित्व ईश से पृथक् लगे और ईश की भक्ति में, स्वयं को उसे समर्पित करने में ही आनंद आये। पर यह पक्का है कि यदि उसे सांख्य योग की अवस्था तक पहुँचना है तो वह मार्ग कर्म योग से ही जाता है।

जब सांख्य योगी, अद्वैत वादी, ईश और खुद को एक ही मानने की उच्च अवस्था तक पहुंच जाता है, तब उसे सब में ईश ही दिखता है, सारा चराचर जिसमें वह स्वयं भी है एक ही दिखता है और यही निर्गुण उपासना है। निर्गुण, निराकार ईश की उपासना ईश के आस्तित्व को नकारना नहीं अपितु सर्वत्र ईश्वर को देखना है। हर छोटे बड़े पदार्थ में, जीव, जन्तु, सजीव, अजीव में ईश्वर को देखना ही ईश्वर को तत्व ज्ञान से जान लेना है। इसे गीता में कृष्ण ने भी कहा है कि सबमें मुझे देखना ही ज्ञान है और रामचरितमानस में भी कहा है 'सियाराम मय सब जग जानी'। सगुण साकार भक्ति कर्म योगी का काम है, जिसमें वह ईश को अपने सामने पाता है उसके रूप में खोया रहता है और उसी को खुश करने में लगा रहता है। पर निर्गुण निराकार भक्ति की अवस्था तभी आ सकेगी जब मन वचन और कर्म से पूर्ण सगुण साकार भक्ति की गयी हो।

रामचरितमानस में कागभुशुण्डि और गरुड़ संवाद में बड़ा रोचक प्रसंग है जिसमें कागभुशुण्डि कहते हैं कि वे लोमश ऋषि के पास गये थे सगुण उपासना की विधि जानने, सगुण उपासना समझने, पर लोमश ऋषि उन्हें निर्गुण निराकार भक्ति का महत्व बताने लगे। कागभुशुण्डि ने जोर देकर याचना की कि अभी तो राम की सगुण साकार भक्ति की सीख दें, बाद में निर्गुण निराकार भक्ति समझी जाएगी।

कागभुशुण्डि की इस याचना पर ऋषि क्रोधित हो गये। कागभुशुण्डि को उल्टा सीधा बोलने लगे। तब कागभुशुण्डि सोचते हैं कि निर्गुण निराकार भक्ति में आत्मा, परमात्मा जब एक ही हैं, तो क्रोध किस पर किया जा सकता है, जब कोई दूसरा है ही नहीं। क्रोध की अग्नि कहते हैं प्रतिक्रिया के घी से प्रज्वलित होती है और संयम दिखाने से टंडी। जब कागभुशुण्डि को निर्विकार बैठे देखा तो लोमश ऋषि का क्रोध शांत हो जाता है और उन्हें अहसास होता है की वे अभी निर्गुण भक्ति में पारंगत नहीं हुए हैं, तो स्वयं ही कागभुशुण्डि को सगुण साकार भक्ति का आशीर्वाद देते हैं और यह वरदान भी कि जहाँ वे रहेंगे उस आश्रम के आस-पास भी अज्ञान की माया न भटके।

तो यह है निर्गुण और सगुण भक्ति। पर सगुण भक्ति की चरम सीमा के बाद ही निर्गुण भक्ति उपजती है अर्थात ये दो भी अलग नहीं हैं। यह भी नहीं कहा जा सकता कि निर्गुण निराकार ब्रह्म को मानने वाला, उस स्थिति में पहुंचने वाला कभी सगुण साकार रूप में मोहित ही नहीं होगा। यदि ऐसा

होता तो निर्गुण निराकार भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुँचे राजा जनक, जिन्हें अपनी देह तक का मोह न होने के कारण विदेह कहा गया, भी राम को देख कर मोहित न हो जाते। अद्वैत के जनक शङ्कराचार्य नर्मदा को देखकर भक्तिमय न हो जाते और गाने न लगते...

*त्वदीय पाद पंकजम नामामि देवि नर्मदे...*



“अति की विरक्ति भी बुरी होती है” भार्गव जी बोले।

पिछले दिनों जाम सांवली के दर्शन से लौटते हुए पिपरिया भार्गव जी के पास चला गया था। पंडितजी कहीं गए थे, उन्हें खबर कर, इंतज़ार किया। कुछ देर में वे आये तो बताने लगे की कोई माहेश्वरी जी उनके मित्र हैं, लिवा ले गये थे। आज कल विरक्त होते जा रहे हैं। घर वाले भी परेशान और इसीलिए उन्हें संसार से जुड़े रहने का पाठ पढ़ा रहा था।

“पर गुरुदेव विरक्ति तो अच्छी बात है” मैंने विस्मय से कहा तब उन्होंने प्रतिक्रिया दी कि अति की विरक्ति बुरी होती है।

“अगर पर्याप्त उमर हो गयी है। घर की जिम्मेदारियां पूरी हो गयी हैं तो क्यों बुरी है। फिर तो विरक्ति हो ही जानी चाहिए संसार से” मैंने तर्क दिया।

“विरक्ति का अर्थ है किसी भी विषय में रत न रहना और यह स्थिति अवसाद को जन्म देती है। अगर अत्यधिक बढ़ जाय तो आत्महत्या तक के लिए उकसाती है।” पंडित जी ने कहा तो मैं चौंका। सोचने लगा कि इसका तो अर्थ ये हुआ कि वैराग्य का मतलब विरक्त होना नहीं है। वहुधा हम यही पढ़ते, सुनते आ रहे हैं कि घर द्वार छोड़ देना, वैराग्य लेना, विरक्त हो जाना, सन्यासी बन जाना सब एक ही हैं। किन्तु पंडित जी की बात तो कुछ और ही संदेश दे रही थी।

“क्या सोचने लगे?” मुझे विचारों में खोया जान वे पूछ बैठे।

“यही, गुरुदेव की वैराग्य का अर्थ विरक्ति नहीं यह तो एक राग से हट कर दूसरे राग में रम जाना है।”

“बिलकुल! और विरक्ति का अर्थ हर राग से हट कर जीवन के प्रति उदासीन हो जाना। जीने की इच्छा खत्म हो जाना” उन्होंने स्पष्ट किया।

भार्गव जी ने एक नई बात कर मेरे ज्ञानचक्षु खोल दिए। उनसे मुलाकात कर मैं वापस होशंगाबाद की ओर निकल दिया। रास्ते भर उथल पुथल चलती रही। आज एक नई बात जो मालुम हुई थी।

रागी, विरागी और वीतरागी। इन्हीं तीन रागों के बारे में सुनते आये थे। रागी का अर्थ सांसारिक भोगों में रमा रहे, उन्हीं के बारे में सोचे। विरागी की परिभाषा थी कि संसार त्याग कर जो भगवान की भक्ति करे और वीतरागी वो जो कुछ कुछ दोनों ही हो। अर्थात् संसार में रहे पर निर्लिप्त हो और भक्ति करे पर संसार से जुड़े रह कर।

पर आज पंडितजी से बात कर मेरे दिमाग में कौंधा की भक्ति तो प्रेम से होती है। जहाँ प्रेम नहीं वहाँ भक्ति नहीं। ‘प्रेम ते प्रकट होत मैं जाना।’ तुलसी दास ने राम चरित मानस में यह भी लिखा है कि बिना जाने विश्वास नहीं होता, विश्वास के बिना प्रेम नहीं और प्रेम बिना भक्ति नहीं।

*जानहि बिन न होय परतीति, बिनु परतीति न होयहि प्रीति।  
प्रीति बिना नहीं भगति दृढ़ाई, जिम खगपति जल के चिकनाई॥*

तुलसी की भक्ति प्रेम की भक्ति है। नरसी मेहता की भक्ति में प्रेम ही प्रेम है। सूरदास को दिखता नहीं था पर प्रेम में डूबकर वे कृष्ण की सटीक छवि बना लेते थे। मीरा भी तो प्रेम में ही मगन होकर नाचती है, सुधबुध खो देती है और गाती है।

*मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।  
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥*

अब ये बड़ा विरोधाभास है। एक तरफ हम कहें की वैराग्य का मतलब राग रहित होकर ईश्वर की भक्ति करना और दूसरी ओर यह भी सिद्ध हो रहा है कि जिन्होंने ईश्वर की भक्ति की है उन्होंने ईश्वर से प्रेम किया है। अब प्रेम करना तो रागी होना हुआ न। ये बात अलग है कि कोई संसार से प्रेम कर रहा है, कोई भगवान से। पर हैं तो दोनों ही प्रेमी, दोनों ही रागी। तब

यह निश्चित हुआ कि वैराग्य का अर्थ विरक्ति नहीं अपितु संसार से ध्यान हटा ईश्वर में लगाना, संसार से प्रेम खत्म कर भगवान से प्रेम करना।

तब तो फिर दो ही हो सकते हैं। रागी और वीतरागी। पहला वो जो एक राग में लिप्त है, एक का प्रेमी है। अब वह एक या तो संसार है या भगवान है। वीतरागी अर्थात् दोनों से ही प्रेम करने वाला संसार से भी, भगवान से भी।

जिसने इष्ट से प्रेम किया उसने फिर राह के कांटे नहीं देखे। प्रीति में वह शक्ति है कि अगम्य को भी सुलभ कर देती है। तभी तो ऊँची से ऊँची चढ़ाई चढ़ जाते हैं भक्त अपने भगवान के दर्शन को, बिना कुछ खाए नौ दिन तक व्रत कर लेते हैं देवी के। हजारों कि.मी. पैदल चल लेते हैं नर्मदा की परिक्रमा में।

मजे की बात यह है कि तीन हजार कि.मी. कच्चे और कहीं-कहीं ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलते हुए वे थकते नहीं हैं अपितु rejuvenate हो जाते हैं। अनेकों के तो असाध्य रोग तक सही हो जाते हैं, जैसे कोई संजीवनी बूटी फैली हो नर्मदा किनारे।

माँ साक्षात् संजीवन मूरी।

पैदल परिक्रमा तेरी पूरी॥



## चारघाट

नीच की करतूती दिन में तारे दिखा देती है, नानी याद दिला देती है तो कभी कभी ऊँचे स्थान भी दिखा देती है। गत दिवस जबलपुर जाना हुआ। नीच पापियों के कुकृत्यों को झेलते हुए अनेक माह गुजर गये थे। माँ की कृपा और संकट मोचन के सुरक्षा कवच से बचा था किन्तु मानसिक पीड़ा आये दिन होती थी।

इसी त्रास की छटपटाहट में एक दिन जबलपुर निकल पड़ा, हाईकोर्ट जाने के लिए। जबलपुर पहले भी कई बार गया था, जब छिंदवाड़ा था तो हर माह ही जाना हो जाता था पर तब नर्मदा माई कि भक्ति कहाँ थी मन में इसलिए बरगी बांध आते जाते देख लिया था, और एक बार भेड़ाघाट।

पर इस दूसरे कार्यकाल में जब माँ के प्रति भक्ति का भाव आ गया था तो बहुत इच्छा होती थी कि उस शहर को फिर से देखा जाय जो मध्यप्रदेश में नर्मदा के किनारे सबसे बड़ा शहर था। उस शहर के घाट देखे जाय, घाटों पर लोगों के जमघट देखे जाय और देखा जाय कि क्या महानगर वाले भी नर्मदा के प्रति आस्था रखते हैं।

काम जल्दी निपट गया था और पर्याप्त समय था दिन में। अमित शर्मा जो कुछ माह पूर्व ही होशंगाबाद से आये थे उद्योग विभाग में। अमित मेरी बड़ी इच्छा को देखते हुए ग्वारी घाट ले गये।

ग्वारी घाट का बहुत नाम सुना था पर आज देखा। बीचों बीच शहर में स्थित होने के बाद भी साफ सुथरा। कोई सीवर का पानी नहीं कोई नाला नहीं। किसी भी बड़े शहर में चले जाइये यदि शहर से कोई नदी निकली है तो भले ही उसमें पानी कम बह रहा हो पर अपनी दुर्दशा पर आँसू बहाती

ज़रूर मिलेगी। किन्तु यहाँ ये बात नहीं। स्वच्छ, निर्मल बहती नर्मदा। पक्के साफ सुथरे घाट। वोटिंग के लिए ढेरों नाव। पिकनिक मानते परिवार, मस्ती करते बच्चे, पूजन करते लोग ओर साधू सन्यासी। मई की भरी दोपहरी में भी घाट कि रमणीयता देखते ही बनती थी।

“बहुत सुंदर है अमित, कभी-कभार आ जाते होंगे यहाँ?” मैंने पूछा।

“कई बार सर। जब मन होता है, शाम को सपरिवार आ जाते हैं। यहाँ आरती बहुत अच्छी होती है।”

“यानि तुम भी यहाँ आकर माई के भक्त हो गये हो।”

“पूरा जबलपुर ही है सर। माई के प्रति लोग श्रद्धा रखते हैं।”

“ये शिव लिंग कैसे?”

घाट पर आखिरी ऊँची प्लेटफार्म पर नदी के किनारे स्थापित शिवलिंग देख कर मैंने पूछा।

“सर, ये बारह ज्योतिर्लिंग है, सभी के आगे नाम पड़ा है।”

“अद्भुत” मैंने कहा और बीच नदी में बने मन्दिर पर मेरा ध्यान गया।

“ये मन्दिर किसका है।”

“नर्मदा माई का ही है सर। ये जो ऊपर नमामि देवी नर्मदे बड़ा सा लिखा है रात को लाइट से लाल अक्षर चमकते हैं और बीच नदी में दीपों कि झिलमिलाती कतारों के बीच मन्दिर अपनी रौशनी के साथ चमक मारता है” अमित ने कहा तो मैंने देखा, सचमुच उत्तर तट पर बड़ा अक्षर से लाल रंग से लिखा था ‘नमामि देवी नर्मदे’।

“जब अभी इतना खूबसूरत लग रहा है तो रात को कितना अच्छा लगता होगा।” मैंने कहा और मेरी दृष्टी ढहर गयी उस पार बने सफेद सुंदर और भव्य गुरुद्वारे पर। घाट की सुन्दरता में चार चाँद लगा रहा था वह गुरुद्वारा और बहती निर्मल नर्मदा गुरुद्वारे कि छटा बढ़ा रही थी।

एक बात तो माँ नर्मदा की मुझे बहुत ही अच्छी लगी। सभी धर्म के लोग इसे अपना मानते हैं। हिन्दू, मुस्लिम, जैन ओर सिख सभी धर्मों के आस्था बिंदु मैंने इस नर्मदा किनारे देखे हैं जबकि अभी तो मात्र आधी ही यात्रा हो पाई है। हिन्दुओं के तो अगनित हैं, नेमावर जैन धर्म का, और पहलवान बाबा की मजार होशंगाबाद, हंडिया के हन्डियास भडान मुस्लिम धर्म के भी कम नहीं है ओर यहाँ उन्नत ललाट किये शानदार गुरुद्वारा।



माँ नर्मदा साम्प्रदायिक सौहाद्र का अनुपम नमूना है और क्यों न हो माँ जो ठहरी। अपने बच्चों के कैसे लड़ने भिड़ने देगी। बच्चे जब माँ के पास हो तो उसकी खुशी का क्या ठिकाना।

ग्वारी घाट पर समय बिता वापस चले। परिक्रमावासियों के लिए घाट के किनारे बड़ी बड़ी धर्मशालाएं बनी थी जिनमें सैकड़ों लोग रुक जायं। रहना भोजन सब फ्री। आस्था की ही तो बात है।

ग्वारी के बाद तिलवारा जबलपुर में दूसरा बड़ा घाट। नागपुर हाईवे का पुल ऊंचाई से निकला है जिस पर लगातर वाहनों की आवाजाही लगी रहती है। तिलवारा भी पक्का और साफ सुथरा घाट। धार्मिक आयोजन होते रहते हैं यहाँ। अनेक पंछी नर्मदा में तैरते नदी के सौन्दर्य को बढ़ा रहे थे। ग्वारी कि तुलना में आवाजाही शहर के लोगों की कम है किन्तु परिक्रमावासियों ने शोभा बढ़ा रखी है।

इच्छा तो भेड़ाघाट जाने कि भी थी, पर देर होती देख और साथ जी और भट्ट जी दोनों का लौटने का मन जान पूछ लिया मैंने।

“हाँ सर आपकी बरमान जाने कि इच्छा है यदि यहाँ से जल्द नहीं निकले तो बहुत रात हो जाएगी। बरमान दूर है नरसिंहपुर से आगे सागर रोड पर जाना होगा” साथ जी बोले।

अमित से विदा ले हम लोग निकल लिए वापस। जितनी जल्दी बरमान पहुँच जाय उतना अच्छा। सायं की छटा नर्मदा माँ की देखते ही बनती है। जबलपुर उत्तर तट पर है और होशंगाबाद दक्षिण तट पर इसलिए एक जगह नर्मदा माई को पार करते हैं। नरसिंहपुर जिले में ही झांसी घाट है जहाँ पुल बना है। दोनों ओर छोटा पर पक्का घाट है। परिक्रमावासियों की अनेक गाड़ियाँ वहाँ भी खड़ी थीं। एकांत में माँ का सानिध्य लेने शायद लोग यहाँ रुक जाते हैं।

चलते चलते करेली आया तो 22 कि.मी. फिर सागर रोड पर चलने कि जरूरत थी बरमान के लिए। अच्छा हाईवे था इसलिए दूरी नहीं अखरी। पर जब पुल पर आया तो मुझे याद आ गया कि छिंदवाड़ा से कानपुर जाते समय बरमान पड़ा था। पुल से चट्टानों के बीच बहती नर्मदा अलौकिक लगती है पर आज पता चला कि वो बरमान नहीं है वह तो सतधारा है, बरमान तो पश्चिम की ओर 3 कि.मी. चलने पर आयेगा।

बरमान पहुंचते पहुंचते शाम गहराने लगी थी। घाट पर भरपूर चहल-पहल थी। बरमान सचमुच तीर्थ है। अनेक मन्दिर, कहीं कथा हो रही तो कहीं कीर्तन। कोई साधू आरती का थाल लिए नीचे से ऊपर आता दिख रहा था तो कोई बच्ची घाट पर लगे बाजार में खिलोनों की दूकान पर माँ-बाप से मचल रही थी।

नीचे सीढ़ियों से उतर कर किनारे तक गये। आचमन किया, हाथ जोड़ माँ से विनती की। पास में लगी एक दूकान के तख्त पर आकर बैठ गया। भले ही देर हो रही थी पर उठने का मन नहीं था।

“उधर भी घाट है” दूकानदार से पूछा।

“हाँ ये बड़ी बरमान है, वो छोटी बरमान।”

“घाट वहाँ का भी बड़ा सुंदर लग रहा है। कितने लोग दीपदान कर रहे हैं। निराली छटा है” सामने विशाल सफेद सीढ़ियों के घाट को देख जैसे मैं मंत्रमुग्ध था।

“उसी घाट पर मेला लगता है हर साल संक्रांति को। एक माह बड़ी रौनक रहती है।”

“रौनक तो अभी भी कम नहीं है।”

“इतनी तो हमेशा ही रहती है। लोगों का आनाजाना लगा रहता है। सबसे बड़ी बात परिक्रमावासियों के रुकने की मनपसन्द जगह है जो एक तट पर रुकता है वह लौटकर दूसरे पर भी रुके बिना नहीं रह सकता।” दुकानदार बोला।

“यहाँ नर्मदा माँ के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है?”

“बहुत मान्यता है साब। ताँता ही लगा रहता है।”

बड़ी देर बैठा रहा, दुकानदार भी बड़ा प्रेमी था कतई नहीं कहा कि तख्त खाली कर दो। माई के किनारे लोगों का यही तो आत्मीय स्वभाव है। सब को एक दूसरे अपने लगने लगते हैं। मुझे बरमान देखकर नेमावर का ध्यान आ रहा था। वह भी ऐसा ही दोनों तट पर एक सी रमणीयता लिए है।

एक बात मैं महसूस कर रहा था। जबलपुर के दोनों घाट देखे, झाँसी घाट देखा और यह बरमान। जब होशंगाबाद की बात करूँ या नेमावर की। नर्मदा माई के पाट की जो चौड़ाई वहाँ है, यहाँ नहीं। इसका मतलब

अमरकंटक से निकली कन्या जबलपुर तक आते आते किशोरी हो जाती है और वही किशोरी भेड़ाघाट पर अल्हड हो जाती है। बरमान आते आते तरुणाई आने लगती है किन्तु होशंगाबाद में पूर्ण यौवन प्राप्त कर लेती है शिवकुमारी। नेमावर, ओमकारेश्वर, महेश्वर तक यही यौवन रहता है माँ का। अब आगे देखूंगा तब लिखूंगा।



माँ के रूप अनेक हैं किन्तु फलदायी एकसी है। मांगने वाले जरा संभल कर मांगे। पहले सोच विचार करलें कि क्या चाहिए। क्योंकि उसे देते देर नहीं लगती। अब अपना ही छोटा सा उदाहरण दूं अभी का। दो चार दिन पहले की ही बात है सेठानी घाट पर खेड़ापति बजरंगी के दर्शन से पहले नीचे घाट पर जा आचमन ले माँ से प्रार्थना की। पलट कर चलने लगा तो पूर्व में विभाग में कोऑर्डिनेटर का काम कर चुकी प्रीती मिल गयी।

“सर नमस्ते।”

“हाँ प्रीती कैसी हो।”

“ठीक हूँ सर।”

“आजकल कहाँ काम कर रही हो।”

“कहीं नहीं सर, कोई काम नहीं है।”

“अच्छा! चलो देखते हैं कुछ।”

जैसी सरकारी लोगों कि आदत पड़ जाती है। आश्वासन ही देते रहते हैं, चाहे सम्भवना हो चाहे न हो। मेरे पास न कोई काम था उसके लिए, न भविष्य में कोई सम्भवना थी, पर बोल दिया आदतन। जब ऊपर सीढ़ियां चढ़ने लगा तो महसूस किया कि माँ के सामने किसी को झूठा आश्वासन नहीं देना चाहिए था।

“अब तो माँ तू ही जान बोल दिया सो बोल दिया” मैं मन ही मन माँ से कहता ऊपर चला आया।

दूसरे दिन 11 तब बजे जब प्रीती को विभाग में काम मिल गया।



## तपबल

“**प्रा**चीन काल में लोग तपस्या कर बड़ी-बड़ी सिद्धि पा लेते थे।” मन में संवाद मन से हो रहा था। गाड़ी होशंगाबाद की ओर दौड़ रही थी और गाड़ी की रफ्तार से भी अधिक मन में विचार दौड़ रहे थे। अजब संयोग था कि एक माह के अन्तराल में दुबारा जबलपुर जाना हुआ। काम उसी दिन हो गया तो सोचा सायं हो रही है, चलकर भेड़ाघाट रुका जाय। पिछली बार जब भेड़ाघाट कुछ ही घंटों के लिए जाना हुआ था तब नर्मदा किनारे रेस्ट हाउस देख इच्छा जागी कि अबकी बार आना हुआ तो इसी रेस्ट हाउस में रुका जायेगा। माँ के किनारे इच्छा करो और वह पूरी न हो, ऐसा कैसे हो सकता था सो उसी रेस्ट हाउस में रुकने का अवसर मिला।

उफ क्या रमणीयता थी! संगमरमर की ऊँची चट्टानों से शांत बहती नर्मदा और आगे पंचवटी घाट पर शोर करते हुए झरने में बदल जाना। सारा दृश्य ही किसी परीलोक सा लग रहा था। उपर रेस्ट हाउस की छत पर बैठ अपलक दृश्य निहारते कब रात के 11 बज गये मालूम ही नहीं पड़ा। उठने का मन ही नहीं हो रहा था। रेस्ट हाउस के सेवा भावी कर्मि बार-बार आकर हाल पूछ जाते। “स्वर्ग तो नहीं देखा पर होता होगा तो ऐसा ही होगा”। सोचते-सोचते अनमने मन से उठा सोने जाने को।

“नींद खुले तो नर्मदा दिखे” सुबह उठा तो लगा यह इच्छा भी पूरी हो गयी। उत्तेजना में धुंधलके में ही उठ गया था। सुबह का नर्मदा सौन्दर्य जो देखना था। उठते ही नर्मदा दिखी। नीचे शांत बहती नर्मदा। सामने नाद करती नर्मदा। दौड़कर बाहर निकला। चारों तरफ न जाने कितने स्विटज़रलैंड बिखरे पड़े थे।

नित्य कर्म से निवृत्त हो पूर्णिमा का स्नान करने सामने पंचवटी घाट पर गये। इतना शीतल, इतना निर्मल और इतना वेगवान जल नर्मदा का कहाँ होगा जो वहाँ था।

“ये नर्मदेश्वर शिवलिंग हैं?” लौटकर रेस्ट हाउस आने पर एक चबूतरा पर स्थापित दो विशाल शिव लिंग देखते हुए वहाँ के कर्मचारी महेश तिवारी से पूछा तो वे बोले।

“जी सर। दोनों ही नर्मदेश्वर हैं।”

“और जो ऋषि बैठे हैं, वे कौन हैं?” दोनों नर्मदेश्वर के पीछे बनी ऋषि प्रतिमा देखते हुए पूछा।

“भृगु ऋषि हैं। इन्होंने यहीं तपस्या की थी।”

“क्या भृगु ऋषि यहाँ आये थे?”

“हाँ साब उन्हीं के नाम पर इस स्थान को भेड़ाघाट कहा जाने लगा था। मैंने भी बचपन में उनके अनुयाई नागा बाबा देखे थे, यहीं आश्रम बना कर रहते थे।”

उत्सुकता हुई। वट वृक्ष के नीचे बने सुंदर चबूतरे को देखा, जिस पर भृगु ऋषि बैठे थे और सामने दो शानदार नर्मदेश्वर शिवलिंग। ऊपर लिखा था ‘भृगु चौरा’।

रेस्ट हाउस से चेक आउट कर धुंआधार देखने चले गये। अद्भुत दृश्य था। गर्जना करती नर्मदा उपर से गिरती है चट्टानों पर तो दूर दूर तक धुआं उठता दिखता है। पिछली बार जब धुंआधार देखा था तब बारिश शुरू हो चुकी थी। इसलिए पानी मटमैला था। पर इस बार तो नीचे गिरता पानी ऐसा लगता है जैसे गाड़ी का विंड स्क्रीन टूट कर झार झार हो जाता है, कुछ वैसा ही मंजर था। लगता है नीचे पानी नहीं गिर रहा छोटे-छोटे कांच के टुकड़े गिर रहे हैं और चारों तरफ फैल रहे हैं।

“यूँ ही नहीं इसे देश के सर्वश्रेष्ठ जल प्रपातों में से एक कहा जाता है।” सोचते हुए वापस चल दिया। ऊपर आया तब तक ड्राईवर राजा ने अच्छे रेस्टोरेन्ट पर नास्ते कि व्यवस्था कर रखी थी।

भेड़ाघाट और धुंआधार की खूबसूरती को मन में बसाये वापस होशंगाबाद की ओर चल दिए। गोटेगाँव के सामने से निकले तो एक स्थान पर लिखा देखा झोतेस्वर 12 कि.मी.। नाम सुना था सोचा आज देख भी

लें। अच्छी सड़क थी गाँव तक। गाँव में पहुंचे, पता पूछा। लोगों के बताये अनुसार वहां पहुंचे जहाँ भव्य स्थान बना था ऊँची पहाड़ी पर भव्य विशाल मंदिर। मन्दिर की सुन्दरता सामने बड़ा सा जल कुंड और बढ़ा रहा था।

सीढ़ियां चढ़कर मन्दिर गये। अंदर घुसते ही वहां की भव्यता और खूबसूरती देख आंखे चौंधिया गयीं। मन्दिर त्रिपुर सुन्दरी का था। जिसे शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती ने बनवाया था। व्यवस्थापकों से ज्ञात हुआ कि यह उनकी तपोभूमि थी।

मन्दिर से बाहर निकले। राजा कि इच्छा थी इतनी सुंदर जगह के फोटो तो लिए जायं। राजा फोटो खींचने में मशगूल थे तब तक वहां आये दर्शनार्थियों से और मालुमात ली पता चला कि आगे अंदर जंगल में 4 कि.मी. दूर विचार शिला नामक देखने योग्य स्थान है।

“विचार शिला?” मैंने पूछा।

“हाँ वहां शंकराचार्य जी ने तपस्या की थी” दूकानदार और ग्रामीण एक साथ बोल पड़े।

सोचा जब आये हैं तो विचार शिला भी देख लें। गाड़ी अंदर जंगल की ओर मोड़ दी। पक्की सड़क थी। पूरे स्थान का अच्छा फैलाव था। लगता था कि 10 कि.मी. की रेडिअस में था वह पूरा कैंपस। कहीं अध्ययन शाला, कहीं पौधशाला, अंजनी पहाड़, हनुमानजी का मन्दिर, धर्मशाला नर्सरी, गौ शाला और भी बहुत कुछ।

विचार शिला के पास पहुंचे। बाउंड्री से घिरा एक छोटा उपवन था जिसमें स्थान स्थान पर स्वरूपानंद जी के चित्र लगे थे।

“आदि शंकराचार्य जी का कोई चित्र नहीं जबकि स्थल उन्हीं का है” अंदर उपवन में गया तो यही विचार आ रहा था। आखिर में जाकर देखा एक ऊँची शिला जो 3 फीट बाई 2 फीट की रही होगी और ऊंचाई यही कोई 4 फीट। माथा टेका, बाहर आये। बाहर एक छोटा पोंड बना था वहां एक सज्जन खड़े मिल गये।

आप क्या यहीं रहते हैं?”

“नहीं मैं धुआं के पास राठी गाँव का रहने वाला हूँ।”

“यहाँ कैसे?”

“पास में मेरे रिश्तेदार रहते हैं उन्हीं के पास आया था।”

“क्या पहली बार आये हैं?”

“नहीं आता रहता हूँ।”

“यहाँ भी आते रहते हैं।”

“हाँ जब आता हूँ, यहाँ ज़रूर आता हूँ।”

“क्या नाम है आपका?”

“शोभाराम सेन।”

“शोभाराम जी ये स्थान तो बहुत अच्छा है। इसे शंकराचार्य जी कि तपस्थली कहते हैं। पर यहाँ उनका कोई चित्र या विवरण नहीं है, जबकि स्वरूपानंद जी के अनेक लगे हैं।”

“क्योंकि, यह स्वरूपानंद शंकराचार्य जी की ही तपोभूमि है।”

“अर्थात्?” अब चौंकने की बारी मेरी थी।

“शंकराचार्य स्वरूपानंद जी अपने घर से भाग कर यहीं इसी जंगल में आ गये थे और इसी शिला पर बैठ उन्होंने लम्बी तपस्या की थी।”

“यहाँ पर तपस्या की थी, पर क्यों?”

“हाँ तब यह घोर जंगल था। स्वामी जी ने कठिन तप किया, माँ नर्मदा का आवाहन किया।”

“यहाँ पर माँ नर्मदा का आवाहन। तब तो उन्हें नर्मदा किनारे जाना चाहिए था।”

“यही तो तप था। उन्होंने माँ को यहीं बुलाना चाहा।”

फिर...?? मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी।

“माँ नर्मदा उनकी कठिन तपस्या से प्रसन्न हुईं और उन्होंने यहाँ प्रकट होना स्वीकार कर लिया पर शर्त रखी कि स्थान का विस्तार करो तब आउंगी।”

“उसके बाद?”

“स्वामी जी ने इस बड़े और मीलों फैले जंगल में माता का फैलाव किया और नर्मदा एक कुंड में प्रकट हो गयी। वो कुंड आज भी है, आप नर्मदा का जल पियो और कुंड का दोनों एक स्वाद के लगेगे।”

“हाँ वो कुंड मैंने देखा है मन्दिर के सामने।”

“नहीं वो दूसरा कुंड है। बाद में जब स्वामी जी ने भव्य त्रिपुर सुन्दरी देवी का मन्दिर बनवाया तब उस कुंड को बनाया गया था। नर्मदा कुंड तो यहाँ से कोई दो कि.मी. अंदर जंगल में है। आप चाहें तो पैदल जा सकते हैं। मैं कई बार गया हूँ।”

“बहुत बड़े क्षेत्रफल में इतना रमणीक स्थान बनाया है। क्या शंकराचार्य जी यहाँ आते हैं?”

“हाँ अभी तो आये थे। अब तो वे दो पीठ के शंकराचार्य हैं, व्यस्त रहते हैं पर यहाँ आते ज़रूर हैं क्योंकि यहाँ की तपस्या से ही माँ नर्मदा ने उन्हें यह वैभव दिया है।” शोभाराम जी बोले तो लगा जैसे प्रेमाकुल उनके शब्द रुंध रहे हैं गले में।

झोतेस्वर के अकल्पनीय मंजर देख वापस चले। मुख्य मार्ग से कोई पांच कि.मी. पहले एक और भव्य स्थान दिखा, गाड़ी रोकी। लिखा था ‘श्री बाबा श्री धाम’।

बड़े से परकोटे में घिरा खूबसूरत स्थान। बगल में बड़ा पक्का तालाब जिसके बीचों बीच भी मन्दिर सह आश्रम जैसा निर्माण था। अंदर शिव जी, गणेश जी हनुमान जी और नर्मदा माँ के स्थान। जगह-जगह ध्वज फहरा रहे थे जिन पर लिखा था माँ और साथ में त्रिशूल का चिन्ह।

“ये हर ध्वज में माँ क्यों लिखा है?” मैंने एक परिचारक से पूछा।

“क्योंकि महाराज जी माँ नर्मदा के भक्त हैं इसीलिए।”

“कौन हैं आपके महाराज?”

“श्री बाबा श्री।”

“आप कह रहे हैं वो नर्मदा के भक्त हैं, पर यहाँ तो नर्मदा नहीं हैं।”

“नर्मदा माई हमेशा बाबा जी के साथ रहती हैं। बाबा जी के अनेक आश्रम नर्मदा किनारे भी हैं।”

“बाबाजी अभी हैं?”

“हैं तो पर उनके मिलने का यह समय नहीं है” परिचारक ने कहा तो मुझे लगा कि मेरी भी बहुत ज्यादा लालसा नहीं थी, अभी उनसे मिलने कि। जाने कि जल्दी जो थी।



“कहाँ से आये हैं आप लोग?” जब हम लोग चलने लगे तो उसने पूछा।

“होशंगाबाद से।”

“क्या वापस वहीं जा रहे हैं?”

“हाँ।”

“रास्ते में नीलकुण्ड स्थान है, नर्मदा किनारे। वहाँ हमारा आश्रम और मन्दिर है, हो सके तो जाइयेगा” परिचारक बोला तो आधे अधूरे मन से कह दिया कि देखते हैं।

वापस चल दिए। जब चला था होशंगाबाद से तो आशीष मालवीय ने कहा था कि हीरापुर ज़रूर जाइयेगा। सोचा समय है, होते चलते हैं। दांगी जी हीरापुर वाले महाराज के बारे में अनेक बार चर्चा कर चुके थे। उन्हीं को फोन लगाया।

“गाडरवाड़ा पहुँचने से पहले ही दाईं ओर सड़क मुड़ी है। ककरा घाट निकलते ही हीरापुर के लिए रास्ता मुड़ा है, किसी से भी पूछ लेना। हालाँकि अभी महाराज जी नहीं हैं वहाँ, पर आप हो आयें। स्थान बड़ा अद्भुत है।” दांगी जी बोले।

ककरा घाट नर्मदा का सुंदर घाट है जो गाडरवाड़ा से रायसेन रोड़ पर है। घाट से पहले नर्मदा ने 90 डिग्री का कोण बना नयनाभिराम मंजर बनाया है। माँ नर्मदा पग-पग पर अटखेलियाँ करती है। धुंआधार पर घोर गर्जन और निकलते ही संगमरमर की खड़ी चट्टानों के बीच शांत बहती, इतनी शांत कि रात को तो समझ ही नहीं आ रहा था कि बहाव किधर से आ रहा है। और यहाँ ककरा घाट से पहले सीधा अंग्रेजी का एस बनाती सबको लुभाती निकली जा रही थी।

ककरा घाट पार करते ही बाएँ एक सड़क निकलती दिखी जिस पर बोर्ड लगा था और लिखा था हीरापुर 3 कि.मी.। खेतों के बीच जाती सड़क से आश्रम पहुँचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा। नर्मदा किनारे बने आश्रम के विशाल फाटक से अंदर गाड़ी ली तो बड़े, छोटे मन्दिर दिखे। मन्दिर की स्थापत्यकला चौंकाने वाली थी। पूरी दक्षिण की द्रविड़ शैली।

हनुमान जी के दर्शन कर नर्मदा को ऊपर से देखने का लोभ संवरण न कर सके और करार पर वहाँ जाकर खड़े हो गये जहाँ से नीचे बहती नर्मदा

का अभियान चालू था। अल्हड़पन का अभियान, घुमक्कड़ी का अभियान, पलट कर उल्टे चलने का अभियान। बहुत देर मन्त्र मुग्ध नर्मदा को निहारता रहा। तभी पास के वरांडा में निगाह गयी। एक सज्जन लेटे थे, हमारी बातें सुनकर उठ बैठे। पास जाकर उनसे बातचीत होने लगी।

“आप क्या यहीं रहते हैं।”

“जी।”

“क्या करते हैं यहाँ?”

आश्रम और गुरुकुल कि व्यवस्था देखता हूँ।

“गुरुकुल??”

“यहाँ बच्चे भी पढ़ते हैं। अभी जो बालक आपको मिले होंगे वे सब गुरुकुल के विद्यार्थी हैं।”

“हाँ मिले थे। मुझे लगा कोई परिवार रहता होगा, उसके बच्चे हैं। आप कब से हैं यहाँ।”

“शुरुआत से ही।”

“क्या नाम है आपका” मैंने पास ही फर्श पर बैठते हुए पूछा।

“राजेश कटारे।”

“पर कटारे तो भिंड में पाए जाते हैं, आप यहाँ कैसे।” मैं आत्मीयता दिखाते बोला।

“हमारे पूर्वज आ गये थे यहाँ, अभी भी परिवार के कुछ लोग भिंड ही रहते हैं। मैं तो 25 साल से महाराज जी की सेवा में ही हूँ।”

“क्या नाम है महाराज जी का।”

“स्वामी षण्मुखानन्द पूरी जी महाराज।”

“ये सभी मन्दिर क्या महाराज जी ने ही बनवाए हैं?”

“हाँ उन्हीं ने बनवाए हैं।”

“महाराज जी क्या दक्षिण भारत से हैं।”

“आपने कैसे जाना?”

“क्योंकि जितने भी मन्दिर हैं यहाँ, सभी द्रविड़ शैली के है।”

“बिलकुल सही अनुमान है आपका। बैंगलोर से आये हैं महाराज।”

“बैंगलोर से यहाँ इतनी दूर आने का प्रयोजन?”

“महाराज जी के गुरु ने वहाँ अपने मठ की गद्दी इन्हें देनी चाही पर ये तो विरक्त थे। हाथ जोड़ गुरु को मना कर दिया कि उन्हें यह सब वैभव नहीं चाहिए। वे तो कहीं छोटी कुटिया बना कर साधना करना चाहते हैं।” कहते हुए उन्होंने गुरु से आज्ञा ली।

“जाना चाहते हो तो बेशक जाओ। पर ध्यान रहे तुम कितना भी इस वैभव को त्यागो, इसे तो तुम्हारा किंकर होना ही है।” कटारे जी बताने लगे।

“उसके बाद महाराज जी यहाँ आ गये। जहाँ आप बैठे हैं उसके सामने वह कमरा देख रहे हैं?” कटारे जी ने पूछा।

“हाँ” उस छोटे से कमरे की ओर देखते हुए मैं बोला।

“इसी कमरे में सोलह वर्ष महाराज जी ने अनुष्ठान किया। वे अंदर कमरे में रहते थे और हम तीन लोग बाहर। बाहर जहाँ हम लोग बैठे हैं वहाँ दिन रात हवन होता था। महाराज जी एक बार सुबह कमरे में गये तो बाहर नहीं निकलते थे। किसी चीज़ की ज़रूरत होती थी तो अंदर से उन्होंने आवाज़ दी और हम लोग दौड़ कर पूरा करते थे।”

“और यह सब लगातार सोलह वर्ष तक चला?”

“हाँ, लगातार। और इसके बाद बीच नर्मदा जी में नाव के ऊपर सात वर्ष।”

“मतलब?” मेरा माथा चकरा रहा था।

“एक नाव की गयी जिस पर सामग्री रखी और नाव का केवट महाराज जी को बिठा कर बीच धार में ले जाता था। वहीं नाव को लम्बी रस्सी से स्थिर कर स्वयं किनारे बैठा रहता था, जब भी हवा, पानी ज्यादा आये तो रस्सी से नाव खींच लेता था, किनारे की ओर, पर महाराज जी उसी में अपना पूजन अनुष्ठान करते रहते थे। सुबह एक बार नित्य क्रिया के लिए ऊपर आना और शेष पूरा समय नर्मदा में।”

“आप लोग यहाँ क्या करते थे उस समय?”

“अनुष्ठान के बीच में ही महाराज की इच्छा अनुसार राज राजेश्वरी मन्दिर का कार्य प्रारम्भ हुआ, दक्षिण के कारीगर बुलाये गये और धीरे-धीरे यह भव्य रूप बनता गया। इसी मन्दिर, गौशाला, पाठशाला कार्य में सब लोग लग गये थे।”

“पर आप कह रहे हैं कि महाराज जी अकेले दक्षिण से आये थे, कूटिया बना कर रहने, फिर इतना विशाल, इतना भव्य निर्माण कैसे संभव हुआ। कैसे व्यवस्था हुई?”

“यह सब न पूछो। वे विचार कर लेते हैं और व्यवस्था होने लगती है। अभी नर्मदा परिक्रमा से लौटे हैं। ओमकारेश्वर में जगह भा गयी, वहां गणेशजी का मन्दिर बनने लगा है। नैमिषारण्य गये तो वहां एक मन्दिर बनने लगा।” कटारे जी बताने लगे।

और भी बहुत सी इधर उधर की बातें हुईं और हमने उनसे विदा ली।

लग रहा था कि आज सुबह से भले ही भोजन नसीब न हुआ हो पर स्थान एक से एक देखने को मिल रहे हैं। सायं के पांच बजे थे और चलते-चलते एक स्थान पड़ा पलोहा तो याद आया कि यहीं से नीलकुण्ड जाने का बताया था बाबाश्री के आश्रम पर। पूछा वहां खड़े लोगों से तो पता चला कि सात कि.मी. है नीलकुण्ड और सड़क ठीक है।

“जब यहाँ तक आये हैं तो चलते हैं” मैंने कहा तो राजा ने भी हामी भर दी और गाड़ी मुड़ गयी नील कुंड की ओर।

फिर वही हाल। नर्मदा की अटखेलियाँ यहाँ भी जारी थीं। दूर से वक्राकर हो कर स्वच्छ नीले रंग के साथ आती नर्मदा बेहद खूबसूरत लग रही थीं। बीच में एक चट्टान इस प्रकार फैली थी कि लग रहा था मगर तैर रहा हो नदी में। ऊपर कगार पर श्री बाबा श्री के द्वारा मन्दिर बनाया गया था जो लगभग पूर्णता पर था। सफेद, गगनचुंबी शिखर के साथ मन्दिर बरबस लुभा रहा था। प्रांगण में घुसने को हुए कि एक सज्जन अंदर से आते दिखे।

“आप क्या यहीं मन्दिर पर रहते हैं?” मैंने उन्हें रोक कर पूछा।

“हाँ।”

“मन्दिर के दर्शन करना चाहते हैं” मैंने कहा।

“चलिए” कहते हुए वे हमारे साथ हो लिए। बातों-बातों में पता चला कि वे दिनेश चौबे हैं जो दो बरस से यहीं रह रहे हैं। जब हमने अपना परिचय दिया और बताया कि होशंगाबाद से आये हैं तो इतनी दूर से आने का जानकर वे खुश हो गये। मन्दिर में ले जाकर दर्शन कराये। मन्दिर में भव्य, विशाल काला शिवलिंग स्थापित था। अन्य देवताओं के स्थान के

अतिरिक्त एक कोने में श्री बाबा श्री की आदम कद प्रतिमा भी थी। दर्शन कर बाहर निकले और सीढ़ियों पर बैठ गये।

“यहाँ से नर्मदा जी कितनी अच्छी लग रही हैं,” नीचे बहती नर्मदा को देखते हुए मैंने कहा।

“तभी तो हमारे गुरुजी ने यह जगह चुनी थी मन्दिर के लिए।”

“गुरुजी बोले तो क्या बाबाजी?”

“हाँ वे ही हमारे गुरु हैं। आप को यहाँ का पता किसने दिया?”

“झोतेस्वर के पास वाले मन्दिर गये थे, वहाँ मालूम चला इस जगह के बारे में।”

“वो बाबाजी का सबसे पहला आश्रम है अब तो नर्मदा किनारे कई बन गये हैं। गुरुजी जहाँ ठहर जाते हैं वहीं मन्दिर, आश्रम बन जाते हैं।”

“यहाँ भी आते होंगे” मैंने पूछा।

“आते हैं पर बहुत कम” चौबे जी बोले।

“यहाँ की व्यवस्था?”

“हम सब मिलकर गुरुजी की प्रेरणा से देखते हैं” एक और सज्जन आकर बोलने लगे।

“आप?”

“मैं तेजबल हूँ। यहीं पास के गाँव अमोदा का रहने वाला हूँ। जब से बाबाजी के सम्पर्क में आया उन्हीं का हो गया।”

“अच्छा तो है। गाँव की चकल्लस से दूर यहाँ इतने रमणीक स्थान पर रहना, जब मन किया नर्मदाजी में स्नान।”

“हम लोग नर्मदाजी में स्नान नहीं करते” तेजबल बोले।

“मतलब?”

“गुरुजी के जितने शिष्य हैं, नर्मदा मैया को प्रणाम करते हैं, आचमन करते हैं पर उनका स्नान नहीं करते। गुरुजी ने वर्जित कर दिया है, कहते हैं वो माँ है उसमें पैर कैसे जाय।”

“ये तो बड़ी विचित्र बात है” मैंने हस्तक्षेप किया।

“अपना अपना मत है। गुरुजी ने निर्विकार पथ कि स्थापना की है और नर्मदा को ही सब कुछ मानते हैं।” चौबे जी ने कहा।

“कब बनाया यह पथ?”

“गुरुजी ने यही कोई बीस बरस पहले बनाया था।”

“पहले स्वयं किसी के साथ रहे होंगे?”

“नहीं गुरुजी पहले शासकीय सेवक थे। किसी बात पर किसी बड़े महात्मा से विवाद हो गया। नौकरी छोड़ सन्यास ले लिया और माँ नर्मदा कि आराधना की बरसों” चौबे जी बताने लगे।

“फिर?”

“माँ साक्षात् प्रसन्न हुईं। वे भी इतने भक्त है माई के कि सिर्फ नर्मदा जल लेते हैं और भोजन पानी कुछ नहीं” तेजबल बोले।

“सिर्फ जल पर कैसे रह लेते हैं। कितनी उम्र हो गयी उनकी।”

“उमर का तो कुछ बता नहीं। पर तेज और वाणी में ओज इतना है कि अच्छे अच्छे युवा फैल हो जायं उनके आगे। आपको उनका एक भजन सुनाते हैं” कहते हुए चौबे जी ने यू ट्यूब पर एक भजन लगा दिया, सचमुच बड़ा कर्ण प्रिय था, उसके बोल थे।

“अमरकंट से आई रेवा मैया” श्री बाबा श्री की आवाज़ सचमुच दमदार थी।

“बहुत अच्छा लगा आपसे मिलकर। अब हम चलना चाहते हैं।” मैंने कहा और राजा को इशारा किया चलने का।

“यहाँ के छोटे महाराज जी से मिल लें” तेजपाल बोले तभी अंदर से एक तेजस्वी सज्जन आते दिखे। ऊँचा, बलिष्ठ शरीर, चेहरे पर तेज उमर कोई पचास के आसपास। परिचय हुआ तो उन्होंने अंदर बैठने का आग्रह किया और सबको चाय पिलाने का सेवकों को आदेश भी।

“आप कब से जुड़े हैं” जब बैठ गये तब पूछा मैंने।

“अनेक बरस हो गये।”

“कहाँ के रहने वाले हैं?”

“गाडरवाड़ा” उन्होंने संक्षिप्त उत्तर दिया।

“क्या नाम है आपका?”

“जितेन्द्र पाराशर।”

“ये लोग बता रहे थे कि निर्विकार पथ बनाया है बाबा जी ने, यह क्या है।”

“निर्विकार पथ अलग से उपासना की कोई पद्धति नहीं है। जो आप करते हैं, या जो कर थे हैं उसी को व्यवस्थित करना, हर क्रिया को एक रीति से बांधना और जीवन के छोटे-छोटे नियम बनाना जैसे स्वच्छ शरीर के साथ स्वच्छ वस्त्र, नर्मदा को माँ माना है तो उसे दूर से प्रणाम, यदि पास जाओ तो सिर्फ आचमन, भोजन में प्याज लहसन का त्याग और कुछ योग क्रियाएं बस यही है निर्विकार पथ। वास्तव में यह बेतरतीब जीवन को व्यवस्थित करने की कला है।” जितेन्द्रजी जी समझा रहे थे, तभी चाय आ गयी और हमने चाय के साथ ही वहां से विदा ली।

गाडरवाड़ा पहुंचे तब तक सायं के 6 बज गये थे। भूख से बुरा हाल था, सो रास्ते के एक रेस्टोरेंट पर खाना खाया तब जाकर जान में जान आई।

अब गाड़ी होशंगाबाद की और दौड़ रही थी और मेरी विचार शक्ति मन को दौड़ा रही थी। आज जो भी तीन महत्वपूर्ण स्थान देखे तीनों ही किसी न किसी व्यक्ति द्वारा बनाये गये थे।

“प्राचीन काल में लोग तपस्या कर बड़ी-बड़ी सिद्धि पा लेते थे।” मन कह रहा था।

“ये झूठ है” मन ने ही मन को एनकाउंटर किया।

“तब सच क्या है?”

“सच ये है कि आज भी लोग जप, तप, साधना से बड़ी-बड़ी सिद्धि पा लेते हैं।”

यह बात तो आज के भ्रमण से सिद्ध हो गयी। चाहे झोतेस्वर हो, श्री बाबा श्री धाम हो या फिर हीरापुर। ये तीनों ही अलग अलग तीन व्यक्ति द्वारा स्थापित हुए जिनकी पृष्ठभूमि कतई अमीर घराने की नहीं, तीनों ही अपना सब छोड़कर आये, तीनों ने शून्य से शुरुआत की। तीनों ने ही कोई व्यापार नहीं किया, कोई उद्योग नहीं लगाये सिर्फ जप तप साधना की अलग-अलग स्थानों पर। हाँ नर्मदा तीनों की कहानी में कामन फैक्टर रही।

हम जैसे साधारण लोग एक स्थान पर इतना बड़ा स्थापत्य पूरे जीवन काल में नहीं कर सकते और ये लोग खेल खेल में बड़े साम्राज्य बनाये बैठे

हैं। वो भी एक जगह नहीं, कई जगह। तो क्या इसका यही मतलब नहीं कि आज भी जप तप से सिद्धि मिलती है, विशेषकर नर्मदा को केंद्र में रख कर जिसने भी लम्बी साधना, अनुष्ठान किये वे सन्यासी होते हुए भी वैभव सम्पन्न हो गये। बिना तिलक के राजा हो गये।



@EBOOKSIND



## राजघाट

“दो ही राजघाट हैं। एक यहाँ, एक दिल्ली में” बगल में खड़े सज्जन बोले तो मैं चौंक गया।

“जी??”

“जी हाँ, ये जो आप देख रहे हैं छोटी-सी मठिया। इनमें गाँधी जी की अस्थियाँ दबी थीं।”

“गाँधी जी की अस्थियाँ!! क्या कह रहे हो??” मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

“हाँ सर ये सही है। गाँधी जी की अस्थियाँ चार स्थानों पर हैं इनमें एक स्थान यह राजघाट भी है।”

मेरे साथ आये मगन ने कहा।

इस समय मैं बड़वानी के राजघाट पर था। नर्मदा किसी सागर की भाँति सामने हिलोरे ले रही थीं। काफी नाम सुना था राजघाट का। एक तो इसलिए कि यह मध्यप्रदेश में नर्मदा का आखिरी घाट था, इसके बाद वह महाराष्ट्र होते हुए गुजरात में प्रवेश करती हैं। ओर दूसरा नर्मदा बचाओ आन्दोलन का यह केंद्र बिंदु होने से आये दिन इसके बारे में पढ़ते रहते थे।

“तो क्या दिल्ली वाले राजघाट के नाम पर ही इसका नाम राजघाट पड़ा” मैंने पूछा। “अब ये पता नहीं है सर” मगन ने अनभिज्ञता बताई।

“पर ये संभव है कि इस राजघाट के नाम पर ही दिल्ली में गांधीजी की समाधि का नाम राजघाट पड़ा। क्योंकि वहां तो कोई घाट है नहीं, वो तो यहीं है। नर्मदा किनारे। तो क्या जैसे नर्मदा किनारे ग्वारी घाट, जैसे सेठानी घाट वैसे ही यह राजघाट” मेरे मन में विचार कौंधा।

“अब डूब क्षेत्र में आने से इसे शिफ्ट कर दिया है मण्डी प्रांगण में” मगन मुझे गौर से उस मठिया की ओर निहारते देख बोले।

“तभी मैं कहूँ ये इतनी उजाड़ क्यों लग रही है जबकि घाट बहुत सुंदर है।”

“आधा तो डूबा है साब नहीं तो आपको और खूबसूरत दिखता” वे ही सज्जन बोले।

“पर यहाँ नर्मदा का सौन्दर्य देखते ही बनता है। इतना चौड़ा पाट तो मैंने कहीं नहीं देखा।”

“झाबुआ जिले को जोड़ने वाला यह पुल भी एक दो दिन में डूब जायेगा।” उन्होंने पास के एक पुल की ओर इशारा करते हुए बताया जो सचमुच नर्मदा से टकरा रहा था।

“काफी पुराना है। अब लोग कैसे पार जायेंगे?”

“ये तो यहाँ के राजा ने बनवाया था। अब नया ऊँचा पुल कुछ दूरी पर बन गया है।”

“क्या? यहाँ राजा भी थे?”

“थे नहीं अभी भी हैं उनके वंशज मृगेंद्र सिंह। बड़वानी राजपरिवार ने ही यहाँ विकास कराया है जो आप देख रहे हैं।”

“राजा ने बनवाया इसीलिए तो इसका नाम राजघाट नहीं पड़ा।” मैं फिर सोचने लगा।

“आप क्या यहीं रहते हैं?” मैंने उन सज्जन से पूछा।

“पास में गाँव है।”

“यहाँ काम से आये होंगे?”

“बस नर्मदा जी के दर्शन को आते रहते हैं यहाँ अक्सर।”

“क्या नाम है आपका?”

“अमर सिंह पटेल।”

“अमर सिंह जी नर्मदा में आपकी बड़ी आस्था है?”

“नर्मदा को तो सभी मानते हैं साब” इस बार उनके साथ के सज्जन बोले।

“चलिए सर वोटिंग करते हैं” मगन ने कहा तो सागर जैसी नर्मदा पर नाव से ही सही, तैरने का रोमांच से स्वयं को रोक नहीं पाया।

स्वच्छ हरे जल पर तैरती मोटर बोट और उसमें बैठे दूर-दूर तक नर्मदा की चंचलता, अलहड़पन का दीदार करते स्वयं को भी किसी राजपरिवार का समझ रहे थे जो अपने राजघाट का मुआयना कर रहा हो। माँ को प्रणाम किया, झुक कर जल हाथ में ले आचमन किया।

आश्चर्य! इतना स्वादिष्ट कभी नहीं लगा नर्मदा जल। एक और आश्चर्य... घोर वारिश के कारण सब जगह नर्मदा का पानी मटमैला हो गया था पर यहाँ इतना साफ कैसे। इसी पहेली की उधेड़बुन में था कि बोट वाले ने किनारे लगा दिया। उतर कर आये देखा अमरसिंह और उनके साथी अभी भी खड़े थे जैसे हमसे और बात करना चाहते हों। पास में मन्दिर था, मगन ने बताया कि प्रसिद्ध स्थान है, डूब में यह भी डूबने लगता है। जाकर दर्शन किये।

“किसका मन्दिर है?” अंदर मूर्ति को प्रणाम कर पुजारीजी से पूछा।

“दत्त भगवान का।”

“अरे हाँ! मुझे याद आया, अनेक स्थानों पर पढ़ा था कि यहाँ राजघाट पर दत्त भगवान का प्रसिद्ध मन्दिर है।” मैं मगन को बताने लगा। सचमुच राजघाट के सौन्दर्य ने इतना अचम्भित कर दिया कि भूल ही गया, जबकि अनेक बार नर्मदा परिक्रमा पथ का नक्सा गूगल मैप में देखते समय दत्त मन्दिर की लोकेशन देखी थी। “दत्त भगवान का मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध है। यहाँ इस एरिया में दत्त भगवान को बहुत मानते हैं। महेश्वर में भी दत्त भगवान का मन्दिर है” अमरसिंह और उनके साथी के पास आकर मैंने कहा।

“दत्त भगवान विष्णु के उपासक और नर्मदा को मानने वाले थे। हमारे यहाँ के दत्त भगवान की प्रतिमा जैसी आपको इनकी कहीं देखने को नहीं मिलेगी।”

“सो कैसे?”

“यहाँ दत्त भगवान का एक ही मुख है, जबकि उनकी तीन मुख वाली प्रतिमाएं होती हैं।”

“हाँ ये तो सही है। ये सामने भवन कैसा?” एक बड़े सार्वजनिक भवन को देखते हुए मैंने पूछा।

“ये परिक्रमा वासियों के लिए बना है। सभी समाज के लोग मदद करते हैं और परिक्रमावासियों को रूकना खाना सदावत कि व्यवस्था करते हैं” अमरसिंह के साथी बोले।

“यहाँ परिक्रमावासी आते रहते होंगे।”

“जो भी नर्मदा माई की परिक्रमा करता है, चाहे पैदल या गाड़ी से, यहाँ ज़रूर आता है” अमरसिंह गर्व से बोले।

“ये लोग भी परिक्रमा वासी हैं?” भवन के सामने जमीन पर बैठे करीब सैकड़ा से अधिक स्त्री पुरुष को देखते हुए मैंने पूछा।

“नहीं साब ये तो नर्मदा बचाओ आन्दोलन वाले हैं।”

“मतलब? ये क्या बैठे ही रहते हैं? कोई मांग होगी इनकी?”

मांग क्या, वही मुआवजा।”

“मुआवजा! तो क्या मिला नहीं इन्हें।”

“सब मिल गया साब। सरकार ने भरपूर मुआवजा देकर इनकी जमीन ली। मुआवजा भी ले लिया और जमीने भी नहीं छोड़ी। और और मांगते रहते हैं।”

“और सरकार?”

“एक बार तो दवाब में आकर दुबारा भी दे दिया, पर फिर वही कहानी।”

“भेधा पाटेकर के कारण भी सरकार पर इनका दवाब रहता है।” इस बार मगन ने जोड़ा।

“हाँ कल रात को अजय भी बता रहे थे” मैंने कहा और हम लोग अमर सिंह और उनके साथी से विदा ले, गाड़ी में बैठ वहां से वापस बड़वानी की ओर चल दिए।

हाल ही में मेरा होशंगाबाद से हरदा स्थानान्तरण हुआ तो नर्मदा माँ की कृपा जान चला आया। क्योंकि सेवाकाल में दो बार होशंगाबाद आया और दोनों बार बिना मन के। पर इस बार तो इन ढाई साल में माँ से ऐसी लग्न लगी कि यही कहता जब भी माँ के सामने जाता कि अब अपने से दूर न करना। तो जब हरदा सुना, यही लगा कि माँ अपने से दूर नहीं करेगी। नर्मदा परिक्रमा पथ देखता रहता था गूगल में और सोचता था कि होशंगाबाद से हंडिया नेमावर तक की यात्रा के बाद यह कहने कि स्थिति में था कि

महेश्वर तक नर्मदा पथ देख लिया है। क्योंकि ओमकारेश्वर और महेश्वर यहाँ तक कि सहस्त्रधारा तक पहले हो आया था पर बीच का भाग छूटा था जिसे नेमावर यात्रा ने पूरा कर दिया था कुछ माह पूर्व।

अब बात थी आगे बढ़ने की। सरकारी नौकरी में रहते टुकड़े-टुकड़े में ही नर्मदा की यात्रा को देखा जा सकता था। पर इच्छा रहती थी पूरा पथ देखने की। जिस दिन हरदा ज्वाइन करने गया तो पहले हंडिया जा कर माँ नर्मदा और रिध्दनाथ के दर्शन किये और जब वहीं फोन से फरमान मिला कि बड़वानी जाकर प्रोजेक्ट को देखा जाय। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही कि इतनी जल्दी आगे की यात्रा हो जाएगी।

अगले सप्ताह ही जाने की योजना बनाई। इंदौर होते हुए ए.बी. रोड़ पर आगे बढ़ा और शाम होते होते खलघाट पर नर्मदा को पार किया। अब मैं नर्मदा के दक्षिण तट पर था। सुबह दक्षिण से उत्तर में आया था और अब फिर दक्षिण तट। नर्मदा ने यह तो पक्का नियम बना लिया है कि अगर एक बार एक तट से पार की तो उसी तट पर आने दुबारा पार करना होगा फिर वो चाहे कितनी भी दूर की यात्रा के बाद हो।

खलघाट के दोनों घाटों पर कई छोटे बड़े मन्दिर बने थे। अँधेरा होने से कोई मन्दिर तो नहीं जा पाया पर अनगिनित गाड़ीयों के शोर से गुंजायमान राष्ट्रीय राजमार्ग पर नर्मदा की कल-कल कानों को बहुत भा रही थी। बड़वानी पहुँचने पर विभागीय अधिकारी अजय गुप्ता से पता चला कि नर्मदा बचाओ आन्दोलन के सदस्य मेघा पाटकर के नेतृत्व में बड़वानी में डेरा डाले हैं इसलिए रेस्ट हाउस की जगह होटल में रुकने की व्यवस्था की गयी थी। होटल ठीक-ठाक था। दिन भर के थके होने से अच्छी नींद आयी। सुबह 9 बजे अजय मगन रघुवंशी के साथ आये। 11 बजे तक काम निपट गया तो अजय ने अन्य स्थान दिखाने मगन को साथ कर दिया।

सबसे पहले बावनगजा। मगन के साथ विश्वप्रसिद्ध बावनगजा देखने निकल पड़े। रात को ही आते समय बावनगजा के साइन बोर्ड देखे तब पता लगा कि वो यहाँ हैं। होटल में अलसुबह ही वरिष्ठ अधिकारी का फोन आया और उन्होंने बावनगजा ज़रूर देखने की सलाह दी।

सतपुड़ा की वादियों में बसा बड़वानी प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर था, जिस पर बावनगजा का रास्ता तो और भी रमणीय था। पूरे 10 कि.मी. के रास्ते पर पहाड़, खाइयाँ ओर जंगल था।

“घने जंगलों में बनाया है बावनगजा जैन सम्प्रदाय ने” मैंने कहा।

“सर, कहा तो यह जाता है कि यह बावन गजा दरअसल प्राचीन काल में यहाँ के स्थानीय आदिवासियों द्वारा बनाई गयी घटोत्कच की मूर्ति है” मगन बोले।

“घटोत्कच??”

“हाँ सर, भीम के पुत्र घटोत्कच के उपासक थे यहाँ के आदिवासी। मान्यता है कि अपने वनवास काल में यहाँ आये थे पांडव और यहीं भीम हिडिम्बा का मिलन हुआ और घटोत्कच का जन्म।”

“क्या ऐसे चिन्ह मिलते हैं जिससे लगे कि पांडव यहाँ आये थे?”

“सतपुड़ा के जंगलों में वनवास अवधि गुजारने के कुछ कुछ वर्णन आस-पास मिल जाते हैं।”

“संभव है क्योंकि सतपुड़ा से पांडवों का वास्ता रहा है। पचमढ़ी में भी इनके चिन्ह हैं, भीमबैठका में भी वर्णन है।”

“बावन गज की मूर्ति एक ही शिला में उकेरी गयी थी और कहते हैं कि ये काम बहुत पहले आदिवासियों ने किया था जिसे बाद में जैन सम्प्रदाय ने लेकर आदिनाथ की प्रतिमा के रूप में परिवर्तित कर दिया।”

“आदिवासियों ने विरोध नहीं किया??”

“घने जंगल में कभी बनाई प्रतिमा की देखभाल रोजी-रोटी में लगे आदिवासी भी नहीं कर पा रहे थे। दूर दूर तक बिखरे लोगों को जैन सम्प्रदाय आकर्षक धनराशि देकर उनकी जमीने ले लीं। अब तो बहुत कम आदिवासी इस पहाड़ी क्षेत्र में रह गये हैं। जो बचे भी हैं वे भी धीरे-धीरे जा रहे है।”

“यानि सब को लालच देकर खरीद लिया?”

“सर लालच भी कह सकते है और यह भी कि सभी के जीवन में कभी न कभी यह समय आता है जब उन्हें अपना कुछ न कुछ बेचना ही पड़ता है” मगन दार्शनिक अंदाज़ में बोले।

“सच कह रहे हो मगन।”

“हाँ सर ज़िन्दगी छोटी नहीं होती। 70-80 साल बहुत होते हैं। न जाने कितने उतार-चढ़ाव आते हैं।”

मगन अपनी बातों से मुझे प्रभावित कर रहे थे। तभी गाड़ी पहुंच गयी मुख्य द्वार पर। अंदर प्रवेश करते ही चारो तरफ हर भरा साफ सुथरा मीलों फैला परिसर, जिसमें जगह-जगह धर्मशालाएं, बाजार, कुए, बावड़ी, स्नानगार, होटल बने थे। लगभग दो कि.मी. चलने के बाद हम पहुंच गये बावनगजा।

ऊँची पहाड़ी पर बनी विशाल प्रतिमा जो गाड़ी पार्किंग स्थल से ही स्पष्ट दिख रही थी। अब धूप तेज होने लगी थी। एक बार तो लगा कि क्या चढ़कर जाय यहीं से तो दिख रहा है, पर फिर सोचा जब यहाँ तक आये हैं तो ऊपर ज़रूर जायेंगे। सीढ़ियां चढ़ कर उस प्लेटफार्म तक पहुंचे जहां से वह विशाल प्रतिमा शुरू होती थी। पर्याप्त ऊंचाई का वह स्थान चारों ओर हरी भरी पहाड़ियों से घिरा, कहीं कहीं तो बादल पहाड़ों से ही टकरा रहे थे और कहीं पहाड़ों से भी नीचे थे। मोहक दृश्य था।

आदिनाथ भगवान कि विशाल प्रतिमा 84 फीट ऊँची थी। ऊपर महामस्तिकाभिषेक के लिए स्थान भी बना था। पास ही आदिनाथ भगवान का वृतांत स्पष्ट लिखा गया था। जैन धर्मावलम्बियों के साथ सामान्य पर्यटकों की भी अच्छी खासी भीड़ थी। पर बड़ी शांति थी वहां जैसे स्वयं आदिनाथ जी की उपस्थिति का आभास हो रहा था और लोग मन्त्र मुग्ध कभी प्रतिमा कि भव्यता को तो कभी आस-पास के वातावरण को देख रहे थे। कुछ समय वहां बैठे फिर राजघाट के लिए चल दिए।

बड़वानी की यात्रा उम्मीद से बढ़ कर प्रफुल्लित करने वाली रही। लौटने में मनावर होते हुए इन्दौर जाने वाला रास्ता लिया। चारों ओर हरे भरे खेत और उनमें लगी फसलें देख कर यही लगा कि क्यों इस एरिया को पिछड़ा कहते हैं जबकि कैंशक्रॉप खेतों में लगी मैंने सात गिनी। केला, अंगूर, संतरा, कपास, मक्का, मिर्ची, जैसी फसने खेतों में खड़ी थीं और ड्रिप इरीगेशन के पाइप फैले थे उनमें।



## फार्मूला फिपटी-फिपटी

आज सर्व पितृ मोक्ष अमावस्या के दिन फिर से सायंकाल में माँ नर्मदा के दर्शन कर रूकी हुई बात को आगे बढ़ाता हूँ। हरदा आये हुए दो माह हो गये पर बात थी कि जम ही नहीं पा रही थी। होशंगाबाद में रोज के दर्शन सुलभ थे पर हरदा में पूर्णिमा और अमावस्या का हंडिया नेमावर जाना निश्चित किया था। नेमावर हंडिया नर्मदा किनारे के तीर्थों में सबसे प्रमुख है और यह आज वहां जाकर जाना। लाखों लोग आये थे स्नान के लिए। दो दिन से इन्दौर नागपुर राजमार्ग पूरी तरह बंद कर दिया था क्योंकि भीड़ एक दिन पहले ही आने लगती है। इतना ही नहीं लोगों ने बताया कि एक रात पूर्व काली रात होती है जब यहाँ रात भर तांत्रिकों का जमावड़ा भूतों को भागने, प्रेतों को मनाने लगा रहता है। दूर-दूर से लोग प्रेत बाधा के निदान हेतु यहाँ आते हैं और सारी रात तांत्रिकों के मन्त्र, लोगों की विचित्र आवाजें, घंटा, घडियाल की ध्वनियाँ अन्य लोक का अहसास कराती है। न जाने कितने साधू सन्यासी अमावस की डूबकी लगाने कुछ रोज पहले से ही इकट्ठे हो जाते हैं। “नेमावर से लेकर पश्चिम में 20 कि.मी. का बागदी नदी संगम तक की भूमि जप तप के लिए सबसे पवित्र है। यहाँ की गयी तपस्या तुरंत और कई गुना अधिक फल देती है। इसीलिए प्राचीन काल से यह ऋषि, मुनियों की पसंदीदा जगह थी।” उस दिन स्वामी जी बता रहे थे।

कुछ ही दिन पहले नेमावर के आगे नर्मदा किनारे मंडलेश्वर ग्राम जाने का अवसर मिला। नेमावर के अनिल तिवारी जी वहां स्वामी निरंजनानन्द से मिलवाने ले गये थे। गाँव से बाहर बीच खेत में नर्मदा किनारे बने उनके तुर्यातीत योग आश्रम में स्वामी जी के पास कुछ समय बैठने का अवसर मिला। बड़ी शांति थी वहां। पक्का दो मंजिला बना कुटी नुमा आश्रम, सामने



बहती नर्मदा और आश्रम में स्वामी जी के साथ उनका एकांत। पचास की वय के स्वेत धवल वस्त्रों में छरहरे बदन के स्वामी जी किसी योगी की भांति प्रभावी लग रहे थे।

“आप अकेले इतनी दूर रहते हैं। कोई यदा-कदा ही आ पाता होगा?”

“कोई आता है तो वापस चला जाता है क्योंकि बहार गेट पर हमेशा ताला पड़ा रहता है” तिवारी जी बताने लगे।

“यदि किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो कैसे?”

“आवश्यकता है ही नहीं। यदि आवश्यकता ही शेष रह गयी तो फिर इस एकांत का क्या अर्थ? सब छोड़ कर आने का क्या अर्थ। यहाँ भी यदि संसार की ज़रूरत महसूस करें तो यहाँ आने की ज़रूरत ही क्या थी?”

मतलब?” मैं कुछ-कुछ प्रभावित होने लगा था।

“यदि सांसारिक ही रहना होता तो गृहस्थ बनता। आप लोगों की तरह। यदि एकांत नहीं रमता तो भोगी होता योगी नहीं। क्योंकि एकांत भोगी के लिए विष है और योगी के लिए अमृत।”

“हाँ हम गृहस्थ लोग इसके महत्व को क्या जाने, हमारे लिए तो यह सब दुष्कर है जो आप योगी करते हैं।”

“गृहस्थ जीवन ही दुष्कर है और इसीलिए मैं गृहस्थ आश्रम को सबसे बड़ा और चुनौती पूर्ण आश्रम मानता हूँ। हम लोगो का क्या आज यहाँ है कल कहीं और चल देंगे। पर आप लोग तो कर्तव्यों से बंधे हैं। रिश्तों से बंधे हैं। परिवार, काम, समाज सबके बीच संतुलन बनाके रहते हैं।”

“पर स्वामी जी जप तप पूजन को उतना समय नहीं निकाल पाते हम सांसारिक लोग।”

“अपनी दिनचर्या में जितना समय निकाल लो उतना ही काफी है। अपने इष्ट के सामने दो मिनट बैठ गद गद कंठ से उनका स्मरण करना। यही सच्चा भगवत भजन हैं, और इतना पर्याप्त है।”

“आपने कहा गद गद कंठ से। इसका क्या आशय है?”

“पूरे भाव के साथ, मन को इष्ट के चरणों में समर्पित कर, जो है सो तेरा है। यह कहते हुए आँखें गीली हो जायं, गला भर्रा जाय। यही attitude of gratitude है, उसके प्रति अहसानमंदी का भाव है।”

“मन का समर्पण तो तब हो जब मन लगे। मन कहाँ लगता है।”

“हाँ ये समस्या है और ये साधारण समस्या नहीं है। मन नहीं लगता, घंटों बैठ पाठ कर लेते हैं पर मन नहीं लगता। मन समझाने से लगता भी नहीं है, कहने से मानता भी नहीं है।”

“फिर क्या उपाय है?”

“अभ्यास, निरंतर अभ्यास। जिसने मन को बांध लिया उसने सब कुछ पा लिया। ज्यों-ज्यों वय गुजरे मन को संसार से डिटेच और भगवान से अटेच करने में लगाने का अभ्यास करना चाहिए” कहते हुए स्वामी जी उठे और स्वयं किचन में हमारे लिए चाय बनाने चले गये।

“स्वामी जी गुजरात के एक समृद्ध परिवार के इकलौते पुत्र थे। नर्मदा किनारा ऐसा भाया कि सब छोड़ यहाँ आ गये। अपनी एकांत साधना में तल्लीन रहते हैं। पहले हंडिया में आकर कुछ समय रहे तब कुछ हम जैसे लोगों ने मिलकर यह आश्रम बनवा दिया। अब यहीं रह कर साधना करते हैं।” तिवारी जी बताने लगे। तब तक मेरी नजर एक फ्रेम पर गयी जिसमें लिखा था कि ‘मौन रहे’।

“तिवारी जी इसमें लिखा है कि मौन रहें। तो क्या हमने स्वामी जी को डिस्टर्ब किया।”

“स्वामी जी अधिकांश समय मौन रहते हैं और अपनी भक्ति साधना में लगे रहते हैं इसलिए यह लिखा है। मैंने उनसे यहाँ आने कि इजाजत ले ली थी इसलिए डिस्टरवेन्श का सवाल ही नहीं। हाँ हर वक्त उनके पास नहीं आया जा सकता” तिवारी जी बोले तब तक स्वामी जी चाय ले आये।

“कहीं हमारे आने से आपको ध्यान में अवरोध तो नहीं हुआ स्वामी जी।”

“ये समय साधना का नहीं है इसीलिए आने का बोल दिया था।”

“यदि कभी आना चाहें आपके पास परिवार सहित तो किस समय उचित रहेगा।”

“सायं 4 से 6 का गैप रहता है।”

“और सारे दिन भजन, साधना?”

“सारे दिन क्या सारी रात भी करते रहते हैं” तिवारी जी बोले।

“सारी रात??” मैं स्वामी जी का मुख देखने लगा।

“हाँ रात्रि में साधना का समय सबसे उत्तम होता है।”

“कहाँ करते हैं?”

“ऊपर एक अलग कक्ष है। आइये आपको दिखाते हैं” कहते हुए वे हमें ऊपर ले गये। ऊपर एक बड़ा हाल उनके विश्राम हेतु था और उसी से लगी बालकनी में एक छोटा कक्ष था जिसका मुख सीधे नर्मदा की ओर था।”

“अरे यहाँ से तो नर्मदा जी सामने ही दिखती हैं” मैं प्रफुल्लित हो बोला।

“बस यहीं बैठ माँ से साक्षात्कार करते हुए पूरी रात कब साधना में निकल जाती है। पता ही नहीं चलता।” स्वामी जी बोल रहे थे और मैं वहाँ से माँ नर्मदा का सौन्दर्य, उसके तटों की खूबसूरती, चारों ओर हरियाली, खेत देख कर मोहित हो रहा था।



“पापा इतना अच्छा तो पहले कभी नहीं लगा जबकि हम कई बार आये हैं” शालिनी बोली तो मैं जैसे पलैशबेक से वापस आया। हम बाप बेटी इस समय हंडिया में रिश्द नाथ मन्दिर के पास खड़े थे। बेटी कभी नीचे बहती नर्मदा को निहारती कभी सामने नेमावर के तटों का नयनाभिराम दृश्य देखती।

“आज दोनों तटों पर लोगों का हुजूम है जो स्थान को और सुंदर बना रहा है” मैंने कहा और मेरी दृष्टि नर्मदा के बहते पानी पर ठहर गयी। लगता था जैसे नर्मदा यहाँ बह नहीं, तैर रही है। उसकी तैरती लहरों ने जैसे मुझमें सम्मोहन जगा दिया हो और विचार थे जो मुझमें तैरने लगे। मुझे स्वामी निरंजनानन्द जी की कही बात याद आयी कि मन को अभ्यास से भगवान में लगाना चाहिए और वय के अनुसार संलिप्तता और निर्लिप्तता घटनी बढनी चाहिए।

“फार्मूला फिफ्टी फिफ्टी...” अचानक मैं बुदबुदाया।

“क्या पापा?” बेटी ने अचरज से पूछा।

“कुछ नहीं बेटा” मैंने उत्तर दे दिया पर विचार तेजी से अंदर बहने लगे, हिलोरे मारने लगे नर्मदा की तरह।

“फार्मुला फिफटी फिफटी ...यानि पचास की वय आते ही इन्सान को आधा आधा हो जाना चाहिए। आधा संसार में और आधा भगवान में। आधा समय सांसारिक कर्तव्यों में आधा समय इष्ट भक्ति में। यही है संसार से निर्लिप्तता और भगवान से जुड़ाव। वय बढ़ने के साथ यही निर्लिप्तता बढ़नी चाहिए, संसार से संलिप्तता घटनी चाहिए। जब साठ पर पहुँचे तो यह अनुपात 60 : 40 का हो जायेगा। यानि अब साठ प्रतिशत समय भगवान में और चालीस प्रतिशत संसार में। जब सत्तर के हों तो सत्तर प्रतिशत जीवन का समय भगवान में और अब तीस प्रतिशत रहे संसार में। यदि ऊपर वाला मौका दे और अस्सी पर पहुँच जाय तो अब होगा अस्सी प्रतिशत समय भगवान का और सिर्फ बीस प्रतिशत संसार का। यदि किसी की नब्बे की आयु हो जाय तो उसे नब्बे फीसदी समय भगवान में और मात्र दस फीसदी संसार में लगाना चाहिए। यदि कोई भग्यशाली शातयु हो जाय तो ...तो इसमें उसकी कोई बड़ाई नहीं। क्योंकि उसका तो कुछ अब बचा ही नहीं। सब कुछ भगवान का है, अब तो शत प्रतिशत जीवन परमात्मा में लगना चाहिए।”

यही है संलिप्तता से निर्लिप्तता की यात्रा। यही है अभ्यास की निरंतरता, मन के हिसाब से न चल उसे अपने अनुसार चलाने का गुर, स्वयं को खोजने का विज्ञान।



## गंगेश्वरी मठ

कहते हैं दुनिया बहुत छोटी है, और मुझे यह रह रह कर कुछ महीनों से आभास हो रहा था। जब हंडिया आया था पहली बार तो यह नहीं मालूम था कि यहाँ पोस्टिंग पर रहने आना होगा। जब उत्तर तट के छीपानेर गया था तो क्या पता था कि एक दिन दक्षिण तट के छीपानेर पर ड्यूटी में जाना होगा।

गोंदा घाट के बारे में, जब से आया हरदा, तब से सुन रहा था कि दर्शनीय स्थल है। छीपानेर पहुंचने से पहले दायें रास्ता गया है। प्लान बनाया जाने का और आज पहले छीपानेर जाकर कार्य किया, नर्मदा घाट देखा जो बिलकुल गाँव से लगा था और यक़ीनन उत्तर तट के मुकाबले रौनक दार नहीं था। हालाँकि फ्लैट नाव यहाँ भी चलती थीं जो वाहनों को सीधे भोपाल मार्ग से जोड़ देती थीं और हरदा वालों को भोपाल की दूरी तीस कि.मी. तक कम कर देती थीं। पर जो जीवंतता उत्तर की छीपानेर में है वो यहाँ नहीं।

छीपानेर से वापस चले तो करीब दो कि.मी. बाद बाएं ओर मार्ग मिला जहाँ लिखा था गंगेश्वरी मठ गोंदा गाँव 3 कि.मी.। गाड़ी सीधे गाँव तक पहुंची और थोड़ा ही आगे चले कि मठ स्थल तक बिना बाधा पहुंच गये। गाड़ी से उतरते ही अद्भुत नज़ारा देखने को मिला। ऊँची कगार के सामने बहती नर्मदा, दाहिनी ओर से आती नदी जिसका संगम सामने ही नर्मदा में हो रहा था। पीठ पीछे सफेद मठ, एक नहीं अनेक, सब एक जैसे।

चकरधिन्नी हो गये। आगे देखें, पीछे देखें या दायें। जिधर देखो उधर ही अपार खूबसूरती। तभी एक युवा सन्यासी नीचे से पानी लाते दिखे। सोचा इन्ही से बात की जाय।

“आप क्या यहीं रहते हैं?” बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

“हाँ कभी कभी।”

“ये कौनसी नदी है, जिसका संगम हो रहा है।”

“गोमती नदी है, बड़ी महिमा है इस स्थान कि। यहाँ तीन नदियों का संगम है” वे बोले।

“तीसरी कौनसी?”

“गंजाल।”

“क्या कहा गंजाल का संगम यहाँ पर है?” अब मुझे अपनी नीलकंठ यात्रा याद आने लगी जो कुछ ही महीने पहले हुई थी।

“हाँ गोमती के समानांतर, वह देखिये पहाड़ी के पीछे आपको गंजाल नर्मदा में मिलती दिखेगी।”

“उन्होंने कहा तो गौर से देखा सचमुच पहाड़ी के नीचे गंजाल मिल रही थी नर्मदा में। आश्चर्य!”

विहंगम था नर्मदा का दृश्य। बलखाती आती नर्मदा एक साथ दो-दो नदियों के मिलने से और भी इठला रही थी। सामने उस पार घाट के साथ एक गाँव भी दिख रहा था।

“ये कौनसा गाँव है?”

“टिगारी।”

“टिगारी!” अब तो जैसे सब कुछ याद आ गया। नीलकंठ यात्रा के दौरान महेश शर्मा मुझे पातालेश्वर ले गये थे तब उस पार से यह खूबसूरत सफेद जगह दिखी थी और मैंने पूछा था। शर्मा ने इसे गंजाल का संगम गोवन्दा घाट कहा था। अब मुझे लग रहा है कि उच्चारण में ग़लती रही हो या सुनने में पर यह था गोंदा घाट। और जहाँ से इसे देखा था वह था टिगारी गाँव। तो है न दुनिया छोटी...।

गोंदा मठ के बारे में जानकारी चाहने पर वे हमें परिसर में अंदर ले गये। पहले सबसे बड़े मठ के दर्शन करने को कहा। मैं अपने चालक के साथ गया। ऊँचे प्लेटफार्म पर गुम्बद के नीचे शिव लिंग स्थापित था और बाहर नंदी विराजे थे।

“ये तो शिव जी का मन्दिर है” दर्शन कर आने के बाद मैंने उनसे कहा।

“नीचे महाराज जी की समाधि है जो यहाँ के मठ संस्थापक थे।”

“यानि नीचे समाधि उपर शंकर जी।”

“हाँ नागा सम्प्रदाय में लिंग पूजन की मान्यता है इसीलिए समाधि के ऊपर शिवलिंग है।”

“पर ये तो अनेक मठ बने हैं जिनमे शिवलिंग हैं।”

“ये सभी यहाँ के महंत गण की समाधि हैं। कुल ग्यारह समाधि हैं।”

“अर्थात जैसे-जैसे मठाधीश शरीर छोड़ते गये वैसे वैसे समाधियाँ बनती गयीं?”

“बिल्कुल सही।”

“कितने साल पुराना है यह मठ।”

“हजार, ग्यारहसौ साल पहले महाराज जी यहाँ आये थे। इस त्रिवेणी संगम को उन्होंने अति पवित्र स्थान मान कर अपना आश्रम बनाया।”

“क्या नाम था महाराज जी का?”

“स्वामी अमृतानन्द भारती। त्रिकालदर्शी थे महाराज, उनके किस्से आज भी क्षेत्र में सुने जा सकते हैं।”

“वह तो यहाँ खड़े होने पर ही आभास हो रहा है।”

“चैतन्य गंगेश्वरी मठ है यह, आपको चारों ओर चैतन्यता दिखाई देगी। एक और विशेषता है यहाँ की। आपने हनुमान जी और गणेश जी की प्रतिमा के दर्शन किये?”

“हाँ, बड़ी विचित्र बात है, दोनों खुले में रखी मूर्तियाँ विपरीत दिशा में मुख किये हैं।”

“यही तो विशेषता है। गणेश जी नर्मदा की ओर देख रहे हैं अर्थात उत्तर मुखी हैं और हनुमान जी दक्षिण मुखी। पूर्व में महाराज जी की समाधि के साथ शिव जी ओर पश्चिम में दत्तात्रेय के साथ शिवलिंग।”

“इतने बड़े मठ की देखभाल कौन करता है?”

“हम सभी करते हैं। स्थान की महिमा होती है साब, व्यवस्था वाले तो स्वतः ही मिल जाते है। ग्रामीणों का सहयोग, पर्यटक, मनोकामना पूरी होने

पर आयोजन करने वाले लोग सभी मिलकर इस अति प्राचीन मठ को जस का तस बनाये हैं।”

वे बोले, तो मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका।

“कितनी सटीक बात कही थी उन्होंने। स्थान की महिमा होती है। व्यवस्था करने वाले तो मिल ही जाते हैं। यदि साधू, महात्मा यही सोचें कि कौन देखेगा तो इतने विशाल स्थान बन ही न पायें। जिनका आगे पीछे कोई नहीं होता, यदि वे बड़ा करने का बीड़ा उठा लें तो उनके पीछे चलने वालों की कमी नहीं होती। सालों साल तक उनकी परम्पराओं को सहेजने वाले अनेक मिल जाते हैं, युगों युगों तक उनकी विरासत को देखने वाले बहुत हो जाते हैं।”

खूबसूरत स्थान की खूबसूरती मन में संजोये मैंने वहां से विदा ली।

@EBOOKSIND



## जोगा

“जो गा जैसी जगा नहीं।”

9 नवम्बर 19। अयोध्या पर सुप्रीमकोर्ट का फैसला आया। भूमि राम लला को दी गयी और मन्दिर निर्माण कि सभी बाधाएं समाप्त हुईं। अब अयोध्या में राम मन्दिर बनेगा, सर्वत्र हर्ष की लहर थी। इससे भी अधिक हर्ष की बात यह थी की राम के अस्तित्व को सबसे बड़ी अदालत ने माना और माना कि राम का जन्म उसी ढांचे के नीचे हुआ था।

साथ ही यह भी साबित हो गया आज कि राम परमात्माओं का परमात्मा है। इतना धैर्य राम में ही हो सकता है, कि हर बात को शांति और आनन्द से लेते हैं। चाहे चौदह बरस का वनवास हो, चाहे जिस देश को स्वयं बनाया उसमें ही अपने होने को प्रमाणित करने में सदियों का लम्बा इंतज़ार हो। जाने क्या क्या नहीं सुना, राम काल्पनिक थे, उनका जन्म हुआ ही नहीं, अयोध्या में ही जन्में इसके कोई प्रमाण नहीं, रामायण कपोल गाथा है, और न जाने क्या-क्या पर मजाल कि कभी अधीर हुए हों, कहीं उफ तक नहीं। लेकिन आज जब सुप्रीमकोर्ट ने माना कि हाँ राम थे “it is proved by evidences that Ram was born inside the structure” तो आज ‘मेरा राम मेरा देश’ दोनों खुश हैं।

कानून व्यवस्था की ड्यूटी में हंडिया क्षेत्र मिला तो लगा कि कई दिनों से जोगा जाने की मुराद आज पूरी हो जाएगी। पूरे क्षेत्र को देखते हुए पहुंचे जोगा जो हंडिया से 20 कि.मी. पश्चिम में है। पक्की सड़क गाँव तक गयी है। बीच-बीच में सागौन के जंगल और साफ सुथरे गाँव मिले।

जोगा में नर्मदा के किनारे खड़े थे अपने दल सदस्यों के साथ। सामने सागर जैसी लह लहा रही थी नर्मदा। उस पार फतेहगढ़ के मन्दिर और

सीढ़ियां और थोड़ा पूरब की दिशा में बीच नदी में बना विशाल किला। शाम हो चली थी सो पश्चिम में सूर्यास्त का अजब नज़ारा। मन को मोहने वाली दशा थी, तभी साथ गये आशीष ने कहा कि मोटर से चलने वाली नाव उपलब्ध है। सब का मन हो आया और हमने बोट वाले से सिर्फ़ किले का चक्कर लगाने का कह सवारी कर ली।

नाव पूरब की ओर चली और कुछ ही समय में किले के नीचे पहुँच गयी। शाम के समय पहाड़ी पर बना वह किसी haunted किले सा दिखाई दे रहा था, पर सम्मोहन था हरियाली लिए उस किले में कि समय का अभाव न होता तो ज़रूर जाते अंदर।

जैसे-जैसे नाव बढ़ रही थी। नर्मदा की विशालता और किनारे के पहाड़ चकित कर रहे थे। आगे ही कुछ कि.मी. दूर इंद्रा सागर बाँध बना होने से बेक वाटर भी यहाँ तक आ जाता है जो चारो दिशाओं में फैला होने से नर्मदा की अनेक धाराओं सा दिख रहा था। इतने अद्भुत स्थान को देख कर यही सोच रहा था कि अभी तक bollywood वालों की निगाह यहाँ क्यों नहीं पड़ी। इतनी सुंदर लोकेशन और untouched?

राहुल चौरसिया ने किले के चारों ओर से फोटो लिए और साथ ही मनोहारी सनसेट के भी। किनारे आये, मन की हो चुकी थी, जोगा को देखा और कल्पना से भी अधिक रमणीक पाया। शाम हो चली थी, गाड़ी में बैठ वापस चल दिए।

दूसरे दिन फिर हंडिया जाना था। घाट पर पहुँचे, आज बड़ी भीड़ थी, पता चला कि परिक्रमावासी लोगों के जत्थे और वैकुण्ठ चतुर्दशी नहाने वालों के कारण भीड़ है। हरदा के पास अबगाँव कला के उपसरपंच गणेश राम जी मिले, बताने लगे कि उनके गाँव के कई लोग नर्मदा परिक्रमा करने जा रहे हैं उन्हें ही विदा करने आये हैं।

“कितने दिनों की परिक्रमा है” मैंने पूछा।

“यही सवा साल लग जायेगा” उन्होंने कहा।

“क्या कोई विशेष प्रयोजन है?”

“प्रयोजन तो साब सबके अपने अपने हैं, कोई खुशी के लिए करता है तो कोई मन्त पुरी होने पर।”

“क्या मन्त भी पुरी होती है?”

“जो कहीं नहीं होती, वो यहाँ होती है” इस बार उनके साथ खड़े सज्जन बोले।

“आपका परिचय?”

“मेरा नाम रामदीन देवल्या है और मैं खातेगांव का रहना वाला हूँ।”

“इनकी बहन अबगाँव कला में हैं इसलिए ये हमारे मित्र हो गये हैं। आप उनका किस्सा सुन लीजिये इनसे।”

“कैसा किस्सा?”

“मेरी बहन केंसर से पीड़ित थीं। खूब इलाज कराया जब थक हार गये तो उन्होंने खुद ही हम सब लोगों से कहा कि उनकी चिंता छोड़ उन्हें यहाँ नेमावर में छोड़ दें। जब तक जिन्दा रहेंगी यहाँ साधू सन्यासियों की सेवा करेंगी। माँ नर्मदा की आराधना करेंगी। हम लोगों ने उनकी इच्छा जान उन्हें छोड़ दिया सामने नेमावर में, सोचा एक आध साल की मेहमान हैं, जैसा उन्हें अच्छा लगे वैसे रहें, ठीक ही है अंत समय में घर परिवार का मोह छूट रहा है।”

“फिर क्या हुआ?”

“दस साल हो गये। रोज नर्मदा स्नान, सेवा करती रहीं। आज भी ठीक हैं।”

“क्या नाम है उनका?” मेरी उत्सुकता बढ़ी।

“सगुना बाई। अबगाँवकला में रहती हैं, कभी जाना जाट साहब मिलवा देंगे” उन्होंने उपसरपंच की ओर इशारा कर कहा।

“हाँ साब कभी आना हमारे गाँव। सगुना बाई के अलावा एक और हैं भुजराज मेघवाल उनसे भी आपको मिलवायेंगे।”

“उनका क्या किस्सा है?” मैं पूछ बैठा।

“मेघवाल जी को केंसर हुआ था। सब ओर से निराश होकर एक दिन यहाँ हंडिया आये, सारी दवाएं नर्मदा जी में बहा दीं। सोच लिया कि मरना ही है तो क्यों न नर्मदा किनारे ही मरा जाय। चल दिए पैदल नर्मदा परिक्रमा करने। अठारह साल हो गये, आज पूरी तरह स्वस्थ हैं। तीन परिक्रमा कर आये हैं माई की।” नर्मदा की ओर हाथ जोड़ते हुए गणेश राम जी बोले।

मैं विस्मित खड़ा कभी गणेश राम जी और रामदीन जी को देखता, कभी आस्था से डुबकी लगाती भीड़ को देखता तो कभी नर्मदा माई को।

एक और स्थान था जहाँ जाने का तब से सोच रहा था जब पहली बार हंडिया आया था। हंडिय शाह भडंग की दरगाह। आज वहाँ जाने का अवसर है यही सोचकर घाट से चले, गाँव से फीरोज को लिया और निकल गये दरगाह की ओर।

हंडिया से पश्चिम दिशा की ओर जहाँ मुख्य सड़क छोड़ दो कि.मी. चलना पड़ता है। गाड़ी कुछ पक्के, कुछ कच्चे रास्ते पर होती हुई ठीक दरगाह के नीचे पहुँच गयी।

ऊँची पहाड़ी पर बनी दरगाह, पक्की सीढ़ियाँ चढ़ पहुँचे मजार तक। ऊपर मजार के पास एक सज्जन दिखे। फीरोज ने बताया कि वो मुजावर है। मुजावर यानि देखभाल करने वाले। मजार के पास पहुँचे तो पता चला कि वह बड़े बाबा के शिष्य मस्तान बाबा की मजार है। मुख्य मजार उपर है। फीरोज हमें ऊपर ले गये। एक गुफा में बड़े बाबा की मजार पर मत्था टेका। फीरोज ने कहा कि और ऊपर पांच पीर की मजारें बनी हैं। इच्छा हुई देखने की तो फीरोज ने रास्ता दिखाया। पहाड़ी के टॉप पर समतल मैदान, जिसमें करीने से एक जगह पांच मजारें बनी थीं। आस-पास कई छोटे-छोटे पत्थरों के टीले नुमा बने थे।

ये सलीके से सजाये पत्थर क्या हैं?" राहुल ने पूछा।

"लोग यहाँ मन्नत मांगने आते हैं, तब रख जाते हैं, मन्नत पूरी होने पर फिर आकर खुद ही हटाते हैं" फीरोज बोले।

"लोग दूर-दूर से आते होंगे?" मैंने पूछा।

"हाँ साब बहुत आते हैं। जब उर्स भरता है तब तो यहाँ की रौनक देखते ही बनती है।"

हम लोग बातचीत करते नीचे उतरने लगे। आशीष, राहुल और विवेक दृश्यों के फोटो लेने लगे। फीरोज के साथ आकर मैं मस्तान बाबा की मजार पर बैठ गया। मुजावर वहीं थे उनसे बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

"फीरोज बता रहे थे कि आप मुजावर हैं, यहाँ की देखभाल करते हैं।"

"जी।"

“क्या नाम है, आपका?”

“मकसूद शाह।”

“कब से हैं आप यहाँ?”

“मुझे 25 साल हो गये हैं।”

“ये जो बाबा हैं क्या इन्ही के नाम पर इस गाँव का नाम हंडिया पड़ा।”

“हाँ इसका पहले नाम नाभि पट्टन था क्योंकि ये माई का नाभि स्थान है। माई ओर बाबा ने सोचा कि इसे बड़ा रूप दिया जाय। बड़ा शहर बनाया जाय, तो इसे अजमेर शरीफ से जोड़ के हांडा शरीफ बनाया जाय। हांडा से मासूल हो गया। फिर जब लोगों ने नहीं चाहा तो बाबा सरकार ने इसे हंडिया बना दिया। बाबा का हंडा सोटा गाँव में घूमता था किसी को समझ नहीं आता था कि कहाँ से आता है, कहाँ जाता है। बड़ी खोज के बाद लोगों को मालूम पड़ा कि इस गुफा में आता है। बाबा सरकार नहीं चाहते थे कि लोग उन तक आयें, उनकी एकांत साधना में विघ्न पड़ता था। पहले गुफा चौड़ी थी फिर बाबा ने पत्थर लगा दिए।”

“पहले तो ये बड़ा शहर था अब तो गाँव रह गया है।”

“बहुत बड़ा शहर था। आस-पास के गाँव चौकी, हीरापुर, बेसमा इसके मोहल्ले थे। हीरापुर में तो हीरा जवाहरात का काम होता था इसी के लिए तो तेली की सराय बनी थी। यहाँ दूर-दूर से व्यापारी आकर रुकते थे, अपना व्यापार करते थे।”

“बाबा सरकार तो बाहर से यहाँ आये थे?”

“हाँ बल्की रहमतुल्लाह इनका नाम था, बुल्क बुखारा के बादशाह थे। खुदा में मन लग गया, फरिस्तों ने संदेश दिया कि यहाँ क्या ढूंढता है जा कहीं जंगल में तो खुदा मिलेगा। बस छोड़कर चल दिए और यहाँ आकर गुफा में रम गये।”

“तो यहीं क्यों बाबा सरकार रुके। ऐसी क्या खास बात लगी यहाँ उन्हें?”

“अरे माई का बड़ा आशीर्वाद था उन पर। माँ यहाँ बीचों बीच हैं। आधी उधर, आधी इधर। इसीलिए यहाँ उन्होंने मदीना बना दिया था। माँ से मदीना। ये सोचें कि आप को वहाँ हज करने नहीं जाना पड़ेगा, मदीना

शरीफ। आप यहीं हज कर सकते हो” वे बोल रहे थे और मैं अवाक् उनका मुंह देख रहा था।

उनसे विदा लेने उठे तो पास के पेड़ पर अनगिनत रंग बिरंगे धागे देख कर जिज्ञासा प्रकट की।

“हंडिय शाह भडंग बाबा सरकार की फकीरी के खजाने हैं साब, लोग आते हैं, धागा बांधते हैं और मांग ले जाते हैं, जो उन्हें चाहिए” वे बोले तो हम सब का मष्तिक झुक गया आदर से वहां।

हम चल दिए। सोचा पास में ही तेली की सराय है, उसे भी देखा जाय।

गाड़ी में बैठते ही मैं विचारों में खो गया।

“आज माँ ने मेरा भ्रम तोड़ दिया था। अब तक मैं समझता था कि नर्मदा को माँ के रूप में सिर्फ हिन्दू ही पूजते हैं, पर आज लग रहा था कि कम संख्या में होने से अन्य धर्म मजहब की मान्यताएं सभी को नहीं समझ आती किन्तु हर धर्म के लोग नर्मदा में एक समान आस्था रखते हैं। नर्मदा भी तो सब पर एक समान ममता लुटाती है। सर्व धर्म समभाव के लिए नर्मदा से अच्छा कोई नहीं।”

मैं सोच ही रहा था कि तेली की सराय आ गयी। बाहर ही mp tourism का शिला लेख लगा था, जिस पर लिखा था कि सौलहवीं शताब्दी में एक तेली बैंकर ने इसे बनवाया था व्यापारियों के लिए। अंदर गये, पुराना खंडहर जिसे आर्कोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया वालों ने renovate किया था, जो कहीं कहीं था, कहीं नहीं। पर अंदर जाकर देखा तो उसका फैलाव अचरज में डाल रहा था। बड़े भू भाग में बनी वह सराय जिसमें चारों ओर कम से कम सौ कमरे थे ठहरने के लिए और बीच में बड़ा मैदान, जो शायद घोड़ागाड़ी, हाथी रखने को रहा होगा। सभी कमरे पक्के बने थे। जहाँ सराय इतनी बड़ी थी, वहां शहर कितना बड़ा रहा होगा, व्यापार कितना बड़ा रहा होगा, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।



## ऐसा भी होता है...

जाना था जापान पहुँच गये रूस समझ गये ना,

“बड़े डॉक्टर साब तो बाहर गये हैं, छब्बीस तारीख को मिलेंगे।” उधर से रिसेप्शनिस्ट की आवाज़ आयी तो मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। बड़े दिनों बाद पूरे दस दिन की छुट्टी ली थी। सोचा था नागपुर जाकर डॉक्टर से रेगुलर चेकअप कराऊंगा। फैमिली को भी लिए जाऊंगा, बहुत दिनों से कहीं साथ नहीं गये थे तो आउटिंग भी हो जाएगी। पर ये तो सारी योजना पर ही पानी फिर गया। अब क्या करूँ, दस दिन की छुट्टी का क्या उपयोग करूँ।

सारा दिन मूड ऑफ़ रहा। आज तो 21 ही हुई है, 26 तक क्या करूँगा। ऐसा कभी नहीं हुआ कि डॉक्टर न मिले हों, पर इस बार हो गया। सोचते सोचते ख्याल आया कि नर्मदा किनारे बड़वानी तक की यात्रा हो गयी है, क्यों न आगे भरूच तक जाया जाय। बहुत दिनों से मन में आता था कि पूरे नर्मदा खंड की यात्रा कर सकूँ यदि माई इजाजत दे। लग रहा था कि इस समय का यही उपयोग कर लूँ। गाड़ी तो दस दिन के लिए पहले से ही बुक कर ली थी, इसलिए कहीं न कहीं तो जाना ही था, तो क्यों न कई दिनों की दबी मुराद ही पूरी कर लूँ। वाहन चालक विवेक उत्साही लड़का था, वह तो पूछते ही खुशी-खुशी तैयार हो गया। अब समस्या थी परिवार को बताने कि। “कैसा झक्की आदमी हूँ, यही सोचेंगे जब मैं बताऊंगा। उनके जाने का तो प्रश्न ही नहीं था, वहां क्या देखने जायेंगे”। यही सोचता रहा दिन भर और हिम्मत जुटाई शाम को।

“मैं कल भरूच जा रहा हूँ।”

“भरूच! क्यों?”

“नर्मदा जी का सागर संगम देखने जाना है?”

“मतलब!” श्रीमतीजी की चौंकने की बारी थी।

“नर्मदा जी पर लिख रहा हूँ, इसलिए जाना है।”

“ठीक है, कितनी दूर है।” आश्चर्य, कहाँ तो यह सोच रहा था कि कहेंगी क्या बेवकूफी है, सिर्फ इसलिए इतनी दूर जाओगे। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

“यही कोई 300 कि.मी. होगा।” मैंने आधा सच, आधा झूठ बोल दिया कि सहमती बनी रहे, यदि ये कहता कि 450 कि.मी. से कम नहीं होगा तो कौन जाने देगा।

“बेटू, पापा भरूच जा रहे हैं” बिटिया कमरे में आई तो श्रीमती जी ने बोल दिया “भरूच, क्यों?”

“काम है उन्हें।”

“भरूच, गुजरात वाला, जहाँ सी पोर्ट है?”

“वहीं।”

“कुछ भी!”

“जा रहे हैं, पूछ ले।”

“क्या पापा, आप सही मैं भरूच जा रहे हैं।”

“हाँ बेटी।”

“ऐसा कैसे कर सकते हैं। इतनी दूर। आप मजाक तो नहीं कर रहे।”

“सच मैं जा रहा हूँ।”

“तो हम भी चलेंगे।”

“क्या! अब तू मजाक कर रही है।”

“हाँ मुझे भरूच देखना है, सी पोर्ट देखना मुझे अच्छा लगता है।”

“मम्मी से पूछा।”

“मम्मी से क्या पूछना, यदि बेटी तैयार है तो चलो।” मंजुल ने कहा, क्योंकि बिटिया बड़ी मुश्किल से कहीं को तैयार होती थी।



“बेटू सच सच बता तू चलेगी।”

“हाँ मैं चलूंगी, पर कल नहीं, हमें atleast एक दिन का समय दो तैयारी के लिए।”

मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं। जिस ट्रिप को मैं असमंजस में ले रहा था वह सामंजस्य में बदल गयी थी। इतनी जल्दी, इतनी दूर, अनजान जगह के लिए ऐसे लोगों का तैयार हो जाना जो यदा-कदा ही कहीं जाना चाहते थे। मेरे लिए ये किसी चमत्कार से कम नहीं था, जो नर्मदा माँ ने किया था।

माँ बेटी तैयारी में लग गयीं थीं और मैं दम साथे 23 की सुबह का इंतज़ार करने लगा कि कहीं ना न हो जाय। कोई विघ्न न आये।

बड़ोदरा होकर भरूच जाना था। पहले इंदौर, फिर बड़ोदरा और उसके बाद भरूच। हरदा से भरूच का रास्ता गूगल मैप में देखा और उसी अनुसार बड़ोदरा में पहले दिन स्टे करने की योजना बनाई। जस्ट डायल से नंबर लिए, कुछ होटल में बात की, सब भरे। 22 का पूरा दिन चला गया पर होटल न हो सका, सोचा वहीं जाकर देखेंगे।

23 की सुबह हनुमानजी के दर्शन कर निकल गये। हंडिया पहुँचे माँ नर्मदा को प्रणाम किया, रिद्ध नाथ के दर्शन किये, यात्रा सफल और मंगलमय हो इसी कामना के साथ गाड़ी में बैठ चल दिए। पुल पार किया, फिर एक बार माई का अभिवादन किया। नेमावर जैसे ही निकला कि फोन बजा।

“मि. त्रिपाठी, मैं ओयो से बोल रहा हूँ। आपको वरोदरा में होटल चाहिए” उधर से आवाज़ आयी।

“हाँ चाहिए तो।”

“मैंने आपके लिए अच्छी लोकेशन पर सर्च किया है, पालखी रिसोर्ट है, vemali में।”

“फोटो भेजो, मैं देखकर ही बुक कर पाऊंगा” ओयो के साथ पुराना अनुभव ठीक न होने से मैं reluctant था।

“मैंने बुक कर दिया है। आपको फोटो भेज रहा हूँ, आशा है आप पसंद करेंगे।”

“और पसंद नहीं आया तो कैंसिल भी कर दूंगा।”

“यह नौवत नहीं आयेगी। मैं नितिन बोल रहा था ओयो से। आपका समय लेने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद” और फोन disconnect हो गया।

कुछ ही क्षण में फोटो आ गये, जो अच्छे थे। माँ बेटी को भी पसंद आये।

“पर फोटो का क्या है, फोटो तो सब अच्छी भेजते हैं, वहां जाकर देखेंगे” मैं सोचने लगा। पूरा दिन अच्छा बीता, सही माने में pleasant journey। रोड अच्छी थी इसलिए 7 बजे तक हम शहर में थे। एअरपोर्ट के सामने से गुजरे तो कई होटल दूसरी ओर दिख रहे थे, सोचा यहीं ले लेंगे यदि पालखी अच्छा नहीं हुआ तो। navigation की मदद से और कहीं-कहीं पूछते-पूछते हम पहुंचे पालखी।

बिलकुल भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। क्या शानदार लॉन और क्या खूबसूरत रूम्स। तबियत खुश हो गयी। पहली बार ओयो पर भरोसा हुआ और नर्मदा माई पर भरोसा और दृढ़ हुआ।

अब ध्यान आया कि कहाँ पूरे दिन नेट पर मंहंगे होटल तलाशते रहे, नहीं मिले और जैसे ही माई का पुल पार किया कि फोन बजा। सच ही कहा गया है कि भगवान के भरोसे चलो तो रास्ते सरल हो जाते हैं। आज हमारे लिए हुए थे।

वरोदरा का नाईट स्टे अच्छा रहा। होटल में पूछा तो पता चला कि जहाँ हम रुके हैं वहीं से सीधे रास्ता भरूच के लिए निकलता है। गूगल मैप से यह तो बिटिया ने जान लिया था कि भरूच से आगे दहेज नामक स्थान पर समुद्र है और वहीं नर्मदा का संगम दिख रहा था। तो तय हुआ कि एक दिन भरूच में रुका जाकर दूसरे दिन दहेज चला जाय।

वरोदरा से भरूच 70 कि.मी. पश्चिम में है। अच्छा हाईवे था, जो भरूच, सूरत होकर मुंबई जाता था, इसलिए व्यस्त भी था। हम लोग आराम से चलते हुए 2 बजे से पहले ही भरूच पहुँच गये थे। रास्ते में ही फिर से ओयो ने होटल करा दिया था कोहिनूर। पांचवी मंजिल पर रूम। जब ऊपर पहुंचे तो तबियत खुश हो गयी। सामने ही नर्मदा बह रही थी, अपनी विशालता और सौम्यता लिए हुए। दरवाजा खुलते ही सामने नर्मदा, यानि ‘नींद खुले तो नर्मदा दिखे’।

सोचा दूसरे तट पर सामने अंकलेश्वर है, चल कर देखा जाय। मंजुल और शालिनी को होटल में छोड़ निकल लिया विवेक को लेकर उस पार। भरूच से पुल मिला गोल्डन ब्रिज जिसकी लम्बाई पूरी 1.5 कि.मी.। पुल पार

कर पहुंचे उस पार तो पता चला कि अंकलेश्वर नदी तट से 15 कि.मी. दूर एक इंडस्ट्रियल शहर है, तो सोचा कि वहां जाने की जगह किसी घाट पर चला जाय। सीधे हाथ पर बगल में ही घाट था, नीचे उतरे, शिव मन्दिर किनारे ही बना था। दर्शन किया, किनारे पर कुछ छोपड़ नुमा मकान बने थे जो स्पष्टतया अतिक्रमण दिख रहे थे।

मंदिर की सीढ़ियों पर बैठा ही था कि एक सज्जन नीचे दिखे, संकेत से बुलाया तो चले आये।

“आप क्या यहीं रहते हैं?”

“हाँ यहीं नीचू” नीचे की ओर उन्होंने इशारा किया।

“बैठे, थोड़ी देर हमारे पास” मैंने कहा तो वे बाजू में बैठ गये।

“क्या नाम है आपका।”

“मोतीराम।”

“मोतीराम जी क्या काम करते हैं।”

“मछली पकड़ते हैं।”

“कहाँ ले जाते हैं पकड़ कर।”

“यहीं भरूच में बिक जाती है।”

“अंकलेश्वर भी ले जाते होंगे।”

“हाँ, वहां भी।”

“अंकलेश्वर में भी नर्मदा हैं क्या।”

“नहीं वो यहाँ से दूर है 15 कि.मी.।”

“ये क्या है?” मैंने पास ही बने एक कमरे की ओर इशारा कर पूछा जिस पर लिखा था ‘औघड़ पीर बाबा की समाधि’।

“यहाँ के बाबा थे, गये साल ही समाधि ली है। मन्दिर की देखभाल करते थे, बच्चों में बहुत खो जाते थे, बड़े अच्छा बाबा थे” मैंने देखा गुजराती ठीक-ठीक हिंदी बोल लेते हैं।

“यहाँ नर्मदा जी में रेत निकालते हैं, हमारे यहाँ तो बहुत निकलती है।”

“हम लोग निकालने नहीं देते, ढोल बजा कर भगा देते हैं, पुलिस को बता देते हैं।”

“आप लोग पुलिस की भी मदद करते हैं?”

“हाँ पुलिस हमारा बहुत मदद लेता है, बहुतों को हमने डूबने से बचाया है।”

“मतलब?”

“ये गोल्डन ब्रिज देख रहे हैं, कई लोग इससे छलांग लगाते हैं। चाहे रात हो या दिन हमें तुरंत मालूम पड़ जाता है और हम बचा कर पुलिस के सुपुर्द कर देते हैं।”

“पर छलांग क्यों लगाते हैं, शौक में?”

“घर में कोई टेंसन, झगड़ा हो गया और कूद गये।”

“आपका मतलब आत्महत्या??”

“हाँ वही।”

“तो आप आत्महत्या करने वालों को बचाते हैं। अभी तक कितने लोग बचाए होंगे।”

“बहुत, सैकड़ा करीब।”

उन्होंने कहा तो मैं दंग रह गया। यह तो कभी सोचा ही नहीं था कि मछली पकड़ने वाले मछुआरे कितना बड़ा काम करते हैं, इनका यह भी उपयोग है। थोड़ी देर पहले उनके झोपड़ों को अनावश्यक और तट की खूबसूरती मिटाने वाला समझ रहा था, अब लग रहा है कितने प्रासंगिक हैं, कितने आवश्यक।

“माँ तू भी ना, सारे इंतजामात कर रखती है जिससे डूबने वाला डूबने जाय तो बचाने वाला वहीं मिल जाय, तभी तू उन्हें मेहनताना में मछलियाँ भेंट करती है। सही है मेहनताना का ख्याल नहीं रखा जायेगा तो भाग नहीं जायेंगे ये लोग, फिर कौन आएगा रात विरात डूब मरने वालों को बचाने।”

“यहाँ नर्मदा जी को मानते हैं?, मेरा मतलब है उनकी पूजा वगैरह।”

“बहुत मानते हैं, परिक्रमा वाले यहाँ रुकते हैं, स्नान, आरती, पूजा सब होता है, लोकल पब्लिक भी बहुत मानती है।”

“परिक्रमा वाले यहाँ से कहाँ जाते हैं।

“यहाँ से हासोद तक जाकर फिर दरिया पार करते हैं।”

“दरिया पार कर कहाँ जाते हैं ।

“वहां उस पार दहेज।”

“पर इस पार तो विमलेश्वर से समुद्र में जाते हैं।”

“वो हासोद के ही आगे है थोड़ा।”

“हासोद कितना है यहाँ से।

“पचास कि.मी. के आस-पास होगा सड़क से।”

मोतीराम जी से काफी चर्चा हो गयी, उनसे विदा ले लौट चला। होटल आकर जानकारी ली मैनेजर से क्या जगह देखने लायक है यहाँ।

“कबीरबड़ हो आइए।”

“कबीरबड़! क्या यहीं पास में है” मैं रोमांचित हो गया। कबीरबड़ के बारे में पढ़ा था अनेक पुस्तकों में कि बीच नर्मदा में विशाल बड़ का पेड़ है जो संत कबीर के जमाने का है।

“अभी समय है, 3:30 बजा है। 18 कि.मी. है आराम से जाकर आ सकते हैं” मैनेजर बोला तो मैं जैसे दौड़कर ऊपर गया। बिटिया और श्रीमती जी को तैयार किया और निकल लिए हम सब कबीरबड़ की ओर।

18 कि.मी. पूरब में जाने पर जगह आई कबीरबड़। समय हो गया था शाम के 5। जल्दी-जल्दी टिकिट लिए और नीचे घाट पर पहुंचे। नाव तैयार खड़ी थी।

“पर ये तो बीच में नहीं है।” पूरा पाट लिए नर्मदा बह रही थी और सामने उस पार मन्दिर दिख रहा था। सब बैठ रहे थे सो हम लोग भी बैठ गये। नाव चली, सूरज ढल रहा था, सनसेट की तैयारी कर रहा था। स्वच्छ हरे जल में उसका बिम्ब लाल टमाटर सा चमक रहा था। बड़ा आनंददायक था नाव का सफर। सभी प्रफुल्लित थे जो भी उसमें बैठे थे, मैं भी, बस एक ही बात समझ नहीं आ रही थी कि बीच में रहने वाला कबीरबड़ एक ओर क्यों खिसक गया। हो सकता है नर्मदा ने अपना प्रवाह बदल लिया हो।

उस पार पहुंचे, नाव से उतर कोई 400 फीट चलने पर आया आया कबीर बड़। चारों ओर फैला विशाल वटवृक्ष जिसका न ओर दिख रहा था न छोर। गाँव में पला बड़ा हूँ कई बड़े-बड़े बरगद देखे हैं। पर ऐसा आज तक नहीं देखा, आधा कि.मी. से कम नहीं था उसका फैलाव और हर जगह उसका मूल लगता था पर होता नहीं था। शाखाएं मजबूत हों तो कैसे जड़े

बन जाती है यह प्रत्यक्ष उदाहरण था यहाँ। मनुष्य समाज में भी यदि औलादों की शाखाएं मजबूत बना दी जाय तो न जाने कितनी नस्लों के लिए जड़ों का काम करती हैं।

अँधेरा घिरने लगा था सो जल्दी जल्दी चारों ओर का नज़ारा देख, संत कबीर के मन्दिर में चढ़ गये। पुजारी जी से जानकारी ली तो उन्होंने बताया कि सन् 1465 के करीब कबीर दास जी यहाँ आये थे उन्होंने ही यह बड लगाया था।

“ये तो काफी बड़ा परिसर है। यहाँ परिक्रमा वासी आकर रुकते होंगे।”

“परिक्रमावासी यहाँ नहीं आते। जब परिक्रमा पूरी हो जाती है तभी आते हैं।”

“क्यों नहीं आते यहाँ, ये तो दक्षिण तट है न नर्मदा का?”

“नहीं ये बीच में है।”?

“यानी?” चौंक गया मैं।

“दोनों तरफ नर्मदा है?”

“पर दूसरी ओर की तो दिख ही नहीं रहीं?”

“यहाँ से दो कि.मी. दूर है, दक्षिण तट।”

“क्या?? क्या सचमुच इतना बड़ा है यह टापू, बेट।”

“हाँ, और बीच में होने से परिक्रमावासी नियम न टूटने के कारण नर्मदा को क्रॉस नहीं करते।”

“अद्भुत!” मैंने कहा और वापस चल दिया परिवार सहित।

नाव में बैठ जब दूसरे पार आये तो आरती होने लगी थी माई की। किनारे खड़े लोग समवेत स्वर में नर्मदाष्टक गा रहे थे। जिसके स्वर लाउडस्पीकर पर बड़े कर्ण प्रिय लग रहे थे। जब वाहन के पास पहुँचे तो देखा कि विवेक ने किसी सज्जन से दोस्ती कर ली थी और उन्ही के पास बैठा था।

“सर ये हरीश भाई हैं, इनको काफी नॉलेज है” विवेक अब तक मेरा टेस्ट समझ गया था कि महज घूमने का मकसद नहीं था मेरा।

हरीश भाई ने बताया कि कबीर बड की स्थापना कबीर जी ने ही की है। उनके दो शिष्य जीवा और तत्वा उन्हें यहाँ लेकर आये थे। स्थानीय

लोगों ने जब उनका विरोध किया तो उन्होंने एक छोटी से जड़ लगा कर इस निर्जन टापू पर वट वृक्ष लगाया था जो गाँव जितना बड़ा हो गया है अब।

“आप यहाँ क्या करते हैं हरीश भाई?”

“ये मेरी ही जमीन है जिस पर आप बैठे हैं, पीछे आश्रम भी हमारी जमीन पर ही बना है। मेरे दादाजी ने दान दी थी। पास ही हमारा गाँव है।”

“कौन-कौन है आपके घर में?”

“मैं और मेरी बहन, हम दो ही प्राणी हैं।”

“आप ने शादी नहीं की?”

“नहीं, बस माँ की सेवा में ही लगा दिया है पूरा जीवन।”

“यहाँ क्या करते हैं?”

“खुली इस जगह पर पार्किंग करता हूँ। परिक्रमावासियों को सदावत की व्यवस्था, घाट पर माई की आरती, पूजा में सहयोग। यही दिन भर की दिनचर्या है।”

“पर आपकी गुजर कैसे होती है?”

थोड़ी सी खेती है जिस पर गन्ना और केला कर लेता हूँ। हम दो प्राणियों का काम चल जाता है। यहाँ पार्किंग से जोभी आता है उसे माई की सेवा में लगा देता हूँ।”

“परिक्रमावासी तो बहुत आते हैं, कम नहीं पड़ जाता होगा आपका अन्न।”

“कम की क्या बात करते हैं, माई एक दाना भी कम नहीं होने देती।”

“कैसे?”

“जैसे ही लगता है ख़त्म होने को है, कोई न कोई आ जाता है और भंडार भर जाता है।”

“आप बहुत मानते हैं, नर्मदा माई में।”

“जिन्दा माँ है ये। मेरा तो कोई काम नहीं जो माँ ने पूरा न किया हो। मेरा ही नहीं जो भी मांगता है, उन सबके काम माई करती है। तभी तो इतना मानते हैं, ऋषि मुनि आम आदमी, संत सभी माँ के दीवाने हैं। आप के यहाँ के एक संत हुए हैं, मेरे दादाजी बताते थे उन्हें नर्मदा सिद्ध थीं, बड़ी

जमात लेकर चलते थे, जो भी सामान घी, तेल ख़त्म हुआ कि माँ से मांग लेते थे और तत्काल मिलता था।”

“गौरीशंकर महाराज की बात तो नहीं कर रहे आप।”

“हाँ वही। यहाँ बहुत आते थे। सब श्रद्धा की बात है, माँ तो लोगों को अपनी उपस्थिति का भान कराती है।”

“कैसे?”

“बरसों से जमी गन्दगी को दो माह पूर्व माई बहा ले गयी, लोगों को बता गयी कि अभी मैं हूँ।”

“कहाँ बहा ले गयी।”

“समुद्र में, जहाँ मिलती है।

“कहाँ मिलती है, हम वहाँ जाना चाहते हैं।”

“इस घाट से जायेंगे तो मीठी तलाई मिलेगी।”

“मीठी तलाई का मैंने भी बहुत नाम सुना है, परिक्रमा विवरण में पढ़ा है किन्तु गूगल मैप में दहेज जगह दिख रही है।”

“वहीं हैं, मीठी तलाई।”

“कल हम लोग वहीं जा रहे हैं। दहेज में रुकने की जगह तो मिल जाएगी?”

“ज़रूर जाइये, दहेज तो बहुत बड़ा इंडस्ट्रियल एरिया हो गया है। रुकने के लिए कई होटल बन गये हैं वहाँ।”

“हरीश भाई, आप तो इतने महत्वपूर्ण घाट पर बैठे हैं, और भी कई लोग होंगे, जिनसे आप मिले होंगे जिनकी मुराद माई ने पूरी की, कोई चमत्कार उनके साथ हुआ हो या कोई पुरानी बात जो मुझे बताना चाहेंगे।”

“हमारे गाँव में एक बहन है ज्योति बहन, आप उनसे मिलो, जो आप चाहते हैं, आपको वहाँ मिलेगा। पास में ही है, आप कहीं तो मैं आपको ले चलता हूँ।”

“कौनसा गाँव है आपका।”

“मंगलेश्वर। बहुत कुछ है हमारे गाँव में देखने को।”

“जैसे?”



“नर्मदा किनारे वराह भगवान का मन्दिर है जो पृथ्वी को उठाये हैं, गाय का खुर है शिवलिंग के पास जिसमें हमेशा न जाने कहा से भगवान के अभिषेक को पानी आता रहता है।”

“जब इतना कुछ है, तब तो देखना पड़ेगा। क्या ऐसा नहीं कर सकते हरीश भाई कि आज तो लेट हो रहा है, कल सुबह आऊँ।”

“चलेगा, आप सुबह 9 बजे आ जाय मैं आपको गाँव में ही मिलूँगा।”

हरीश जी से विदा ले हम लोग भरूच लौट चले। रास्ते भर मैं यही सोच रहा था कि अमरकंटक से लेकर यहाँ तक मैं न जाने कितने लोगों से मिला हूँ। एम.पी., महाराष्ट्र, यू.पी., गुजरात, बंगाल, और न जाने कहाँ-कहाँ के। भाषा अलग, प्रान्त अलग, रहन सहन अलग, धर्म अलग पर नर्मदा किनारे सब एक। न जाने कैसी बयार चलती है माई के तट पर कि सब एक भाषा बोलते हैं, एक भाव रखते हैं। राजनितिक रूप से स्थान अलग होंगे पर नर्मदा किनारे लगेगा ही नहीं कि एक राज्य छोड़ कर दूसरे राज्य में आ गये हों। लगता है अमरकंटक से भरूच तक जैसे एक ही राज्य हो।

दूसरे दिन सुबह ही, फेमिली को होटल में छोड़ मंगलेश्वर की ओर निकल गये। हरीश भाई सड़क पर ही मिल गये थे। सबसे पहले ज्योति बहन के यहाँ ले गये। घर में ज्योति बैन, उनकी सिस्टर मोनी बेन और बूढ़ी माँ मिलीं। हरीश भाई ने जब मेरे आने का मकसद बताया तो सबने हाथों हाथ लिया। मोनी बेन चाय बना लाई, माताजी कहने लगी कि नर्मदा माई पर लिखो, अच्छा है, पर माई की उत्पत्ति भी लिखना।

“जी माता जी, ज़रूर, आप तो बड़ी अच्छी हिंदी बोल लेती हैं।”

“हिंदी में विशारद हैं, रहने वाली भी आपके तरफ की हैं” ज्योति बहन ने बताया।

“कहाँ की हैं?”

“झाँसी।”

“तब तो हमारे पास की ही हैं” मेरा इतना कहते ही वे झाँसी की रानी की कविता गाने लगीं। 80 वर्ष की आयु होने से गाते-गाते उनकी साँस फूलने लगी तो सबने रोक दिया उन्हें।

“कल हरीश जी से मिला था तो उन्होंने आपके बारे में बताया कि आप कैसे लोगों की सेवा करती हैं, सुनकर आपसे मिलने की इच्छा हुई” मैंने बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाया।

“सब माई कराती है हम सब तो उसकी मर्जी से चलते हैं। पांच पीढ़ी से परिक्रमावासियों के लिए जो हमसे बन पड़ता है करते हैं।”

“हरीश जी बता रहे थे आपके यहाँ हमेशा सदावत चलता ही रहता है। कैसे करते हैं, आप लोगों की मदद भी लेना पड़ती होगी।”

“मदद के लिए तो बहुत लोग आगे आते हैं। भोजन, कपड़ा, दवाई, सामग्री सभी देना चाहते हैं पर हम लोग लेते नहीं हैं। हमारे नाना की दादी ने यह शुरू किया था और बोल गई थीं कि तुमसे बने तो करना पर किसी से मदद न लेना। तब से हम लोग अपनी ही खेती और अपने साधन से ही लोगों की सुश्रुआ करते हैं।”

“खेती के अलावा और क्या साधन है?”

“पास ही शुक्ल तीर्थ के स्कूल में मैं टीचर हूँ। अपना वेतन भी काम आता है।”

“आपका एम.पी. में बहुत नाम है तो परिक्रमावासी बहुत आते होंगे?”

“हाँ लगातार, कभी 25 तो कभी ज्यादा भी आ जाते हैं। सदावत का समान दे देते हैं, कभी वे लोग बना लेते हैं, कभी हमें बना कर भी खिलाना होता अगर लोग ज्यादा थके हों तो।”

“आप पर तो दुहरी जिम्मेदारी है, स्कूल भी, सदावत भी।”

“हम सब मिलकर कर लेते हैं, बहन, मौसी और मैं मिलकर।”

“शुक्ल तीर्थ नाम क्यों है गाँव का?”

“क्योंकि गाँव में नर्मदा किनारे विष्णु भगवान का मन्दिर है। पूरी भूमि ही तीर्थ है। पास ही कड़ौद है जहाँ शिवलिंग पर आज भी वाणासुर आता है।”

“वाणासुर??”

“हाँ रजा बलि का बेटा, जिसने संतान के लिए शिव जी की घोर आरधना की थी”

“राजा बली?”

“राजा बली ने यहीं भरूच में दस अश्वमेघ किया था और वहीं विष्णु ने वामन अवतार ले बलि से पूरी पृथ्वी दान में ले ली थी।”

“दस अश्वमेघ क्या?”

“दस अश्वमेघ यज्ञ। भरूच में दस अश्वमेघ घाट अभी भी है पर बहुत पुराना होने से विकास नहीं।”

“दक्षिण के बड़े राजा थे इन्हें महाबली भी कहते थे।”

“उन्ही के लड़के हुए वाणासुर। वाणासुर के कोई संतान नहीं थी तब उन्होंने कड़ोंद में शिव आराधना की। सवा लाख मिट्टी के शिव लिंग बनाये और नर्मदा जी में छोड़े। वैशाख माह के महामास में उसी स्थान पर अभी भी वे शिवलिंग मिलते हैं।”

“बाकी समय पर नहीं मिलते। L&T कम्पनी ने फैंट डाला था पर नहीं निकले” हरीश भाई ने जोड़ा।

“कई मशीनों से नर्मदा को छान मारा था पर शिवलिंग नहीं मिले” ज्योति बैन ने बताया।

“भगवान को चेलेंज दिया था इसलिए नहीं मिला” हरीश भाई बोले।

“कब पड़ता है ये महामास?”

“अठारह साल में एक बार पड़ता है, पिछले बार कोई दस साल पहले हुआ था। पूरे माह कड़ोंद में मेला लगता है।”

“और उस समय ये शिवलिंग मिलते हैं।”

“हाँ पूरे महीने। इस बार थोड़ा दरिया तरफ जगह खिसक गयी थी अब अगली बार देखें कहाँ मिलते हैं।”

“अद्भुत! पर मिट्टी के हैं तो ढूँढ़ते कैसे हैं पानी में?”

“होता यूँ है कि कगार पर नर्मदा में बह कर आई मिट्टी चिपक जाती है। समुद्र में जब ज्वार भाटा बनता है तो उसकी बौछारों से दीवार की मिट्टी में वे शिवलिंग बनते हैं। पूरी मिट्टी, महिन बारीक, एक भी कंकड़ पत्थर नहीं।” ज्योति बैन बताते बताते रोमांचित हो रही थीं।

“कड़ोंद के शिव मन्दिर में कहते हैं कि आज भी वाणासुर शिवलिंग के आगे सिर झुकाए बैठा रहता है, जब घंटा बजाता है कोई तो वह साइड में हो जाता है” हरीश भाई बोले।

“दिखा देना हरीश अभी कड़ोंद और शुक्ल तीर्थ भी। मैं स्कूल ही जा रही हूँ वहीं अजाना और बातें होंगी।”

“स्कूल आप नित्य जाती हैं?” मैं ज्योति बेन की सिंसियरटी से प्रभावित हुआ।

“हाँ रोज, नियम से। साल में एक बार ही कुछ दिनों की छुट्टी लेती हूँ, माई की परिक्रमा को।”

“अच्छा आपने परिक्रमा भी की है?”

“19 साल से कर रही हूँ। अब तो चार हो चुकी हैं।”

“पैदल?”

“हाँ, टुकड़े-टुकड़े में करती हूँ। आप ने बेगड़ जी का नाम सुना है। अमृतलाल बेगड़।”

“खूब, उनकी तो किताब भी पढ़ी है मैंने सौन्दर्य की नदी नर्मदा। उन्होंने भी टुकड़े-टुकड़े में ही परिक्रमा की थी।”

“उन्हीं से प्रेरणा ले मैंने भी टुकड़े-टुकड़े में करने की ठानी। अब इतना समय तो मेरे पास नहीं था कि मैं एक साथ करती इसलिए 19 साल पहले शुरू की। पहली बार तो ये हरीश भी थे। एक बीबीसी के पत्रकार और दो जबलपुर के साथी। इस तरह हम चार लोगों ने पहले साल पैदल यात्रा की।”

“कहाँ से कहाँ तक कि किये थे?”

“पहले साल कोटेश्वर से महेश्वर और उसके अगले साल महेश्वर से घावडी कुंड। इस प्रकार हमने पूरी की।”

“और आपको लगता है कि इस प्रकार की परिक्रमा भी माँ की मान्य है।”

“हाँ है। पूरे भाव से करो तो वैसे ही मान्य है जैसी एक बार में लोग करते हैं।”

ज्योति बेन बोल रही थीं और अचानक मेरे दिमाग में कोंधा।

“ऐसे तो मेरी भी एक परिक्रमा पूरी हो जाएगी माँ की कल जब मैं मीठी तलाई तक जाऊंगा। यदि माँ मान्य करे तो” इस विचार ने ही रोमांचित कर दिया।

“ये तस्वीर किसकी है, आपके पीछे?”

ज्योति बेन जहाँ खड़ी थीं कमरे में उनके पीछे फ्रेम में लगी फोटो को देख कर मेरी जिज्ञासा हुई।

“गुरु हैं हमारे, संपूर्णानंद जी” ज्योति बेन बोलीं।

“इन्ही के आश्रम के बाहर तो हम कल शाम को बैठे थे” हरीश जी ने जोड़ा।

“मौका मिले तो जाइएगा ज़रूर” ज्योति बेन ने आग्रह किया।

ज्योति बेन से विदा ले हम लोग बाहर निकल आये। हरीश भाई मुझे गाँव के मन्दिर दिखाना चाह रहे थे। मुझे भी वराह भगवान की मूर्ति देखना थी सो हम लोग पैदल ही गाँव में उत्तर दिशा की ओर बढ़ गये।

नर्मदा नदी के किनारे ऊँची कगार पर बना मंगलेश्वर शिव मन्दिर। सामने वराह भगवान की मूर्ति जिसमें वो पृथ्वी को उठाये हैं। नीचे देवनागरी लिपि में कुछ विवरण लिखा था। कुछ देर वहाँ वरांडा में बैठ सामने शिव मन्दिर गये। शिवलिंग के पास ही वह स्थान जहाँ खुर जैसी आकृति जिसमें पानी था। हरीश भाई ने बताया कि इसमें हमेशा पानी रहता है, शंकर भगवान के अभिषेक के लिए।

मन्दिर दर्शन कर हम बाहर निकले और नर्मदा के किनारे बनी ऊँची पक्की पेरापेट पर बैठ गये, सामने ही मस्ती से बहती चौड़ा पाट लिए नर्मदा बेहद खूबसूरत दिख रही थी। कगार पर खड़ा विशाल वट वृक्ष गवाही दे रहा था कि कितना पुराना और कितना रमणीक स्थान है।

“हरीश भाई, बेहद खूबसूरत जगह है।”

“आप कभी गंगा दशहरा के समय आयें। उस समय और नज़ारा रहता है, यहाँ दस दिन मेला लगता है।”

“गंगा दशहरा! कब पड़ता है?”

“अमूमन मई में आता है।”

“अरे वाह, ये ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष का दसहरा होता है। हमारे यहाँ की तरह लगता है आप के यहाँ भी इसे मानते हैं।”

“बहुत बड़े स्तर पर आयोजन होते हैं यहाँ।”

“पर इसे यहाँ क्यों मनाते हैं, यहाँ तो गंगा नहीं है?”

“उस समय माना जाता है कि गंगा स्वयं नर्मदा में स्नान करने आती हैं।”

“कैसे?”

“सोन नदी के साथ कोई धारा में अमरकंटक और वहां से नर्मदा के साथ यहाँ तक आती हैं उस दिन गंगा अपनी पुत्री के साथ साथ।”

“वाह हरीश भाई आपने तो साइंटिफिक तरीके से समझा दिया” मैं बोला और सोचने लगा “होशंगाबाद में था तब से सुनता आ रहा था कि गंगा दशहरा के दिन नर्मदा में गंगा स्वयं पाप धोने आती हैं, पर इतने तार्किक ढंग से किसी ने नहीं बताया।”

सच है तर्क के बिना श्रद्धा भी बालू पर बनाये महल की तरह है जिसे गिरते देर नहीं लगती। पर तर्क की कसौटी पर कसी होगी तो हर श्रद्धा विश्वास से लबरेज होगी और सकारात्मक परिणाम की गारंटी होगी।”

“चलिए आपको संपूर्णानंद जी का आश्रम दिखाते हैं। कल तो शाम हो गयी थी इसलिए घाट भी अच्छे से नहीं देख पाए थे” गाँव से बाहर निकले तो हरीश भाई आग्रह करने लगे तो सोचा पास ही है, जाया जा सकता है।

“ये दत्त भगवान का मन्दिर है” कबीर बड़ के कल वाले घाट पर ही दुबारा पहुँचने पर हरीश जी दाहिने हाथ पर बने मन्दिर में ले जाकर बोले।

“बड़ी सुंदर मूर्ति है” अंदर जाते ही मैं बोल पड़ा। तीन मुखी संगमरमर की मूर्ति बेहद सौम्य थी।

“स्वयं भू हैं, यहीं पास के खेत से निकलीं हैं।”

“दत्त भगवान को यहाँ नर्मदा खंड में बहुत मानते हैं?”

“क्योंकि यहीं के तो थे?”

“याने?”

“इसी तट पर आप आगे चलोगे तो झझर पड़ेगा। यहाँ से कोई 80 कोस। वहीं है सती अनुसुइया का आश्रम। आश्रम की मिट्टी में बड़ी तासीर है जिनके चर्म रोग, सफेद दाग जैसे हों तो पांच रविवार वहां की मिट्टी लगाने से वो दूर हो जाते हैं। ऐसी कृपा थी अनुसुइया माँ की। वहीं जन्मे थे दत्त भगवान।”

“बड़वानी में मैंने देखा एक मुख वाले दत्त भगवान हैं वहां राजघाट पर, किन्तु यहाँ तीन सर हैं इनके।”

“बहुत मान्यता है इनकी, देश के प्रधान सेवक भी यहाँ आते हैं, उन्हें तो पूरी दत्त बावनी कंठस्थ है।”

“दत्त बावनी बोले तो?”

“दत्त भगवान की स्तुति है दत्त बावनी जिसमें 52 श्लोक हैं।”

दत्त भगवान के मन्दिर के बाद हरीश जी हमें घाट पर पैदल घुमाते हुए ले चले।

“बहुत ही रमणीक है।”

“उत्तर तट आपको दक्षिण तट से भी अधिक रमणीक मिलेगा। उत्तर तट को आर्य और दक्षिण तट को द्रविड़ कहते हैं इसीलिए उत्तर तट दक्षिण तट से अधिक भाग्यशाली माना जाता है।” कहते हुए हरीश जी हमें बाएं ओर बने विशाल आश्रम में ले गये जिसमें ऊपर लिखा था ‘भारद्वाज आश्रम’।

“भारद्वाज आश्रम?”

“यही है संपूर्णानंद जी का आश्रम।”

विशाल परकोटे में बना सुव्यवस्थित आश्रम। आधे मील से कम नहीं होगा उसका फैलाव। गौशाला जिसमें बेलजियम की गायें, केन्टीन, भोजन शाला, परिक्रमावासीयों को रुकने के डोरमेट्री, विश्राम भवन और न जाने क्या-क्या। एक बड़े से हाल में ले गये हरीश जी जहाँ संगमरमर की मूर्तियों में सभी धर्मों के देव थे, इस्लाम की कुरान थी। राम नाम कि धुन बज रही थी।

“सभी धर्मों के पूज्य चिन्ह, तस्वीरें हैं यहाँ। सर्व धर्म समभाव का उम्दा उदाहरण है। उस बड़े हाल के बाद हरीश जी दूसरे भव्य हाल में ले गये जहाँ मूर्तियों में पद्मासन में बैठे दो ऋषि दिख रहे थे।

“ये ही हैं संपूर्णानंद जी महाराज। बहुत बड़े तपस्वी थे, दिगम्बर रहते थे, पूरे तीस साल तपस्या की थी।”

“क्या यहीं पर?”

“नहीं घूम घूमकर, फिर यहाँ उन्हें अच्छा लगा और यहीं आश्रम बना कर रहने लगे।” “कितने साल पहले की बात है?”

“लगभग 40 बरस हो गये। 1981 की बात है।”

“कहाँ के थे।”

“सौराष्ट्र के।”

“ये जो बगल में मूर्ति है?”

“इनके शिष्य गोपालानन्द जी हैं इन्होंने ही आश्रम को इस भव्य रूप में लाया गया। बड़े महाराज संपूर्णानंद जी के बाद?”

“महाराज जी कब ब्रह्मलीन हुए?”

“2003 में।”

हम लोग बात कर ही रहे थे कि हॉल में 70-75 की दरम्यानी वय की एक महिला आयीं। हरीश जी ने उनसे मेरा परिचय कराया।

“आप क्या यहीं रहती हैं माताजी।”

“हाँ दिन में पूरे समय यहीं रुकती हूँ और शाम को अपने घर चली जाती हूँ।”

“कहाँ है घर आपका?”

“पास में ही गाँव है निकोरा” उन्होंने बताया।

“क्या नाम है आपका।”

“मंजुला बेन” हरीश जी ने उनकी ओर से उत्तर दिया।

बात करते हुए हम हाल से बाहर आ गये। बाहर पीपल वृक्ष के नीचे शिवलिंग स्थापित था, पास ही विशाल आश्रम की बाउंड्री वाल थी और नीचे बहती नर्मदा नदी।

“यहीं बैठते थे महाराज जी। मेरे पति भी कई बार उनके पास यहाँ आकर बैठ जाते थे” मंजुला बेन बताने लगीं।

“आपके पति?”

“प्रिंसिपल थे, रिटायर हो गये हैं” हरीश भाई ने कहा।

“महाराज जी में चुम्बक शक्ति थी लोगों को अपनी ओर खींचती थी, जो उनसे जुड़ गया वो फिर उन्हें छोड़ नहीं पाया” मंजुला बेन भावुक हो रही थीं।

“तभी तो आप अभी भी नियमित यहाँ आती हैं।”

“मुझे यहाँ जो शांति और सुकून मिलता है वह कहीं नहीं। लगता है अभी भी मौनी भिक्षु हमारे आस-पास हैं।”

“मौनी भिक्षु??”



“महाराज जी को ही कहते थे। अधिकतर मौन रहते थे” हरीश भाई ने बोला।

“बहुत बड़े तपस्वी थे। 35 बरस हिमालय में तपस्या की। हरिद्वार में रहे गंगा किनारे पर मन उनका नर्मदा में ही रमा था। अपने शिष्य गोपालानन्द को भेजा कि जाओ गुजरात और ऐसी जगह देखो जहाँ से मैं चौबीस क्लाक नर्मदा को देख सकूँ। बहुत देखने पर ये स्थान समझ आया और यहीं उन्होंने आश्रम बनाया।” मंजुला बेन बोलीं।

“ये जो आप ऊपर का कक्ष देख रहे हैं इसी में अधिकतर रहते थे महाराज जी” हरीश भाई ने इशारा किया तो निगाह गयी उस अहाते में एक बड़ा हाल नुमा कमरा बना था जिसके चारों ओर कांच था जिसमें बैठे इन्सान को बाहर का दृश्य स्पष्ट दिखे और सामने बहती नर्मदा भी।

“108 साल की उमर में समाधि ली थी महाराज जी ने, साक्षात् चमत्कारी थे, लोग आते, अपने काम बताते तो हो जाते, पर बच्चों जैसा स्वाभाव और रहते भी थे नग्न” माताजी ने कहा।

“हाँ हरीश जी बता रहे थे कि दिगम्बर संत थे महाराज।”

“उनकी चरण रज से इस स्थान का, हम सबका भला हो गया। आज भी सैकड़ों श्रद्धालु, परिक्रमावासी यहाँ आते हैं, रुकते हैं और महाराज जी कि कृपा पाते हैं” हरीश भाई ने जोड़ा।

आश्रम से मंजुला बेन माताजी से इजाजत ले हम लोग भरूच की ओर लौट चले। हरीश भाई भी साथ हो लिए। गाड़ी के दौड़ते ही मेरे विचार भी दौड़ने लगे।

“ये संत मुनि नग्न क्यों रहते हैं। कितनों के ही के बारे में देखा, पढ़ा है चाहे महावीर स्वामी हो, धूनी वाले दादाजी हों, गजानन महाराज, तेलंग स्वामी हों, संपूर्णानंद जी हों, रमण ऋषि हो, विद्यासागर जी हों और भी अनेक। पहले मैं सोचता था कि कोई एक तो अथो वस्त्र पहनने में क्या समस्या है। कम से कम संकेत रूप से तो नग्नता को ढक ही सकते हैं। पर मुझे लगता है कि मैं ग़लत सोच रहा था। ज्ञान की पराकाष्ठा को छूने वाले संत, मुनि जो परमात्मा से एकाकार करने कि स्थिति में आ जाते हैं उन्हें वस्त्र पहने हों या नहीं कोई फर्क नहीं पड़ता। दरअसल वे शरीर होते ही नहीं हैं, वे तो शरीर के अंदर होते हैं। जो आत्म तत्व है शरीर के भीतर, ये वो

हैं अर्थात् शरीर तो इनका खोल है ये तो खोल के अंदर हैं। अब खोल पर भी क्या खोल चढ़ाएं, शरीर तो वैसे ही आत्मा को ढकने का काम कर रहा है। वह तो आवरण है, अब उसे भी क्या ढकें, उसे भी क्या वस्त्र पहनाएं।”

“सर कड़ोंद आ रहा है, आपको कोटेश्वर के दर्शन कराते हैं” हरीश बोले तो मेरी तन्द्रा टूटी।

कड़ोंद पहुंचे, सड़क किनारे ही ब्रह्म राक्षस की परिकल्पना को साकार करता कोटेश्वर शिव मन्दिर। ऊँचे प्लेटफार्म पर नंदी और अंदर गर्भ गृह में बड़े शिवलिंग स्थापित थे। सीढ़ियों से चढ़ते ही ध्यान आया सो घंटा बजाया कि अदृश्य रूप से गर्भ गृह में यदि वाणासुर बैठे हों तो हट जायं। दर्शन किये शिवलिंग के। हरीश भाई ने बताया कि वाणासुर के जिन मिट्टी के शिवलिंग की चर्चा ज्योति बेन के यहाँ हो रही थी गत वैशाख के महामास में वैसा ही शिवलिंग उन्हें भी कड़ोंद में नर्मदा में मिला था, जो उनके पास आज भी सुरक्षित है। कड़ोंद से चले तो थोड़ी ही देर में भरूच आ गया। लगता था बातों में शुक्लतीर्थ भूल गये हरीश जी। कोई बात नहीं अगली बार।

भरूच शहर में घुसने से पहले ही हरीश भाई हमें नीलकण्ठेश्वर मंदिर ले गये जहाँ जाने की तमन्ना मेरी तबसे थी जबसे नर्मदा परिक्रमा के विवरण पढ़ और देख रहा हूँ किताबों में, नेट पर।

क्या आलीशान परिसर। ऐसा तो किसी फोटो में नहीं देखा था। विशाल प्रांगण, लाल पत्थर से बना भव्य व ऊंचा शिव मन्दिर जिसमें शिवलिंग स्थापित। सामने ही छोटा किन्तु सुंदर हनुमान मन्दिर जिसमें सफेद संगमरमर की हनुमानजी की संकटमोचन मूर्ति थी। सामने ही नर्मदा का सुंदर पक्का सीढ़ियों वाला घाट, सामने चौड़ा पाट लिए बहती नर्मदा और पश्चिम की ओर नर्मदा पर सूरत वरोदरा हाईवे का एल एंड टी द्वारा बनाया गया खूबसूरत पुल बना था।

समय हो चला था, दहेज निकलना था, सो हम लोग मन्दिर परिसर से बाहर आये और शहर की ओर चल दिए। हरीश जी ने शहर में ही उतरने की बात की तो खुशी-खुशी हम लोग कुछ समय और साथ रहेंगे जानकर उन्हें साथ ले शहर में घुसे ही थे कि श्रीमती जी का फोन आया कि वे और बेटी तैयार हैं चलने को।

“हरीश भाई दो दिन आपका साथ रहा, अच्छा लगा” मैंने कहा।

“आप माई में पूरा भाव रख कर लिखिए, फिर देखिये माई क्या करती है। आपने सोचा भी नहीं होगा वो हो जायेगा।” हरीश भाई ने बोल दिया जाने किस प्रेरणा से।



@EBOOKSIND

## मीठी तलाई

भरख से निकलते निकलते 12 बज गये थे। हाईवे था दहेज तक पर बहुत अच्छा नहीं था सो 50 कि.मी. का सफर डेढ़ घंटे में पूरा हुआ। जैसी कल्पना थी वैसा नहीं था दहेज बल्कि चलते समय भरख में होटल मैनेजर की कही बात कि ‘दहेज में घूमने के लिए तो कुछ है नहीं’ सही जान पड़ रही थी। गूगल मैप में जैसा दिख रहा था, हम लोग तो सोच रहे थे कि सीधे गाड़ी सी पोर्ट तक पहुँच जाएगी, वहीं सी फेसिंग कोई होटल देखकर रुक जायेंगे।

पर ये तो बड़ा औद्योगिक कस्बा लग रहा था, होटल जगह जगह दिख रहे थे पर टूरिज़्म अनुसार न होकर वे तो सब व्यवसायिक उद्देश्य के लग रहे थे। जितने भी होटल नेट पर सर्च कर उनके फोन लगाये, चाहे लॉर्ड्स हो या कोई और वे सभी रास्ते में मिले तो उन्हें देखकर तसल्ली हुई कि अच्छा रहा जो इनके फोन कई बार ट्राई करने पर भी नहीं लगे। खामखाँ एडवांस बुकिंग हो जाती। रुक तो यहाँ कहीं पाते नहीं। शहर भी कुछ भी खास नहीं कि घूमा जाय।

रास्ते में जितने भी लोगों से पूछा कि सी पोर्ट कहाँ है तो वे अचरज में पड़ जाते और जब कहते कि मीठी तलाई कहाँ है, तब तो वे ऐसे देखते जैसे हम कहीं के अजूबे हों जो रास्ता भटक मीलों उलटे चले आये हों। अब तो बड़ी समस्या।

“ये कहाँ आ गये” मन में यही विचार आ रहा था। एक चौराहे पर पहुँचे जहाँ कुछ खोमचे वाले और चाय, पान के टेले खड़े थे। गाड़ी से उतर कर पूछा कि “यहाँ पोर्ट कहाँ है। पोर्ट यानि बंदरगाह।”

“यहाँ तो कोई पोर्ट, बोट नहीं है” एक बोला।

“सी पोर्ट नहीं है? थके स्वर में मैंने पूछा अब तो मैं निराश होने लगा था।

“नहीं” एक दुकान वाला रूखे स्वर में बोला।

“मतलब यहाँ सी नहीं है?, सी यानि दरिया, समुद्र” बुझे मन से बोला।

“सी तो है पर पोर्ट नहीं” ठेले पर खड़े एक युवक ने बताया।

“चलो कुछ तो बात बनी पर क्या पता वहाँ तक जाने का रास्ता भी हो या न हो” मैं मन ही मन सोचने लगा और धीरे से पूछा।

“वहाँ तक जा सकते हैं?”

“हाँ बिलकुल जा सकते हैं” उसने कहा तो आशा जगी।

“गाड़ी चली जाएगी? मैंने पूछा।

“हाँ एकदम चेट्टी तक।”

“अब ये चेट्टी क्या है” मैं फिर सोच में पड़ गया “होगा कुछ मुझे क्या”।

“वहाँ नर्मदा परिक्रमा के लोग भी जाते हैं?” मैंने पूछा।

“क्या परिक्रमा...?? वो सब नहीं पता??” मेरे बेटुके सवाल पर जैसे वह फिर reluctant हो गया।

“अच्छा वहाँ तक का रास्ता बताएँगे?”

“आप आगे निकल आये हैं। दो कि.मी. पीछे जाएँ फिर चौराहे से दाहिने मुड़ जाय, वो पक्की सड़क आपको चेट्टी तक ले जाएगी। रास्ते में एक क्रासिंग पड़ेगी, रेल क्रासिंग, वहाँ से लखी ग्राम पूछ लेना, उसी से होकर जाना होगा। यहाँ से 7-8 कि.मी. अंदर है” ठेले पर खड़े 30-32 साल के युवक ने बताया और हम चल दिए वापस।

“पापा यहाँ कहाँ रुकेंगे। ये तो कुछ भी नहीं लग रहा। आप भी न, कहा ले आये। कह रहे थे सी फेसिंग होटल में रुकेंगे, जैसे कुछ साल पहले द्वारका में रुके थे।”

“नक्शे में तो यही लग रहा था, सब कह भी रहे थे कि वहाँ समुद्र है। द्वारका वाला होटल लॉर्ड्स भी यहाँ दिख रहा था तो लगा कि होगा।”

“चलो वहां चल कर देख लें फिर सोचना” श्रीमती जी की यह आदत अच्छी थी कि जब भी बाप बेटी में नोक झोंक होती तो वे तुरंत बात संभाल देती।

“ठीक है” मैंने कहा पर मैं सोच रहा था कि जब टाउन में कोई ढंग की जगह नहीं दिख रही तो अंदर इतनी दूर क्या होगी।

पूछते-पूछते 15-20 मिनट में हम लोग वहां पहुंच गये, जहाँ समुद्र था। समुद्र तक बल्कि कुछ अंदर तक सीमेंट रोड़ गयी थी। कुछ गाड़ियाँ किनारे खड़ी थीं, कुछ लोग अंदर तक गयी सड़क पर घूम रहे थे। समुद्र में एक जहाज भी खड़ा था पर वहां कोई बाजार, बस्ती, होटल जैसी चहल-पहल नहीं थी। खुले मैदान में एक तरफ जमीन पर फर्श बिछाए एक दुकानदार बैठा था। विवेक ने गाड़ी पार्क कर दी, माँ बेटी उतर कर जहाज की ओर चल दी। मैंने सोचा कि इस दुकानदार से ही कुछ जानकारी ली जाय क्योंकि, देखने जैसा तो मुझे कुछ दिख नहीं रहा था। बेटी को समुद्र देखने का रोमांच था तो वह देख लेगी माँ के साथ।

“आप क्या यहीं दुकान करते हैं” मैं चहल कदमी करता हुआ उन तक पहुंचा और पूछने लगा। फर्श पर लगी दुकान में कुछ नमकीन, बिस्किट के पाउच, पैकेट थे, चाय का साधन था और पानी की केन थीं। पास ही एक सफेद मारुती वेन खड़ी थी जिसमें उन दुकानदार सज्जन का सामान था।

“हाँ, यहीं लगाता हूँ।”

“यहाँ ज्यादा लोग तो आते नहीं हैं। इक्का-दुक्का गाड़ी ही दिख रही हैं” मैंने कहा।

“अभी आएंगे न चार बजे बहुत लोग” वे बोले।

“कहाँ से?”

“परिक्रमा से”

“परिक्रमा, काहे की परिक्रमा??”

“नर्मदा परिक्रमा।”

“क्या ...!!!” अब मैं भौचक्का रह गया।

“हाँ नर्मदा परिक्रमा के लोग उस पार से आएंगे चार बजे। उन सबको पानी पिलाने का काम मेरा है।”

“पर वो तो सुना है मीठी तलाई में जाते हैं?”

“यही तो है मीठी तलाई।”

“क्या!!!” दुबारा मैं अवाक् रह गया “क्या सचमुच मैं वहां आ गया जहाँ आने की मुराद नजाने कब से देख रहा था। क्या सचमुच यही मीठी तलाई है।”

“तो यही वह जगह है जहाँ नर्मदा समुद्र से मिलती हैं।”

“हाँ यहीं आगे दरिया में। यहाँ तक आपको दरिया का पानी मटमैला दिखेगा वो नर्मदा संगम के कारण ही है, नहीं तो दरिया का पानी तो एक दम साफ रहता है।”

“आप को कैसे पता कि चार बजे परिक्रमावासी आएंगे?”

“सब फिक्स रहता है, उस पार विमलेश्वर से कब बोट चलेगी, उस में 3:30 घंटे जोड़कर अनुमान हो जाता है कि कब यहाँ मीठी तलाई पर उतरेंगे।”

“कितने लोग आयेंगे।”

400 के करीब हैं।

“एक नाव में इतने आ जायेंगे।”

“एक नहीं कई रहती हैं। पर चलती सब साथ हैं?”

“ऐसा क्यों? परिक्रमा वाले तो आते जाते रहते हैं।”

“परिक्रमावासी तो आते रहते हैं पर दरिया का पानी जब विमलेश्वर में चढ़ता है तभी बोट चल सकती है, कम पानी में बोट नहीं चल पाती इसीलिए जब पानी बढ़ता है तब बोट वहां से खाना होती हैं। इसीलिए उस समय तक लोगों को इंतज़ार करना पड़ता है। एक दो दिन रुक कर खेप चलती हैं।”

“उन्हें आप पानी पिलाते हैं, उसका दाम भी लेते होंगे।”

“निशुल्क।”

“पर क्यों?”

“एक बार मैंने अनुभव किया गर्मी में 3-4 घंटे की नाव में यात्रा के बाद जब परिक्रमावासी यहाँ आते हैं तो उन्हें प्यास बहुत लगती है। दरिया का पानी तो पी नहीं सकते। यहाँ कोई दुकान वगैरह की व्यवस्था भी नहीं थी तो मैंने ये बीड़ा उठाया कि सब को पानी फ्री ऑफ कास्ट पिलाऊंगा। जिन्हें

चाय चाहिये उन्हें चाय भी दूंगा और इस तरह मेरी यह मुहिम शुरू हुई।”

“आप तो कई पानी की केन रखे हैं।”

“हाँ ये सब 5-6 केन खत्म हो जाएँगी।”

“पर आपको तो इनकी व्यवस्था करनी होती है।”

“गाड़ी यहीं दे जाती है 20 रु. की एक।”

“यानि एक दिन में आप 100 रु. का तो पानी ही पिला देते हैं। कुछ समान बिक जाता होगा।”

“परिक्रमावासीयों पर पैसे कहाँ रहते हैं जो वे नमकीन खरीदें। वो तो सब माई ही कराती है। उसके बन्दों की सेवा करने से वो प्रसन्न होती है।”

“आप बड़ा काम कर रहे हैं। क्या नाम है आपका?”

“करन सिंह।”

“करन सिंह जी कहाँ रहते हैं?”

“पास में ही गाँव है लोहार।”

“आपका बहुत बहुत शुक्रिया करन सिंह जी, दहेज में तो कोई बता ही नहीं पा रहा था मीठी तलाई, परिक्रमा।”

“वो इसलिए कि एक तो परिक्रमावासी अमूमन दहेज जाते नहीं हैं। मीठी तलाई के पुराने मन्दिर होकर नर्मदा किनारा पकड़ कर निकल जाते हैं भरूच की ओर। दूसरा दहेज ठहरा इंडस्ट्रियल एरिया, वहाँ कहाँ परिक्रमा, मीठितालाई से काम।”

“हाँ ये सही कारण बताया आपने। मीठी तलाई का पुराना मंदिर! क्या कोई मन्दिर भी है इस नाम का?”

“हाँ यहाँ से डेढ़ कि.मी. है। आप ज़रूर जाइये।”

“अवश्य जायेंगे, करन सिंह जी।”

मैंने कहा और उनसे विदा ले मैं चेट्टी तक चला आया। दूर से ही लिखा था जागेश्वर चेट्टी। टहलते हुए, शालिनी और उनकी मम्मी जहाँ खड़ी थीं मैं वहाँ चला गया। नीचे समुद्र ठाटे मार रहा था पर पानी पूरा मटमैला। निश्चित ही नदी के मिलने से मटमैला हुआ होगा अर्थात् नर्मदा का संगम यहीं पास है सागर से। सामने एक जहाज खड़ा था। ऊपर प्लेटफार्म की रेलिंग पकड़ कर मैं देखने लगा कि कुछ युवक उधर से गुजरे तो मैंने जहाज



का फंक्शन बताने को बोला तब उन्होंने बताया कि यहाँ से भावनगर तक जहाज से जाते हैं तो बीच में सुप्रसिद्ध वही शिव मन्दिर मिलता है जो आधे समय समुद्र में डूबा रहता है और आधे समय बाहर।

“भावनगर यहाँ से पानी में से कहाँ जायेंगे। सड़क मार्ग नहीं है यहाँ से भावनगर का” मैंने पूछा।

“अगर सड़क से जायेंगे तो काफी उल्टा पड़ेगा। पूरा चक्कर लगा कर जाना होगा” उनमे से एक बोला।

“वैसे सीधे ही है, सागर में 7-8 घन्टे में पहुँच जाते हैं” दूसरा युवक बताने लगा।

“मतलब हम खम्बात की खाड़ी पर खड़े हैं” दूसरा युवक बोला तो मुझे भी समझ आया।

सामने जहाँ तक नज़र जाए, पानी ही पानी। समुद्र के रंग से इतर मटमैला पानी। मंजुल और शालिनी तो समुद्र देखने में मग्न थे।

“यहीं नर्मदा जी का संगम है” मैंने पास जाकर बताया।

क्या! यहाँ पर?” श्रीमती जी ने अचरज से पूछा।

“हाँ ये मीठी तलाई जगह है, उस पार विमलेश्वर है। यहीं नर्मदा जी मिल रही हैं सागर से, तभी तो पानी इतना मटमैला है।” मैंने कहा।

“अरे वाह पापा हम तो सी रिवर कांफ्लुएंस पर आ गये हैं।”

“बेटू बहुत मान्यता है इस स्थान की।”

“जहाँ से निकलती हैं नर्मदा अमरकंटक भी हम लोग साथ गये थे और आज जहाँ सागर में मिलती हैं नर्मदा मैया वहाँ भी हम साथ हैं” श्रीमती जी रोमांचित हो गयीं।

“हाँ अपनी भी परिक्रमा पूरी हो गयी” मैंने कहा तो वे दोनों भी खुश हो गये इस बात पर और मैं सोचने लगा।

“यदि बेगड़ जी, ज्योति बेन की परिक्रमा माँ ने स्वीकरी, जो उन्होंने टुकड़े-टुकड़े में की थी तो क्या मेरी भी स्वीकार लेंगी। मैंने भी तो आज टुकड़े-टुकड़े में ही सही एक परिक्रमा तो पूरी कर ही ली। हाँ समय ज़रूर बहुत लगा, पूरे 8 साल। 6 जुलाई 2011 को सपरिवार अमरकंटक गये थे और उसके बाद ही होशंगाबाद नर्मदा किनारे रहने आये। होशंगाबाद, भोपाल,

फिर होशंगाबाद, अब हरदा। इस तरह होते होते 8 साल में अमरकंटक से मीठितालाई तलाई का सफर पूरा हुआ। यानि पूरा नर्मदा खंड, एक परिक्रमा पूरी आज 25 नवम्बर 19 को। सबसे अच्छी बात ये कि शुरू और समाप्ति में परिवार साथ रहा।”

“चलें” श्रीमती जी बोलीं तो मेरी जैसे तन्द्रा टूटी हो।

“हाँ चलो, मीठीतलाई मन्दिर चलते हैं।”

“मैं क्या सोच रही थी पापा कि हम मन्दिर के बाद वापस भरूच ही चलते हैं, क्योंकि यहाँ तो रुकने की जगह जैसी हम चाह रहे थे वैसी है नहीं।”

“ठीक है, अभी टाइम है 4 बजे तक हम मंदिर देख कर वापस चलेंगे।”

“होटल अभी से मत करना, समय पर पहुँच जायेंगे तो वही चल कर देखेंगे।”

“वहाँ रुकने का यह भी फायदा होगा कि कल सुबह ही हम वहाँ से स्टेचू के लिए निकल लेंगे” मैंने विचार का समर्थन किया और हम लोग चेष्टी से मीठी तलाई मन्दिर के लिए चल दिए। लौटते में ध्यान गया कि दो एक जगह लिखा था मीठी तलाई मन्दिर और डायरेक्शन का एरो बना था। कोई 1.30 या 2 कि.मी. चलने पर हम पहुँच गये उस प्राचीन मन्दिर के प्रांगण में।

काफी बड़ा और व्यवस्थित परिसर था। एक तरफ नर्मदा माई का मन्दिर बना था। सबसे पहले जाकर माँ के दर्शन किये और आशीष लिया कि पूरे परिवार पर यूँ ही कृपा बनी रहे। कुछ देर बैठा, बिटिया पर माँ का आशीष माँगा और बाहर निकले।

सामने ही बड़ा हाल बना था, जानना ही चाह रहे थे कि, क्या है तब तक एक सज्जन उसमें से निकले, भगवा वस्त्र पहने इसी आश्रम के कोई जूनियर पुजारी लग रहे थे। उनसे परिचय हुआ, यह जानकर कि हम लोग एम.पी. से आये हैं, वे खुश हो गये।

“मैं भी सतना के पास मैहर का रहने वाला हूँ” उन्होंने प्रसन्न हो बताया।

“आप कब से हैं यहाँ।”

“मैं तो अभी कुछ माह पूर्व ही आया हूँ, पहले जबलपुर में था, वहाँ भी मीठी तलाई नाम से आश्रम है।”

“ये आश्रम तो बहुत पुराना लग रहा है।”

“50 साल पहले कृष्णानन्द बापू ने यह जगह सिद्ध की थी पहले यहाँ जंगल था।”

“उन्होंने ही ये आश्रम बनवाया होगा।”

“वे तो यहाँ जंगल में झोपड़ी बना कर रहते थे। परिक्रमावासी आते जाते थे तो उन्हें यहाँ पीने के पानी की बड़ी समस्या थी, क्योंकि आश्रम से लगा हुआ ही समुद्र है और आप जानते हैं समुद्र के पास का पानी भी खारा होता है।”

“हाँ ये तो सही है, फिर?”

“बापू ने यहाँ तपस्या की और अपने तपबल से मीठे पानी का तालाब बना दिया।”

“अच्छा तभी इसे मीठी तलाई कहते हैं।”

“हाँ तालाब को ही तलाई कहते हैं।”

“अब कहाँ है वो तालाब?”

“कम्पनी ने जो जगह ली उसमें पूरा तालाब आ गया तब वहाँ कुआ बना दिया गया।”

“वो कुआ कहाँ है?”

“वो जो परिक्रमावासीयों के लिए कॉटेज बनी हैं उनके पास ही आप को दिख रहा है?” उन्होंने दूर बने एक कुँए की ओर इशारा करते हुए कहा।

“जब मीठा पानी यहाँ मिल गया तो आश्रम बनाया होगा बापू ने?”

“कृष्णानन्द बापू ने तो समाधि ली थी उसके बाद शिवानन्द बापू ने इस स्थान का विकास किया।”

“बहुत ही भव्य बना है। क्या हम उस कुँए का पानी ले सकते हैं।”

“ज़रूर उसी का पानी पीते हैं सभी। आज परिक्रमावासी बहुत बड़ी संख्या में आ रहे हैं। वे सब भी यहाँ रुकेंगे। इसी के पानी से भोजन बनायेंगे।”

“भोजन वे लोग अपना बनाते हैं?”

“सदावत आश्रम से मिलता है, बनाते हैं वो अपना।”

“सदावत का तो कुछ देना नहीं होता है।”

“सदावत तो निशुल्क ही होता है।”

हम लोग टहलते हुए कुँए तक गये जगत के पास खड़े हो कर देखा बड़ा, पक्का ओपन कुआ था और मात्र 7-8 फीट गहराई पर था अथाह पानी। मैंने पास ही रस्सी, बाल्टी ले कर कुए में डाल दी।

“पापा क्या कर रहे हो?”

“पानी निकाल रहा हूँ पीने को।”

“ये stagnated वाटर है। इसे नहीं पीना।”

मैंने तब तक पानी निकल लिया। नीचे तो पत्ते वगैरह पड़े होने से नहीं लग रहा था पर बाल्टी में एक दम स्वच्छ था। थोड़ा सा पिया।

“हूँ..., कितना टेस्ती है, बेटू पी के देख” मैं बोला।

बिटिया ने और उसकी माँ ने भी taste किया। पानी था ही मीठा और स्वादिष्ट कि बिटिया ने मिनरल वाटर की बॉटल खाली कर कुए के पानी से ही भर ली।

अच्छा खुला परिसर, जिसमें पेवर्स लगे थे अनेक पेड़ अपनी छाया कर रहे थे। एक बड़े बरगद के नीचे लगी कुर्सियों पर हम लोग कुछ देर बैठे और वापस चल दिए।



## भाड़भूत

**जा**ते समय ही बोर्ड देखा था भाड़भूत का, सोचा जब लौट ही रहे हैं भरूच और अभी समय भी है 4:30 बजे हैं तो क्यों न भाड़भूत भी देखा जाय। मुख्य सड़क पर लगा साइन बोर्ड दिखा रहा था भाड़भूत तीन कि.मी.। ज्यादा दूर नहीं यह जानकर गाड़ी घुमाने का बोल दिया विवेक को।

गाँव पार कर किनारे पर पहुंचे। शिव मन्दिर था स्वच्छ साफ और ऊँचे स्थान पर बना, बाहर लिखा था सोमेश्वर महादेव। अंदर गर्भ गृह में जाकर शिवलिंग के दर्शन किये। बाहर वरांडा में नंदी विराजमान थे और उनके दर्शन कर निकले तो बड़ा सा बाहर कोर्ट यार्ड। जिसके पेरापेट के पास खड़े हो कर देखा, नीचे सामने बहती नर्मदा अद्भुत दिखाई दे रही थी। पाट की चौड़ाई दो कि.मी. से कम न होगी। सागर जैसा नज़ारा। दूसरा तट दिख ही नहीं रहा था। साफ स्वच्छ जल जिसमें ऊपर तमतमाया सूरज अपनी किरणें फेंक स्वर्णिम तल बना रहा था। चौड़ी सीढ़ियां नीचे तक गयी थीं जिनसे उतर कर साइड वाली कच्चे रास्ते से नदी तक पहुंच सकते थे जहाँ अनेक नावें खड़ी थीं।

“पापा बोटिंग करेंगे” कहते हुए शालू नीचे उतरने लगी।

“नहीं बेटा लेट हो जायेंगे।” कहते हुए मैं पीछे चला।

“शालू वापस आ जाओ” श्रीमती जी ऊपर से ही बोलीं, कुछ खिन्नता थी लेट होने की स्वर में, सो नीचे नहीं आयीं।

तब तक हम दोनों नीचे उतर गये। नीचे एक और मन्दिर बना था, जिसकी सीढ़ियों पर एक सज्जन बैठे प्लास्टिक की बोरियों का फर्श बना रहे

थे। घाट पर जाने से पहले सोचा उनसे पूछा जाय यही सोच कर बिटिया उनके पास चली गयी।

“अंकल यहाँ बोटिंग हो जाएगी?”

“बेटा ये बोटिंग की नाव नहीं हैं। मछुआरे हैं यहाँ जो नाव से मछली पकड़ते हैं”

“ओह!” बेटी को निराशा हुई तब तक मैं भी पहुँच गया।

“आप क्या यहीं रहते हैं।”

“जी हाँ।”

“ये किसका मन्दिर है।”

“सब हैं दशा माँ, नर्मदा माँ, दत्तात्रेय सब हैं। दर्शन करो, अच्छा मन्दिर है” उन्होंने कहा तो हम दोनों ऊपर चढ़ गये दर्शन करने।

चारों मन्दिर लाइन से बने थे और बाहर का अहाता कॉमन था। सबसे पहले जिस मन्दिर में गये वो देवी का मन्दिर था लगा यही नर्मदा होंगी। दर्शन किये फिर दूसरे मन्दिर गये वो था नर्मदा माँ का मन्दिर जिसमें मछलियों के बीच में नर्मदा माँ की मूर्ति बनाई थी। अन्य मन्दिर देखे लक्ष्मी, दुर्गा, दत्तात्रेय, गणेश सभी के दर्शन कर वापस आ गये।

“नर्मदा जी का मन्दिर बीच में है?”

“हाँ, पहला दशा माँ का है।”

“दशा माँ बोले तो?”

“माँ के नवदुर्गा अवतार के बाद दसवां अवतार।”

“अच्छा आपका मतलब दसा माँ।”

“हाँ दसा माँ, जो नौ माँ से पूरा न हो उसे दसा माँ करती है। एक बार में सच्ची श्रद्धा हो तो सब बिगड़े बनाती है।”

“कैसे?”

“किसी के औलाद न हो यहाँ बोल जाते हैं, न जाने कितनों की झोलियाँ भर गयी यहाँ। आपने जो मन्दिर में बच्चों के फोटो देखे हैं वे सभी यहीं मन्नत से हुए हैं।”

“कहाँ लगे फोटो?”

“उनके मन्दिर में।”

“हाँ पापा, अंदर लगे हैं कई फोटो बच्चों के।”

“चल फिर से देख के आते हैं” कहते हुए मैं फिर बिटिया के साथ सीढ़ियां चढ़ दसा माँ के मन्दिर गया। अंदर देखा, सचमुच दोनों दीवारों पर अनेक छोटे-छोटे बच्चों के फोटो लगे थे। गिनती तो न की पर लगभग 100 तो होंगे। आश्चर्य मिश्रित भाव के साथ हम लोग फिर वापस आये।

“इतने सारे बच्चों के फोटो देख कर लग रहा है यहाँ बड़ी मान्यता है दसा माँ की।”

“मान्यता तो सब जगह है पर गुजरात में ज्यादा ही है। यहाँ असाढ़ी अमावस्या को इनका व्रत होता है दस दिन का व्रत रखते हैं लोग, महिलाएं खास कर।”

“उस समय तो यहाँ काफी भीड़ रहती होगी?”

“बहुत, वैसे तो पूरे साल ही लोग आते हैं। परिक्रमावासी यहीं आकर रुकते हैं। सिर्फ बच्चे के लिए ही नहीं, कैसी भी समस्या हो, कोई भी काम नहीं हो रहा हो, यहाँ लोग मनौती मान जाते हैं, माँ रास्ता दिखाती है, और हो जाते हैं।”

“अद्भुत है माँ। आपका क्या नाम है?”

“रामधर।”

“रामधर जी बहुत बहुत धन्यवाद” कहते हुए हमने उनसे विदा ली।

बाप बेटी लौट रहे थे और जान रहे थे कि लेट हो रहे हैं इसलिए श्रीमती जी बड़बड़ा रही होंगी। ऊपर गये तो देखा कि वे तो गाड़ी में जाकर बैठ गयी हैं।

“मम्मी आप चली नहीं बहुत अच्छा मन्दिर है नीचे। दसा माँ का, बड़ा सिद्ध है जो मांगों मिलता है।”

“दसा माँ क्या?”

“दुर्गा का दसवां रूप, नौ दुर्गे के बाद दसा माँ” मैंने बताया।

“आप की इच्छा हो तो देख आओ” बिटिया बोली।

“चलो” उन्होंने कहा तो फिर गाड़ी घुमाई नीचे मन्दिर की ओर।

“आप और पापा हो कर आओ, मैं यहीं बैठी हूँ गाड़ी में” बिटिया ने कहा तो हम दोनों चले गये। सबसे पहले मैं उन्हें दसा माँ के मन्दिर में ही ले गया। श्रीमती जी ने कोई मनौती मान ली तब नर्मदा माँ के साथ अन्य मन्दिरों के दर्शन कर हम वापस भरूच की ओर चल दिए।



@EBOOKSIND



## भृगु मन्दिर

भरूच शहर में घुसते ही अच्छा होटल मिला। होटल आशीष। चेक इन किया अभी 6 बजे थे। मशविरा हुआ कि कल का क्या प्लान रहेगा।

“चूँकि भरूच आ गये हैं तो अब स्टेचू पहुँचने में 3 घंटे लगभग लगेंगे। कल आराम से निकलते हैं। स्टेचू होते हुए वापस जाने के दो रास्ते हैं। या तो इन्दौर पहुँच जाय शाम तक और वहीं रुक कर अगले दिन हरदा। दूसरा रूट है स्टेचू से महेश्वर, ओम्कारेश्वर होकर वापस चलें।”

“कौनसा पास है? श्रीमती जी ने जानना चाहा।

“दोनों ही लगभग बराबर हैं। अलीराजपुर तो दोनों के लिए स्टेचू के बाद जाना होगा उसके बाद वहाँ से इंदौर का रास्ता कुछ ठीक होगा हालाँकि महेश्वर वाला भी बुरा नहीं है बस ज्यादा लेट न हों क्योंकि deserted एरिया है। यदि महेश्वर हो कर चलें तो नर्मदा रिट्रीट में रुकेंगे, सुना है बहुत अच्छी जगह है।”

“तब तो पापा महेश्वर होकर ही चलेंगे। ओम्कारेश्वर भी पड़ेंगे रास्ते में” बिटिया बोली जैसे मेरे मन की मुराद ही पूरी कर रही हो। ज्यादा से ज्यादा नर्मदा माँ के किनारे। और ये तो दोनों ही नर्मदा के वे स्थान हैं जहाँ जितनी बार भी जाओ कम है।

“अगर उधर से चले तो एक दिन ओम्कारेश्वर में भी रुकेंगे” मंजुल बोली।

“हाँ हाँ क्यों नहीं अभी तो पर्याप्त छुट्टी हैं” मैंने समर्थन किया। अँधा क्या चाहे जैसे दो आंख।

“वहां भी पापा नर्मदा रिसोर्ट में रुकेंगे जहाँ पहले रुके थे” बिटिया बोली।

“ज़रूर, तब यह तय रहा कि कल आराम से निकलेंगे। सूरत हाईवे पर जाते ही थोड़ी दूर नीलकण्ठेश्वर महादेव का सुंदर मन्दिर है। मैं तो सुबह देख आया था तुम लोगों को भी दिखा देंगे।”

“कल क्यों पापा मन्दिर तो अभी शाम को भी चल सकते हैं।”

“हाँ चलो आज सोमवार भी है” मंजुल ने शालू की बात का समर्थन किया।

हम लोग झटपट तैयार हो कर नीलकण्ठेश्वर महादेव मन्दिर को निकल लिए जो शहर से लगभग बाहर ही था। सात बजे मन्दिर में अंदर थे। माँ बेटी दोनों को मन्दिर बहुत ही रमणीक लगा खासकर साफ सुथरे प्रांगण के नीचे बहती नर्मदा। घूम कर सभी मन्दिरों ओर नर्मदा घाट के दर्शन कर हम लौटने लगे। विशाल परिसर में दो बसे खड़ी थीं जिनके यात्री सभी स्त्री, पुरुष परिक्रमावासी थे जो विश्राम कक्षों के बाहर खुले मैदान के पक्के फर्श पर बैठे भजन गा रहे थे।

धीमी-धीमी रौशनी में लयबद्ध उनके स्वर अलग ही शमा बाँध रहे थे जैसे जाने वालों को रोक रहे हों, अपनी ओर बुला रहे हों। सोचा जल्दी चलें नहीं तो यह माहौल कहीं नशा न पैदा कर दे और हम डूब कर जा ही न पायें होटल, यहीं रम जाय रात भर।

लौटते समय भरूच सूरत रोड पर भव्य सफेद चमकता स्वामी नारायण मन्दिर मिला जो शाम की रौशनी में और आकर्षक लग रहा था।

“काफी बड़ा है यदि उतर गये तो देर हो जाएगी।” यही सोचकर बाहर से ही भगवान स्वामी नारायण के दर्शन किये और चल दिए।

होटल वापस आते आते 8 बज गये। सोचा रूम में ही खाना बुला लेंगे पर होटल का नीचे रेस्टोरेंट इतना अच्छा और चहल-पहल वाला लग रहा था कि वहीं डिनर के लिए बैठ गये।

“सुबह मैं जल्दी उठ कर भृगु ऋषि के मन्दिर जाऊंगा” रूम में आते ही मैंने घोषणा की।

“कहाँ है?” मंजुल ने पूछा।

“बहुत अंदर है, पुरानी बस्ती में बताते हैं। तुम लोग तब तक तैयार होना मैं लौट आऊंगा” मैंने कहा तो सहमती बन गयी सबकी।

सुबह जल्दी उठ कर तैयार हुआ और 6 बजे तो होटल के सामने चाय की दुकान पर पहुँच गया। चाय की चुस्कियों के बीच सोच रहा था कि किससे पूछूँ, अभी तो लोग भी कम दिख रहे हैं। तभी एक ऑटो रिक्शा आकर वहीं रुका, मैंने पास जाकर कहा कि -

“भृगु मन्दिर चलोगे क्या?”

“कहाँ पर है?” ऑटो वाला मुझ से ही से पूछने लगा।

“तुम्हें नहीं पता, नेट पर डंडिया बाजार, ओल्ड टाउन में स्वामी नारायण मन्दिर के पास दिख रहा है।”

“स्वामी नारायण मन्दिर तो मैंने देखा है, वहां तक ले चलता हूँ। आगे आप पूछ लेना।”

“यह भी ठीक है, चलो।”

25-26 साल कि उमर का ऑटो वाला इमरान उत्साही लड़का था। बात चीत में बड़ा पॉजिटिव लग रहा था। शहर के बारे में बताते हुए वह मुझे काफी आगे, भरूच शहर जहाँ कल हम लोग घूम रहे थे, उसे भी पार कर अंदर पुरानी बस्ती में ले गया।

“इतना ऐतिहासिक शहर और अंदर इतना गंदा” मैं सोच रहा था कि जैसे इमरान ताड़ गया।

“नगर पालिका वाले लाइन खोद रहे हैं इसीलिए सड़क पर गंदा है” इमरान सफाई दे रहा था। तभी ऑटो एक पुराने मन्दिर के आगे रुका।

“यही है सर, स्वामी नारायण मन्दिर। आप अंदर जाकर जानकारी ले सकते हैं तब तक मैं यहीं आपका इंतज़ार करता हूँ।”

ऊँचाई पर बना स्वामी नारायण मन्दिर की चौड़ी सीढ़ियाँ, जो गिनती में 20 से कम नहीं होंगी, चढ़ कर मैं ऊपर पहुँचा। साफ, हरा भरा परिसर और उसमें बना प्राचीन शैली का भव्य मन्दिर। सुबह की आरती की तैयारी चल रही रही। अनेक लोग आ जा रहे थे। काफी चहल-पहल थी। गुजरात में स्वामी नारायण को मानने वाले बहुत होंगे तभी तो भरूच जैसे शहर में ही दो-दो विशाल मन्दिर हैं स्वामी नारायण के। एक जो कल देखा था नया

बना है और एक जो आज देख रहा हूँ। कहने को पुराना है पर भव्यता में कम नहीं। पीछे ही नर्मदा बह रही थीं जो मन्दिर प्रांगण से ही दिख रही थी।

आरती में शामिल हुआ। संगमरमर की सुंदर और विशाल मूर्ति थी भगवान स्वामी नारायण जो लगता था कि अभी बोल ही पड़ेगी। बगल के मन्दिरों में राधा कृष्ण, गणेश कि मूर्तियाँ स्थापित थीं। आरती से लौटा तो सीढ़ियों पर एक सज्जन मिले, उनसे पूछा।

“यहाँ भृगु मन्दिर है क्या?”

“हाँ है न, बगल में” उन्होंने इतनी सहजता से कहा तो लगा कि खोज सही दिशा में जा रही थी।

“बगल में!”

“मेरा मतलब है कि पास ही बगल से गली गयी है उसी से चले जाना थोड़ी ही दूर पर सामने ही आपको भृगु मन्दिर मिल जायेगा।”

उन्हें धन्यवाद दे मैं तेजी से लौटा और इमरान को उत्साह से बताया कि बगल की गली में है।

“अच्छा अच्छा मैं समझ गया” इमरान भी उसी उत्साह से बोले जैसे उसे याद आ गया हो। ऑटो मोड़ कर सीधे बिना कहीं पूछे इमरान ने ले जाकर खड़ा कर दिया।

“उतरें सर।”

“कहाँ है?”

“ये क्या है, सामने” इमरान बोला तो मैंने ऑटो से उतर कर देखा। एक मकान पर लिखा था, भृगु मन्दिर। पर बाहर से मन्दिर जैसा तो बिल्कुल भी नहीं लग रहा था। जैसी पुराने मकानों में सीढ़ियाँ होती हैं ऊपर की मंजिल पर जाने को, वैसी ही सीढ़ियाँ दिख रही थीं। इमरान को वहीं रोक मैं सीढ़ियाँ चढ़ गया। 15-20 सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद एक लम्बा वरांडा आया, जिसे पार कर आगे गया तो चौड़ा अहाता आया जिसमें शनि भगवान की आदम कद मूर्ति बीच आंगन में स्थापित थी और बगल से मन्दिर था, पुराना किन्तु व्यवस्थित और साफ सुथरा

“चलो मन्दिर तो मिला” मैं सोच ही रहा था कि सामने से पुजारी की वेशभूषा में 22-23 साल एक एक युवक दिखा।

“आप क्या यहीं रहते हैं?”

“जी मैं यहाँ का पुजारी हूँ।”

“क्या नाम है आपका।”

“धर्मेश भाई।”

“अभी सुबह से ही पूजा कर रहे हैं?”

“आज अमावस्या है, शनि भगवान कि विशेष पूजन होता है।” कहते हुए वे शनि भगवान के चबूतरे पर चढ़ गये। साफ सफाई किया, तेल चढ़ाया और उतर कर मेरी ओर आते हुए बोले।

“आइये आपको समझाते है। आप अच्छे दिन यहाँ आये हैं, आज अमावस्या है” उन्होंने फिर दुहराया।

और हमें एक बड़े वरांडा में ले गये जहाँ चार मूर्तियाँ स्थापित थी। सबसे बड़ी मूर्ति के पास ले जाकर बोले।

“ये हैं भृगु ऋषि, जिनके कारण इस शहर का नाम भरूच पड़ा। पहले इसे भृगुकच्छ कहते थे। जो भृगु के द्वारा बसाया गया कच्छ था।”

“कच्छ यानि समुद्र किनारा बसाहट।”

हाँ, भृगु ऋषि के पुत्र थे जमदग्नि और उनकी पत्नी थीं रेणुका। यहाँ आप दोनों की मूर्तिया देखें। इन दोनों के पुत्र थे परसुराम जिनकी मूर्ति सबसे कोने कि है। धर्मेश भाई ने तीनों मूर्तियों की ओर इशारा कर बताया।

“ये बहुत पुरानी मूर्तियाँ लग रही हैं।”

“यहाँ सब पुराना है भृगु ऋषि के समय का ही। बस शनि मन्दिर नया है।”

“भृगु ऋषि यहीं रहते थे?”

“उन्होंने यहाँ तपस्या की थी। पहले यहाँ नर्मदा नहीं थीं। भृगु ऋषि की तपस्या से यहाँ नर्मदा आयी और उन्होंने वरदान दिया कि कितना भी सैलाब आये, भरूच में कभी जन हानि नहीं होगी। आप देखिये सब जगह पानी से स्थान डूब जाते हैं पर भरूच में पानी चढ़ कर उतर जाय भले ही पर माँ किसी का भोग नहीं लेती।”

धर्मेश भाई बताते हुए हमें अंदर एक कक्ष में ले गये। हाल नुमा कक्ष जिसमें घुसते ही शिव लिंग बना था और आगे कई मूर्तियाँ।

“ये शिवलिंग आप देख रहे हैं। भृगु ऋषि स्वयं इसकी पूजा करते थे” उन्होंने इंगित किया तो मैंने देखा कि भिन्न तरह शिवलिंग था वह। चिकने मटमैले रंग का ऊंट के कुबड़ जैसा शिवलिंग। जिसे देख कर ही इसके अति प्राचीन होने सम्भावना लगने लगती है।

“शिवलिंग के चारों ओर चांदी की स्ट्रूप क्यों चढाई है?”

“बहुत पुराना है इसका क्षरण रोकने इसे चांदी के वलय पहनाये हैं।”

“और भी यहाँ मूर्तियाँ हैं?”

“सभी देवी देवताओं की हैं। आइये आपको विशेष बात दिखाते हैं” कहते हुए हमें एक तरफ प्लेटफार्म पर विराजित दत्तात्रेय भगवान की मूर्ति की ओर ले गये।

“आप इनके चरणों में, पादुकाओं में सूँघें।”

उन्होंने कहा तो मैंने सूँघा। अजीब सुगंध से मेरा मन भरा गया।

“क्या लगा?”

“बड़ी महक है।”

“ये कस्तूरी की सुगंध है। हमेशा आती रहती है” वे गर्वोक्ति करते हुए हाल से हमें दूसरे अंदर वाले कक्ष में ले गये।

“अरे ये भी बहुत बड़ा है। मन्दिर बाहर से उतना बड़ा नहीं लग रहा था जितना अंदर से है।”

“अब जिसने यह भरूच बसाया क्या उसकी इतनी भी जगह नहीं होगी। पर एक बात बताऊँ?” हंसते हुए धर्मेश भाई बोले।

“क्या?”

“ये सब इन्हीं का प्रभाव है। बाहर से मन्दिर सा न लगना भी इन्हीं के प्रभाव से है क्योंकि यहाँ वही आ सकता है जो भाग्यवान है। भरूच में सालों से रह रहे हैं लोग लेकिन यहाँ तक नहीं आ पाते।”

“हाँ मुझे तो यह पूछने में ही काफी टाइम लग गया” उस हाल की अनेक मूर्तियाँ जिसमें बराह भगवान, मार्कण्डेय, रिद्धि सिद्धि के साथ सिद्ध विनायक को देखते हुए मैं बोला।

“जिसको बुलाना होता है उसे बुला लेते हैं। अब इन्हें देखें” कहते हुए कौने की मूर्ति की ओर इशारा किया।

“लक्ष्मी नारायण” मैंने गौर से देखते हुए कहा।

“सही, अब बताएं लक्ष्मी का क्या कनेक्शन यहाँ से। ये किसकी बेटी थीं?”

“भृगु ऋषि।”

“बिलकुल ठीक।”

“कहते हैं भृगु ऋषि ने यहीं लक्ष्मी को विष्णु को सौंपा था, यहीं दोनों का विवाह हुआ।”

“इसीलिए दोनों कि मूर्ति भी नव दम्पति के रूप में दिखाई है। ये कौन ऋषि हैं?” एक आकर्षक मुनि की प्रतिमा की ओर इशारा करते हुए मैंने पूछा।

“ये वल्लभाचार्य हैं। इन्हें महा प्रभु भी कहा जाता था।”

“ये भी यहाँ रहे थे?”

“नहीं इन्होंने यहाँ भागवत की थी। कुल 84 भागवतों में से इन्होंने 54 वीं यहाँ की थी।”

अब हम लोग दोनों हाल से बाहर निकले। बाहर भी देखा जाय तो संगमरमर का चमकदार फर्श लिए बड़ा अहाता था जिसमें बीच में शनि भगवान विराजे थे। कोई 3 फुट ऊपर एक बड़ी खुली टेरेस थी। अब उसी टेरेस पर धर्मेश भाई मुझे ले जा रहे थे।

“नर्मदा जी भी तो नीचे से निकलती हैं।”

“हाँ यहीं सामने हैं आइये दिखाते हैं आपको” कहते हुए धर्मेश भाई मुझे आगे टेरेस पर ले गये जहाँ से नर्मदा स्पष्ट और शांत बहती दिख रही थी।

भृगु ऋषि के मन्दिर से धर्मेश भाई से विदा ले वापस चले अपने होटल आशीष। मन ही मन शुक्र मना रहे थे कि अच्छा हुआ जो कल वापस आकर भरूच रुक गये तो भृगु ऋषि का मन्दिर देख लिया। जिसका नर्मदा खंड में सबसे अधिक महत्व उसी के स्थान पर नहीं जाता तो मुझे बड़ा मलाल रह जाता।

काफी समय लग गया पूरी कवायद में लेकिन उत्साही इमरान ने उफ तक नहीं की और वापस आने पर पैसे भी ज्यादा नहीं लिए। होटल आकर देखा माँ बेटी कॉम्प्लीमेंट्री नाश्ता के लिए तैयार थे। साथ जाकर नाश्ता किया। नाश्ते के समय ही बेटी ने एलान किया कि अभी एक घंटे बाद चलेंगे यहाँ से। उसे अपनी बुक का कोई चैप्टर पूरा करना था।

“ठीक है, आराम से निकलेंगे” मैंने कहा और अचानक मुझे याद आया कि किसी दसमेश घाट का बताया था कल ज्योति बेन ने।

“मैं भी न! अब वहां अंदर तक गया पर उस घाट पर नहीं गया” मैंने सोचा।

“पर ज्योति बेन कह रही थीं की अब तो घाट गंदा हो गया है। अंदर का शहर देखा कितनी गंदगी है, रहने देते हैं” इस विचार ने घाट देखने का idea ड्राप कर दिया।

“यहाँ तक आये हैं और सुनने के बाद भी कोई स्थान छूट जाय तो कैसा लगेगा” मन फिर उलाहने देने लगा।

जब मन ज्यादा ही सताने लगा तो मैं माँ बेटी को होटल के कमरे में छोड़ फिर बाहर आया। विवेक तब तक गाड़ी तैयार कर चुका था। पर सुबह के अनुभव से यह स्पष्ट था कि कोई लोकल व्यक्ति ही ले जा सकेगा, सो विवेक को किसी ऑटो को रोकने का बोला। एक, दो नहीं कोई 4 ऑटो रोके पर दशमेश घाट कोई नहीं बता सका न ही कोई जाने को तैयार हुआ।

“ज्योति बेन कह भी रही थीं कि अब बहुत गन्दा और पुराना हो गया है। हो सकता है कि अब रहा ही न हो” मैं सोच ही रहा था तब तक एक ऑटो को रोका विवेक ने।

“दसमेश घाट जानते हैं। पुराने टाउन में है?”

“पुराने टाउन में तो एक ही घाट को मैं जनता हूँ, वहां ले जा सकता हूँ, हालाँकि वहां घाट जैसा तो कुछ नहीं है।”

“फिर भी चलते हैं, शायद वही हो” मैं बोला और ऑटो में सवार हो गया।

आज का यह मेरा दूसरा ऑटो सारथि मुहम्मद भी दिलचस्प बातें करता था। पुराने मोहल्ले से निकलते समय उसने बताया कि गाँधी परिवार का भी भस्म से सम्बन्ध है। फीरोज गाँधी भस्म के ही थे। उनके निवास को अब म्यूजियम बना दिया है।

बातें करते करते हम लोग वहीं पहुँच गये जहाँ सुबह मैं आया था। ऑटो भृगु मन्दिर के सामने से निकला और नर्मदा की ओर उतर गया। पुराने मोहल्ले, संकरी गलियों से होते हुए मुहम्मद मुझे नदी तक ले जाने



लगा। थोड़ा ही बाहर चले होंगे कि एक नाला ने रास्ता रोक लिया। मुहम्मद उतर कर गया और थोड़ी देर बाद लौट कर बोला।

“सर नाला पार कर नदी तक तो जाने का टेम्पररी रास्ता बोल्टर से बना है पर आप नहीं जा पाएंगे।”

“फिर?”

“देखते हैं कुछ और” मुहम्मद बोला और सामने बने एक झोपड़े तक चला गया। थोड़ी देर बाद झोपड़े के मालिक, जो अथेड़ उम्र का था, फेंसिंग तक आ गया।

“दशमेश घाट कौनसा है?” जोर से बोला मुहम्मद।

“यहाँ कोई घाट नहीं है” फिर आधी हिंदी आधी गुजराती में दोनों बात करने लगे जो कुछ कुछ मेरी समझ में आ रहा था।

“अच्छा वो जो शमसान घाट के बाजू से रास्ता गया है?” मुहम्मद बोला।

“व इच” उसने सहमती दी।

“चलिए सर एक और जगह है, वहाँ भी घाट जैसा तो नहीं है पर आप देख लें” कहते हुए उसने ऑटो स्टार्ट की।

“कितनी दूर है?”

“यही कोई दो कि.मी. है” कहते हुए उसने ऑटो मोड़ा और सड़क पर आ गया जहाँ स्वामी नारायण मन्दिर था। थोड़ी ही दूर जाकर एक और सड़क की ओर मोड़ दिया जो गोल्डन ब्रिज कि तरफ जा रही थी। आगे जाकर ऑटो एक गली में घुस गया जो ढलवां थी, निश्चित ही नीचे जा रही थी नदी की ओर।

चलते चलते ऑटो एक कच्चे रास्ते पर मुड़ गया, बाजू से गोल्डन ब्रिज दिख रहा था। धूल और रेत भरे रास्ते पर कुछ दूर चल रुक गया।

“इसके आगे नहीं जा पायेगा। नदी तक आप चले जाओ पैदल।”

“पर यहाँ घाट कहाँ दिख रहा है?”

“बस यही है एक जगह, जैसा पक्का घाट आप चाह रहे हैं वो तो फिर नीलकण्ठेश्वर पर मिलेगा।”

“मैं देखता हूँ” मैंने कहा और उतर कर नर्मदा की ओर बढ़ गया।

उबड़खाबड़ रास्ते, झाड़ियाँ, कहीं कहीं इक्का, दुक्का पेड़ खड़े थे। तट तक गया, पूरा रेतीला था कहीं कुछ भी सीढ़ियाँ या घाट जैसा नहीं था। एक मठिया ज़रूर बनी थी किनारे जिसमें शिवलिंग स्थापित था। लिखा था ऊपर हनुमान भक्त सोमनाथ दादा सिद्ध पीठ सोमनाथ महदेव। बाहर से ही दर्शन कर लौट चला। पूरा क्षेत्र सुनसान था दूर पेड़ के नीचे एक वृद्ध महिला अवश्य दिख रही थी, सोचा उसी से कुछ जानकारी ली जाय फिर विचार आया कि इस बेरौनक जगह की क्या जानकारी वह भी देगी। वापस चल दिया निराशा में गाड़ी की ओर कि एक महिला और एक पुरुष आते दिखे। पहनावे से साधारण ग्रामीण घर के लग रहे थे सोचा कि नर्मदा नहाने कहीं बाहर से आये दम्पति होंगे।

“आप क्या यहाँ स्नान को आये हैं?”

“नहीं हम तो मछली पकड़ने आये हैं” पुरुष बोला।

“क्या यहीं के रहने वाले हैं।”

“हाँ यहीं भरूच के।”

“क्या नाम है आप का।”

“मांगीलाल और ये ताराबेन हैं” पुरुष ने जवाब दिया।

“ये कौनसी जगह है?”

“दसासमेघ घाट।”

“क्या?” मैं आश्चर्य से बोला।

“दसासमेघ घाट” महिला बोली इस बार यह मान कर कि पुरुष की बात शायद मेरी समझ नहीं आई। मुझे आश्चर्य मिश्रित हर्ष हो रहा था।

“इस ट्रिप में न जाने क्या हुआ है कि जहाँ ग़लती से भी पहुँच जाता हूँ, वह वही जगह होती है जहाँ जाना चाहता हूँ। शायद इस लिए कि पहली बार पूरी यात्रा माँ नर्मदा के कंधों पर है मेरे नहीं।”

“दसासमेघ घाट क्यों कहते हैं इसे” उत्तेजित हो पूछा मैंने।

“जगग हुआ था यहाँ।”

जगग?

“राजा बली ने बहुत बड़ा जगग किया था यहाँ। यही तो सबसे मुख्य जगह है” ताराबेन ने इंद्रेस्ट दिखाया।

“एक बड़े रिशी ने कराया था उसका भी मन्दिर बना है।”

“भिरगु” मांगीलाल की बात मुझे समझ न आने पर ताराबेन ने जोड़ा।

“आपका मतलब भृगु ऋषि” मैंने कहा।

“हाँ वही। भिरगु रिशी ही नर्मदा को यहाँ लेकर आये थे, पहले वो अंकलेश्वर में रामकुंड में थीं” ताराबेन ने महत्वपूर्ण बात बताई।

“ऊपर नर्मदा माई का मन्दिर भी बना है उसे भी आप ज़रूर देखना।” मांगीलाल बोले।

“ज़रूर” मैंने कहा और उन दोनों से विदा ले प्रफुल्लित मन गाड़ी की ओर चल दिया।

रास्ते में किनारे पर ही नर्मदा माँ का मन्दिर मिला जो अति प्राचीन होने के साथ ही अति पावन भी लग रहा था।

गाड़ी रुकवाई, देखा कई छोटे बड़े मन्दिर और बने हैं आस-पास, कुछ धर्मशाला और आश्रम भी है। पूरी सड़क पर लिखा भी था आश्रम धर्मशालाओं के ऊपर ‘दसाश्वमेध घाट रोड’ भरूच।

उतरकर दर्शन किये और वापस चल दिए। मुहम्मद ने भी खूब साथ दिया। पर आश्चर्य इतनी पुरानी और एतिहासिक स्थान किन्तु विकास नहीं न तो स्थानीय प्रशासन ने और न ही स्थानीय लोगों ने अपनी महत्वपूर्ण धरोहरों को सहेजने की कोशिश की है।

“इतनी पुरानी जगह हैं किन्तु आप लोगों को पता नहीं।”

“हम तो साब ऑटो चलाते हैं, लोग आते हैं, जहाँ जाना चाहते हैं जैसे नीलकण्ठेश्वर, स्वामिनारायण मन्दिर तो हम रोज ले जाते हैं पर यहाँ कोई आता ही नहीं। और आयें भी क्यों, यहाँ उन्हें क्या मिलेगा” मुहम्मद बोला।

“किसी को कुछ मिला हो या न मिला हो पर मुझे तो बहुत बड़ा खजाना मिल गया था आज। ऑटो चल रहा था मुहम्मद का और मेरा दिमाग। मैं छह चीज़ों को कनेक्ट कर रहा था जिनका भरूच से सम्बन्ध रहा नर्मदा, भृगु ऋषि, समुद्र, लक्ष्मी, विष्णु और राजा बली अर्थात् महाबली।” लगता है कोई बड़ी हिस्ट्री यहाँ बिखरी पड़ी है, जो ढूँढनी होगी अगली बार। मैं सोच सोचकर रोमांचित हो रहा था।



## स्टेचू ऑफ यूनिटी

भरूच सूरत हाईवे को छोड़ गाड़ी राजपिपला रोड पर मुड़ गयी थी। भरूच से निकलते निकलते 12:15 हो गये थे। सर्दियों में दिन जल्दी डूबते हैं यही सोच कर बिना रास्ते में रुके चले जा रहे थे। स्टेट हाईवे रोड़ टू लेन था, पर ठीक-ठीक था। रास्ते भर हरे भरे खेत और बाग थे जिनमें केला, कपास, गन्ना, खजूर और यूकेलिप्टस लहलहा रहे थे। शुकूनमयी यात्रा के साथ जगड़िया, गुमान देव, हजरत बाबा गौरीशाह, राजपारदी, उमल्ला होते हुए हम 1:30 बजे राजपिपला पहुँच गये।

राजपिपला शहर में घुसने से पहले बाएं हाथ पर एक बड़ा बोर्ड दिखा जिस पर लिखा था नीलकंठ धाम स्वामिनारायण मन्दिर पोइचा 18 कि.मी.। मुझे सहसा ध्यान आया कि वरोदरा से भरूच जाते समय रास्ते में जिस रेस्टोरेंट पर रुके थे, वहां एक सज्जन बता रहे थे कि पोइचा में नर्मदा के किनारे बहुत ही भव्य स्वामिनारायण मन्दिर बना है। सोचा अभी टाइम है, स्टेचू यहाँ से 30 कि.मी. दिखा रहे हैं, तो क्यों न स्वामिनारायण मन्दिर देखा जाय।

गाड़ी मोड़ दी पोइचा की ओर। कहीं डबल कहीं, सिंगल रोड थी, पर आवाजाही बहुत थी।

“शायद स्वामिनारायण मन्दिर के कारण होगी, या नर्मदा जाने की।” दोनों ही स्थिति मन को सुकून दे रही थीं कि किसी अच्छी जगह ही जा रहे हैं।

आधा घंटे में हम स्वामिनारायण मन्दिर परिसर के गेट पर थे, जहाँ लिखा था नीलकंठ धाम स्वामिनारायण मन्दिर। गेट की भव्यता से प्रभावित हुए और गाड़ी ने अंदर प्रवेश किया।

“wow” अत्यंत भव्य, अति विशाल ओर खूबसूरत मन्दिर, परिसर को देख बिटिया के मुहं से निकला।

“ये तो बहुत ही शानदार है” श्रीमतीजी भी बोल पड़ीं।

“अद्भुत, अकल्पनीय। इतना अंदर, शहर से दूर इतनी स्वर्गिक जगह। सोच भी नहीं सकते। पार्किंग ही इतने बड़े क्षेत्र में बनी थी कि 500 गाड़ियाँ आ जायं। पूरी पार्किंग भरी थी ओर हो भी क्यों इतनी दूर बिना गाड़ी के तो कोई आयेगा नहीं।

“सहजानन्द यूनिवर्स”। गाड़ी से उतर कर जैसे ही पैदल चले कि ऊपर बोर्ड दिखा जिस पर लिखा था सहजानंद यूनिवर्स “सच ही है जिसकी बड़ी सोच होगी जो पूरे यूनिवर्स को सहज देखता है, सारे संसार को अपना समझता है वही तो इतना विशाल परिसर बना सकता है” मैं सोचने लगा।

लाल पत्थर ने चारों ओर जादू जगाया था। क्या नहीं था वहां, मन्दिर पे मन्दिर बड़े छोटे, गार्डन, पंक्तिबद्ध दुकानों का मार्किट, भोजन शाला, झरने, फव्वारे, और विशाल परिसर के पीछे बहती विशालों में भी विशाल माँ नर्मदा।

“इसे देखने को तो पूरा एक दिन चाहिए पापा” मेन गेट से अंदर जाकर भगवान स्वामी नारायण कि खुले सिंहासन पर बैठी मूर्ति के पास खड़े होकर जब शालिनी ने चारों ओर नजर घुमाई तो सहसा बोल पड़ी।

“और हमारे पास इतना समय है नहीं” श्रीमती को जैसे खेद हो रहा हो कम समय होने का।

“हाँ ये तो 2 कि.मी. से कम फैलाव में नहीं बना है। पूरे दिन की पिकनिक है यह तो” मैंने उस परिसर की विशालता का अनुमान लगाया।

“मुख्य मन्दिर चलते हैं” मंजुल ने idea दिया तो गार्डन के बगल से होते हुए एक और विशाल गेट के सामने खड़े हो गये।

“यहीं से ज्यादा आवाजाही दिख रही है। लगता है मुख्य मन्दिर यहीं होगा” मैं बुदबुदाया और पास खड़े एक सज्जन को पूछा।

“इसके अंदर जाकर लेफ्ट में मुड़ जाइए, सीधे नीलकंठ स्वामिनारायण मन्दिर की सीढ़ियों तक रास्ता जाता है।” वे सज्जन बोले।

भव्य द्वार को पार कर जैसे ही अंदर गये लगा लाल पत्थरों, फव्वारों और फूलों ने कोई तिलस्म रचा था वहां। चारों ओर सुन्दरता और

आध्यात्मिकता बिखरी पड़ीं थीं। नीचे के मन्दिर देखने के बाद, फव्वारों के साइड से गयी संगमरमर की चौड़ी सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर गये।

पार्किंग लॉट में गाड़ियों को देख कर लग रहा था कि अंदर भीड़ बहुत होगी पर चूँकि परिसर इतना बड़ा है कि लोग बंट जाते हैं और एक स्थान पर ज्यादा नहीं दिखते पर यहाँ इस मुख्य मन्दिर में ठीक-ठाक भीड़ थी। अत्यंत सुंदर प्रतिमा, बरबस शीश झुक जाय। दर्शन किये बाहर आये, दाहिने हाथ पर हनुमान जी का मन्दिर। संगमरमर की आदमकद मूर्ति, मंगलवार होने से विशेष पूजन चल रहा था। बड़ी शांति थी वहां और सबके मुख सुकून के भाव से भरे थे जैसे हनुमानजी सद्गुरु के रूप में स्वयं सबको राह दिखा रहे थे।

बाहर निकल परिक्रमा पथ पर गये, पीछे ही नर्मदा बह रही थीं, शाश्वत, साकार ब्रह्म का ही जैसे रूप थीं जो यहाँ ऊपर से दिख रही थीं। नीचे अनेक वाहन खड़े थे इस पार और उस पार भी। उधर तो घाट पर ही कई मन्दिर दिख रहे थे।

बड़ी देर वहीं ऊपर खड़े माँ नर्मदा के सौन्दर्य को निहारते रहे। समय का अभाव था इसलिए वापसी के लिए चल दिए। गेट से बाहर आये। परिसर में आगे सामने ही शॉपिंग मार्केट बना था, जिसमें एक लाइन से 20 से अधिक दुकाने थीं, पूजन सामग्री, सजावट का सामान, पुस्तकें साहित्य, फूल माला प्रसाद आदि आदि। एक दुकान से माँ बेटी कुछ खरीदने लगीं तो मैंने बाहर बैठे एक सेल्समैन से पूछा।

“यहाँ क्या रोज ही इतने लोग आते हैं।”

“हाँ, अभी शाम को और बढ़ेंगे, लोग दूर-दूर से आते हैं।”

“कुछ तो नियमित भी आते होंगे?”

“हाँ स्वामी नारायण के भक्त गुजरात में बहुत हैं, वे नियमित आते हैं। विदेशों से भी भक्त आते हैं इसके अलावा घूमने वाले भी खूब आते हैं।”

“हाँ जगह ही इतनी सुंदर है। ये नीचे नर्मदा जी पर आज भीड़ क्यों है?”

“आज अमावस है न।”

“अमावस को बहुत आते होंगे?”

“यहाँ अमावास का ज्यादा महत्व है। कोई बाधा, बीमारी, त्वचा रोग के लोग पांच अमावास यहाँ नहाते हैं और ठीक हो जाते हैं।”

“अरे वाह! ऐसी मान्यता है?”

“मान्यता भी है, विश्वास भी है और चमत्कार भी” उसने कहा तो मैं स्पीचलेस हो गया।

बहुत जल्दी किया फिर भी निकलते-निकलते 3 बज गये। भूख भी लगी थी बाहर सड़क पर आये, एक चौराहे पर जहाँ से वरोदरा के लिए भी रास्ता जाता था, अच्छा रेस्टोरेंट देख कर रुक गये। खाना खाने बैठे, होटल में भीड़ थी पर रेस्टोरेंट मालिक ने मदद की और जल्दी खाना लगवा दिया। पर अब ये चिंता हो रही थी कि कैसे और कब पहुंचेंगे। गूगल मैप में देखा तो अभी भी महेश्वर 6 घंटे दूर दिखा रहा था। अभी तो स्टेचू भी जाना था।

3:45 पर रेस्टोरेंट से निकले। यही विचार चलने लगा कि बहुत रात हो जाएगी तो क्यों न इन्दौर ही चला जाय। पर इन्दौर भी 5 से 6 घंटे की दूरी पर ही दिख रहा था। बेटी ने idea दिया कि नर्मदा रिट्रीट पूछ लें यदि वहां रुम मिल जाय तो वहीं चलते हैं। जस्ट डायल को फोन लगाया। बड़ी अच्छी सुविधा है ये, कहीं भी कभी भी कोई पता, नंबर पूछना हो तो तुरंत मिलती है। हालाँकि इनका एप भी है पर मैं फोन ही प्रेफर करता हूँ। नर्मदा रिट्रीट महेश्वर का नंबर माँगा।

“मि. त्रिपाठी आपको जानकारी एसएमएस कर दी गयी है। जस्ट डायल में फोन लगाने के लिए धन्यवाद” और फोन disconnect हो गया। ऐसा कई बार हुआ है, बात करते करते ही वे जानकारी भेज देते हैं।

अब बारी थी नर्मदा रिट्रीट को फोन लगाने की।

“जी नर्मदा रिट्रीट से बोल रहा हूँ।”

“कौन बोल रहा है?”

“मैं इलियाज यहाँ का प्रबन्धक बोल रहा हूँ।”

“फेमिली के लिए एक रुम चाहिए था आज” मैंने अपना परिचय देते हुए कहा।

“आ जाइये, हो जायेगा” उन्होंने कहा और मुझे अलीराजपुर से कैसे आना है यह गाइड भी कर दिया।

नर्मदा रिट्रीट में जगह मिल जाने से फिर उत्साह बढ़ गया और यह विचार बना कि स्टेचू पर ज्यादा समय नहीं लगाना है। जल्दी देखते हुए हुए निकल चलना है।

विवेक ने गाड़ी को रफ्तार दी और हम शूलपाणीश्वर शिव मन्दिर होते हुए, नर्मदा के पुल पर पहुंचे। पुल से ही अपनी विराटता लिए स्टेचू ऑफ यूनिटी दिख रही थी। काले रंग की प्रतिमा आकाश में धुंध के बीच ऐसी लग रही थी जैसे धुएं से बनी कोई आकृति है। वातावरण से एकाकार, जैसे आकाश का ही हिस्सा हो और बादल, धुंध, धुएं की तरह यह भी अभी हट जाएगी।

स्टेचू के पास पहुंचे, नर्मदा के किनारे, बड़े क्षेत्रफल को घेरते हुए परिसर, म्यूजियम और इतनी बड़ी मूर्ति कि उसके पास घूमते हुए लोगों को देख कर बचपन में पढ़ी कहानी गुलिवर एंड लिलिपुट याद आ गयी। सरदार पटेल के पैरों तक या कहीं पैरों के पंजों तक भी नहीं आ रहे थे लोग। सचमुच बल्लभ भाई पटेल यहाँ सरदार ही लग रहे थे। पूरे देश के सरदार, पूरे देश को यूनाइटेड करने वाले सरदार।

इतनी सुंदर मूर्ति, इतना खुबसूरत स्थान, नर्मदा के बगल में दिखतीं शूलपाणि की प्रसिद्ध झाड़ियाँ। सब कुछ मन मोहक था बस एक ही बात अखर रही थी। माँ नर्मदा में न जाने कितनी jcb मशीन चल रही थीं जो ऐसा लगता था कि माँ को ही विदीर्ण कर रही थीं। आगे सरदार सरोवर बांध भी बना है, यहाँ कम से कम माँ की सुन्दरता intact रहती तो अच्छा था।

पास ही रेस्टोरेंट पर चाय पी और जानकारी ली तो वहाँ बैठे पुलिस वालों ने बताया कि अभी अलीराजपुर यहाँ से दूर है 150 कि.मी. होगा और वहाँ से महेश्वर भी इतना ही। समय हो गया था 4:30 pm। अब चिंता हुई।

“रोड कैसी ही?” मैंने पूछा।

“बहुत अच्छा नहीं है। बोड़ेली तक वरोदरा हाईवे पर जाना और उसके बाद अलीराजपुर के लिए मुड़ जाना।” उन्होंने कहा तो दौड़ते हुए हम गाड़ी में बैठे और विवेक ने गाड़ी दौड़ा दी।

“अभी 300 कि.मी. चलना है और रोड ज्यादा अच्छी नहीं है” मैंने गाड़ी में बैठते ही चिंतित भाव से कहा तो माँ बेटी भी सोच में पड़ गयीं।



उस स्थान पर सिर्फ स्टेचू ही नहीं है, एक अच्छा खासा टाउन ही develop हुआ जा रहा है। गाड़ी निकलती जा रही थी और हम देखते जा रहे थे। बैंक, हॉस्पिटल, मार्केट, शॉपिंग माल, रिसोर्ट, कॉलोनी सभी बन रहे थे। अपने पूरे शवाब पर आने में उसे ज्यादा समय नहीं लगना था। या यूँ कहें कुछ ही महीनों की बात है फिर देखना यहाँ का जलवा। गरुडेश्वर होते हुए बोडेली पहुँचे। सच में रोड बहुत अच्छी नहीं थी। अब यहाँ से छोटा उदयपुर दिख रहा था 30 कि.मी.। यह टू लेन सड़क भी ठीक-ठाक ही थी। थोड़ी देर में एक नदी पड़ी, बड़ी थी, लगा कि कहीं नर्मदा तो नहीं। उतना ही चौड़ा पाट, वैसा ही पानी भी।

“नर्मदा नहीं हो सकती।” मन ने कहा, आज एक बात जरूर महसूस हुई जब उस नदी के पुल से गुजर रहे थे कि नर्मदा जैसी चौड़ाई, उतना बड़ा पाट, उतना ही पानी होने पर भी कोई नदी नर्मदा नहीं लग सकती क्योंकि नर्मदा के आसपास एक अलग ही औरा है, एक विशेष किस्म कि आध्यात्मिकता का भान होता है जब नर्मदा के पास या उसके ऊपर से गुजरो, जो हर नदी में संभव नहीं। गूगल मैप देखा, सचमुच नर्मदा नहीं कोई भरज नदी थी।

छोटा उदयपुर पहुँचते पहुँचते बिलकुल ही शाम हो गयी। अनजान इलाका, रोड भी अच्छी नहीं, ट्रैफिक भी हाईवे जैसा नहीं। छोटा उदयपुर जिला मुख्यालय दिख रहा था, सोचा यहाँ तो रुकने का स्थान होटल ठीक-ठीक मिल सकता है।

“क्या करें यहीं रुक जाय। अब तो अँधेरा भी हो गया।” मेरे स्वर में चिंता थी। मंजुल और बिटिया के कारण। मैं होता तो कहीं भी रात को चला जाता पर इनका साथ।

“यहाँ जगह मिल सकती है?” श्रीमती जी भी चिंतित दिख रही थीं।

“हाँ जिला मुख्यालय है, कुछ ठीक-ठाक मिलना चाहिए।”

“पापा यहीं रुक जाओ, रात हो रही है” बिटिया भी बोली।

हमने गाड़ी छोटा उदयपुर शहर में मोड़ दी। अंदर गये, शहर कोई खास नहीं लग रहा था। रास्ते में एक बाइक वाले से पूछा तो उसने बस स्टैंड के पास होटल होना बताया। बसस्टैंड तक गाड़ी ले गये पर सब बेकार कोई ढंग की जगह नहीं। वहाँ पूछा तो उन्होंने होटल बताया बाहर बाइपास पर,

नाम से कुछ आशा जगी कि ठीक होगा पर वहां जाकर देखा तो किसी भुतिया फिल्म का सेट लग रहा था। समय हो गया 7:30 pm और अभी तो लगभग 200 कि.मी. की यात्रा शेष थी। पर अब कोई चारा नहीं, जाना ही होगा।

“छोटा उदयपुर के चक्कर में और आधा घंटा खराब हो गया “श्रीमती की आवाज़ में रोष था।

“हाँ अभी तक तो अलीराजपुर पार कर गये होते” विवेक ने और आग में घी डाल दिया “अब तुम रुकना नहीं कहीं भी” मैंने विवेक को कहा और गाड़ी अलीराजपुर की ओर बढ़ गयी।

धुप अँधेरा, सिंगल रोड, भीलों के सुने राह लुटने के किस्से और अलीराजपुर का खतरनाक इलाका। कोई किसी से नहीं बोल रहा था। श्रीमती जी ने तो गाड़ी में ही सुंदर काण्ड पढ़ना शुरू कर दिया।

विवेक ने गाड़ी को स्पीड दी। ये गनीमत थी कि रोड ठीक थी पर इक्का दुक्का वाहन ही निकल रहे थे और वो भी लोकल लग रहे थे। आधा घंटा में अलीराजपुर आये। 8 बजे ही पूरा शहर, शहर क्या कस्बा सुनसान लग रहा था। बिना रुके, बिना किसी से पूछे बोर्ड देखते हुए आगे बढ़े। बाहर निकले लिखा था कुक्षी 50 कि.मी.। यानी अभी कुक्षी का एक घंटा लगना था और इलाका वही जिसके बारे में बरसों से सुनते आ रहे थे कि शाम को चलने के लिए बहुत ही खतरनाक और तिस पर फेमिली का साथ। चिंता में मुहं सूख रहा था। श्रीमती जी का पाठ जारी था। विवेक का गाड़ी चालन सधा हुआ और गतिमान था।

रात के 9 बजे और हम कुक्षी पहुंचे। अभी भी 100 कि.मी. से ऊपर का सफर बाकी था और रात में बिना पहले के देखे रास्ते पर जाने में दो घंटे से अधिक तो लगना ही था। पर कुक्षी पहुंच कर वहां की चहल-पहल देख कर तसल्ली हुई। अच्छा खासा कस्बा, बाजार खुले आवागमन सब ओर चालू था। जान में जान आई। लगा यहाँ चाय पी सकते हैं “चाय ले लें।”

“हाँ पापा, कुछ खाने को भी” बहुत देर से दम साधे बैठी बिटिया अच्छा रेस्टोरेंट देख कर बोली।

हम लोग रुके कुक्षी में, चाय, नाश्ता लिया और 15 मिनट के ब्रेक के बाद फिर चले। उम्मीद थी कि 11 बजे के बाद ही पहुंच पाएंगे। नर्मदा रिवर में फोन कर दिया था।

कुक्षी से निकले मनावर रोड पकड़ आगे चले। अब सड़क पर भी चहल-पहल थी और सड़क भी अच्छी थी। विवेक नाश्ता चाय पीकर रिचार्ज हो गया था और तेजी से कस्बे पास करते जा रहा था। मनावर, धर्मपुरी खलघाट, धामनोद।

धामनोद मोड़ पर आने में उसे मात्र 45 मिनट लगे और हम 10 बजे महेश्वर मोड़ थे। जहाँ लिखा था नर्मदा रिट्रीट 18 कि.मी.।

“क्या बात है विवेक, आज तो तुम जीत गये” मैंने कहा।

“कितना बचा है” श्रीमती जी ने पूछा।

“मात्र 18 कि.मी.। 10:30 से पहले ही पहुंच जायेंगे ” मैंने कहा और सोचने लगा कि यह पूरी यात्रा ही माँ नर्मदा और हनुमानजी के सहारे चल रही है तो फिर मैं क्यों अनावश्यक टेंशन लेता हूँ। इस यात्रा में ही तो समझ आया कि ईश्वर के परायण होना क्या होता है। चीज़ें कैसे सहज होती है, जीवन कैसे सरल होता है।

10:25 pm पर हम नर्मदा रिट्रीट में थे। शानदार परिसर में गाड़ी घुसते ही मन खिल उठा। बाहर ही इलियाज मिल गये। बड़े हंसमुख और मिलनसार।

“आपका रूम तैयार है जाकर हाथ मुहं धो लें और हाँ खाने का आर्डर भी attender को दे दें जिससे रूम में ही खाना सर्व करा दिया जाय” वे बोले तो लगा कि कुछ घंटे पहले तो कुछ भी मयस्सर नहीं था न रुकना, न खाना और देखते ही देखते सब उपलब्ध।

काफी बड़े एरिया में खुला खुला बना था रिट्रीट। कॉटेज, रूमस, टेंट हाउस सब कुछ था वहाँ और सबसे बड़ी बात नर्मदा थीं सामने, नीचे, इधर, उधर सब तरफ। ऊपर का डीलक्स रूम, सामने बालकनी और बालकनी से दिखती नर्मदा।

“पापा कितना खूबसूरत है ये रिट्रीट” walkway पर चलते हुए बिटिया बोली।

“अच्छा रहा जो रास्ते में रुकने को जगह नहीं मिली।” मंजुल ने कमरे में घुसते ही बोला।

“नर्मदा माई सब इंतजाम पहले से ही किये थी और हनुमान जी साथ थे तो वही होना था जो अच्छा था” मैंने नर्मदा की ओर हाथ जोड़ते हुए कहा।

चैन और सुकून से खाना खाया। मंजुल तो बिग बॉस देखने में मशगूल हो गयीं और हम बाप बेटी टहलने उतर आये। नीचे हरे भरे गार्डन नुमा परिसर के बीच में बने रास्तों पर चलते किनारे तक चले गये जहाँ नीचे बहती नर्मदा दिखाई दे रही थीं। कुछ देर वहां खड़ा होना अच्छा लगा, माँ को प्रणाम कर टहलते हुए स्विमिंग पूल के पास आ गये। रात के 12 बजने वाले थे और बिटिया स्विमिंग पूल के पानी में पैर डाले बैठी थी और मैं सोच रहा था कि कुछ देर पहले चिंता के मारे जान सांसत में थी और अब उमंग और तरंग से मन प्रफुल्लित है।

“तू बड़ी दयालु है” मैं नर्मदा की ओर देखते हुए बुदबुदाया।

“क्या पापा?” बिटिया बोली।

“तू बड़ी सयानी है। अब चलें” मैंने कहा और बिटिया को ले रूम की ओर चल दिया।

दूसरे दिन मैं सुबह जल्दी उठ कर रिट्रीट में टहलने उतर आया था। माँ बेटी अभी भी सो रही थीं। रात को जो देखा उससे कहीं ज्यादा खूबसूरती बिखरी पड़ी थी चारों ओर। बिखरी क्या, लगता था कूट कूट कर भरी थी और नीचे बहती नर्मदा ने भी अपना सौन्दर्य बिखेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। रिट्रीट का पूरा हिस्सा जो आधा कि.मी. लम्बा होगा, नर्मदा के किनारे था। ऊपर से घूमते हुए मन नहीं माना तो नीचे चला आया। पक्की सीढ़ियां नीचे तक गयी थीं। उतर कर आचमन किया, थोड़ी देर वहीं बैठ गया। लग रहा था जैसे माँ से साक्षात् हो रहा हो। शांत बहती, स्वच्छ जल लिए सुधा सम नर्मदा को कितनी ही बार निकट से देखा है और हर बार और pure दिखी हैं।

कुछ समय नर्मदा के पास बैठ ऊपर आ गया। रिट्रीट ने रेस्टोरेंट के सामने अच्छी खासी टेरेस दी थी। अलसुबह अभी वहां कोई नहीं था। रेस्टोरेंट भी खुलता ही जा रहा था। चाय का आर्डर दे वहीं टेरेस पर बैठ गया और नीचे बहती नर्मदा को देखने लगा, उसमें अठखेलियाँ करते, ऊपर उड़ते, मछली पकड़ते पंछी नर्मदा की जीवंतता का बखान कर रहे थे।

थोड़ी देर बाद तैयार होकर उसी टेरेस पर बैठ हम लोग नाश्ता कर रहे थे। नास्ते के बाद फिर से पूरा रिट्रीट, उसका गार्डन घूमा। तय हुआ कि चेक आउट कर ही चला जाय।

12 बजे रिट्रीट से निकल महेश्वर के मुख्य स्थान की ओर चले जहाँ अहिल्याबाई का किला था, राजराजेश्वर मन्दिर था और नर्मदा किनारे बने सबसे सुंदर घाटों में से एक था। पहले भी यह सब देखा था पर इस बार नया ये हुआ कि सहस्त्र धारा तक बोटिंग की सुविधा थी। एक बोट ले हम चल दिए। मोटर बोट वाले ने बताया कि 20 मिनट लगेंगे पहुँचने में। इतनी देर नर्मदा के नीले जल में चलने के विचार से ही रोमांच हो रहा था। बोट चली जा रही थी और बोट के उत्साही लड़के किनारे की सारी जगह के बारे में बता रहे थे। वो रिट्रीट भी रास्ते में पड़ा जहाँ हम रुके थे।

सहस्त्र धारा पिछली बार भी गये थे, गाड़ी से। पर उस समय गर्मी का सीजन होने से सूखा पड़ा था वहाँ। पर इस बार सम्मुख दिख रही थीं अनेक धाराएँ। चट्टानों ने नर्मदा को अनगिनत भागों में बाँट दिया था और वही सबने मिलकर रच दिया था सहस्त्र धारा का जादुई तिलस्म।

“सुंदर, अति सुंदर” पहुँचते ही मुहं से निकला।

“पापा यहाँ कुछ देर बैठेंगे” शालू ने इस ट्रिप में भरपूर प्रकृति का आनन्द लिया था।

“उतर कर चट्टानों पर चलते हैं” मंजुल ने सुझाव दिया, उनको लगा कि कहीं हम बाप बेटी पानी में जाने की जिद न करने लगे।

“कितनी देर रुक सकेंगे यहाँ?” मैंने बोट वालों से पूछा।

“15 - 20 मिनट रुक सकते हैं” उनमें से एक बोला।

बोट से उतर उबड़ खाबड़ चट्टानों पर चलते हुए एड्वेंचर लग रहा था। किनारे पत्थरों पर बैठ पानी में हाथ डालने लगे तो तेज बहाव से हाथ झनझना उठे। तुरंत श्रीमती जी ने फरमान जारी किया कि ज्यादा अंदर नहीं जाया जाय, पानी गहरा भी हो सकता है। बोट वाले ने भी ताकीद कर दी थी कि किनारे पर ही रहें। बहाव तेज है।

सहस्त्र धारा से लौट कर 2 बजे तक घाट पर आये। राजराजेश्वर और गणेश मन्दिर के दर्शन किये। कार्तवीर्य अर्जुन की नगरी जिसमें राजराजेश्वर शिव की स्थापना कहते हैं कि उन्हीं के द्वारा की गयी थी। मंदिर के सुंदर प्रांगण में एक शिलालेख लगा था जिसमें चन्द्र वंश का इतिहास या कहें क्रोनोलोजी दर्ज थी। इला पुरुरवा का इतिहास था, बुध का नाम था और हैहेय

क्षत्रिय वंश के धुरंधर योद्धाओं का बखान था जिसमें त्रेता युग के सहस्रबाहू कार्तवीर्य अर्जुन थे तो द्वापर युग के कृतवर्मा भी।

महेश्वरी साड़ियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। श्रीमती जी तो जब से महेश्वर जाने का प्लान बना तभी से साड़ियों के लिए लालयित हो रही थीं। सो मन्दिर दर्शन से निकले तो रास्ते में ही उनकी जानी-पहचानी दुकान दिख गयी। साड़ियाँ खरीद गुरुकृपा होटल, जहाँ जब जब महेश्वर आये हैं तब तब खाना खाया है, खाना खाने गये। भूख तो वैसे ही अब तक कस कर लगने लगी थी तिस पर सरदारजी का स्वादिष्ट खाना और भूख बढ़ा रहा था।

महेश्वर से निकलते निकलते 4 बज गये थे। ओमकारेश्वर का रास्ता 50 कि.मी. था यानि एक घंटा। नर्मदा किनारे मंडलेश्वर, धरगांव, गोगांवा जहाँ से सामने ही सियाराम बाबा का आश्रम है, होते हुए बडवाह पहुंचे। बडवाह में चाय के लिए 10 मिनट रुक कर इंदौर खंडवा हाईवे पर चले आगे तो आया मोरटक्का जहाँ नर्मदा को पार करने का पुल है। मोरटक्का नर्मदा किनारे के नामी स्थानों में शामिल है जहाँ उत्तर और दक्षिण दोनों ही घाटों पर मन्दिर, आश्रम धर्मशालाएं बनी हैं। परिक्रमावासी दोनों ही तटों पर रुकते हैं। पुल पार किया, अब हम फिर से दक्षिण तट पर आ गये।



## ओमकारेश्वर

महेश्वर रिट्रीट से ही इलियाज जी ने ओमकारेश्वर नर्मदा रिसोर्ट बात करा, वहां रूम अवेलेबिलिटी सुनिश्चित करा दी थी। दोनों ही mp tourism के होटल हैं। mp tourism ने हाल के बरसों में व्यवसायिक रवैया अपनाया, फलस्वरूप निजी क्षेत्र के होटल्स से अच्छी व्यवस्था थी वहां। प्राइम लोकेशन की शासकीय भूमि मिलने से ये शासकीय संस्थाएं वैसे ही लीड लिए थीं।

5:30 pm पर हम ओमकारेश्वर में थे। पहले भी एक बार नर्मदा रिसोर्ट में रुक गये थे इसलिए लोकेशन पता थी, हाँ टेम्पल व्यू नाम हो जाने से थोड़ा कनफ्यूज हुए, पर अंततः पहुंच गये।

“अरे वाह, ये तो पहले से भी अच्छा हो गया है।” नई विंग देखते हुए मैं बोला, जैसे ही गाड़ी परिसर में घुसी।

अंदर पूछने पर रिसेप्शनिस्ट ने बताया कि सन् 2016 के सिंहस्थ के समय नया ब्लाक बना था, जो पुराने से भी अच्छा था। रूम तो पहले ही कन्फर्म था और नये ब्लॉक में ही था।

“wow, wow कितना सुंदर है” रूम में घुसते ही पीछे बालकनी में जाकर बिटिया बोली।

हम दोनों भी बाहर निकले रूम से, देखा पीछे बालकनी से। निःशब्द सुन्दरता, अद्भुत रमणीय जैसे नशा बह रहा हो, शोर कर रहा हो। नीचे हरे पानी की नर्मदा चट्टानों में से बह रही थी। उस पार ओमकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मन्दिर दिख रहा था। कोई एक कि.मी. पीछे डैम बना था जिस पर पानी नाद कर गिर रहा था।

इतनी मदहोशी थी कि शिथिल हो हम सब वहीं बैठ गये बालकनी में। नजर थी कि हटने का नाम ही नहीं ले रही थी।

“यदि यही वैराग्य है तो कौन संसार में रहना चाहेगा” मैं नर्मदा में नहा रहे, पूजन कर रहे सन्यासियों की टोली को बड़ी हसरत भरी निगाहों से देखते हुए मन ही मन बोला।

रात हो चली थी, कहीं कहीं दीप जलने भी लगे थे। ओमकारेश्वर पहाड़ी जगमगाने लगी थी। पहाड़ पर बेतरतीब ऊंचाई, निचाई में बने मठ, मन्दिर, मूर्तियाँ अपनी अपनी रोशनियों में अपना अपना जादू फेंक रहे थे। ज्योतिर्लिंग मन्दिर से घंटों की आवाज़ बीच-बीच में आ रही थी जिसका मुझे तो यही कारण समझ आया कि कोई बिरला ही होगा जो उस अग्रतिम सौंदर्य में नशे में नहीं होगा। अब नशे में डूब कर कहीं सो न जाए इसलिए बीच बीच में घंटा बजा कर उनकी तन्द्रा तोड़ना जरूरी है।

उस रात तो जो कमरे में घुसे तो नयनाभिराम दृश्यों में ऐसे खोये कि कहीं नहीं गये बस बालकनी में बैठे नीचे ही निहारते रहे। बिटिया तो अपनी किताबें पढ़ने लगी पर हम दोनों यूँ ही बैठे रहे 11 बजे तक।

दूसरे दिन मैं सुबह जल्दी निकल गया वाक पर, नर्मदा के किनारे। ओमकारेश्वर पहले भी दो बार आ चुके हैं पर इस बार जैसा रोमांच कभी नहीं रहा। माँ नर्मदा की महिमा, शिव नर्मदा का बाप बेटी संबध, परिक्रमा का महत्व और परिक्रमावासीयों, आश्रम वासियों से मिलने की चाह ने इस यात्रा को विशेष बना दिया था। पहली बार इतनी आध्यात्मिकता महसूस हो रही थी।

पश्चिम की ओर चलते हुए अन्नपूर्णा मन्दिर एवं विराट स्वरूप, विद्या वामदेव तीर्थ स्वामी द्वारा संचालित भगवती कुटीर, केन्द्रीय अध्यात्म विज्ञान शाला, मायानन्द चैतन्य घाट होते हुए मार्कण्डेय आश्रम में पहुंचा। सुबह के 6 बजे थे, बड़ी शांति थी आश्रम में। एक युवा संन्यासी दिखे उनसे बात की -

“आप यहीं रहते हैं।”

“जी।”

“आश्रम तो बहुत बड़ा है। काफी साधू संत रहते होंगे।”

“साधू संत हैं, परिक्रमावासी आकर रुकते हैं, आश्रम की तरफ से अभयघाट भी बना है स्नान को।”



“मार्कण्डेय जी का यही स्थान था?”

“जी नहीं, मार्कण्डेय जी का मूल स्थान अन्नपूर्णा मन्दिर में विराट स्वरूप के पास है।”

“पर यहाँ लिखा है मार्कण्डेय आश्रम।”

“नाम है आश्रम का, यहाँ जो सामने आप देख रहे हैं वह शंकराचार्य जी का मन्दिर।”

“जी हाँ सामने ही तो है। शंकराचार्य जी ओमकारेश्वर में यहीं आये थे?”

“शंकराचार्य जी आये ही नहीं कुछ दिन ओमकारेश्वर रुके भी थे। अब कौन-कौन से स्थान पर गये, कहाँ-कहाँ रुके, ये मुझे पता नहीं।”

“पर संभव है यहाँ आये हों, तभी यह मन्दिर बनवाया गया हो।”

“ऊपर मूर्ति है, उसके नीचे कृष्णानन्द जी महाराज की समाधि है, जिन्होंने इस आश्रम को बनाया था। आप मन्दिर के दर्शन कर सकते हैं” उन्होंने कहा तो मैं चला गया मन्दिर तक। छोटा सा मन्दिर जिसके गर्भगृह में गया, शंकराचार्य जी की सुंदर प्रतिमा, देखा एक तपस्वी ध्यान में तल्लीन थे। उनका ध्यान भंग न हो इसलिए चुपचाप दर्शनकर वापस आ गया।

आश्रम से बाहर निकल, सड़क पर बढ़ते हुए मौनी आश्रम तक पहुँचा जहाँ से सुनसान रास्ता आगे का शुरू होता है मोरटक्का की दिशा में।

और थोड़ा नीचे, किनारे तरफ गया। नये पुल का काम चल रहा था। नर्मदा में पिलर खड़े हो रहे थे। वहीं पास खड़े मजदूरों ने दूसरी तरफ एक पहाड़ी की ओर इशारा कर बताया कावेरी का नर्मदा से संगम। जब हम किसी स्थान के बारे में पढ़ लेते हैं तो उसे साक्षात् देखना रोमांच पैदा करता है। कावेरी संगम को दूर से ही सही पर देखना ऐसा ही अनुभव रहा।

अब वापस घाट से होते हुए चला। दूसरी ओर आनन्दमयी आश्रम, ओंकार मठ दिख रहे थे। कमल भारती जी के आश्रम के बारे में पढ़ा था किताबों में पर उस बावत् कोई नहीं बता सका।

अन्नपूर्णा मन्दिर के बड़े गेट से अंदर घुसा, आधा कि.मी. चलने के बाद विराट स्वरूप के दर्शन हुए। नाम के अनुरूप ही विशाल मूर्ति अनेक मुख, हजार हाथों वाले विष्णु की विराट प्रतिमा निश्चित ही आकर्षक थी। वहाँ खड़े एक पंडित से पूछा।

“मार्कण्डेय जी का स्थान यही है?”

“नहीं, वो तो आपको आगे मार्कण्डेय आश्रम में मिलेगा।” पंडित जी को कुछ नहीं पता, मैं झल्लाने लगा।

मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो बाहर निकला। सीढ़ियां उतर गौशाला के सामने से जाने लगा कि एक सज्जन गायों के पास खड़े मिल गये, वेशभूषा वही भगवा।

“यहाँ मार्कण्डेय जी का कोई स्थान है?”

“हाँ, वहीं तो था जहाँ से आप आ रहे” उन्होंने कहा तो मेरे उत्साह का ठिकाना न रहा।

“कहाँ?” मैं रोमांचित हो बोला।

“चलिए मैं दिखाता हूँ” कहते हुए वे मेरे साथ हो लिए। विराट स्वरूप प्रतिमा की दायीं ओर एक छोटा मन्दिर था, एक क्या दो मन्दिर थे।

“ये जो आप मन्दिर देख रहे हैं, वही स्थान है मार्कण्डेय जी का। कहते हैं नर्मदा में स्नान कर रोज इसी मन्दिर में आते थे।” उन्होंने मन्दिर के बाहर तक छोड़ते हुए कहा।

मैं अंदर घुस गया। गर्भ गृह में सुंदर शिवलिंग स्थापित थे और पीछे काले पत्थर की मूर्ति बनी थी मार्कण्डेय मुनि कि। दर्शन कर कुछ देर बैठा, जिस ऋषि का नर्मदा की सास्वतता से नाम जुड़ा था, जिस ऋषि को नर्मदा के साथ प्रलयकाल में भी अनष्ट माना था, जिसकी कहानी के बिना नर्मदा की कहानी अधूरी थी, उस ऋषि के स्थान पर आकर रोमांच हो रहा था।

कुछ देर अंदर बिताने के बाद मैं बाहर निकला। वे सज्जन वहीं खड़े थे।

“बाजू में दत्तात्रेय का मन्दिर है” उन्होंने कहा और मैं दत्त भगवान के दर्शन को चला गया।

“यहीं बगल से चल कर मार्कण्डेय ऋषि आते थे शिवलिंग पर जल चढ़ाने। पूजा करने” वे बोले।

“कहाँ से आते थे?”

“नर्मदा से, नीचे मार्कण्डेय शिला भी है जहाँ बैठ कर वे स्नान ध्यान किया करते थे” उन्होंने कहा और मुझे इशारे से बताया कि जो बुर्ज घाट

पर दिख रहा है कभी उसके नीचे ही नर्मदा किनारे एक शिला थी जिसे मार्कण्डेय शिला कहते हैं।

“आपने बड़ी जानकारी दी। क्या नाम है आपका।”

“नकली बाबा।”

“क्या!” मैं आश्चर्य से हंस पड़ा।

“हाँ स्वामी जी ने यही नाम दे दिया, तो अब यही सही” वे मुस्कराने लगे।

“पर काम आपने असली किया है, जो कोई नहीं बता पा रहा था आपने बता दिया” मैं उनका आभार मान चला आया। समय हो चला था अब ज्योतिर्लिंग के दर्शन को भी जाना था सो वापस होटल की ओर रुख किया।

होटल से ही तय कर लिया था कि इस बार पुल से पैदल चलेंगे। बालकनी से बैठ उसकी चहल-पहल कल से लालयित कर रही थी। गाड़ी को पार्किंग में लगा कर पैदल ही बढ़ गये मन्दिर की ओर। नीचे नर्मदा, सामने मन्दिर और पुल पर पैदल चलते हुए हम स्वयं को भाग्यशाली मान रहे थे।

“नीचे से नर्मदा जी का जल लाकर चढ़ाना है” अचानक मैं बोल पड़ा। मुझे ध्यान आ गया कि नर्मदा परिक्रमा तब तक पूरी नहीं होती जब तक परिक्रमावासी ओमकारेश्वर आकर जल न चढ़ाएं। मैंने यह भी सुना है कि परिक्रमा पूरी करने के बाद भी लोगों को साल छह महीने लग जाते हैं यहाँ आकर जल चढ़ाने में। पर हमारे लिए तो इसी यात्रा में सुलभ हो गया था।

“यानि माँ ने परिक्रमा स्वीकार ली” मैं बुदबुदाया, रोमांच से पुलकावली खड़ी हो रही थी।

“क्या?” श्रीमती जी पूछने लगीं।

“मैंने कहा नर्मदा जी का जल लाकर शिवलिंग पर अभिषेक करना है।”

“अभिषेक तो किसी पंडित से कराना होगा।”

“चलिए हम करा देंगे” हम लोगों की बात सुनकर बगल से जा रहे एक पंडित जी बोले। 55-60 बरस की आयु के, वेशभूषा पूरी मन्दिर के पुजारी की ही थी।

“हाँ पापा करालो” अब तो बिटिया भी सहमत हो गयी।

तिवारी जी, पंडित जी का नाम, हमें पुल के ऊपर से सब बताते हुए ले चले। सामने गुरुद्वारा, नीचे उतरते ही चक्रतीर्थ घाट और फिर पूजन सामग्री से भरी दुकानों की गली। पूजन का समान और नर्मदा जल लेकर हम उनके साथ अंदर गये। भीड़ ठीक-ठाक थी पर पंडित जी ने अंदर भगवान का अच्छे से अभिषेक करवाया।

“आप ममलेश्वर तो हो आये होंगे?” बाहर निकल कर उन्होंने पूछा।

“नहीं ममलेश्वर तो हम कभी नहीं गये जबकि तीन बार आ चुके हैं यहाँ।”

“वहां ज़रूर जाइये। बिना ममलेश्वर दर्शन ओमकारेश्वर की यात्रा पूरी नहीं होती।”

“इतना महत्व है? आज तक तो किसी ने बताया ही नहीं।”

“जहाँ हम खड़े हैं, यह मुख्य पर्वत शिवपुरी है, जहाँ से हम पैदल पुल पर चले थे, आपकी गाड़ी जहाँ पार्क है वह विष्णुपुरी है और सामने ब्रह्मपुरी जहाँ ममलेश्वर विराजमान हैं। जब उनके दर्शन करते हैं तभी तीनों पूरी का परिभ्रमण होता है” उन्होंने कहा और हमें बोट से ममलेश्वर जाने कि सलाह दी।

कुछ समय बाहर ओमकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के पास वरांडा में बैठ कर हम लोग बोटिंग करते हुए ममलेश्वर के लिए चले। पंडितजी ही बोट वाले को बुला कर समझा गये थे। अच्छे लड़के थे दोनों, उन्होंने हमें दो विकल्प दिए। या तो हम ममलेश्वर चलकर वहीं दर्शन कर अपनी गाड़ी को वहीं बुलवा लें और दूसरा विकल्प था कि दर्शन करा कर हमें ओमकारेश्वर डेम, कावेरी संगम दिखाते हुए गाड़ी पार्किंग स्थल के पास छोड़ देंगे। सबको दूसरा विकल्प पसंद आया। बिटिया को तो बोटिंग विशेष पसंद है और इस यात्रा में यह तीसरा अवसर था जब हम नर्मदा में बोटिंग कर रहे थे।

ममलेश्वर के घाट पर बोट लगी। दोनों में से एक लड़का साथ हो लिया कि तुरंत दर्शन करा कर लिवा लायेगा। हमने भी सोचा गाइड साथ रहेगा तो जल्दी हो जाएगा।

“अभी-अभी पट बंद हुए हैं” मन्दिर के बाहर बैठे एक पुजारी बोले, जब हम ममलेश्वर पहुंचे तो।

“कितना समय लगेगा पट खुलने में” मैंने पूछा।

“भगवान को भोग लगेगा, उसके बाद। 15-20 मिनट।”

“क्या करें, हमको होटल चेक आउट भी करना है। 12 तो बज ही गया” मैं अधीर हुआ।

“ऐसे ही बाहर से ही प्रणाम कर चलें पापा” बिटिया भी मेरे जैसी अधीर हो रही थी।

“अब आये हैं तो धैर्य से खड़े रहो” श्रीमती हम तीनों में सबसे अधिक धैर्यवान थीं। 10 मिनट, 15...20...25 और 30 भी हो गये पर पट नहीं खुले। हम लोग लाइन में लग गये थे। पहले जैसा जल्दी विचलित होने वाला नेचर नहीं रहा था, खासकर ईश्वर के किसी भी घर में इसलिए मैं शांति से इंतज़ार कर रहा था।

“पापा कब खुलेंगे पट, यहाँ तो ओमकारेश्वर से भी ज्यादा टाइम लग रहा है।”

“बेटू पता है क्यों टाइम लग रहा है” मैंने पूछा।

“क्यों?”

“हम पहले दो बार बिना ममलेश्वर के दर्शन किये वापस गये थे इसलिए अब तीनों बार का टाइम एक साथ देना होगा” अचानक ही मेरे मन में यह कारण सूझा था पर बिटिया संतुष्ट हो गयी और शांति से खड़ी रही। पट खुले, दर्शन किये। यहाँ भी एक पुजारी जी ने नर्मदा जल से अभिषेक करा दिया था। मैं भाव विभोर होकर सोचने लगा।

“परिक्रमा पूरी हुई है न, इसलिए सारे नियम, प्रक्रियाएं फॉलो होंगी इस बार।”

ममलेश्वर के दर्शन के बाद हम बोट में बैठे थे और बोट डेम की ओर चली जा रही थी। नर्मदा के स्वच्छ जल में रॉक्स के बीच नौकायन का मजा ही और है। किनारे पर श्रद्धालुओं की भीड़ कोई स्नान कर रहा तो कोई पूजन, नदी में दौड़ती नौकाएं और उतनी ही किनारों पर खड़ी। अजब जीवंत दृश्य था। नदी के बहाव की उलटी दिशा में चलती नाव डेम के नीचे पहुंची। दिन में डेम का पानी बंद कर देते हैं इसलिए शांति थी। डेम के पास पहुंच नौका पहाड़ के दूसरी ओर घूमी।

“वो देखिये कावेरी संगम” नाव वाले लड़के ने बताया।

दाहिनी ओर से जब डेम के ऊपर से पानी गिरता है तो पहाड़ के कारण धारा दो भागों में बंट जाती है। उसी तरफ कावेरी नदी आकर मिलती है और तुरंत ही थोड़ी दूर चल कर पहाड़ से बंट जाने के कारण बड़ी धारा बायीं ओर बहती हुई नर्मदा और दाहिनी ओर कि पतली धारा कावेरी बन जाती दिखती है।

“अरे ये पहाड़ तो बीचों बीच है, पापा” बिटिया बोली।

“ओमकारेश्वर बीच में बैठ गये हैं जाकर” मैंने कहा तो मोटर बोट की आवाज़ में किसी को साफ सुनाई नहीं दिया पर मैं सोचने लगा कि।

“बाप बेटी का सम्बन्ध भी निराला है जैसे-जैसे बेटी सयानी होती जाती है वैसे वैसे पिता और ज्यादा उसकी चिंता करने लगता है। अब देखो आधी दूरी तय कर जब पहुंची नर्मदा तो नेमावर में जहाँ दोनों किनारों पर बैठ गये थे शिव अपनी युवा पुत्री की चिंता में और यहाँ जब और अधिक maturity आ गयी तब भी चिंता है कि कम होने की जगह बढ़ती ही जा रही है और जब मन नहीं माना तो बीच में ही डट गये जिससे चारों तरफ नजर रख सकें। बेटी की सुरक्षा के लिए पिता को कितना सिंसियर होना चाहिए ये कोई शिव से सीखे।”

“इस संगम दर्शन का बहुत महत्व है” जब वोट वाला बोला तो मेरी विचार श्रंखला टूटी।

बोट लौट चली और पर्वत पर बन रहे आकर्षक मन्दिर भवन देखते हुए हम चक्रतीर्थ घाट पार कर किनारे पहुंचे। नाव से उतर सीढ़ियां चढ़ गाड़ी तक पहुंचे और सीधे होटल।

होटल से चेक आउट कर 2 बजे निकले वापसी के लिए। ओमकारेश्वर की सुखमय यात्रा, pleasant स्टे के लिए सभी का आभार माना। गाड़ी जब टाउन से बाहर आई तो मैंने विवेक से पूछा।

“कैसे चलोगे हरदा?”

“खंडवा हो कर ही चलना पड़ेगा।”

“क्यों तुम तो कह रहे थे बडवाह होकर चलेंगे” विवेक ने बताया था कि बडवाह से सतवास होकर खातेगांव पहुंच जायेंगे, मेरी भी इच्छा इस नये रास्ते को देखने की थी।

“मैंने पता लगाया था अभी गाड़ी वालों से, जब आप लोग मन्दिर गये थे, कि बडवाह वाला रास्ता लम्बा भी है और उतना अच्छा भी नहीं है इसलिए खंडवा होकर जाना ही ठीक है।”

“चलो जब दादाजी बुला रहे हैं तो हम कौन होते हैं?”

सनावद होते हुए इंदौर खंडवा हाईवे पर आये और वहां से खंडवा की ओर गाड़ी मुड़ गयी। हाईवे था पर बहुत अच्छा नहीं था इसलिए खंडवा पहुँचते-पहुँचते 3 बज गये। ‘सदी के गायक’ ‘किशोर कुमार’ की समाधि होते हुए नगर में प्रवेश किया। सोचा पहले दादाजी धूनीवाले के दरबार में चलते हैं, उनके दर्शन के बाद ही खाना खायेंगे।

दादाजी की समाधि पर पहुँचे। लग रहा था अभी 3:30 बजे हैं कहीं बंद न हो। गाड़ी पार्क कर उतरे, एक प्रसाद की दुकान पर पूछा।

“अभी खुला है?”

“हाँ खुला है प्रसाद ले लीजिये” दुकान की बालिका बोली।

“ये कभी बंद नहीं होता। दादाजी का दरबार है” एक सज्जन जो प्रसाद लेने आये थे हमारी बात सुनकर बोले।

“आप क्या यहीं के रहने वाले हैं?”

“हाँ मेरी यहाँ दुकान है, इलैक्ट्रिक की।”

“क्या रोज आते हैं?”

“नहीं रोज नहीं, हर गुरुवार को आता हूँ।”

“ओह! आज गुरुवार है। अच्छा संयोग है कि हम लोग आज के दिन आये हैं।”

“आप लोग भाग्यशाली हैं। दादाजी की कृपा है” वे बोले।

“वो तो हमें छह दिनों से लग रहा है रोज” मैंने कहा और हम लोग प्रसाद ले कर समाधि मन्दिर की ओर बढ़ गये।

“आप लोग फूल माला वहीं छोड़ आये थे” वे ही दुकान वाले सज्जन ने पीछे से आवाज़ दी। मुड़ कर देखा तो वे अपने प्रसाद कि डलिया के साथ, हमारा फूलमाला भी लिए आ रहे थे।

“धन्यवाद। चलिए आपके साथ ही चलते।”

“आइये। क्या पहली बार आये हैं?”

“पहले भी आ चुके हैं” मैंने कहा हम लोग साथ चलते जा रहे थे।

सबसे पहले बड़े दादाजी जिन्हें धूनीवाले दादाजी कहते हैं की समाधि पर गये। प्रणाम किया, परिक्रमा की। वहां से निकल कर सामने नर्मदा माँ के मन्दिर में दर्शन किये। बड़े दादाजी के बगल में छोटे दादाजी हरिहर बोले की समाधि के दर्शन किये। जलती धुनी में नारियल चढ़ाया, पूरे परिसर की परिक्रमा की और बैठ गये समाधि के सामने। कुछ लोग बैठे थे, कुछ आ जा रहे थे। पर बड़ी शांति थी वहां। अलग ही सुकून से हृदय जैसे भरा जा रहा था। थोड़ी देर बैठे, दंडवत कर बाहर आये। उसी पूजन सामग्री की दुकान पर वो सज्जन फिर मिल गये।

“जैसे-जैसे आप कर रहे थे वैसे ही हम फॉलो कर रहे थे। आपके कारण भलीभांति दर्शन हो गये।”

“सब दादाजी की कृपा है। कहाँ से आये हैं आप लोग।”

“हरदा।”

“अरे वहां पर मेरे जीजाजी हैं उन्ही के बेटे की शादी की पत्रिका देने आया था दादाजी के यहाँ” वे बोले।

“निमन्त्रण दादाजी के यहाँ?”

“हाँ यहाँ की परम्परा है हर शुभ कार्य का पहला निमन्त्रण दादाजी को। निमन्त्रण से ही तो रुके थे दादाजी यहाँ।”

“मतलब?”

“ये सन् 1930 की बात है। दादाजी नर्मदा दर्शन के बाद खंडवा होकर लौट रहे थे। स्टेशन के पास एक धर्मशाला है पार्वती धर्मशाला। उसकी सेठानी ने दादाजी को अपने यहाँ हो रहे भंडारे का निमन्त्रण दिया। दादाजी ने रुकने से मना कर दिया तो सेठानी उनके सामने लेट गयी। जब नहीं मानी तो दादाजी रुक गये और प्रसादी ग्रहण कर उसी रात यहाँ शरीर छोड़ दिया। खंडवा बहुत भाग्यशाली है जो दादाजी ने यहाँ समाधि ली।”

“यानि 1930 में समाधि ली थी दादाजी ने।”

“हाँ और ये जो धूनी जलते हुए आप ने देखी है वह दादाजी के द्वारा ही जलाई गयी थी तब से लगातार जल रही है। छोटे दादाजी ने सन् 1942 तक इस आश्रम का विकास कराया। 1942 में उनके द्वारा समाधि लेने के बाद ट्रस्ट यहाँ की व्यवस्था देखता है।”



बहुत बहुत धन्यवाद इतनी जानकारी देने के लिए। क्या नाम है आपका?

“कैलाश चन्द्र शर्मा” उन्होंने अपना नाम बताया और हमसे विदा ली।

समाधि के बाद तुलजा भवानी के मन्दिर गये जो पास में ही था। कहते हैं यहाँ भगवान राम अपने वनवास अवधि में अगस्त्य ऋषि के आश्रम में जाने से पहले इस मन्दिर पर आये थे। दर्शन किये माँ तुलजा भवानी के और अब भोजन की तलाश में निकल लिए। 4:30 बजे थे विवेक एक होटल जानता था वहीं ले गया। होटल जीमण, था तो साधारण पर वहाँ के मालिक व्यास जी असाधारण थे। लपक कर गाड़ी तक आये। विवेक ने परिचय बताया तो सम्मान से अंदर ले गये और विशेष बैठक व्यवस्था कि। स्वयं स्वादिष्ट खाना तैयार कर लगवाया और अनुग्रह से खिला रहे थे जबकि होटल में खूब भीड़ थी ग्राहकों कि। लगता था अपने स्वादिष्ट खाने के कारण काफी प्रसिद्ध था होटल जीमण।

“मम्मी आपने दादाजी के यहाँ क्या माँगा?” बिटिया ने माँ से पूछा खाना खाते समय।

“क्षमा मांगी।”

“क्यों? मैंने और बिटिया ने एक साथ पूछा चौंक कर।

“यही कि हम पहले भी आये हैं पर आपको पहचान नहीं पाए। अब जाकर आपकी शक्ति का भान हुआ है, तो ऐसे ही कृपा बनाये रखना” मंजुल ने कहा तो सचमुच सब भावुक हो गये।

“खाना कैसा लगा?” व्यास जी ने आकार पूछा।

“बहुत स्वादिष्ट और आपके आग्रह से और भी स्वादिष्ट हो गया है।” धन्यवाद आपका, दादाजी के यहाँ गये?”

“वहीं से आ रहे हैं दर्शन कर” इस बार श्रीमती जी बोलीं।

“बहुत मान्यता है दादाजी की यहाँ?” मैंने बात चलाई।

“अरे साब MD,MS हैं। ऐसा डॉक्टर, ऐसा दाता नहीं है कोई। मेरा तो सब कुछ उनकी ही देन है” व्यास जी ऊपर की ओर हाथ जोड़ बोले।

खंडवा से सीधे हरदा की ओर निकले। 5:00 pm हुए थे और गाड़ी हाईवे पर दौड़ रही थी। अभी 100 कि.मी. से ऊपर का सफर बाकी था,

पर रोड अच्छी थी। एक घंटे बाद आसापुर पहुंचे। सड़क के दोनों ओर हरे भरे पेड़ों, वहीं किनारे पर माँ आसादेवी का मन्दिर और बनी चाय नास्ते की अनेकों दुकानें। अच्छी खासी चहल-पहल थी, सायं के समय और अच्छा लग रहा था। वहीं रुके, दर्शन किये मन्दिर के। विवेक अपने जानकार दुकान पर चाय बनवाने लगा। मन्दिर के पास बंदरों के झुण्ड अटखेलियाँ कर रहे थे। माँ बेटी उन्हें देखने में मशगुल थीं। मुझे तीन साल पहले की एक यात्रा अनायास ही याद आ रही थी।

बात सन् 2016 की है। विभागीय एक्सपोजर विजिट में केरला जाने का अवसर मिला। गाड़ी भोपाल स्टेशन से थी केरला एक्सप्रेस। पूरा विभागीय दोस्तों का ग्रुप था हमारी बोगी में। रात को सब हंसते बात करते सो गये। सुबह उठे तो देखा कि एक मित्र ब्रजेश गाड़ी में ही नहा लिए थे और अपनी नित्य पूजा कर रहे थे। हम लोग उठते जा रहे थे और उन्हें देख कर खूब उनका मज़ाक उड़ा रहे थे कि इतनी भी भक्ति कैसी कि ट्रेन में ही नहाना ज़रूरी हो गया। जब जैसा हालात हो तब तैसा काम करना चाहिए। पर ब्रजेश नहीं माने और लम्बी ट्रेन यात्रा में वे नित्य बोगी में ही नहाते थे और अपनी पूजा करते थे।

पांच दिन के विजिट के बाद लौटना तय था। तिरुअनंतपुरम से गाड़ी थी केरला एक्सप्रेस सुबह 10 बजे। अचानक रात को ब्रजेश ने idea दिया कि क्यों न हम लोग तिरुपति बालाजी के दर्शन करने चलें। यहाँ से प्लेन से चैन्नई चलते हैं और वहां से टैक्सी कर तिरुपति। तिरुपति में दर्शन कर वहीं यह ट्रेन पकड़ लेंगे।

“कब?” मैंने पूछा था।

“ये दूसरे दिन सुबह 3 बजे तिरुपति से मिलेगी” ब्रजेश ने पहले ही सब देख लिया था।

“और तब तक हमें दर्शन हो जायेंगे। जिस तिरुपति पर दर्शन के लिए दो-दो दिन लग जाते हैं वहां हमें जाते ही दर्शन हो जायेंगे?” आर सी बोले।

“क्या बचकाना प्लान है” मैं बोला, बिल्कुल भी यह idea ठीक नहीं लग रहा था।

“बचकाना नहीं है, दर्शन का ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा।” ब्रजेश बोले।

मेरे कमरे में प्लान लेकर आये थे। जहाँ मैं आर सी और मेरे रूम पार्टनर सिद्धार्थ सर भी थे। उन्हें कुछ कुछ इस idea में दम लगा।

“यार चल तो सकते हैं। बस दर्शन होने की कोई गारंटी नहीं है।” वे बोले।

“सर पूरी गारंटी है, हम पास ले लेंगे” ब्रजेश जैसे मन बनाये थे।

“अरे सर रहने दीजिये। ये अपनी ट्रेन और मिस करा देगा, फिर कैसे पहुंचेंगे भोपाल?” मैं कुछ ज्यादा ही चिंता करता था।

“कोई ट्रेन नहीं निकलेगी, हम आराम से दर्शन कर उसे पकड़ लेंगे।”

“अरे तुम किसी जासूसी उपन्यास की तरह कहानी गड़ रहे हो। यहाँ से चलेंगे इस ट्रेन को छोड़ कर, वहाँ से यही ट्रेन पकड़ लेंगे, अजीब टाइमिंग सेट कर रहे हो” मैं बुरी तरह खीज पड़ा।

“दर्शन की गारंटी लेते हो?” माहोल को सामान्य बनाने के उद्देश्य से आर सी बोले।

“हाँ मैं गारंटी लेता हूँ” तैश में आ गये ब्रजेश।

“चलो, जब यह गारंटी ले रहा है तो” अब कि बार आर सी भी सीरियस हो गये।

“और प्लेन के टिकिट कौन कराएगा” सिद्धार्थ सर ने पूछा।

“वो सर मैं सब कर दूंगा” ब्रजेश बोले तो आनन फानन में प्रोग्राम बन गया।

दूसरे दिन निर्धारित समय पर फ्लाइट ने चेन्नई उतार दिया। मैं, ब्रजेश, आर सी, सिद्धार्थ सर, और रचना शर्मा जो हमारी साथी थीं। कुल पांच लोग आये। 12 बजे के करीब हम चेन्नई में थे। टैक्सी की तिरुपति जाने के लिए। इच्छा हुई यहाँ का मेरिन बीच भी लगे हाथ देख लिए जाय। टैक्सी ड्राइवर अब्दुल ने बताया कि एक घंटे में मेरिन दिखा कर शहर से बाहर कर देगा और उसके बाद तीन घंटे। मुझे नये शहर देखने का शुरू से चाव रहा है तो सोचा मेरिन के बहाने चेन्नई की एक झलक भी मिल जाएगी।

मेरिन देख कर चेन्नई से निकले। अब्दुल ने अच्छी गाड़ी चलाई और हम लोग 150 कि.मी. से अधिक का सफर पूरा कर 4 बजे तिरुपति थे।

होटल किया और जब होटल मैनेजर को बताया अपना प्लान कि हमें आज ही दर्शन कर सुबह की ट्रेन पकड़नी है तो आश्चर्य से बोला।

“अभी आपको खाना भी खाना है, तैयार होकर यहाँ से निकलने में आधा घंटा और यानि 4:30 pm। यहाँ से अभी आपको डेढ़ घंटा और लगेगा। आज शनिवार है, भीड़ अधिक होती है, तो वीआईपी पास भी नहीं मिलना। आप मन्दिर पहुंचेंगे 6:30 - 7 बजे के करीब”

“हाँ तो?” सिद्धार्थ सर ने पूछा।

“यानि आप चाह रहे हैं कि साधारण लाइन में लग कर आप सुबह तीन बजे से पहले दर्शन कर लें, संभव नहीं है। 18 घंटे लग जाते हैं, आपको पहले से ऑनलाइन बुकिंग करानी थी।”

“तो अब क्या करना चाहिए?” मैं *as usual* फिर चिंतित हो गया। मुझे लगा कि इस बेवकूफी में ट्रेन निकलती है।

“अब आ गये हैं तो जाएँ। जब ये लगे कि आप की ट्रेन का समय होने वाला है तो गोविंदा गोविंदा कहते हुए लाइन से बाहर आ जाना। ऐसा लोग करते हैं, उसका भी बालाजी के दर्शन जैसा ही फल है। पर हाँ ये ध्यान रहे कि आपको अपनी गाड़ी के समय से 2 घंटे पहले वहाँ से निकलना होगा तब जाकर आप गाड़ी पकड़ पाएंगे।”

“अरे चलो सब अच्छा होगा, बालाजी ने बुलाया है वे ही रास्ता निकालेंगे” ब्रजेश बोले।

“क्यों तुमने तो गारंटी दी थी” अब आर सी भी रोष में आये।

“हाँ तो है न गारंटी। चलो तो” ब्रजेश का कॉन्फिडेंस अभी भी कम नहीं हुआ था।

“ट्रेन नहीं छूटनी चाहिए। चाहे दर्शन हो चाहे न हों” मैंने बोल दिया।

“अरे चलो तो पंडितजी, भगवान पर भरोसा किया करो” ब्रजेश ने ताना मारा।

मैनेजर की बातों से कोई बहुत ज्यादा उम्मीद तो बची नहीं थी। लग रहा था एक औपचारिकता है, सो निभानी है। ब्रजेश से सबने यह प्रॉमिस ले लिया था कि जैसे ही 12:30 बजेंगे हम लोग लाइन छोड़ देंगे। उस समय ब्रजेश कोई जिद्द नहीं करेंगे।

खाना खाकर हम लोग 4:45 pm होटल से निकले। अब्दुल ने तिरुमाला की रास्ता देखी थी। तिरुपति शहर से गाड़ी निकल रही थी, अच्छा शहर था। शहर छोड़ जब गाड़ी आगे चल पहाड़ी रास्ते पर चली तो बहुत ही नयनाभिराम दृश्य थे दोनों ओर। चढ़ाई पर आराम से ड्राइव करते ड्राइवर ने हम लोग को 6:15 बजे तिरुमाला पहुंचा दिया। ऊपर भी अच्छा-खासा टाउन था। साफ-सुथरा, चौड़ी सड़कें, जगह जगह होटल, धर्मशाला, शॉपिंग काम्प्लेक्स, स्नानगार सब कुछ व्यवस्थित था।

मन्दिर के पास पहुँच गाड़ी पार्क कर पैदल चले और 6:40 पर मन्दिर के मुख्य गेट पर थे। पास तो मिलना नहीं था आज शनिवार को, तो प्रयास भी नहीं किया। अंदर अनेक वेटिंग कम्पार्टमेंट बने थे जिनमे दर्शनार्थियों को बिठाया जाता था। एक के बाद एक कम्पार्टमेंट में भीड़ शिफ्ट होती जाती है और इस तरह दसियों कम्पार्टमेंट से निकल कर मुख्य मन्दिर तक पहुँचते हैं। हर कम्पार्टमेंट में चाय, पानी, शौचालय सभी सुविधाएँ थीं। बड़े हाल थे जिनमे एक साथ 500 आदमी आ जाएँ।

हम लोग पहले कम्पार्टमेंट में बिठाये गये। सभी इंतज़ार करते हैं हम भी करने लगे समय हो गया था 7 pm। चाय बिस्किट की व्यवस्था की, पानी की बोतल लीं, गप्प मारते बैठे ही थे कि दूसरे कम्पार्टमेंट की एंट्री खुली और सबको उसमें शिफ्ट कर दिया। यहाँ भी 20 मिनट बैठे और फिर शिफ्टिंग। इस बार सीधे चौथे थे या पांचवे में पहुँच गये। समय हुआ साढ़े सात। यहाँ आठ बजे तक बिठाला गया और फिर शिफ्टिंग, सब कुछ यंत्रवत एक और कम्पार्टमेंट में। फिर से चाय ली सबने। भीड़ बहुत थी पर फैली थी तो अखर नहीं रही थी, व्यवस्थाएं भी उम्दा थीं। मन्दिर प्रशासन के लोगों का व्यवहार भी मित्रवत।

8:30 बजे कम्पार्टमेंट खुला और हम सीधे मुख्य लाइन में, जो बालाजी के सामने ले जाती थी। हमें तो पता नहीं पर लोग आपस में बातें कर रहे थे कि इस बार बालाजी लगता है रोबोट बिठा दिए हैं जो इतनी जल्दी कर रहे हैं। उनकी बातों से लग रहा था कि सब कुछ ठीक रहा तो हमलोग आधा घंटे में बालाजी के सामने होंगे।

और वही हुआ। 9 बजे हम बालाजी के दर्शन कर रहे थे। शानदार प्रतिमा, साक्षात् ईश्वर के दर्शन की अनुभूति। निगाह ही नहीं हट रही थी

किन्तु नियम कायदे थे जिनका पालन कर हम 10 मिनट में प्रसिद्ध लड्डू का प्रसाद ले रहे थे और 9:30 बजे मन्दिर से बाहर बनी दुकानों में चाय पी रहे थे।

“ब्रजेश मान गया मैं तुम्हारी भक्ति को” चाय की दुकान पर मैं बोला।

“अरे सब बालाजी की कृपा है।”

“तुम जब गारंटी देते थे तो क्या तुम्हें सही में लगता था कि इस विश्वप्रसिद्ध मन्दिर के हम यूँ इतनी सरलता से दर्शन कर लेंगे” आर सी ने पूछा।

“हाँ पूरा विश्वास था कि वे ही कोई रास्ता निकालेंगे।”

“और उन्होंने ही निकाल दिया” रचना शर्मा ने कहा।

“जिस पर चल नहीं दौड़ रहे थे” सिद्धार्थ सर बोले तो सब हंस दिए।

गाड़ी हरदा पहुंचने वाली थी और मैं यही सोच रहा था कि भगवान के भरोसे चलो तो कितनी सहज, कितनी सरल और कितनी आनन्दमयी हो जाती है हर यात्रा जैसे तब हुई थी और जैसे अब हुई है। छह दिन, हर दिन माँ नर्मदा का साथ और हर दिन आनन्द, हर दिन उल्लास।



## प्यार भी गुस्सा भी

नर्मदा माँ है और माँ होने के नाते भरपूर प्यार और ममता उड़ेल देती है। जो मांगे उसे भी और जो न मांगे उसे भी, अगर वह निकट आ गया हो तो, चाहे कारण चाहे अकारण। सब माँओं जैसे या उनसे भी अधिक स्नेह देने वाली नर्मदा गुस्सा भी हो जाती है, जैसे और माँ होती हैं। पर जैसी प्यार में दिल दार है, वैसा ही गुस्सा भी अपार है।

हाल ही की आँखों देखी सुना रहा हूँ। हरदा में जिला प्रशासन ने तय किया कि कई सालों से बंद पड़ा भुवाणा उत्सव फिर से आयोजित किया जाय। भुवाणा अर्थात उपजाऊ प्रदेश। अब जिस में नर्मदा बहती हो वह उपजाऊ नहीं होगा तो कौन होगा।

तो भुवाणा उत्सव मनाने का निर्णय हुआ और यह भी कि उत्सव नर्मदा तट पर हंडिया में मनाया जाय। मकर संक्रांति के अवसर पर 13, 14, 15 जनवरी तिथि तय हुई। सभी उत्साह से तैयारियों में लग गये। तभी तैयारियों की समीक्षा जिले के प्रभारी मंत्री की अध्यक्षता में हुई और बैठक में जन प्रतिनिधि, शासकीय अधिकारी, गणमान्य नागरिक सभी बुलाये गये थे। कैसे उत्सव मनेगा, पहले दिन कौन गतिविधि होंगी, अगले दिन क्या कार्यक्रम होंगे, समापन दिवस में क्या होगा।

विचार-विमर्श चल ही रहा था की मकड़ाई रियासत के प्रतिनिधि जो राजनैतिक रूप से सत्तारूढ़ दल से सम्बद्ध थे, द्वारा सुझाव दिया।

“पहले उत्सव मकड़ाई में होता था, इसलिए इस बार भी वहीं होना चाहिए क्योंकि दूर दराज के आदिवासी भाग नहीं ले पाएंगे।”

“अरे! कैसे लोग हैं जो हंडिया के नर्मदा तट को छोड़ अन्य जगह प्रोग्राम चाह रहे हैं” तुरंत मेरे मन में खिन्नता हुई।

पूरे भरे हाल में किसी ने ज्यादा प्रतिकार नहीं किया और अंत में यह तय हुआ कि शुरुआत मकड़ाई से हो 13 को और 14, 15 के कार्यक्रम हंडिया में हों। मेरा और मेरे जैसे अन्य लोगों का उत्साह टंडा पड़ गया जो तीन दिन हंडिया में माँ नर्मदा के तट पर रहने का प्लान बना चुके थे।

अब हंडिया के साथ साथ मकड़ाई की तैयारी भी होने लगी। सबने इसे सहजता से लिया सिवाय नर्मदा के। माँ को लगा कि मान देकर अपमान किया गया।

13 जनवरी 2020 को भुवाणा उत्सव का आगाज मकड़ाई से होने का दिन। सभी तैयारियां हो चुकी थीं। बाहर के कलाकरों की प्रस्तुतियां, एडवेंचर खेल, रॉक क्लाइम्बिंग, विभागीय प्रदर्शनियां, भव्य मंच, सब कुछ तैयार। 10 बजे सुबह उद्घाटन होना था, अतिथि आ चुके थे कि अचानक खबर आई कि ओमान के सुल्तान की कुछ दिन पूर्व मृत्यु होने से आज यानि 13 तारीख को राष्ट्रीय शोक घोषित किया गया है और आज कोई कार्यक्रम नहीं होंगे।

आश्चर्य! पहली बार सुन रहे थे कि दूसरे देश के प्रमुख के मरने पर भारत में राष्ट्रीय शोक घोषित हो और वह भी कुछ दिन बाद। अब जनता तो मेला देखने निकल गयी थी उसे क्या पता की क्या हुआ और क्यों हुआ।

“अब क्या होगा सर?” सहायक संचालक राहुल ने मुझसे पूछा।

“मेरी राय में तो मेला चूँकि पब्लिक का है इसलिए इसे शासकीय न बना कर, मंचीय कार्यक्रमों को निरस्त करते हुए मेले को आज यहाँ चलने दिया जाय और कल हंडिया में विधिवत उद्घाटन करा मंचीय कार्यक्रम वहां कर लिए जाय।”

“अब पता नहीं सर क्या निर्णय होता है। रेस्ट हाउस में पूरे जिला प्रशासन के साथ सत्ताधारी दल से, रियासत के लोग और पूर्व विधायक चर्चा कर रहे हैं।” राहुल पता लगा आया था। अर्थॉरिटी के बीच विचार-विमर्श और घंटों बाद जो तय हुआ उसे कार्यक्रम स्थल पर आकार प्रशासन के मुखिया ने सुनाया।

“आज का कार्यक्रम स्थगित किया जाकर कल यानि 14 तारीख को यहीं पर मकड़ाई में उत्सव शुरू होगा। आज के और कल के कार्यक्रम दोनों



को यहीं मकड़ाई में किया जायेगा। हंडिया में अब सिर्फ 15 तारीख का कार्यक्रम होगा।”

“उफ! फिर से गलती। कोई क्यों नहीं समझ रहा कि माँ नर्मदा के अपमान का नतीजा है ये सब और अभी भी गलती सुधार का मौका गंवाया जा रहा है।”

मुझे विचारों में खोया जान राहुल ने टोका।

“क्या सोचने लगे सर?”

“राहुल ये ठीक नहीं हो रहा हंडिया के 14 के कार्यक्रम को भी डिस्टर्ब कर दिया।”

“हम लोग रेवा सखी का कार्यक्रम अब कब करेंगे?” बालिका सुरक्षा को लेकर जिले में किये जा रहे नवाचार रेवा सखी, जिसमें 18 वर्ष से ऊपर की बालिकाएं अपने गाँव में कार्य कर रही थीं, का सेमिनार जो भुवाणा उत्सव में 14 को हंडिया में आयोजित था, के बारे में राहुल चिंतित दिखे।

“वह तो रेवा के तट पर ही होगा भले ही पूर्व नियोजित 14 के स्थान पर 15 करें, पर करेंगे हंडिया में ही” मैंने दृढ़ता से कहा।

और 14 भी आ गयी। सुबह 10 बजे पूरा शासकीय अमला आयोजन स्थल पर उपस्थित था। मकड़ाई की वादियों में खिली धूप और हल्की सर्द हवाओं ने मौसम खुशगवार बना दिया था। मंच की साज सज्जा और प्रस्तुति देने आये झारखंड के कलाकारों का उत्साह, सजी सजाई पारम्परिक बेलगाड़ियों में अथितियों के आगमन से लगने लगा था कि जैसे कल के व्यवधान की भरपाई हो जाएगी।

कार्यक्रम ठीक 11 बजे शुरू हुआ और शुरू होते ही विवाद हुआ। इस बार तो कल से भी ज्यादा गंभीर बात थी, जिन्होंने हंडिया से हटा कर मकड़ाई कार्यक्रम कराया था उन्होंने ही कार्यक्रम का बायकॉट कर दिया और उनके साथ ही सत्ताधारी दल के पदाधिकारी भी प्रोग्राम छोड़ कर चले गये।

“फिर से मजा खराब! ये हो क्या रहा है? लोग इसे महज संयोग ही कहेंगे या मेरे जैसा सोचने वाले कितने होंगे जो जान गये हैं कि नर्मदा की अवहेलना का नतीजा है यह सब। ज़िन्दा माँ अपना करतब दिखा रही थी पर अफसोस कोई समझ नहीं पा रहा था।” मैं सोचते सोचते भावुक हो गया।

जैसे तैसे 15 आयी। हंडिया के नर्मदा तट पर कार्यक्रम। सुबह के सत्र में रेवा सखी का शानदार सेमिनार हुआ। जिले भर से आयी 500 से अधिक बालिकाओं ने न सिर्फ महिला सुरक्षा के सम्बन्ध में विमर्श किया अपितु मेले का भी आनन्द लिया।

दिन भर कार्यक्रम तो चले पर कोई मंच पर नहीं गया, किसी का स्वागत नहीं, किसी को माला नहीं। लोग प्रस्तुतियों का आनन्द ले रहे थे, खासकर संक्रांति पर स्नान करने आये लोग पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, दोनों ही प्रमुख दलों के लोग, प्रभारी मंत्री और उनकी बैठक में रहे गणमान्य नागरिक सभी कार्यक्रम में शिरकत ही नहीं कर पाए।

जैसे तैसे भुवाणा सम्पन्न हुआ। जिला प्रशासन ने जिस उत्साह से रूप रेखा बनाई थी उस उत्साह के बिना ही तीन दिवसीय उत्सव सिमट गया। यद्यपि स्थानीय लोगों ने मेले का मजा लिया पर जिन्हें क्रेडिट चाहिए थी, जो जगह बदलने के किरदार थे वे एक नहीं आ पाए। अब ये माँ की मर्जी नहीं तो और क्या थी।

@EBOOKSIND



## सिंगाजी

नर्मदा जयंती

1 फरवरी 2020

“अब मोहे भा भरोष हनुमंता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता।।”

संत सिंगाजी के समाधि पर आज जब मैं पहुंचा तो एक बार फिर यह चौपाई सही साबित हो रही थी। जब से माँ नर्मदा के बारे में लिखना शुरू किया तब से लगातार संत जनों का आशीष मिल रहा था। संत गौरीशंकर, दादाजी धुनिवाले, राम जी बाबा, हंडियस भडंग, भृगु ऋषि और अब सिंगाजी। इस एक, सवा साल में अनेक चमत्कारी संतों को निकट अनुभव किया है। अब ये हरि कृपा ही होगी जो हनुमानजी ने संभव की।

सच कहूँ तो सिंगाजी का नाम भी नहीं सुना था हरदा आने से पहले। पर जब यहाँ आया तो शायद ही कोई दिन गया हो जब इनके बारे में सुना या पढ़ा न हो। कई बार प्लान बनाया उनके स्थान पर जाने का पर मौका छह महीने बाद आज मिला नर्मदा जयंती के दिन।

खिरकिया काम था, जिसे निपटाया और महेंद्र को लेकर निकल गया सिंगाजी मन्दिर के लिए। खिरकिया से खंडवा मार्ग पर 30 किमी चलने के बाद दायें रास्ता मुड़ा जो छनेरा होते हुए बीड जाता था। महेंद्र ने उसी रस्ते पर गाड़ी मुड़वा ली। 16 किमी चलने के बाद बीड से एक दम पहले सिंगाजी की समाधि मन्दिर के लिए दाहिने रास्ता मुड़ गया।

मन्दिर स्थल पर पहुंचा तो खूबसूरती ने दिन में ही आंखे चौंधिया दीं। चारों तरफ समुद्र सा पानी जो नर्मदा पर आगे बने इंद्रा सागर बांध के कारण बेक वाटर बड़ जाने से था। उसी सागर में अंदर तक एक लम्बा पुल और पुल के दुसरे सिरे पर गोल ऊंचाई में बना सिंगाजी का मन्दिर जो दूर से ही दिखता था। महेंद्र ने पहले ही बता दिया था की बीच पानी में से रास्ता जाता है और जब पानी बढ़ जाय तो पुल से टकरा कर बहता है और ऐसे में चारों ओर जल विप्लावन देख कमजोर हृदय के लोग तो अंदर जाने से मना कर देते हैं या जायेंगे तो रास्ते भर सिंगाजी को सुमिरते जाते हैं।

उस पक्के पुल पर गाड़ी दौड़ते हम मन्दिर पहुंचे। शानदार परिसर, चारों ओर हरियाली और पेवर्स से बिछा मैदान और बीचों बीच बना मन्दिर। गोलाकार मन्दिर तकरीबन 12 फुट ऊंचाई पर बना था। ऊपर पहुंचे, आज नर्मदा जयंती के कारण भीड़ थी। मन्दिर में संत सिंगाजी के चरण चिन्ह जिन्हें लोग श्रद्धा से प्रणाम कर रहे थे। गोल मन्दिर का परिक्रमा पथ भी गोल था जिस पर चल कर चारों ओर हिलोरे लेते नर्मदा समुद्र को देखा जा सकता था।

दर्शन करने के बाद नीचे आये। महेंद्र बगल में बने लम्बे वरांडा नुमा दूसरे मन्दिर में ले गये। इसमें सिंगाजी के परिवार के लोगों की चरण चिन्ह थे, जिन्हें लोग झुक कर नमन कर रहे थे। पूरा परिवार था वहां, पर ये मुझे ज्यादा समझ नहीं आया। संभव है की वे सभी संतत्व तक पहुंच गये हों पर केवल सिंगाजी के रिश्तेदार हो जाने भर से काम नहीं चलने वाला था। क्योंकि ये मामला ही अलग है। भले ही सिंगाजी गृहस्थ संत रहे हों, घर बार छोड़ कर संत बने हों पर इससे परिवार के सदस्यों का कोई लेना देना नहीं। ये तो सिंगाजी की एकला चलो यात्रा थी और यह एकला चलो यात्रा अकेले में भी की जा सकती है और भीड़ में भी। इसलिए सिंगाजी के आधार पर उनके परिवार पूज्य नहीं हो सकते क्योंकि संत और भगवान जब संतत्व या इश्वरत्व तक पहुंचते हैं तो नितांत अकेले होते हैं।

इसलिए राम के पुत्र पूज्य नहीं हैं, कृष्ण के पुत्र पूज्य नहीं, बुद्ध के पुत्र कोई नहीं जनता, महवीर की पुत्री के बारे में किसी ने नहीं सुना। संत बनना, ईश्वर बनना तो योगियों के बूते की बात है। चाहे सांख्य योग को अपना कर ईश्वर बन जाना हो, जिसमें ईश्वर के साथ एकाकार होना है One with father होना है, या कर्म योगी बन कर संत हो जाना हो, जिसमें

सारे कर्म इष्ट के निमित्त किये जाते हैं। और ये दोनों तरह के योग अवचेतन मष्तिष्क के ऊपर खेल जाने से प्राप्त होते हैं। जिसने अपने अवचेतन मष्तिष्क पर भरपूर काम कर लिया वो नितान्त अकेला होकर सारी दुनिया का हो जाता है। उसका अपना परिवार, अपने रिश्ते सब छूट जाते हैं और सारे विश्व से उसके तार जुड़ जाते हैं।

गीता में कहा गया है कि जिसने अपने अंतःकरण को वश में कर लिया वह अपने ज्ञान के प्रकाश से सच्चिदानंदघन परमात्मा को प्रकाशित कर लेता है। यानि आत्मा का परमात्मा से योग, यानि अवचेतन मष्तिष्क से यूनिवर्सल चेतन मष्तिष्क का योग, ये संत और ऐसे ईश्वर होने का यही रहस्य है। और इसीलिए इनका कोई परिवार नहीं, कोई पुत्र, पुत्री नहीं और यदि हैं, तो हम सब हैं।

महेंद्र के साथ टहलते हुए विशाल नर्मदा के बेक वाटर जोन में चले गये। नीचे तक पक्का घाट बना था जैसा नर्मदा पर कई जगह देखा है। सीढियां उतर कर नर्मदा का आचमन करने की इच्छा हुई पर पानी सीढियों पर इतने वेग से टकरा रहा था की बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटा कर अंजुली में पानी ले पाया।

आचमन कर ऊपर आये तो इस बार मन्दिर पर भीड़ नहीं दिखी। फिर से मन हो आया जाने का। ऊपर जाकर सिंगाजी के चरण चिन्हों में शीश झुकाया। इस बार पुजारीजी प्री दिखे तो पूछ लिया। हंसमुख स्वभाव के पुजारी, उत्साह से बताने लगे।

“पुराना असली मन्दिर तो नीचे है। बांध बनने से डूबने लगा था तब यहीं ऊपर बनवा दिया गया”

“अच्छा नीचे जो कुआँ जैसा है। वही?”

“हाँ वहाँ बाबाजी के चरण थे। जब बांध का काम शुरू हुआ, तो यहाँ से हटाने की पूरी योजना थी। उस समय के मुख्यमंत्री, राजा साहब यहाँ आये। तय किया की मन्दिर यहाँ से हटा कर दूर शिफ्ट कर दिया जाय। जब जाने लगे तो हेलीकॉप्टर नहीं उड़ा। लौट कर आये बाबाजी से क्षमा मांगी। यहीं, इसी स्थान पर लिफ्ट कर मन्दिर और अंदर तक आने के लिए पुल बनवाने की घोषणा की तब कहीं जाकर उनका उडन खटोला उड़ा।”

“यहाँ चरण चिन्ह होने का क्या मतलब?”

“यहीं बाबा ने जीवित समाधि ली थी”

“कब की बात है?”

“संवत् 1616”

“आप क्या यहीं मन्दिर पर रहते हैं”

“हाँ बाबा की सेवा में, जितना बनता है, करते हैं” वे बोले।

“रहते कहाँ हैं?”

“पास में गाँव है”

“क्या नाम है आपका?”

“चिंता राम” उनका जवाब था।

“बहुत खूब, जिसका नाम ही चिंता राम उसे अपनी सेवा में लेकर चिंता मुक्त कर दिया। संतो के खेल भी निराले हैं” सोचता हुआ मैं नीचे उतर आया।

परिसर में बने हनुमानजी के दर्शन कर बाहर निकले तो एक दुकान पर स्थानीय सज्जन गणेश गंगराडे, प्रेम सिंह जी मिले। बातों बातों में सिंगाजी के अनेक प्रचलित चमत्कार बताने लगे।

“आज नर्मदा जयंती है इसलिए इतनी भीड़ है?” मैंने चर्चा चलाई।

“भीड़ तो कभी कम कभी ज्यादा होवे पर शरद पूर्णिमा को बहुत पब्लिक आती है एक लाख तक अकड़ा पहुंच जाता है”

“शरद पूर्णिमा को क्यों?”

“मेला भरता है उस दिन। झाबुआ राजा का निशान चढ़ता है” गणेश गंगराडे बोले।

“झाबुआ राजा का निशान?”

“झाबुआ राजा को कोई संतान नहीं थी। दादाजी ने उन्हें सन्तान दी तबसे हर साल शरद पूर्णिमा को झाबुआ से उनका निशान आता है तभी मेला शुरू होता है” प्रेमसिंह बोले।

“इतनी दूर से निशान?”

“सिंगाजी महाराज के चमत्कार ही ऐसे हैं की लोग न जाने कहाँ कहाँ से आते हैं।

गणेश श्रद्धा से मन्दिर की ओर हाथ जोड़ बोले।

“अजब नर्मदा, गजब सन्यासी” मैंने मन ही मन कहा और वहां से विदा ली।

संत सिंगाजी के स्थान पर आने का शानदार अनुभव रहा। लौटने लगे तो महेंद्र बोले।

“सर हनुमंतिया पास में है, चलें?”

“चलो” मैंने सहमती दी और गाड़ी हनुमंतिया के लिए मुड़ गयी। 14 किमी दूर था वहां से। हनुमंतिया का बहुत नाम सुना था। टूरिज्म डेस्टिनेशन के रूप में। इस बार बीड़ होते हुए मुंडी थर्मल प्लांट के पास से गुजरते हुए हाल ही हनुमंतिया पहुंच गये।

हनुमंतिया! नर्मदा किनारे के जितने भी सुंदर स्थान है उनमें हनुमंतिया का नाम है। शानदार जल सागर, रिसोर्ट, कॉटेज के अलावा चूँकि जल महोत्सव चल रहा था तो पारम्परिक बेल गाड़ियाँ, ऊँट और अनेक स्थानीय सामग्री के अलावा वाटर स्पोर्ट्स, हॉट एयर बेलून, हाई जम्प और न जाने क्या क्या था। कहना होगा की सुकून पाने के लिए वादियों और पर्वतों के बीच टापू जैसा बसे हनुमंतिया की छटा ही निराली है। हनुमंतिया को देख कर लगता है की ढंग से मार्केटिंग हो जाय तो यह स्थान भी देश विदेश में नाम कर सकता है। जल महोत्सव के कारण अच्छी खासी भीड़ थी और संतोष की बात यह की जहाँ नर्मदा किनारे पारम्परिक वेशभूषा में ही लोग दिखेंगे वहीं हनुमंतिया आधुनिकता की झलक दिखा रहा था।

हनुमंतिया से चले तो रास्ते भर एक ही बात बार बार आ रही थी। पूरे नर्मदा खंड में नर्मदा का जलवा बरकरार है। पुरानी तो नर्मदा, नई तो नर्मदा। रास्तों पे, गाँव में, भवनों पर सभी ओर नर्मदा। कहीं नर्मदा परिक्रमा पथ दर्शाते बोर्ड, कहीं परिक्रमा वासियों को रुकने की धर्मशालाएं, कहीं खाने के लंगर, कहीं नर्मदा मन्दिर तो कहीं कंधे पर फोम की चटाई बांधे नर्मदा परिक्रमा वासी, सब ओर हर हर नर्मदे।



## बागदी संगम

“नर्मदा किनारों पर उत्तरतट में नेमावर से लेकर बागदी संगम की भूमि बहुत पवित्र है। यहाँ किया जप तप दस गुना ज्यादा लाभ देता है” निरंजनानंद स्वामी के बोल थे, जब मंडलेश्वर में कुछ माह पूर्व उनसे मिला था। सोचा आज माघी पूर्णिमा के दिन से अच्छा अवसर क्या मिलेगा वहाँ जाने का।

नेमावर से ऊतर तट पर नर्मदा के, बहाव के साथ साथ 16 किमी चलने पर बागदी संगम था। रास्ते भर एक ओर नर्मदा और दूसरी ओर गेहूँ से लहलहाते हरे खेत, साफ सुथरे गाँव। कुछ पक्का कुछ कच्चा रास्ता था इसलिए आधा घंटा से ज्यादा ही लगा पहुँचने में।

संगम स्थल पर पहुँचते ही तबियत खुश हो गयी। खूबसूरत स्थान, पक्का घाट, आश्रम, गौशाला, मन्दिर, विशाल पीपल वृक्ष यानि सब कुछ था वहाँ। साफ सुथरा पानी, चौड़ा पाट, बहती नावें, वाह! नर्मदा। नीचे उतर आचमन लिया, सीढ़ीयां चढ़ ऊपर आया। सामने ही हनुमानजी विराजे थे एक बड़े चबूतरे पर, पीपल वृक्ष घेर कर पूरी छाया दे रहा था उन्हें। पास ही बने आश्रम में तीन चार लोग दिखे जिनमें एक महंत और कुछ उनके चेले जैसे दिख रहे थे।

संगम स्थल थोड़ा आगे पश्चिम की ओर था। गाड़ी को वहीं छोड़ पैदल ही चल दिया। ड्राईवर सुभाष भी चलने को उत्साही था सो उसे भी साथ ले लिया। आगे शिव जी का मन्दिर और थोड़ा चले तो काल भैरव की ऊँची सुंदर प्रतिमा एक बड़े टीन शेड में स्थापित थी। आश्रम प्रांगण के बाद खेत था, जिसमें होकर संगम स्थल तक जाना था।



आधा किमी चलने के बाद आया संगम। उत्तर पूर्व दिशा से आती बागदी नर्मदा में मिल रही थी। इतना पास से, इतना जीवंत संगम आज पहली बार देख रहा था। नर्मदा के हरे पानी में बागदी कुछ साँवलापन लिए समा रही थी। जैसे सांवली सलोनी कन्या सकुचा कर, शरमाकर अपनी माँ के आंचल में छिप रही हो। इतना शांत था संगम, कोई आवाज नहीं, कोई हलचल नहीं। बागदी का अस्तित्व समाप्त करने का न नर्मदा को कोई घमंड और न ही बागदी को खतम हो जाने का कोई मलाल। magnanimity in victory, grace in defeat का इससे अच्छा उदाहरण और क्या होगा।

बहुत देर संगम को निहारता रहा। आगे नर्मदा इटलाती, सूरज की किरणों में चांदी सा चमकती चली जा रही थी। दूर कुछ नाव बह रही थीं, लग रहा था कि जरूर ऐसी सुन्दरता में मांझी गीत गा रहे होंगे। “मांझी रे अपना किनारा नदिया की धारा है” वापस आश्रम में पहुंचे तो महंत जी पास आ गये। आश्रम स्थल के बारे में बताने लगे।

“हमारे अखाड़े द्वारा विकसित किया जा रहा है”

“कौनसा अखाड़ा है आपका?”

“पंच अग्नि अखाड़ा, पूरे भारत में 19 जगह पर है।”

“आप यहाँ कैसे??”

“मुझे गुजरात से यहाँ अखाड़े ने भेजा है, व्यवस्था देख रहा हूँ। परिक्रमावासियों को सदावत, यज्ञ, भंडारा सभी चलता रहता है।”

“बड़ा सुंदर स्थान है, क्या महत्व है इस जगह का?”

“इस का पुराना नाम तो बागेश्वरी धाम है, टेकरी के नीचे बागेश्वरी माता का मन्दिर था, ऊपर काल भैरव अभी भी विराजे हैं जो आपने देखे होंगे। यहाँ के टेकरी पर पहले एक महात्मा रहते थे जिन्हें भैरव जी ने दर्शन दिए थे। बहुत सिद्ध स्थान है, कहते हैं यहाँ ब्रह्मा जी ने तपस्या की थी। इसका नाम तो ब्रह्म पुराण, नर्मदा पुराण में भी है” महंत जी ने रहस्य खोला।

“आपका नाम महाराज जी?”

“भास्करा नन्द। मैंने बी फार्म किया है। कुछ साल नौकरी की फिर सन्यास ले लिया”

“आपसे मिलकर अच्छा लगा। आते रहेंगे, अब इजाजत दें” मैंने कहा और वहां से चल दिया।

लौटते में नेमावर आया तो घाट पर जाने का मन हो आया। सिद्ध नाथ के दर्शन किये बाहर आकर सीढियों पर बैठ नर्मदा माई को देखने लगा। पास में भगवत पुराण की कथा कोई ज्ञानी पंडित कह रहे थे बड़ी भीड़ थी उन्हें सुनने। प्रसंग चल रहा था कि भरी सभा में द्रौपदी की साड़ी दुस्सासन खींच रहा है और सब तरह से प्रयास कर, परिश्रम कर जब थक हार गयी द्रौपदी तो सारी आशाएं जाती रहीं बस, एक ही आशा बची। चिल्लाना बंद, कोसना बंद, हाथ पैर मारना बंद। आंखे बंद कर शांत मन से बुदबुदाने लगी।

*“श्री कृष्ण शरणम्, श्री कृष्ण शरणम्, श्री कृष्ण शरणम्।”*

तत्क्षण कृष्ण उपस्थित हो गये उस भरी सभा में, दौड़ कर द्रौपदी को अपना पीताम्बर उड़ा दिया। द्रौपदी चरणों में गिर गयी। उठाया, हृदय से लगाया और बोले कि जब मुझ पर विस्वास है तो निश्चिन्त रहो। जो तुम्हारे हाथ में है वह करो और जब हाथ से बात जाती दिखे तो मेरी शरण पकड़ो, मैं सदैव सहायता को खड़ा हूँ।

पंडित जी ने बड़ी सटीक बात कही थी। बात विस्वास की थी। मुझे लगता है द्रौपदी ने किया और उनके अवचेतन मष्तिष्क ने कृष्ण तक अपना संदेश पहुंचाया जो आसन्न संकट को भांप उसी समय हस्तिनापुर पहुंचे ही थे। कृष्ण का अवचेतन मष्तिष्क बहुत शक्तिशाली था और जैसा ऐसे लोगों के साथ होता है, इनका औरा 1-2 कोस दूर से भी अपना काम करने लगता है, जिसे द्रौपदी ने पकड़ लिया और टेर लगा दी। अब सवाल ये है कि युधिष्ठिर और उनके भाइयों ने क्यों नहीं जाना की कृष्ण आसपास ही हैं जबकि द्रौपदी ने जान लिया था यदि पांडव भी जान जाते और कृष्ण को मदद के लिए पुकारते तो वे अवश्य पहुंचते। जुए में लगातार अपना सब कुछ हारते जाने के बाद भी पांडव ये नहीं समझ पा रहे थे कि बात उनके हाथ से जा रही है और कृष्ण ही इसे संभाल सकते हैं। पर बात तो विस्वास की है। हर किसी को नहीं होता और भगवान पर तो बिलकुल ही नहीं। अपनी ही उलटी सीधी हरकतें करता रहेगा पर भगवान को टेर नहीं देगा। सोचते

सोचते मैं माँ की ओर देखने लगा, मुझे तुलसी का लिखा वह प्रसंग याद हो आया जब भरत जी राम से मिलने जाते हैं और प्रयागराज पहुँचते हैं। गंगा का सौन्दर्य, प्रयाग का वह माहौल उनमें नशा भरने लगता है और वे मोक्ष तक को भूल जाते हैं। उसी प्रसंग को कुछ बदल कर तुलसी बाबा से क्षमा मांगते हुए मैं गुनगुनाने लगा।

“धर्म न अर्थ न काम रुचि, गति न चहँ निर्वान।”  
“जन्म जन्म रुचि राम पद और तेरे तट महान।।”



@EBOOKSIND

## वेलेंटाइन

14 फरवरी valentine day। माँ नर्मदा के प्रेमियों के लिए उससे बड़ कर कौन हो सकता है valentine। प्रेम के इस पावन दिन लछोरा जाने का अवसर मिला। छीपानेर और हंडिया के बीच ठीक नर्मदा के दक्षिण तट पर बसा गाँव। गाँव में केंद्र पर पहुंचा तो कार्यकर्ता ने बातों बातों में बताया की होशंगाबाद से हरदा तक कोई घाट इतना सुंदर नहीं है जितना हमारा लछोरा। उसकी बात सुनकर जिज्ञासा हुई और फौरन घाट की ओर चल दिया।

अभी गाँव खतम भी नहीं हुआ था और घाट आ गया। क्या मन मोहक जगह थी। उपर समतल मैदान, बड़े पेड़ों की छाया, कहीं कहीं बने मन्दिर ओर सामने बहती नर्मदा। नीचे तक पक्की सीढ़ियां, रेलिंग और प्लेटफार्म जो लगभग 300 फुट नीचे तक चले गये थे। बहता, साफ पानी और पक्के घाट, उपर से लेकर नीचे तक साफ सफाई, जो गाँव में बने घाटों पर उतनी नहीं दिखती जितनी यहाँ थी। सार्वजनिक रूप से कटाव और गाँव के वेस्ट वाटर को नर्मदा में जाने से रोकने हेतु बाँध दिया था सीढ़ियों के बगल वाला भूमि का टुकड़ा। गाँव के जानवर भी आसानी से नर्मदा तक न पहुच पायें उसे गंदा करने, यह व्यवस्था भी गाँव वालों ने की थी।

नर्मदा की फिफ्र जो करेगा नर्मदा उसकी फिफ्र करेगी और शानदार उपलब्धि देगी जैसे यहाँ दी थी। ठीक सामने नर्मदा हल्का सा झरना रूप ले लेती है और वहां कल कल करता गिरता पानी जो संगीत निकालता है, लगता है गाना गा रहा है।

पूरा गाँव ही जैसे ठान चुका था की नर्मदा में गंदगी नहीं जाने देना है इसीलिए चारों ओर सफाई थी। 'म्हारी नर्मदा' की फीलिंग पूरे गाँव में स्पष्ट दिखती है। अब समझ आ रहा था की कितने गर्व से कार्यकर्ता ने बताया था की हमारे घाट जैसा घाट होशंगाबाद से लेकर हरदा तक नहीं है क्योंकि इस गवोक्ति में सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर की बात नहीं थी, उसके संभाल का भी जिम्मा था।

हमें तो नर्मदा से बहुत कुछ चाहिए पर नर्मदा को हमसे क्या चाहिए और हम कैसे कर सकते हैं। यह पूरे नर्मदा तट के गांवों को लछोरा से सीखना चाहिए। लछोरा ने सही मायने में नर्मदा को अपना valentine माना है और वे उससे आंख मिलाकर कहने की हिम्मत रखते हैं happy valentine day।

यह कोई बड़ा काम नहीं है यहाँ खड़े हो कर देखने से तो यही लगता है। बस इतना ही तो किया है की कहीं भी गाँव का गंदा पानी नर्मदा में न जाए, न सिर्फ घाट अपितु ऊपरी भाग भी साफ रहे, मनुष्यों के साथ ही पशुओं के द्वारा भी गंदगी न की जा सके। रैलिंग लगायें, बागड़ लगायें, पहरेदार लगायें जो हो सके वो करें फिर नर्मदा की चाल देख लें।

चिचोट कुटी के बारे में अखबार में पढ़ा था, मुझे लग रहा था की पास में ही होना चाहिए। वहां खड़े सज्जन से पूछा तो उन्होंने पूर्व की ओर छीपानेर के पुल से पहले हाथ का इशारा कर बता दिया और यह भी कि कैसे जाना है।

छीपानेर में घुसने से पहले ही बाएं तरफ द्वार बना था जहाँ से चिचोट ३ किमी था। wbm रोड पर गाड़ी दौड़ पड़ी, रास्ते में खेतों के बीच बड़े क्षेत्रफल में कंस्ट्रक्शन चल रहा था, अनेक कुटीर बनती दिख रही थीं, बाहर बोर्ड लगा था 'वैदिक विद्या पीठम'।

"अरे ये तो अद्भुत लग रहा है लौट कर जरूर जाऊंगा" मन में सोच लिया।

थोड़ा ही आगे चले कि दाहिनी ओर एक आश्रम नुमा जगह दिखी। बाहर गेट पर लिखा था श्री बजरंगदास कुटी चिचोट। अंदर गौशाला दिख रही थी और एक मकान। चालक विवेक को भेजा कन्फर्म करने। विवेक ने आकर बताया की यही है चिचोट कुटी और यह भी की अंदर भी फैली है।

अंदर गये, दुसरे गेट को जैसे ही पार किया, सामने बड़ा और भव्य परिसर था, नीचे नर्मदा बह रही थी और उसके सामान्तर आश्रम फैला था कई एकड़ में। पास ही मन्दिर बना था, दर्शन की लालसा से गया तो गेट पर ही पंडित जी मिल गये।

“समय हो जाने से मन्दिर बंद हो गया है। शिव परिवार के दर्शन करलें” उन्होंने कहा तो सामने ही शिवलिंग और अन्य प्रतिमाओं के दर्शन किये।

“किसका मन्दिर है अंदर”

“हनुमानजी का 12 बजे भोग के बंद हो जाता है, अब 4 बजे खुलेगा” कहते हुए वे बाहर निकले।

“लेट हो गया। अगली बार समय पर आऊंगा” मैंने सफाई दी।

“अगली बार की कौन जानता है, अभी की बात हो जाय, वही काफी है”

“आप क्या यहीं...?” मैंने उनसे जानना चाहा।

“मैं कहीं का नहीं! आवारा है। सारा संसार ही आवारा है, मैं कुछ हूँ कहता है, देखो तो कुछ नहीं” उन्होंने पहेलियाँ बुझाई।

“आप कब से हैं यहाँ”

“कौन जानता है, अनंत काल से” वे बोले तो मैं चौंका। उनकी बातों से मुझे वे कुछ सनकी लग रहे थे। बाहर लॉन में कुछ लोग कुर्सियों पर बैठे थे मुझे वे बहरी व्यक्ति लगे तो मैंने पूछा।

“बाहर के लोग हैं यहाँ”

“अंदर के हैं, सभी। बाहर का कौन है, सभी भारत के हैं। आपको कोई बाहर का दिख रहा है?”

अब मैं जल्द वहां से चलना चाह रहा था। उनसे कह कर चलने लगा तो वे बोले।

“लाइब्रेरी देख सकते हैं। यद्यपि वह भी अभी बंद हो गयी है पर आप चले जायें” उन्होंने कहा तो पास ही बड़े हाल में बनी लाइब्रेरी देखने चला गया साथ में विवेक भी था। अमूमन मैं जब किसी से मिलता हूँ तो विवेक दूर ही रहता है पर उसका होना आज अच्छा लग रहा था। लाइब्रेरी में अंदर गये, अनेक तरह का साहित्य वेद, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, गणित सभी था

वहां और इतनी दूर समाचार पत्र भी। कोने में एक प्रतिमा बनी थी जिसका विवरण बाबा बजरंगदास के रूप में था जो इस आश्रम के संस्थापक थे।

धूम कर बाहर निकला तो पंडित जी फिर मिल गये, इस बार कुर्सी पर बैठे थे।

“काफी अच्छा है। सभी भाषा का लग रहा है साहित्य” मैंने यूँ ही पूछ लिया

“सभी का है संस्कृत, हिंदी इंग्लिश, तेलुगु।” उन्होंने कहा, तभी आश्रम में परिक्रमा वासी आ गये। पंडितजी के पास आश्रम के एक सहायक द्वारा उनके पास लाया गया, तब पता चला की वे यहाँ के मुख्य व्यवस्थापक स्वामी जी हैं।

“आप ही सब व्यवस्था देखते हैं”

“कौन देख पाया है जो मैं देखूंगा”

“ये हर सीधी बात का टेड़ा जवाब क्यों देते हैं।” मैं अपने आप से बोला, बात को जल्द खतम कर चलने के उद्देश्य से मैंने सरसरी प्रश्न पूछ लिया।

“रास्ते में वैदिक विद्यालय दिखा था?”

“आश्रम के ही द्वारा संचालित है। ये पुस्तकालय भी वहीं शिफ्ट कर रहे हैं।”

“बहुत बड़ा बन रहा है?”

“भवन से कुछ नहीं होता, वो तो कोई भी बना लेता है। पठन पाठन अच्छा होना चाहिए। संस्कृत भारतीयता का मूल आधार है उसके बिना हम न भारतीय संस्कृति को ठीक से जान पाएंगे, न वेद, न साहित्य, न ही ज्योतिष और न ही विज्ञान। इसीलिए संस्कृत और वेद की शिक्षा का प्रयास किया है” स्वामी जी बोले तो मुझे अब वो प्रभावित करने लगे थे। मैं उनके पास बैठ गया।

“कितने बच्चे हैं अभी?”

“अभी तो 40 हैं। 100 का लक्ष्य है”

“विद्यार्थी पूरे नहीं मिले?”

“अच्छे विद्यार्थी और अच्छे टीचर दोनों ही संस्थान की जान होते हैं। अभी तो 4 ही वर्ष हुए हैं। उम्मीद के मुताबिक जरूर संचालन होगा। हम

चाहते हैं की लोग आये आयें और बच्चों को हमारी संस्कृति और धर्म की शिक्षा में मदद करें। एक व्यक्ति एक बच्चे की शिक्षा का जिम्मा ले।” स्वामी बोले।

“पर महाराज जी धर्म??”

“हिन्दू धर्म किसी से अपनी श्रेष्ठता साबित नहीं करता। हिन्दू धर्म कहता है की सभी पन्थ सही है, चाहे जिसे अपना लो, अंत में सब सिरे पर मिल जाते हैं। विविधता में एकता का समर्थक है हमारा धर्म और यही इसकी अच्छाई है।”

“ठीक कहा आपने। अब चलना चाहूँगा” मैंने उनसे इजाजत मांगी।

“जरूर, जाते जाते विद्यापीठ होते जाइएगा। आपको अच्छा लगेगा”

“अवश्य महाराज जी” मैंने कहा और उनसे विदा ली।

आश्रम के लम्बे चौड़े प्रांगण से आगे जाकर नर्मदा के किनारे खड़ा हुआ। करार से सुंदर दिख रही थीं माई। उस पार छीपानेर का बहुमंजिला भवन दिख रहा था जहाँ पिछली साल ही गया था। लौटने लगा तो गुजरात के परिक्रमा पर निकले पांच सज्जन मिले। बातों बातों में बताया की नवम्बर से मीठी तलाई से उठाई थी परिक्रमा 3 महीने से अधिक हो गये हैं। बड़ा आनन्द दायक सफर कट रहा है। एक सज्जन ने बताया की गिरनार के पास दत्तात्रेय की पांच दिन की परिक्रमा करते समय कोई साधू मिले थे उन्होंने नर्मदा परिक्रमा की प्रेरणा दी और निकल पड़े।

कुटी से चले तो दो किमी दूर भव्य परिसर मिला जिसकी विशाल बाउंड्री के बाहर बोर्ड लगा था, वैदिक विद्या पीठम्। गाड़ी अंदर घुमा थी। अनेक कुटीर का निर्माण एक साथ चल रहा था। एक पूरी कम्पलीट थी जिसमें फिलहाल विद्यालय संचालित था। संचालक रामवीर व्यास मिले। पूरा परिसर घुमाया। बताने लगे की जैसी विंग एक बनी है वैसी दस निर्माणाधीन हैं, आगे एक बड़ा ओडिटोरियम बना रहे थे। हॉस्टल निर्माण की योजना भी है। तीन साल में पूरा संस्थान बन कर तैयार हो जाएगा।

“कितनी जमीन पर बना रहे हैं?”

“30 एकर भूमि है”

“इतनी जमीन कैसे मिल गयी?”



“सब स्वामी जी ने करायी है”

“कौन स्वामी जी?”

“स्वामी नित्य चैतन्य दास जी। जिनसे आप आश्रम में मिल कर आ रहे हैं”

“उनके द्वारा इतनी बड़ी व्यवस्था। दिखने में तो साधारण थे”

“पर काम असाधारण हैं। उन्होंने आश्रम की भूमि को 140 एकर तक कर दिया है। बाबा बजरंगदास की सेवा में केरल से 23 वर्ष की उम्र में बैंक की नौकरी छोड़ कर आये थे। 11 साल बाबा की सेवा की इसके बाद अपने गुरु स्वामी तिलक के कहने पर आश्रम की व्यवस्था संभाली और उनके बाद आश्रम के काम को इस स्तर तक ले आये।”

“मैं बहुत देर उनके पास बैठा था, अपनी पहचान पूरी तरह से dissolve कर ली है, नाम पूछा तब भी नहीं बताया।”

“बस अपने काम में लगे रहते हैं। बहुत कुशल योजनाकार हैं, इस संस्थान को विश्व स्तर की बनाना चाहते हैं। तीन साल में 100 करोड़ का प्लान है। विद्याभारती जैसी संस्थाएं भी मदद कर रही हैं”

“पढ़ाई स्तरीय होनी चाहिए व्यास जी, वही सबसे जरूरी है”

“उसी पर सबसे अधिक ध्यान है। हम सिर्फ संस्कृत ही नहीं अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, हिंदी, कंप्यूटर, योग सभी सिखाते हैं। हमारे बच्चे जितने अच्छे संस्कृत बोलते हैं उतनी ही अच्छी अंग्रेजी भी” व्यास जी की बोली में जबरदस्त आत्मविश्वास था।

मैं वहां से निकला और हरदा के लिए वापस चला। मुझे व्यास जी की यह बात, कि संस्था संस्कृत के साथ ही अंग्रेजी भी सिखा रहे हैं, अच्छी लगी और शायद सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण। हुआ यह है की हमेशा ही संस्कृत का अध्ययन करने वाले अंग्रेजी नहीं सीखते और बाद में अंग्रेजी को criticize करते हैं पर हमेशा इन्फिरियरिटी कॉम्प्लेक्स में रहते हैं। और इसी कारण संस्कृत के bright स्टेप्स को सामने नहीं ला पाते। यदि संस्कृत की महान उपलब्धि को सबके सामने लाना है तो अंग्रेजी भाषा में पारंगत होना होगा।

नर्मदा की लम्बाई 1312 किमी है और दोनों तट को जोड़ें तो 2624 किमी, यानि ढाई हजार से अधिक और इसके हर किमी में एक तो स्थान

ऐसा मिलेगा की मन कह उठेगा वाह! पानी, पक्षी, पहाड़, पेड़, पेगोडा,  
परमार्थी और हाँ परमात्मा सब है यहाँ।

अब नर्मदा के प्रेमी जायं तो कहाँ जायं अपनी जिंदा माँ को छोड़ कर।  
नर्मदा के मेग्नेट में खो जायेंगे और इसके मेनेरिज्म यही गायेंगे।

*दिल कहे रुक जा रे, रुक जा, यहीं पे कहीं।  
जो बात इस जगह है, कहीं पर नहीं॥*



@EBOOKSIND

## चलते चलते

(चल चला चल 2)

नर्मदा का पर्यटन दो तरह से होता है और दोनों ही अद्भुत हैं। यदि नर्मदा की पैदल परिक्रमा की जाय तो इंच इंच किनारा देखने को मिलता है जहाँ दैवीय अनुभूति तो होती ही है, प्राकृतिक छटा, जो अभी भी अक्षुण्ण है, ऐसी देखने को मिलती है कि पलक झपकाने का मन न हो। पैदल परिक्रमा 3 माह में भी हो जाती है और 3 साल 3 माह में भी। अब जो जैसा रम जाय यहाँ।

दूसरा तरीका है वाहन से नर्मदा परिक्रमा के दौरान उन स्थानों को देखने का जो सड़क से 20-30 कि.मी. के दायरों में हैं और वाहन से वहाँ जाया जा सकता है। ये भी अद्भुत हैं पर पहले से जानकारी आवश्यक है अन्यथा आगे जाने पर ही मालूम पड़ता है कि पीछे खूबसूरत जगह छोड़ आये, जैसे होशंगाबाद से निकलते समय पचमढ़ी, मढ़ई तो ध्यान रहता है पर अगर बाबई से बागरा तवा की ओर मुड़े और वहाँ हुशंग शाह की दरगाह पर जा सके जहाँ सुकून मिलता है साथ ही नीचे बहती तवा का दृश्य मन को मोह लेता है। पास ही बने तवा डेम तक अगर गाड़ी घूमा दी तो लगेगा कि बहुत कुछ मिस होने से छूट गया।

नर्मदा जब होशंगाबाद जिला छोड़ हरदा में घुसती हैं तो यहाँ भी पेरीफेरी में अनेक लुभावने स्थल हैं। गंगेश्वरी घाट, छीपानेर, श्री बजरंग कुटी चिचोट और वहीं पर 30 एकर के विशाल परिसर में बन रहा भव्य वैदिक विद्या पीठम जो संस्कृत और संस्कृति सिखाने का एक उत्कृष्ट स्थान होगा आने वाले समय में। हंडिया से पहले ही शिव करुणा धाम का निर्माण चल

रहा है। बहुत कुछ बन गया है और यह भी आने वाले समय में शानदार पर्यटन और धार्मिक स्थल की संभावना लिए है।

नर्मदा निरंतर चलने का ही नहीं आराम का भी नाम है। तभी तो न जाने कितने ऋषि, मुनि, महापुरुष नर्मदा किनारे आये तो वापस नहीं गये। यहीं सो गए सदा के लिए। हंडिया में ऐसे ही एक नामी शख्स कभी यहाँ से गुजरे और फिर यहीं गुजर गये, आगे नहीं गये, अल्लाह को प्यारे हो गये। नाम था उनका मुल्ला दो प्याजा, अकबर के नवरत्नों में से एक। हंडिया कितना बड़ा रहा होगा उन दिनों और कितना आर्थिक और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण यह इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि दक्षिण में खानदेश की ओर आते जाते समय हंडिया में रुके मुल्ला दो प्याजा और नर्मदा का किनारा ऐसा भाया कि यही के हो कर रह गये।

मुल्ला दो प्याजा की मजार हंडिया में नर्मदा किनारे बनी है। लोकेशन सुनिए रिद्ध नाथ और नर्मदा मन्दिर के ठीक बीचों बीच। समरसता का और क्या बड़ा उदाहरण होगा। नर्मदा किनारे सब सम्भव है, क्योंकि ये माँ है सबकी, और सब इसे बराबर प्यारे हैं। ताली एक हाथ से नहीं दोनों हाथों से बजती है। यदि माँ ने सब पर अपना स्नेह लुटाया है तो बदले में सबने माँ को भी उतना ही मान दिया है, उतनी ही मुहब्बत दी है।

हंडिया के उस पार नेमावर है। नेमावर हंडिया से भी बड़ा और खूबसूरत है जहाँ सिद्धनाथ तो हैं ही, दिगम्बर जैन समुदाय का अतिशय क्षेत्र भी है। हंडिया नेमावर के बीच में नर्मदा का नाभि कुंड है जिसे विधिवत कुंड बना कर ही बीच नदी में दर्शाया गया है।

हंडिया नेमावर के आगे दक्षिण तट की ओर से जाने पर खिरकिया के आगे छनेरा पर नया हरसूद के पास संत सिंगाजी कि समाधि है। सिंगाजी क्षेत्र के माने हुए संत रहे हैं जिनकी मान्यता यहाँ गाँव-गाँव में है। डैम के कारण नर्मदा ने बेक वाटर से यहाँ समुद्र बनाया है जिसके बीचों बीच सिंगाजी की समाधि बेहद खुबसुरत स्थान है। कहते हैं की इंद्रा सागर बांध बनते समय समाधि को विस्थापित करने की कोशिश की गयी थी पर सिंगाजी के प्रभाव से जब टस से मस नहीं कर पाए तो पुरानी समाधि कर ऊपर ही नई बनानी पड़ी। शरद पूर्णिमा पर यहाँ विशाल मेला लगता है जिसमें लाखों श्रद्धालु आते हैं। यहाँ से इन्द्रासागर बांध और हनुमंतिया भी पास है। डैम के बारे में तो

सबने सुना है पर हनुमंतिया हाल के वर्षों में तेजी से पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है। नर्मदा किनारे के जितने भी सुंदर स्थान हैं उनमें हनुमंतिया का नाम है। शानदार जल सागर, रिसोर्ट, कॉटेज के अलावा चूँकि जल महोत्सव भी यहाँ होता है जिसमें वाटर स्पोर्ट्स, पारम्परिक खेल आयोजित होते हैं। कहना होगा की सुकून पाने के लिए वादियों और पर्वतों के बीच टापू जैसा बसे हनुमंतिया की छटा ही निराली है। उत्तर तट से भी सतावासा पुनासा होकर यहाँ पहुंचते हैं। यहाँ कभी पुराने समय में घावरी कुंड हुआ करता था जिसमें नर्मदा झरने के रूप में गिरती थीं पर अब बांध बनने से यह डूब गया है। यहीं पर है धाराजी।

खंडवा सड़क मार्ग से जाने पर मिलने वाले प्रमुख स्थानों में से एक है। दादाजी धूनीवाले की नगरी में उनके स्थान के साथ ही किशोर कुमार की समाधि है। खंडवा से दक्षिण में 50 कि.मी. है बुरहानपुर। यदि समय हो एक दिन का तो बुरहानपुर दर्शनीय है। ताप्ती के किनारे बसा बुरहानपुर मुगल शासन में बेहद महत्वपूर्ण था जिसे खानदेश कहा जाता था। यहाँ ताप्ती किनारे बना सुंदर फोर्ट है, अब्दुल रहीम खानखाना के द्वारा बनवाई जल प्रदाय की तत्समय वैज्ञानिक व्यवस्था है, जिसे कुण्डी कहते हैं।

मुमताज महल यहीं दक्षिण में खत्म हुई थीं और आगरा में दफन करने से पहले उन्हें यहीं दफनाया गया था। मुमताज महल की कब्र भी यहाँ दर्शनीय है। सूरत से आगरा और दिल्ली तक का व्यापार इसी खानदेश के मार्ग से होता था और यहीं सबसे पहले सर टॉमस रो जहाँगीर से मिला था और व्यापार का समझौता किया था। चमत्कारिक रोकडिया हनुमान का मन्दिर भी आकर्षण का केंद्र है बुरहानपुर में।

बुरहानपुर से पहले है असीरगढ़ का किला जो अकबर के समय से ही सामरिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण था। इतिहास के अलावा पौराणिक दृष्टि से भी असीरगढ़ का महत्व है। कहते हैं यहाँ अभी भी अश्वत्थामा पूजा करने आता है। नर्मदा खंड में अदृश्य रहस्यों में एक अश्वत्थामा भी है, जिनकी उपस्थिति शूलपाणि की झाड़ियों में भी कही जाती है। बुरहानपुर और असीरगढ़ को देखते हुए फिर खंडवा लौटना पड़ता है और इस बार खंडवा से उत्तर की ओर चलना होता है ओमकारेश्वर के लिए।

ओमकारेश्वर के बारे में तो जितना कहा जाय उतना कम है। धर्म और प्रकृति ने जैसे यहाँ कोई सौन्दर्य प्रतियोगिता खोल दी हो। डैम बन जाने

से स्थान की सुन्दरता और बढ़ गयी है। यद्यपि संत कमल भारती की समाधि जैसे कुछ महत्वपूर्ण स्थान डूब में आ गये हैं। ओमकारेश्वर के आगे शबरी आश्रम, मोरटक्का। मोरटक्का में नर्मदा पर इन्दौर खंडवा रोड का पुल बना है। पुल के कारण दोनों घाट रमणीक हो गया है। मोरटक्का के बाद सियाराम बाबा का आश्रम भटयान। बाबा के तप की प्रसिद्धि के कारण यह स्थान तीर्थ सा हो गया है आजकल। इसके बाद मंडलेश्वर और फिर महेश्वर।

महेश्वर उतना ही पुराना है जितना पुराना भारत का इतिहास। महिष्मती का इतिहास आज भी रोमांच पैदा करता है। नर्मदा, मन्दिर, शिल्प, शहर सब है यहाँ। महेश्वर के आगे सहस्त्रधारा और फिर खलघाट की ओर।

खलघाट से पहले धामनोद पहुंच दो स्थानों पर जाया जा सकता है। इन्दौर से पहले है जानापाव जो परशुराम की जन्म स्थली है और चम्बल नदी की उद्गम स्थली। ऊँचे पहाड़ पर बना जानापाव खूबसूरती के साथ शांति भी देता है। एक और स्थान है मांडू।

मांडू के लिए भी अतिरिक्त 50 कि.मी. ही चलना होता है पर इसे छोड़कर जाना अन्याय होगा। न जाने कितनी कहनियाँ छिपाए मांडू आज भी बेहद खूबसूरत है। रानी रूपमती और बाज बहादुर के प्रेम के तराने गाता मांडू मुगलों से भी पहले का इतिहास बखान करता है जब हुशंगशाह के द्वारा इसे बसाया गया था। वही हुशंगशाह जो नर्मदा किनारे जाकर होशंगाबाद में पीर बन गये थे।

जहाज महल, रूपमती का महल, किला, हुशंगशाह का मकबरा और न जाने क्या क्या है देखने को यहाँ। कहते हैं मांडू से नर्मदा दिखती थीं और रूपमती का महल इसी तरह से बनवाया गया था कि ऊपर बुर्ज पर बैठ वे 20 कोस दूर बहती नर्मदा को देख सकें।

खलघाट से आगरा मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग निकलता है और नर्मदा के ऊपर ही उसका पुल बना है। दिन रात की आवाजाही से नर्मदा के दोनों ही तट ही यहाँ जीवंत दिखते हैं। यहाँ से यदि दक्षिण तट पकड़ा जाय तो बड़वानी में राजघाट, दत्त मन्दिर और शहर से बाहर रमणीक पहाड़ियों में विश्व प्रसिद्ध बावन गजा है।

बड़वानी से नर्मदा का दक्षिण तट पकड़ कर चलने पर तोरमल हिल स्टेशन है और यहीं से आगे विख्यात शूलपाणि की झाड़ियाँ हैं जो सरदार

सरोवर तक गयी हैं। सरदार सरोवर डेम देश के प्रमुख दर्शनीय स्थानों में से एक है। डेम के बन जाने से प्राचीन शूलपानेश्वर शिव मन्दिर डूब जाने से उसे दक्षिण तट पर ही डेम के आगे विस्थापित किया है। इसी स्थान पर उत्तर तट पर स्टेच्यू ऑफ यूनिटी है। आज का बेहद चर्चित पर्यटन स्थल जो दोनों तटों से एक समान दिखता है।

यदि दक्षिण तट को ही लिया जाय तो आगे नर्मदा जिला मुख्यालय राजपिपला है और राज पीपला से 30 कि.मी. है पोड़चा जहाँ बना है भगवान स्वामी नारायण का मन्दिर। स्वामी नारायण मन्दिर को देखो तो कथा वाचक प्रेम भूषण जी महाराज की बात सच लगती है की ईश्वर के होने का भान न होता तो आदमी मेहनत से कमाई दौलत भगवान के लिए यूँ न लुटाता। क्या भव्यता है, क्या विशालता है, दिन में आंखे चौंधिया जाय ऐसी चमक।

पोड़चा से राजपिपला, गुमान देव, जगड़िया होते हुए अंकलेश्वर। अंकलेश्वर से 15 कि.मी. दूर नर्मदा हैं और उस पार है भरुच। भरुच को अंकलेश्वर से जोड़ने के लिए गोल्डन ब्रिज बना है। पर परिक्रमा वासी जाते हैं अंकलेश्वर में रामकुंड और यहाँ से स्तोद होकर विमलेश्वर और फिर रेवा सागर को पार कर ऊत्तर तट पर मीठी तलाई। मीठी तलाई से दहेज होकर अलिया बेट, भाड़भूत और फिर भरुच।

भरुच नर्मदा के उत्तर तट का बेहद महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ भृगु ऋषि ने गुजरात में नर्मदा को तीर्थ बनाया था। नर्मदा सदैव से आर्य और द्रविड़ों की सीमा रही थी पर यहाँ आर्य द्रविड़ सभ्यताओं के प्रथम मिलन के तार जुड़े हैं।

हिरन्याक्ष से वराह अवतार लेकर विष्णु के द्वारा पृथ्वी और वेदों की रक्षा, महाबली द्वारा यज्ञ आयोजन, भृगु, विष्णु, लक्ष्मी सभी विखरे विखरे सूत्र कोई बड़ा गाथा, कोई unfold इतिहास छिपाए हैं यहाँ।

भरुच से नर्मदा के उत्तर तट पर चलते हुए कड़ोंद, मंगलेश्वर और पास कबीरबड है। बीच नर्मदा में बना अद्भुत स्थान। परिक्रमा वाले नहीं जाते पर सैलानी खूब जाते हैं। कबीरबड के आगे अंगारेश्वर में आनंदी मैया का आश्रम, लोटस टेम्पल है। आनंदी मैया 100 वर्ष के ऊपर की है और कभी यहाँ, कभी अमेरिका में अपने आश्रम में रहती है। कहते हैं की इंदिरा गाँधी को रुद्राक्ष की माला इन्होंने ही दी थी।

उत्तर तट पर चलते हुए सरदार बल्लभ भाई पटेल की स्टेच्यू ऑफ यूनिटी तो है ही अद्भुत, वहां बना नया शहर देखने लायक है। यहाँ से आगे गरुनेश्वर होते हुए बोडेली। बोडेली से भी पावागढ़ और डोकोर जाया जा सकता है। बोडेली के आगे छोटा उदयपुर होते हुए अलीराजपुर से mp में पुनः वापसी। अलीराजपुर से कुक्षी और कुक्षी से कोटेश्वर।

कोटेश्वर से महेश्वर होकर बडवाह और बडवाह से पुनासा होते हुए नेमावर। नेमावर हिन्दू और जैन दोनों धर्मों का तीर्थ। यह नर्मदा का नाभि स्थल है और बीच नर्मदा में सिद्ध नाथ मन्दिर के सामने स्पष्टतया नाभि कुंड बनाया गया है जिसे सैलानियों को बीच धार में ले जाकर दिखाते हैं बोट वाले, और जहाँ जाता तो वह पर्यटक के रूप में है पर लौटता धार्मिक बन कर है। जाता तो नर्मदा नदी देखने है, पर लौटता है माई को प्रणाम कर।

  
@EBOOKSIND



## आखिर क्यों...?

इससे पहले मैंने तीन किताबें लिखीं। मेरा राम मेरा देश, मथुरा ईश और नीलकण्ठ। इन तीनों किताबों में हमारे अवतार और ईश्वर को इतिहास के आइने में लिखा है, यहाँ वहाँ बिखरे पुष्ट, अपुष्ट साक्ष्यों को लेकर। चाहे हम राम की बात करें मेरा राम मेरा देश में, कृष्ण का चरित्र पढ़ें मथुरा ईश में या नीलकण्ठ को ही लें शिव के लिए, तीनों ही किताबों में ईश्वर को ऐतिहासिक पात्र माना है, उसी अनुसार उनका वर्णन है। मुझे पढ़ने वाले इस किताब को पढ़ कर ज़रूर आश्चर्य कर रहे होंगे की आखिर तर्क की बात करने वाला चमत्कारों के फेर में कैसे पड़ गया। तो अब तर्क की बात करते हैं।

विज्ञान के सूत्र यूनिवर्सल होते हैं जो हर स्थान पर एक समान रिजल्ट देते हैं। जीव, ब्रह्म भी वैज्ञानिक सूत्र हैं, नाम अलग अलग होंगे पर प्रभाव हर जगह एकसा। अब इन दोनों के अलावा भी एक है, जिसे माया कहते हैं। ये माया क्या और कहाँ है।

*उभय बीच सिय सोहित कैसे। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे॥*

माया क्या है, माया कहाँ है, इस पर न जाने कितने दृष्टांत दिए गये हैं। पर ये स्पष्ट है की माया जीव और ब्रह्म के बीच में स्थित रहती है। जीव यानि प्राण, आत्मा, जीवात्मा जो शरीर के अंदर रहती है।

जीव, आत्मा पर भी न जाने कितना लिखा गया है, किन्तु जीव की परिभाषा भी गीता में मिल जाएगी, मानस में मिल जाएगी और तो और डॉ. मर्फी की किताब पॉवर ऑफ़ सबकंसियस माइंड में भी दिया है।

sub conscious mind, मर्फी के अनुसार, immense power है। जो न सोता है, न मरता है। यानि यही आत्मा है हिन्दू दर्शन के अनुसार जो सर्व शक्तिमान है, न मरता है, न नष्ट होता है बस एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करता है। मर्फी के अनुसार अवचेतन मस्तिष्क अपनी आँखों से नहीं देखता अपितु चेतन मस्तिष्क, कोन्सिअस माइंड के संदेशों के अनुसार आकृति बनाता है अर्थात् जैसा चेतन मस्तिष्क इच्छा करता है, कमांड देता है वैसा अवचेतन मस्तिष्क कर देता है।

तभी हिन्दू दर्शन, जैन दर्शन, बुद्ध की फिलोसोफी में कर्म नष्ट करने की बात की गयी है। शुभ, अशुभ सभी कर्मों को नष्ट करने का आशय यही है की यदि मरते समय कोई भी इच्छा रह गयी अधूरी तो अवचेतन मस्तिष्क उस कमांड के अनुसार दूसरा शरीर ढूँढता है, और यही rebirth का साइकिल है। यानि यदि मरते समय अवचेतन मस्तिष्क के पास कोई भी इच्छा, चाहे वह पूण्य का फल पाने की ही क्यों न हो, अधूरी रह गयी तो वह अगला जन्म में पूरी करने का प्रयास करेगा और अगला जन्म होगा।

यही जीव आगमन का सिद्धांत है। जिसमें कहा गया है की आत्मा न मरता है न जलता है और न नष्ट होता है वह तो जैसे पुराने कपड़ों को छोड़ शरीर नये वस्त्र धारण कर लेता है वैसे ही पुराने शरीर को छोड़ नया शरीर धारण कर लेता है। कृष्ण गीता में यही तो कहते हैं।

डॉ. जोसेफ़ मर्फी पॉवर ऑफ़ योर सबकोन्सिअस माइंड में।

Your subconscious mind never grows old, it is timeless, ageless and endless. It is a part of the universal mind of god, which was never born and will die.

तो यह स्पष्ट हुआ की सबकोन्सिअस माइंड और आत्मा एक ही हैं। इसी को जीव, आत्मा या जीवात्मा कहा गया है।

ब्रह्म क्या है? इस पर भी बहुत कुछ लिखा गया है पर यह भी मानस, गीता, उपनिषद में स्पष्ट है की ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है जैसे पानी में घुला नमक हर जगह के पानी का स्वाद नमकीन बताता है पर नमक दिखता कहीं नहीं है, वैसे ही परमात्मा है जो सब जगह है। परमात्मा को तत्व रूप से जानना, परमात्मा में रमण करना कई जगह लिखा गया है, यानि सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व है, पर सर्वत्र है, जिसमें रमण किया जा सकता है, रहा जा सकता है। तत्व

का मतलब यह भी की अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी आकाश ये पांच तत्व हैं जिनसे शरीर बना है और इन पांच तत्वों में परमात्मा का वास है। यानि हवा में, जल में, अग्नि में, पृथ्वी के हर कोने में आकाश के हर भाग में गॉड पार्टिकल मौजूद है पर दिखता नहीं है। हाँ प्रकट किया जा सकता है प्रज्वलित किया जा सकता है जैसे अग्नि। यह गॉड पार्टिकल सबसे अधिक वायु के साथ वैसे ही रहता है जैसे वायु में सुगंध है पर दिखती नहीं। मर्फी ने यूनिवर्सल माइंड ऑफ़ गॉड माना है, जिसका पार्ट है subconscious mind। यह भी उन्होंने लिखा है कि एक यूनिवर्सल सबकोन्सिअस माइंड होता है जिससे सभी सबकोन्सिअस माइंड जुड़े होते हैं।

ए एल वाशम ने उसे यूनिवर्सल सेल्फ कहा है और हिन्दू दर्शन में वही परमात्मा है, जिससे सभी आत्मा जुड़ी हैं।

यानि यह स्पष्ट हुआ की ब्रह्म है जो सर्वत्र व्याप्त है, निराकार है, तत्व रूप है और इसी में रमण करना, इसमें रहना बार बार कहा गया है। कृष्ण गीता में अर्जुन से कहते हैं की 'तू मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा, इसके उपरान्त तू मुझमें ही निवास करेगा, इसमें कुछ भी संशय नहीं।'

*मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।  
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥*

मुझमें निवास करने का तो यही अर्थ हुआ की कृष्ण भी स्वयं को तत्व रूप, निराकार मान रहे हैं जो सर्वत्र है और जिसमें रहा जा सकता है। अन्यथा साकार रूप में कैसे कोई रह लेगा। यानि हर कोई ईश्वरीय तत्व से चारों ओर से ढका है। अर्थात आत्मा अंदर और परमात्मा बाहर और दोनों ही एक दूसरे से बंधे है। आत्मा परमात्मा का पार्ट है और उसी में रमण करता है।

अब बात आती है माया की। माया क्या? मानस में राम ने माया की आधी लाइन में सटीक परिभाषा दी है।

मैं और मोर तोर तें माया। यानि माया मेरा और तेरा का खेल है और यह खेल खेलता है शरीर। और यही शरीर ठीक बीचों-बीच है, ब्रह्म और जीव के। शरीर के अपने स्वार्थ हैं, अपने सुख हैं और अपनी इच्छायें ...अंतहीन इच्छायें।

ब्रह्म और जीव के बीच यही माया है और इसी माया की अपनी नकारात्मकता है, जिस के कारण जीव का परमात्मा से सम्पर्क नहीं हो पाता। इसी शरीर का मोह यदि दूर हो जाय, इस शरीर के सुख के लिए कार्य करने वाला न बन कर यदि जीव को ब्रह्म से मिलाने का कार्य किया जाय तो यह माया रूपी शरीर भी इस महान कार्य में सहभागी बन जाता है।

महावीर, दादाजी धूनीवाले, आचार्य विद्यासागर जी और न जाने कितने संत नग्न इसीलिए रहते आए कि शरीर का मोह दूर हो और शरीर हट जाय बीच से, या ट्रान्सपेरेंट curtain बने, जिससे आत्मा ओर परमात्मा का निरंतर सम्पर्क हो, सीधे जीव का कनेक्शन ब्रह्म से हो जाय। एक बात तो स्पष्ट है की तीनों चीजों में सिनर्जी है। ब्रह्म, जीव और माया एक साथ ही रहते हैं, हर जगह रहते हैं।

पर सवाल है की यदि ब्रह्म सभी स्थानों पर है तो दिखता क्यों नहीं। सूर्य सामने ही चमकता है और दिखता है यदि आकाश साफ है। यदि बादल आकाश को ढंके हों तो सूर्य कैसे दिखेगा, कहाँ दिखेगा। इस का जवाब सभी के पास है कि जहाँ बादल नहीं होंगे वहाँ दिखेगा। तो वहाँ चला जाय जहाँ बादल नहीं हैं। और जैसे ही हम उस स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ बादल नहीं, आसमान साफ है तो हमें चमकता सूर्य ऊपर दिखाई देने लगता है। न सिर्फ सूर्य दिखता है अपितु उसका प्रकाश भी दिखाई देता है।

यही काम मन्दिर, देव स्थान करते हैं। कोई फर्क नहीं, वह किसके हैं। किसी भी देव के हों, जिन्हें लोग मानते, जिनके बार में सुना हो, उनके हो। पर ये सभी देवस्थान काम करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की मूर्ति किसकी है। दरअसल मूर्ति काम नहीं करती, काम करती है वहाँ की positivity जो सारी नकारात्मकता को सोख लेती है और वह ब्रह्म जो सर्वत्र है, का आभास होने लगता है। नर्मदा नदी के पास जाय, हिमालय चढ़ जाय, कैलाश चले जाय सब जगह की एक ही थ्योरी काम करती है की उस स्थान की सकारात्मकता माया रूपी शरीर के पास की नकारात्मकता को सोखने लगती है और ब्रह्म स्पष्ट दिखने लगता है।

यह positivity भी देव स्थानों पर हम मनुष्यों की ही देन है। जब हम सुफल का पूर्ण भरोसा लेकर वहाँ जाते हैं तो हमारा अवचेतन मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है और हमें सुफल देने लगता है, हम इसे चमत्कार कहने

लगते हैं। न जाने कब से, न जाने कितने लोग उस स्थान पर विश्वास के साथ, सकारात्मक सोच के साथ जाते हैं। परिणामतः उस स्थान पर पॉज़िटिव एनर्जी का भंडार होने लगता है।

मैंने कई लोगों से सुना है कि नर्मदा परिक्रमा करने के बाद उनके अंदर अजीब परिवर्तन, ट्रांसफॉर्मेशन हो गया है। क्यों न हो लगातार अनेक माहों तक पॉज़िटिविटी के बीच रहने से उन्हें लगातार ईश्वर तत्व का आभास होता रहता है, महीनों तक लगातार नर्मदा में ब्रह्म के दर्शन होते रहते हैं जो जल तत्व में हर जगह मौजूद होता है, पर उतना स्पष्ट नहीं दिखता जितना नर्मदा जल में क्योंकि यहाँ नकारात्मकता की कोई धुंध नहीं होती।

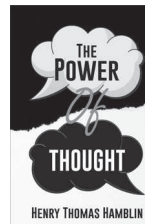
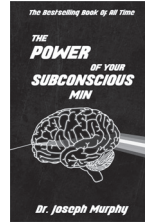
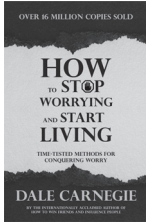
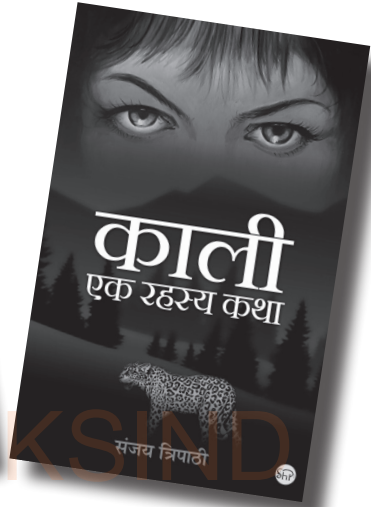
अब सवाल ये है कि ब्रह्म कौन? ब्रह्म कतई सिर्फ हिन्दू नहीं है, ये अल्लाह भी है, जीजूस भी है, नानक भी, राम भी, बुद्ध भी और वे सभी जिनमें आस्था हो और उन्हें ध्यान में रख नर्मदा का भ्रमण किया जाय। नर्मदा सब की है, हर किसी की। इसीलिए तो कहते हैं नर्मदे हर।

मैं एक छोटा प्रयोग करने की गुजारिश करता हूँ सभी से। आप सारी नदियों के ऊपर से गुजरें और फिर नर्मदा के ऊपर से निकलें। यदि कुछ क्षण के लिए ही सही, नर्मदा की तरंग आपके अंतर को भिगो दे और आप किसी अन्य लोक में पहुंच जाय तो आप भी नर्मदा परिक्रमा की तैयारी कर लें जैसे मैं कर रहा हूँ।

संभव है, हम लोग कहीं रास्ते में टकरा जाय और एक साथ बोलें... नर्मदे हर।



## श्रीहिन्द पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित पुस्तकें





COLLECTION OF VARIOUS  
-> HINDUISM SCRIPTURES  
-> HINDU COMICS  
-> AYURVEDA  
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
Avinash/Shashi

!creator of  
hinduism  
server!

KAPWING



